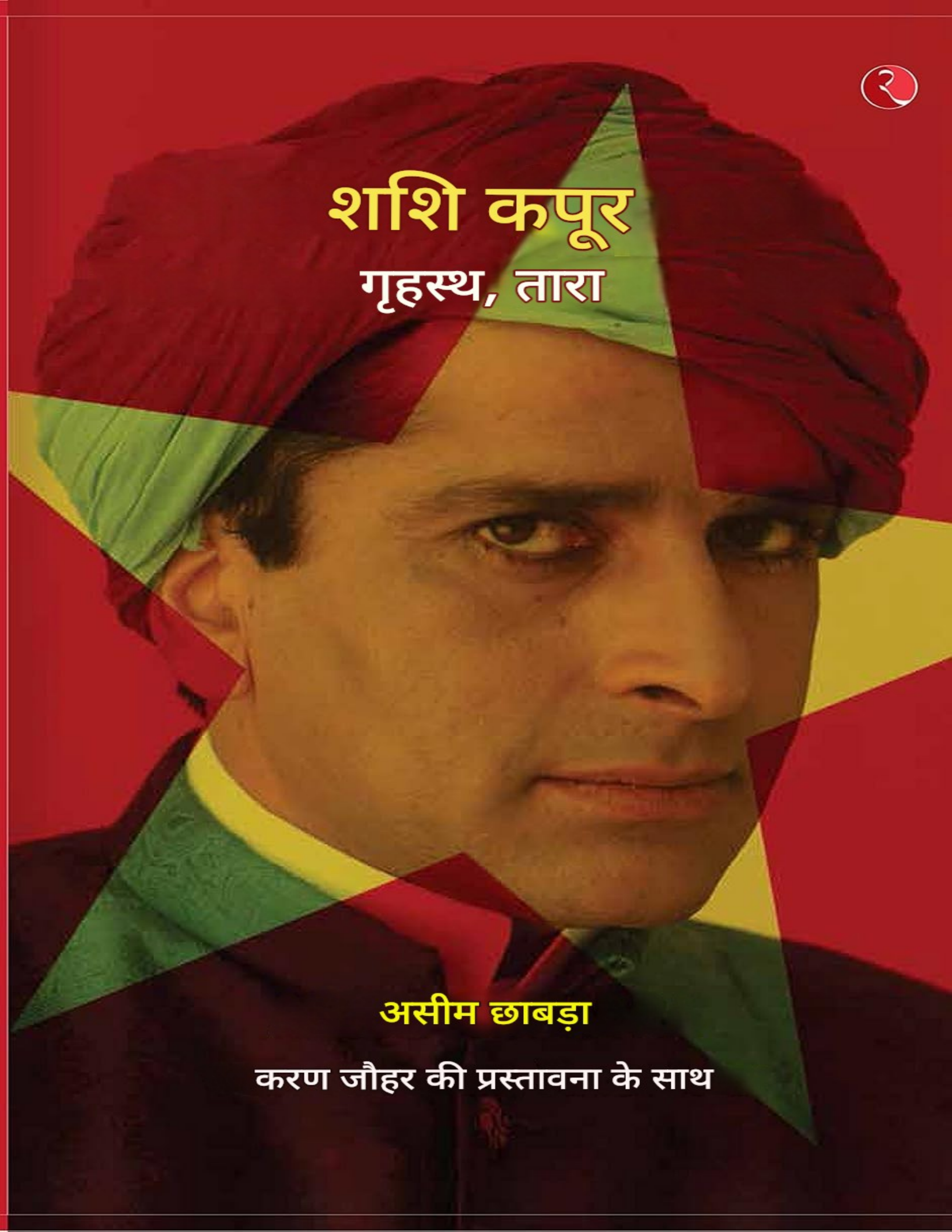

# शशि कपूर

## गृहस्थ, तारा

असीम छाबड़ा

करण जौहर की प्रस्तावना के साथ

# Table of Contents

अर्ध-शीर्षक पृष्ठ
शीर्षक पेज
कॉपीराइट पृष्ठ
समर्पण
विषयसूची
करण जौहर द्वारा लिखित प्रस्तावना
लेखक का नोट
परिचय
1. एक सितारे का जन्म: शशि, जेनिफर और फिल्में
2. उत्थान: शशि और उनकी शुरुआती फिल्में
3. चलो अमेरिका: शशि, व्यापारी-हाथी दांत और रूक्स
4. टेक्सी: शशि और 1970 के दशक की पागलपन भरी घटनाएं
5. सटीक अनुमान: शशि, निर्माता और व्यवसायी
6. आधुनिक फिल्में: शशि, 1980 का दशक और उसके बाद
7. चीजें बिखर गईं: जेनिफर के बाद शशि
शशि कपूर की फिल्मों की सूची
स्वीकृतियाँ

# Shashi Kapoor
## The Householder, the Star

ASEEM CHHABRA
With a Foreword by Karan Johar

RUPA

# Shashi Kapoor

## The Householder, the Star

# Shashi Kapoor
## The Householder, the Star

ASEEM CHHABRA
With a Foreword by Karan Johar

RUPA

द्वारा प्रकाशित
रूपा पब्लिकेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड 2016
7/16, Ansari Road, Daryaganj
नई दिल्ली 110002

Copyright © Aseem Chhabra 2016

पुस्तक में प्रयुक्त तस्वीरों का कॉपीराइट संबंधित कॉपीराइट स्वामी/फोटोग्राफर के पास सुरक्षित है।

कॉपीराइट धारकों का पता लगाने और अनुमति प्राप्त करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है, लेकिन सभी मामलों में यह संभव नहीं हो पाया है; हमारी जानकारी में आई किसी भी चूक को भविष्य के संस्करणों में दूर कर दिया जाएगा।

इस पुस्तक में व्यक्त किए गए विचार और मत लेखक के अपने हैं और तथ्य उनके द्वारा बताए गए हैं जिन्हें यथासंभव सत्यापित किया गया है, और प्रकाशक इसके लिए किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं हैं।

सर्वाधिकार सुरक्षित।
प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी भी प्रकार से पुन: प्रस्तुत, प्रसारित या किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत नहीं किया जा सकता है।

ISBN: ...

पहली छाप 2016

10 9 8 7 6 5 4 3 2 1

लेखक के नैतिक अधिकार का दावा किया गया है।

सूर्या, नई दिल्ली द्वारा टाइपसेट किया गया

यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि प्रकाशक की पूर्व सहमति के बिना, इसे व्यापारिक रूप से या किसी अन्य तरीके से, उधार नहीं दिया जाएगा, पुनर्विक्रय नहीं किया जाएगा, किराए पर नहीं दिया जाएगा या किसी अन्य प्रकार से प्रसारित नहीं किया जाएगा, सिवाय उस रूप में जिसमें यह प्रकाशित हुई है।

मेरी माँ को, जिन्होंने फिल्मों और फिल्मी सितारों के प्रति अपना प्यार मेरे साथ साझा किया।

और ईशान के लिए—फिल्मों और फिल्म सितारों के प्रति मेरा प्यार आपके साथ साझा कर रहा हूँ।

# अंतर्वस्तु

करण जौहर द्वारा लिखित प्रस्तावना

लेखक का नोट

परिचय

1. एक सितारे का जन्म: शशि, जेनिफर और फिल्में

2. उत्थान: शशि और उनकी शुरुआती फिल्में

3. चलो अमेरिका: शशि, व्यापारी-हाथी दांत और रूक्स

4. टैक्सी: शशि और 1970 के दशक की पागलपन भरी घटनाएं

5. सटीक अनुमान: शशि, निर्माता और व्यवसायी

6. आधुनिक फ़िल्में: शशि, 1980 का दशक और उसके बाद

7. चीजें बिखर गईं: जेनिफर के बाद शशि

शशि कपूर की फिल्मों की सूची

स्वीकृतियाँ

# प्रस्तावना

यह सन 1960 का दशक था। बेहद आकर्षक, गालों पर डिंपल वाला और बेहद खूबसूरत बालों वाला एक हीरो सामने आया। हरे-भरे पहाड़ी इलाकों में, वह अपनी नायिकाओं को प्यार भरी निगाहों से देखता था। और उस एक पल के लिए, समय थम जाता था, और दर्शकों के दिल भी ठहर जाते थे।
फिल्म के हीरो शशि कपूर थे। और वो हर तरह से एक दिलकश हीरो थे—उनके हाव-भाव से लेकर उनके उस अनूठे आकर्षण तक, जो दिलों को धड़का देता है और महिलाओं को दीवाना बना देता है। शशि कपूर एक आदर्श राजकुमार थे।
फिर 1970 के दशक के उत्तरार्ध और 1980 के दशक के आरंभिक वर्षों में नायक की अवधारणा बदल गई। वह एक मध्यमवर्गीय, क्रोध से भरा हुआ व्यक्ति बन गया जो शब्दों के बजाय मुट्ठियों से अपनी बात कहता था। स्नेह भरी निगाहों की जगह गुस्से भरे आंसुओं ने ले ली। दर्शक हिंसक दृश्यों और धमाकेदार मार-धाड़ वाले दृश्यों की चाहत में पागल हो गए। पिछले दशक का राजकुमार मानो कहीं खो गया था।
फिर भी, शशि कपूर चमत्कारिक रूप से बच गए। अपने आकर्षक व्यक्तित्व और उत्कृष्ट अभिनय कौशल से उन्होंने तर्क और नैतिकता की आवाज बनकर अपनी छाप छोड़ी। वे बॉलीवुड के उस दौर के विपरीत एक मिसाल बन गए, जिसमें 'बदला लो या कुछ नहीं' का बोलबाला था। उनके द्वारा निभाए गए किरदारों ने दर्शकों को याद दिलाया कि शोर-शराबे, खून-खराबे और हिंसा के बीच भी शांत शालीनता और कोमलता का महत्व है; सही का साथ देने में गुण है, न कि तात्कालिक प्रतिक्रिया देने में। शशि कपूर अब 'नैतिक नायक' बन गए थे।
शशि कपूर वर्षों से फिल्म उद्योग के एक दिग्गज कलाकार रहे हैं और अंतरराष्ट्रीय सिनेमा में लगातार काम करने वाले पहले अभिनेताओं में से एक थे। इसके बावजूद, वे हमेशा एक विनम्र व्यक्ति रहे, जो हर कलाकार को अपने परिवार के सदस्य की तरह मानते थे। वे उन गिने-चुने लोगों में से हैं जो हमेशा अपनी जड़ों - रंगमंच - से जुड़े रहे। पृथ्वी थिएटर की स्थापना और अंतरराष्ट्रीय फिल्म शेक्सपियर वाला में उनकी भूमिका, रंगमंच से मिली हर चीज को श्रद्धांजलि है - उनकी कुशलता, उनकी कला पर उनकी पकड़ और, ज़ाहिर है, उनकी पत्नी। शशि कपूर एक आदर्श सज्जन व्यक्ति हैं।
भारतीय सिनेमा के 1980 के दशक के शोरगुल और अतिरंजित दौर में कहीं न कहीं हम यह भूल गए कि शशि कपूर कितने महान अभिनेता और इंसान थे और आज भी हैं। उनके प्रति मेरे मन में असीमित प्रेम और सम्मान है - न केवल हमारे उद्योग में उनके योगदान के लिए, बल्कि उनके व्यक्तित्व के लिए भी: वे हमेशा दयालु, हमेशा आकर्षक और हमेशा उदार थे।
आज मुझे एक ऐसे व्यक्ति के बारे में लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है जिन्होंने अपने काम से कभी हार नहीं मानी, बल्कि एक निर्माता, एक अनुभवी रंगमंच कलाकार और दिलचस्प, लीक से हटकर विषयों को चुनने वाले निर्माता के रूप में इसे निखारा। शशि जी को उस पीढ़ी का प्यार और सम्मान प्राप्त है जो उन्हें हर बार पर्दे पर चमकते हुए देखकर बड़ी हुई है। और निश्चित रूप से, जो भी आज उन्हें देखेगा, वह भी ऐसा ही महसूस करेगा।
मेरे लिए और बहुत से लोगों के लिए, वह हमेशा एक सज्जन व्यक्ति, एक नैतिक नायक, एक राजकुमार के रूप में रहेंगे।
वह हमेशा शशि कपूर ही रहेंगे।

Karan Johar
बॉम्बे, 2016

# लेखक का नोट

आम तौर पर, एक पत्रकार के तौर पर, जब मैं किसी का ज़िक्र करता हूँ, तो पहली बार पूरा नाम इस्तेमाल करता हूँ, लेकिन बाद में उपनाम (या सरनेम) का इस्तेमाल करता हूँ। हालाँकि, इस किताब में ऐसा करने से कुछ लोग भ्रमित हो सकते थे, क्योंकि मैं कई कपूरों के बारे में बात कर रहा हूँ—शशि कपूर, राज कपूर, शम्मी कपूर, संजना कपूर, कुणाल कपूर और यहाँ तक कि ऋषि कपूर भी। इसलिए मैंने पहली बार पूरा नाम और उसके बाद सिर्फ़ पहला नाम इस्तेमाल करने का फ़ैसला किया।

इस फ़ैसले से हालात और भी पेचीदा हो गए। भारतीय फ़िल्म उद्योग में, वरिष्ठ अभिनेताओं और फ़िल्म निर्माताओं को अक्सर सम्मानपूर्वक संबोधित किया जाता है और उनके नाम के आगे 'जी' या 'दा' (बंगालियों में) लगा दिया जाता है। इसलिए, यश चोपड़ा को आमतौर पर यशजी कहा जाता है, और बिमल रॉय को ज़्यादातर बिमलदा कहते हैं। श्याम बेनेगल को तो फ़िल्म उद्योग में हर कोई श्याम बाबू ही कहता है। यह एक सम्मानजनक उपाधि और परंपरा है। लेकिन उद्योग में कुछ ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने मुझे 'जी' हटाने की याद दिलाई है, भले ही वे मुझसे उम्र में बड़े हों—इसलिए, ऋषि कपूर को ऋषि और अपर्णा सेन को अपर्णा ही कहना चाहिए।

इसलिए, निरंतरता बनाए रखने के लिए, मुझे परंपरा और नियमों का उल्लंघन करना पड़ा है। मेरा किसी का अपमान करने का कोई इरादा नहीं है, लेकिन मुझे तर्क का पालन करना होगा। कुछ पाठकों को यह अजीब लग सकता है, लेकिन प्रत्येक खंड में दूसरी बार उपयोग किए जाने पर मैं आमतौर पर सभी व्यक्तियों—चाहे वे युवा हों या वरिष्ठ—को उनके पहले नाम से ही संबोधित करता हूँ। अमिताभ, श्याम, शशि और सत्यजीत के मामले में भी यही नियम लागू होता है। आशा है कि इस निर्णय के लिए मुझे क्षमा किया जाएगा।

मैं यह भी बताना चाहूंगा कि जिन मामलों में संदर्भ नहीं दिए गए हैं, वहां उद्धरण आमने-सामने के साक्षात्कारों से लिए गए हैं।

अंत में, यद्यपि पूना को आधिकारिक तौर पर 1978 में पुणे, बॉम्बे को 1995 में मुंबई, मद्रास को 1996 में चेन्नई और कलकत्ता को 2001 में कोलकाता के रूप में नामित किया गया था, इस पुस्तक में, एकरूपता बनाए रखने के लिए पुरानी वर्तनी को बरकरार रखा गया है।

# परिचय

5 जनवरी 1985 को—दिल्ली में मेरी शादी के एक दिन बाद—मैं अपनी नवविवाहित दुल्हन के साथ ताज मानसिंह होटल की लॉबी में दाखिल हुआ। कुछ देर पहले ही हमारी हल्की-फुल्की कहासुनी हुई थी—जो पंद्रह साल तक चली हमारी शादी में पहली बार हुई थी। जैसे-जैसे हम साथ-साथ चल रहे थे, हमारे बीच एक अजीब सी बेचैनी छाई हुई थी।

फिर, जैसे ही हमने सामने देखा, मैंने शशि कपूर को रिसेप्शन के पास खड़े देखा, गहरे रंग के सूट और टाई में वे बेहद सजे-धजे थे। मेरी पत्नी शशि कपूर की बहुत पसंद करती थी—यह बात मुझे पता थी। मुझे याद है, जब हम एक-दूसरे को डेट कर रहे थे, तब मैंने उसके माता-पिता के साथ जेम्स आइवरी द्वारा निर्देशित शानदार फिल्म 'बॉम्बे टॉकी' की वीएचएस टेप देखी थी। होटल के एक सीन में जब शशि (विक्रम के रूप में) ने जेनिफर केंडल कपूर (ल्यूसिया के रूप में) को किस किया, तो मेरी पत्नी ने एक लंबी आह भरी, जिससे उसकी माँ चौंक गई। (वैसे, यह एकमात्र ऐसा मौका था जब शशि और जेनिफर, जो असल जिंदगी में पति-पत्नी थे, ने पर्दे पर प्रेमी-प्रेमिका का किरदार निभाया था।)

'देखो, वहाँ शशि कपूर हैं!' मैंने रिसेप्शन की ओर इशारा करते हुए अपनी पत्नी से फुसफुसाकर कहा। अचानक, उसका व्यवहार बदल गया; वह अब परेशान नहीं थी, बल्कि मंत्रमुग्ध हो गई थी।

कुछ ही देर में एक युवती अभिनेता के पास आई और ज़ोर से बोली, 'हेलो शशि, मुझे याद है?' उसकी आवाज़ से पूरी लॉबी गूँज उठी। 'नहीं,' अभिनेता ने उसकी ओर देखते हुए जवाब दिया।

मुझे लगता है उस महिला ने सोचा होगा कि फिल्म स्टार से बात शुरू करने का उसका तरीका बिल्कुल सही था। मुझे यह भी पूरा यकीन है कि शशि उस महिला से कभी नहीं मिले थे—यह सर्वविदित तथ्य है कि अभिनेता को लंबे समय तक अपने सबसे कम समय के परिचितों की भी याददाश्त बहुत अच्छी थी।

शाम का अंत यहीं होना चाहिए था—निराश महिला चुपचाप चली जाती, और मेरी पत्नी उसे देखकर खुश हो जाती—हमारी पहली लड़ाई रहस्यमयी शशि की वजह से अचानक खत्म हो जाती।

फिर भी, 2015 की शुरुआत में, जब मैं इस किताब के लिए शोध कर रहा था, शाम सबसे अप्रत्याशित तरीके से लौट आई। संयोग से, मेरी मुलाकात फिल्म निर्माता रमेश शर्मा के साक्षात्कार से हुई, जिन्होंने 'शशि' फिल्म का निर्देशन किया था। रमेश ने मुझे बताया कि फिल्म की शूटिंग कई कारणों से विलंबित हुई थी और अंततः, फिल्म के कुछ हिस्सों की शूटिंग 1984 के अंत और 1985 की शुरुआत में दिल्ली में हुई थी। फिल्म के सीमित बजट के बावजूद, शशि एकमात्र ऐसे कलाकार थे जो ताज मानसिंह होटल में रुके थे। जब मैंने रमेश को बताया कि मैंने शशि को होटल की लॉबी में देखा था, तो उन्होंने तुरंत मेरे निष्कर्ष की पुष्टि की: 'उस समय मैं फिल्म बना रहा था!'

मुझे ऐसा लगा जैसे एक चक्र पूरा हो गया हो। एक कहानी जो मैंने कई डिनर पार्टियों में दोस्तों को सुनाई थी—मेरी तत्कालीन पत्नी और मेरे शशि से अचानक मिलने की कहानी—अब उसमें एक नया आयाम जुड़ गया था, एक नया अर्थ जुड़ गया था।

जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे एहसास होता है कि शशि ने मेरे बचपन की यादों में भी घुसपैठ करने का रास्ता ढूंढ लिया था। दशकों पहले, 1964 की गर्मियों में, मैं अपने माता-पिता के साथ श्रीनगर में छुट्टियाँ मनाने गया एक छोटा बच्चा था। मुझे हाउसबोट में रहने की धुंधली यादें हैं; डल झील में शिकारा की सवारी के दौरान मुझे इसलिए रोक दिया गया था क्योंकि वहाँ एक फिल्म की शूटिंग चल रही थी; और यह सुनने की याद है कि वह फिल्म 'जब जब फूल खिले' थी—जिसमें शशि और नंदा अभिनय कर रहे थे।

मुझे नहीं लगता कि उस उम्र में—मैं दस साल से भी कम उम्र का था—मैंने शशि या नंदा की कोई फिल्म देखी थी। लेकिन मुझे लगता है कि मैं उन्हें जानता था। और मुझे याद है कि दो फिल्म सितारों के साथ एक ही झील पर होने से मैं बहुत रोमांचित महसूस कर रहा था; लेकिन कुछ ही समय बाद, मुझे बहुत निराशा हुई—मैं सितारों और शूटिंग को देखने से चूक गया था।

बाद में, जब मैं दिल्ली में स्कूल में पढ़ रहा था, तो मेरे कुछ सहपाठियों और मैंने शशि और शर्मिला टैगोर को पत्र लिखे। मेरे स्कूल में किसी ने किसी तरह बॉम्बे में उनके पते हासिल कर लिए थे और हम सबने मिलकर बच्चों जैसे प्यारे-प्यारे पत्र लिखने का फैसला किया, जिन्हें सितारों के मैनेजरों ने ज़रूर पढ़ा होगा। मुझे याद है कि मुझे दो पोस्टकार्ड मिले थे—एक शशि का और दूसरा शर्मिला का, शायद लिफाफों में। वे रंगीन थे—काली-सफेद तस्वीरों को स्याही से रंगा गया था। शशि के होंठ चमकीले गुलाबी रंग के थे। इससे वे काफी सुंदर लग रहे थे, थोड़े-से स्त्रीत्व का भाव लिए हुए। लेकिन उस समय मुझे इन सब बातों की कोई परवाह नहीं थी। मेरे लिए जो मायने रखता था, वह था एक बेहद आकर्षक और बेहद मिलनसार फिल्म स्टार के साथ मेरा व्यक्तिगत जुड़ाव।
स्कूल में मुझे यह बिल्कुल भी नहीं पता था कि तीन दशक बाद मैं शशि को मुंबई के जुहू स्थित पृथ्वी कैफे में कुछ लोगों से बात करते हुए देखूंगा। यह इस किताब की योजना बनने से बहुत पहले की बात है। चूंकि मैं मशहूर हस्तियों का पीछा नहीं करता—और उनसे तभी मिलता हूं जब फिल्म पत्रकार के तौर पर मेरी काम इसकी मांग करता है—इसलिए मैंने उस शाम उन्हें परेशान नहीं किया। फिर भी, वह दृश्य मेरे मन में आज भी अंकित है—एक उम्रदराज शशि, कई अन्य लोगों की तरह एक कुर्सी पर बैठे हुए, किसी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने से इनकार करते हुए।
जब इस किताब की योजना बनाई गई, तब शशि का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा था। इसलिए मैं उनसे बात नहीं कर सका। उनकी बेटी संजना कपूर ने मुझे बताया कि उन्हें मनोभ्रंश है, जबकि उनके भतीजे ऋषि कपूर ने बताया कि उन्हें ठीक से सुनाई नहीं देता और लोगों को पहचानने में भी परेशानी होती है।

*

इस किताब के लिए साक्षात्कारों को संकलित करते समय, मुझे एहसास हुआ कि बहुत से लोग शशि कपूर को भूल चुके थे। मैंने युवा महिलाओं को यह कहते सुना कि केवल उनकी माताओं या दादी-नानी को ही उन पर क्रश था। और मेरे चचेरे भाई के बच्चे, जो अब किशोर अवस्था में हैं, ने शशि के बारे में पहली बार तब जाना जब मैंने उन्हें उनकी समझ में आने वाली भाषा में समझाया, 'वह ऋषि कपूर के चाचा और रणबीर कपूर के दादा हैं।' तीस वर्ष की आयु के कुछ लोगों को यश चोपड़ा की फिल्म 'दीवार' से शशि याद थे—हालांकि, जैसा कि मेरे एक ब्रिटिश-पाकिस्तानी मित्र ने मुझे बताया, इस प्रतिष्ठित फिल्म को भी उनके आकर्षक सह-कलाकार से ज़्यादा अमिताभ बच्चन के लिए याद किया जाता है। मैंने सोचा, यह कितना अजीब है; हां, अमिताभ (विजय के रूप में) ने 'दीवार' में एक अधिक जोशीली भूमिका निभाई थी, लेकिन शशि (रवि के रूप में) द्वारा दिए गए संतुलन और शांति के बिना वह प्रदर्शन फीका पड़ जाता।
सौभाग्य से, इस जीवनी पर काम शुरू करने के कुछ ही समय बाद, शशि को भारतीय सिनेमा में उनके योगदान के लिए दादासाहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह एक अत्यंत योग्य सम्मान था और इसने उन्हें जनमानस में फिर से स्थान दिलाया। यह सम्मान बहुत पहले ही मिल जाना चाहिए था। फिल्म निर्माता श्याम बेनेगल ने मुझसे यही कहा: 'अब जब मैं इस पर विचार करता हूं, तो मुझे दादासाहेब फाल्के पुरस्कार 2005 में मिला था। शशि को यह दस साल बाद मिला। उन्हें यह पुरस्कार मुझसे पहले मिलना चाहिए था।'
लेकिन शशि रंजिश मन में बैर रखने वालों में से नहीं हैं। उनके सबसे बड़े बेटे कुणाल कपूर बताते हैं: 'जब उन्हें फिल्मों में उनके अपार योगदान के लिए अत्यंत प्रतिष्ठित दादासाहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किए जाने की खबर मिली, तो (मेरे पिता) ने बस मुस्कुराकर सिर हिलाया।' कुणाल आगे बताते हैं, 'दादासाहेब फाल्के पुरस्कार की खबर सुनकर उनकी प्रतिक्रिया थी: "मैं?" और फिर वे खिलखिलाकर हंस पड़े।'

*

असली शशि कपूर कौन हैं?
वह निस्संदेह भारत के पहले अंतरराष्ट्रीय स्टार थे—प्रियंका चोपड़ा और इरफान खान के हॉलीवुड में अपनी पहचान बनाने से बहुत पहले।
वो उस दौर के सबसे खूबसूरत हिंदी फिल्म अभिनेता थे—शर्मिला टैगोर से लेकर जेम्स आइवरी तक, लगभग हर किसी ने इस बात की पुष्टि की है जिनसे मैंने बात की है। कई फिल्मों में उनकी सह-कलाकार रहीं शबाना आज़मी कहती हैं, 'वो बेहद आकर्षक थे। सच कहूं तो, मुझे लगता है कि उनकी खूबसूरती ही उनके लिए नुकसानदायक साबित हुई। क्योंकि पहली नज़र में ही लोग उन्हें बेहद आकर्षक मानते थे, इसलिए वे भूल जाते थे कि वो कितने बेहतरीन अभिनेता थे!'
फिर आते हैं शशि कपूर, जो एक निर्माता थे और जिन्होंने 1970 और 1980 के दशक में भारत की कुछ बेहतरीन स्वतंत्र फिल्मों को समर्थन दिया। उन्होंने फिल्म निर्माताओं को जोखिम उठाने के लिए प्रोत्साहित किया, भले ही इसका मतलब अंततः उन्हें दिवालियापन की ओर ले जाना हो। कुणाल कपूर कहते हैं कि उनके पिता उस उद्योग के प्रति अपने ऋण को कभी नहीं भूले जिसने उन्हें एक स्टार के रूप में यह विशेष स्थान दिलाया; वे उस दुनिया का समर्थन करना चाहते थे जिसका वे हिस्सा थे। कुणाल मुझसे कहते हैं, 'उनका इस बात पर विश्वास था। वे वास्तव में उन अन्य अभिनेताओं के बारे में शिकायत करते थे जो स्टार बन जाते थे, पैसा कमाते थे, एक अच्छा जीवन सुरक्षित कर लेते थे, लेकिन फिर भी उस जगह के लिए कभी कुछ नहीं करते थे जिसने उन्हें पाला-पोसा।'

शशि, रंगमंच के शौकीन, मंच के जीवंत अनुभव से बेहद प्रभावित थे और उन्होंने अपनी सारी दौलत मुंबई के उस मशहूर थिएटर, पृथ्वी थिएटर में लगा दी थी। रंगमंच के प्रति उनका यह लगाव उन्हें अपने पिता पृथ्वीराज कपूर से विरासत में मिला था—जो अपनी पहली मोहब्बत, पृथ्वी थिएटर्स को चलाने के लिए फिल्मों में काम करते थे—और उनके ससुर और पत्नी, जेनिफ़र केंडल कपूर ने इसे और निखारा। शशि और जेनिफ़र ने जुहू में उसी ज़मीन पर पृथ्वी थिएटर का निर्माण किया, जिसे पृथ्वीराज ने कुछ दशक पहले अपने पृथ्वी थिएटर्स के लिए स्थायी भवन बनाने के लिए पट्टे पर लिया था। शशि की बेटी, संजना कपूर, मुझे बताती हैं, 'यही वह माहौल है जिसमें हम पले-बढ़े, यही मेरे पिता ने मुझे सिखाया और यही उनके पिता ने उन्हें सिखाया।'

संजना और कुणाल कपूर के माध्यम से हमें शशि की पारिवारिक छवि की झलक मिलती है, जो अपनी पत्नी से बेहद प्यार करते थे और अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए हर संभव प्रयास करते थे, भले ही इसके लिए उन्हें कुछ बेहद खराब (लेकिन अच्छी कमाई वाली) फिल्मों में अभिनय करना पड़े। लगभग सभी को आश्चर्यचकित करते हुए, शशि आसानी से आर्ट-हाउस और अमेरिकी फिल्मों के साथ-साथ मुख्यधारा की हिंदी फिल्मों में भी काम कर लेते थे। 1982 में, उन्होंने अमिताभ बच्चन के साथ हिट कॉमेडी फिल्म नमक हलाल में अभिनय किया। अगले वर्ष, शशि जेम्स आइवरी की समीक्षकों द्वारा प्रशंसित फिल्म हीट एंड डस्ट में दिखाई दिए, जो कान फिल्म फेस्टिवल में प्रतियोगिता में थी। इससे पहले, 1978 में, उन्होंने राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्म जुनून का निर्माण किया और उसमें मुख्य भूमिका निभाई। कुछ महीनों बाद, वे सुभाष घई की फिल्म गौतम गोविंदा में दिखाई दिए। एक बार जब शशि किसी भूमिका को स्वीकार कर लेते थे, तो वे उस प्रोजेक्ट की शर्तों को पूरी तरह से मान लेते थे।

इस लिहाज से देखा जाए तो शशि का करियर वास्तव में शर्मिला टैगोर के करियर के समानांतर था। उन्होंने भी सत्यजीत रे (अपुर संसार, देवी, नायक, सीमाबद्ध) और शक्ति सामंता (एन इवनिंग इन पेरिस, आराधना, अमर प्रेम) तथा यश चोपड़ा (वक्त, दाग) द्वारा निर्देशित फिल्मों के बीच सहजता से तालमेल बिठाया। शशि और शर्मिला दोनों ही सिनेमा के प्रत्येक प्रकार के महत्व को समझती थीं और विभिन्न प्रणालियों और संवेदनशीलताओं के साथ सहर्ष काम करती थीं।

अंत में, शशि कपूर की बात करें तो, वे एक आदर्शवादी थे, जो हमेशा सभी को समान दृष्टि से देखते थे; इस बात की पुष्टि दिवंगत यश चोपड़ा की पत्नी पामेला चोपड़ा भी करती हैं। 'शशि कपूर सेट पर निर्माता से लेकर छोटे से छोटे कलाकार तक, हर किसी के साथ एक जैसा व्यवहार करते थे।' उनकी अक्सर सह-कलाकार और मित्र रहीं शर्मिला आगे कहती हैं, 'सिर्फ साथी कलाकार और निर्माता ही नहीं—अगर आप तकनीशियनों से बात करेंगे, तो आपको पता चलेगा कि शशि कपूर को उनका भी समर्थन प्राप्त था। वे उनसे हाथ मिलाते, कहते, "मेरा नाम शशि कपूर है" और उनके साथ चाय पीते।' ऋषि कपूर से विवाहित नीतू सिंह कपूर, जिन्होंने शशि कपूर के साथ 'दीवार' और अन्य फिल्मों में अभिनय किया है, भी इसी भावना को दोहराती हैं: 'मुझे याद है कि उस फिल्म के सेट पर वे कितने सज्जन व्यक्ति थे। वे मेकअप आर्टिस्ट से लेकर अपने बच्चे तक, सबसे बात करते थे। कितने मानवीय और कितने सरल स्वभाव के व्यक्ति थे।'

रमेश तलवार, जो यश चोपड़ा की कई फिल्मों के मुख्य सहायक निर्देशक रह चुके हैं, कश्मीर में 'कभी कभी' की शूटिंग के दौरान शशि के व्यक्तित्व के इस पहलू को याद करते हैं। वे कहते हैं, 'शशि अक्सर डोंगा (कश्मीरी नाव) पार्टियां आयोजित करते थे। वे दो नावें किराए पर लेते थे और लोग जहां चाहें वहां बैठने के लिए स्वतंत्र थे। क्रू के सदस्य अक्सर सितारों के साथ घुलने-मिलने में असहज महसूस करते थे, लेकिन शशि लोगों को एक नाव से दूसरी नाव पर जाने के लिए प्रोत्साहित करते थे।'

कुणाल कहते हैं कि यह समावेशिता उनके पिता की परवरिश का नतीजा थी। 'मेरे पिता अपने पिता के रोमांटिक, समाजवादी विचारों में दृढ़ विश्वास रखते थे। उन्होंने कभी किसी को ठेस नहीं पहुंचाई। उन्होंने कभी किसी अभिनेता को फिल्म से बाहर नहीं निकाला। उन्होंने कभी कोई भूमिका पाने के लिए राजनीति नहीं की। वे प्रतिस्पर्धी नहीं थे। वास्तव में, वे खुद पीड़ित थे और अन्य अभिनेताओं के आगे आने के कारण फिल्मों में कई भूमिकाएं खो बैठे।'

इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है कि शशि ने एक बेहद लोकप्रिय स्टार के रूप में अपनी पहचान बनाई। दरअसल, जब मैंने शर्मिला से बात की, तो मुझे एहसास हुआ कि यह धारणा न केवल इंडस्ट्री के सामाजिक क्रम, बल्कि सभी आयु वर्ग के लोगों पर लागू होती थी! शर्मिला बताती हैं: 'शशि और मैं 'पापी और पुण्य' की शूटिंग के लिए जयपुर में थे। मेरा बेटा सैफ (अली खान, जो अब अभिनेता हैं), जो उस समय सिर्फ दो साल का था, मेरे साथ था, साथ ही शशि की पत्नी और बच्चे भी थे। कपूर परिवार मेरे बेटे को घुमाने ले जाता था, और मुझे लगता है कि शशि उसके साथ खेलने में समय बिताते थे—क्योंकि जल्द ही सैफ 'शशि अंकल' से काफी लगाव महसूस करने लगा। एक दिन, शशि एक ऐसे दृश्य की शूटिंग कर रहे थे जिसमें एक खलनायक उनके गले में फंदा डाल देता है, और वह रस्सी को खींचकर बुरी तरह संघर्ष कर रहे थे। अचानक, दृश्य पर पूरी तरह हावी खलनायक चिल्ला उठा! उसे पता ही नहीं था कि सैफ रेंगकर उसके पास आया और उसके पैर पर काट लिया! दरअसल, सैफ को लगा कि उसके शशि अंकल की पिटाई हो रही है, वह बहुत बड़े खतरे में हैं, और कोई उनकी मदद नहीं कर रहा है।' उन्हें अभिनय करना ही था! शशि अंकल उनके सबसे चहेते थे।' खास बात यह है कि उस छोटे लड़के का दिल जीतने के लिए स्टार को ज्यादा मेहनत भी नहीं करनी पड़ी। शर्मिला मुस्कुराते हुए कहती हैं, 'शशि बहुत ही मिलनसार इंसान थे। यह सब उनमें स्वाभाविक रूप से था। उन्हें दिखावा करने की जरूरत नहीं थी।'

मेरे लिए, शशि द्वारा निभाए गए सभी किरदारों में से, सबसे भव्य किरदार निस्संदेह एक स्टार का है—एक ऐसा हीरो जिसने हमेशा मेरे अंदर के फिल्म प्रेमी को मोहित किया है। मुझे आज भी युवा, सुंदर शशि को

देखना अच्छा लगता है—जब जब फूल खिले में राजा, शिकारावाला के रूप में, मुस्कुराते हुए और भोले-भाले अंदाज में, जबकि रीता (नंदा) सफेद रेशमी गाउन में 'ये समा, समा है ये प्यार का' गाने पर नाचती है; या फिर प्यारेलाल के रूप में, जो 'प्यार का मौसम' में सीमा (आशा पारेख) को रिझाने की कोशिश करते हुए 'नी सुल्ताना रे' गाते हैं। और 'शर्मीली' में जब उनके किरदार, कैप्टन अजय कपूर, को गलत जुड़वां बहन से शादी करने के लिए धोखा दिया जाता है (दोनों भूमिकाएं राखी ने निभाई हैं), तो किशोर कुमार की दिल को छू लेने वाली आवाज़ में 'कैसे कहें हम प्यार ने हमको' गाते हुए अभिनेता की निराशा को कौन भूल सकता है? उस गाने को गाते हुए किशोर कुमार भी रोते हुए प्रतीत होते हैं!

इस पुस्तक को लिखने के माध्यम से, मैं पाठकों को शशि कपूर परिवार के प्रत्येक सदस्य से परिचित कराना चाहता हूँ, विशेषकर उनकी फिल्मों के ज़रिए। इनमें 1960 और 1970 के दशक की शुरुआती फिल्में शामिल हैं जिन्होंने उन्हें हिंदी सिनेमा के सितारे के रूप में स्थापित किया, और फिर कई महत्वपूर्ण फिल्में जो उनकी विरासत का हिस्सा बनेंगी। उन्होंने कितनी फिल्मों में अभिनय किया, इसका कोई सटीक आंकड़ा नहीं है। कई फिल्में—जैसे सैमी एंड रोज़ी गेट लैड, ज़िन्ना और साइड स्ट्रीट्स—भारत में सिनेमाघरों में रिलीज़ नहीं हुईं, और कुछ फिल्में—जैसे सिद्धार्थ और हीट एंड डस्ट—आज भुला दी गई हैं। लेकिन उनकी ऐतिहासिक फिल्में—दीवार, कभी कभी, जुनून, कलयुग, और यहां तक कि उनकी शुरुआती कृतियों में से एक, धर्मपुत्र—आज भी हिंदी फिल्म इतिहास का हिस्सा हैं, और निश्चित रूप से दोबारा देखने लायक हैं, खासकर उस बेहद आकर्षक व्यक्ति के भीतर छिपे हुए शानदार, सूक्ष्म अभिनेता को खोजने के लिए!

नोट्स

1. 1970, बॉम्बे टॉकी, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत: शशि कपूर, जेनिफर केंडल, जिया मोहियुद्दीन।

2. 1986, नई दिल्ली टाइम्स, निर्देशक रमेश शर्मा, निर्माता पी.के. तिवारी, कलाकार शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, ओम पुरी।

3. 1965, Jab Jab Phool Khile, dir. Suraj Prakash, prod. Chetan K., starring Shashi Kapoor, Nanda, Agha.

4. 1975, Deewaar, dir. Yash Chopra, prod. Gulshan Rai, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Neetu Singh, Parveen Babi.

5. पुरस्कार समारोह के तुरंत बाद मीडिया साक्षात्कारों में उद्धृत; साथ ही सुरेखा कडप्पा-बोस द्वारा लिखित 'शशि कपूर: सीमित लेकिन अडिग', डॉन, 9 अप्रैल 2015 में भी इसका उल्लेख है।

6. 1982, Namak Halaal, dir. Prakash Mehra, prod. Satyendra Pal, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Smita Patil, Waheeda Rehman, Parveen Babi.

7. 1983, हीट एंड डस्ट, निर्देशक जेम्स आइवरी, निर्माता इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत जूली क्रिस्टी, ग्रेटा स्काची, शशि कपूर।

8. 1978, Junoon, dir. Shyam Benegal, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Shabana Azmi, Jennifer Kendal.

9. 1979, Gautam Govinda, dir. Subhash Ghai, prod. Shyam Sunder Shivdasani, starring Shashi Kapoor, Shatrughan Sinha, Moushumi Chatterjee.

10.

1959, अपुर संसार, दिर. सत्यजीत रे, प्रो. सत्यजीत रे, सौमित्र चटर्जी, शर्मिला टैगोर, आलोक चक्रवर्ती अभिनीत।

[11].
1960, देवी, दिर. सत्यजीत रे, प्रो. सत्यजीत रे, अभिनीत सौमित्र चटर्जी, शर्मिला टैगोर, छवि बिस्वास।

[12].
1966, Nayak, dir. Satyajit Ray, prod. R.D. Bansal, Sharankumari Bansal, starring Uttam Kumar, Sharmila Tagore, Bireswar Sen.

[13].
1971, Seemabaddha, dir. Satyajit Ray, prod. Bharat Shumsher Jung Bahadur Rana, starring Barun Chanda, Harindranath Chattopadhyay, Sharmila Tagore.

[14].
1967, An Evening in Paris, dir. Shakti Samanta, prod. Shakti Samanta, starring Shammi Kapoor, Sharmila Tagore, Pran.

[15].
1969, आराधना, दिर. शक्ति सामंत, प्रो. शक्ति सामंत, अभिनीत राजेश खन्ना, शर्मिला टैगोर, सूजीत कुमार।

[16].
1972, अमर प्रेम, दिर. शक्ति सामंत, प्रो. शक्ति सामंत, अभिनीत राजेश खन्ना, शर्मिला टैगोर, विनोद मेहरा।

[17].
1965, समय, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. बी.आर. चोपड़ा, अभिनीत बलराज साहनी, शर्मिला टैगोर, शशि कपूर।

[18].
1973, दाग़, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. यश चोपड़ा, शर्मिला टैगोर, राजेश खन्ना, राखी अभिनीत।

[19].
1976, Kabhi Kabhie, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Raakhee, Simi Garewal, Waheeda Rehman, Rishi Kapoor, Neetu Singh.

[20].
1974, Paap Aur Punya, dir. Prayag Raj, prod. Shyam Kumar Shivdasani, starring Shashi Kapoor, Sharmila Tagore, Aruna Irani.

[21].
‘Yeh Sama, Sama Hai Ye Pyar Ka’, lyr. Anand Bakshi, comp. Kalyanji–Anandji, artist Lata Mangeshkar.

[22].
‘Ni Sultana Re’, lyr. Majrooh Sultanpuri, comp. R.D. Burman, artists Lata Mangeshkar, Mohammed Rafi.

[23].
1969, Pyar Ka Mausam, dir. Nasir Hussain, prod. Nasir Hussain, starring Shashi Kapoor, Asha Parekh, Bharat Bhushan.

[24].
‘Kaise Kahen Hum Pyar Ne Humko’, lyr. Neeraj, comp. S.D. Burman, artist Kishore Kumar.

[25].
1971, शर्मीली, दिर. समीर गांगुली, प्रो. सुबोध मुखर्जी, शशि कपूर, राखी, नज़ीर हुसैन अभिनीत।

[26].
1987, सैमी एंड रोज़ी गेट लेड, निर्देशक स्टीफन फ्रीयर्स, निर्माता टिम बेवन, सारा रेडक्लिफ, अभिनीत शशि कपूर, फ्रांसिस बार्बर, क्लेयर ब्लूम।

[27].
1998, जिन्ना, दिर. जमील देहलवी, प्रो. जमील देहलवी, क्रिस्टोफर ली, शशि कपूर, मारिया ऐटकेन अभिनीत।

[28].
1998, साइड स्ट्रीट्स, निर्देशक टोनी गेर्बर, निर्माता ब्रूस वीस, अभिनीत वैलेरिया गोलिनो, शशि कपूर, शबाना आज़मी।

29. 1972, Siddhartha, dir. Conrad Rooks, prod. Conrad Rooks, starring Shashi Kapoor, Simi Garewal, Romesh Sharma.

30. 1981, Kalyug, dir. Shyam Benegal, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Rekha, Raj Babbar.

31. 1961, धर्मपुत्र, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. बी.आर. चोपड़ा, अभिनीत शशि कपूर, माला सिन्हा, रहमान।

# 1

# एक सितारे का जन्म हुआ
# शशि, जेनिफर और फिल्में

18 मार्च 1938 को कलकत्ता स्थित पृथ्वीराज कपूर के घर में एक पुत्र का जन्म हुआ। पृथ्वीराज कपूर न्यू थिएटर्स स्टूडियो में अभिनेता थे। कपूर परिवार की परंपरा के अनुसार, बेटे का नाम बलबीर राज रखा गया, क्योंकि परिवार में राज शब्द के विभिन्न रूपों को अपनाने का रिवाज था। लेकिन बलबीर की मां रामसरनी कपूर इस नाम से खुश नहीं थीं। उन्होंने अपने बेटे को शशि कहकर पुकारना शुरू कर दिया, क्योंकि उनका छोटा बेटा चांद से बेहद लगाव रखता था और घंटों उसे देखता रहता था।

शशि कपूर अपने जन्म के कुछ समय बाद ही मुंबई आ गए और मटुंगा के कॉलेज बैक रोड पर स्थित एक बड़े पारिवारिक घर में रहने लगे। यह गली अनौपचारिक रूप से हॉलीवुड लेन कहलाती थी, क्योंकि विभाजन के बाद पंजाब के कई अभिनेता यहां आकर बस गए थे। आज यह वर्सोवा की यारी रोड और अंधेरी के लोखंडवाला के समान है, जहां हर इमारत में फिल्मी सितारे और उभरते अभिनेता रहते हैं।

शशि अपने भाई-बहनों और माता-पिता के साथ पले-बढ़े—हालांकि उनके पिता अक्सर यात्रा करते रहते थे—और उनका बचपन मां और घर की अन्य स्नेहशील महिलाओं के लाड़-प्यार में बीता। उन्हें कभी-कभार ही डांट पड़ती थी, और वो भी उनके बड़े भाई राज कपूर से। राज के बेटे ऋषि कपूर कहते हैं, 'मेरे पिता शशि अंकल और डब्बू (ऋषि के बड़े भाई रणधीर कपूर) में कोई फर्क नहीं करते थे। वो शशि अंकल को अपने बड़े बेटे की तरह मानते थे।' हालांकि, राज की डांट भी युवा शशि को सिनेमा हॉल से दूर नहीं रख पाई; वो नई फिल्में देखने के लिए डॉन बॉस्को स्कूल छोड़ देते थे!

शशि के जन्म के छह वर्ष बाद, पृथ्वीराज ने पृथ्वी थिएटर्स की स्थापना की। शशि तुरंत ही इससे जुड़ गए; उन्होंने कंपनी के पहले नाटक, शकुंतला में भरत की भूमिका निभाई। यह अनुभव इतना प्रभावशाली था कि उन्होंने यह तय कर लिया कि उनका मन पढ़ाई-लिखाई में नहीं लगता। जब शशि किशोरावस्था में थे, तब रंगमंच उनके जीवन का प्रेरक बन गया। 1953 में, पंद्रह वर्षीय इस दृढ़ निश्चयी किशोर ने स्कूल छोड़ दिया—जिसका उनके पिता ने भी समर्थन किया—और पृथ्वी थिएटर्स में पूर्णकालिक रूप से कमि करना शुरू कर दिया। यहीं से उनकी वास्तविक शिक्षा की शुरुआत हुई।

पृथ्वी थिएटर्स में किसी कंपनी के संस्थापक का बेटा होना कोई बड़ी बात नहीं थी। शशि को अपनी मेहनत से सफलता की सीढ़ियां चढ़नी पड़ीं। फिल्म निर्माता देव बेनेगल, जिन्होंने शशि के गृह-निर्मित फिल्म 'कलयुग' में सहायक निर्देशक के रूप में काम किया था, कहते हैं, 'शशि ने मुझे बताया था कि जब वह छोटे थे, तो उनके पिता ने उनसे कहा था, "तुम जो भी करो, तुम्हें शुरुआत नीचे से करनी होगी। तुम्हें लाइटें ढोनी होंगी, वज़न उठाना होगा, तभी तुम रचनात्मक कार्य की बारीकियों को समझ पाओगे। तुम एक दिन अचानक मेरे पास आकर यह नहीं सोच सकते कि तुम निर्देशक बन जाओगे!" पृथ्वीराज को ऐसे लोग पसंद नहीं थे जो खुद को श्रेष्ठ समझते थे। सबसे प्रशंसनीय बात यह थी कि वह अपने बच्चों को भी यही नैतिक शिक्षा दे रहे थे।' पृथ्वी थिएटर्स में शशि को जो प्रशिक्षण मिला और तकनीकी कार्यों में लगे लोगों के प्रति जो सम्मान उन्होंने विकसित किया—वह काम जो अभिनेताओं को मंच और स्क्रीन पर अच्छा दिखाता है—वह उनके पूरे पेशेवर करियर में उनके साथ रहा।

शशि 1953 से 1960 तक पृथ्वी थिएटर्स में कार्यरत रहे—यह वही वर्ष था जब पृथ्वीराज को खराब स्वास्थ्य के कारण भारत भर में 2,662 शो करने के बाद अपनी कंपनी बंद करनी पड़ी। इस दौरान शशि ने थिएटर निर्माण के हर पहलू को सीखा और छोटी-मोटी भूमिकाएँ भी निभाईं। जब भी उन्हें समय मिलता—यानी जब वे थिएटर कंपनी के साथ दौरे पर नहीं होते थे—शशि राज की आर.के. फिल्म्स में जाया करते थे, जहां वे फिल्म निर्माण की बारीकियों को समझते थे।

*

पृथ्वी थिएटर्स में प्रशिक्षण के दौरान ही शशि कपूर की मुलाकात संयोगवश उस महिला से हुई जो आगे चलकर उनकी पत्नी बनीं। शशि की भावी भाभी, फेलिसिटी केंडल, अपनी आत्मकथा 'व्हाईट कार्गो' में लिखती हैं कि एक शाम उनकी बहन, जेनिफर केंडल—जो उनसे तेरह साल बड़ी थीं—बंबई के रॉयल ओपेरा हाउस में पृथ्वी थिएटर्स द्वारा प्रस्तुत 'दीवार' का प्रदर्शन देखने गई थीं। शशि मंच के पीछे थे और संयोगवश पर्दों के पीछे से देखा; तभी उनकी नज़र जेनिफर पर पड़ी। वहाँ वह 'काले और सफेद रंग की पोल्का डॉट वाली गर्मियों की पोशाक में थीं, जिसका गला हॉल्टर स्टाइल का था—जो बेहद बोल्ड था—और वह बेहद खूबसूरत थीं [...] अपने कार्यक्रम पत्र से खुद को हवा दे रही थीं। शशि [...] को उनसे तुरंत प्यार हो गया।'

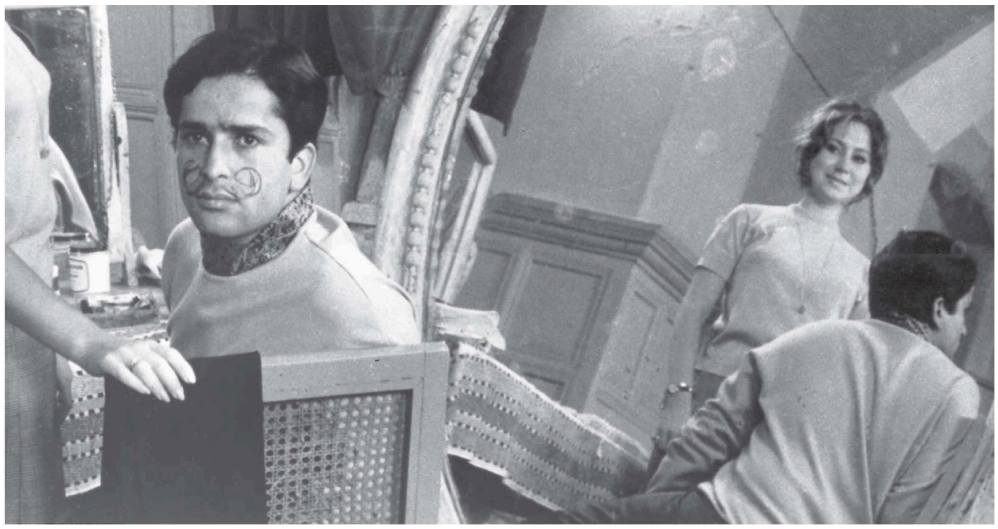

शेक्सपियर वॉलह के एक दृश्य में शशि कपूर और फेलिसिटी केंडल।
सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

जेनिफर और फेलिसिटी के पिता, जेफ्री केंडल, जो शेक्सपियरआना थिएटर कंपनी चलाते थे, इस घटना का थोड़ा अलग विवरण देते हैं। अपनी आत्मकथा, 'द शेक्सपियर वालह' में, उन्होंने इस घटना का वर्णन कलकत्ता के एम्पायर थिएटर में किया है। उनके अनुसार, प्रबंधन कंपनी ने शेक्सपियरआना और पृथ्वी थिएटर के लिए एक ही मंच की दोहरी बुकिंग करके गलती की थी। अंततः यह निर्णय लिया गया कि दोनों कंपनियां बारी-बारी से प्रदर्शन करेंगी। और पृथ्वी थिएटर के प्रदर्शन की शाम को ही शशि ने मंच के पर्दों के पीछे से जेनिफर को देखा था। जेफ्री कहते हैं, 'वैसे, मुझे इस बारे में कुछ समय तक कुछ पता नहीं था।'
शो के बाद, शशि ने अपना परिचय दिया और जेनिफर को बैकस्टेज ले गए; जेनिफर उनसे चार साल बड़ी थीं। फेलिसिटी लिखती हैं: 'अगली दोपहर, मैं एक चीनी रेस्टोरेंट में बैठी थी, जेनिफर और शशि को नूडल्स खाते हुए एक-दूसरे के प्यार में पड़ते देख रही थी। वे जेनिफर की मृत्यु तक साथ रहे, सुख-दुख में भी और कभी-कभी बहुत सुख-दुख में भी [...] उन्हें शशि में वह पुरुष मिल गया था जिसे वह हमेशा के लिए चाहती थीं।'
कुछ समय बाद, जब शेक्सपियर समूह में अभिनेताओं की कमी हो गई, तो शशि को पुणे स्थित टीम में शामिल होने के लिए कहा गया। यहाँ भी तथ्यों के वर्णन में थोड़ा सा अंतर है। फेलिसिटी लिखती हैं कि जेनिफर ने शशि को टीम में शामिल होने के लिए तार भेजा था, जबकि जेफ्री घटना का अधिक तर्कसंगत स्पष्टीकरण देते हैं—'मैंने पृथ्वीराज को पत्र लिखकर पूछा कि क्या वे कुछ समय के लिए अपनी कंपनी से शशि को मुझे उधार दे सकते हैं।' शशि ने कभी अंग्रेज़ी में अभिनय नहीं किया था, लेकिन 1957 में स्वेच्छा से समूह में शामिल हो गए। पाँच महीनों तक, जेनिफर ने उन्हें शेक्सपियर, शॉ और अन्य अंग्रेजी नाटककारों के नाटकों की बारीकियां सिखाईं, और उन वाक्यों का उच्चारण करने में उनकी मदद की जिन्हें युवा अभिनेता ने पहले कभी बोला या पढ़ा नहीं था। संजना कपूर कहती हैं, 'मेरे पिता मुझे बताया करते थे कि शेक्सपियर की पंक्तियाँ सीखना कितना मुश्किल था—यह प्रक्रिया कितनी भयावह होती थी और ऐसा लगता था जैसे उनके मुँह में गोलियाँ भरी हों। वे शब्द बोल ही नहीं पाते थे।'
जेफ्री ने एक युवा भारतीय अभिनेता का अपने परिवार में स्वागत तो किया, लेकिन उसे अपने परिवार में शामिल करने को तैयार नहीं थे; उन्हें ज़रा भी उम्मीद नहीं थी कि उनकी बेटी उस लड़के से शादी करने का इरादा रखेगी। जेफ्री अपने बच्चों को लेकर बेहद सजग थे और अपनी स्टार कलाकार जेनिफर को खोने के तो उन्हें सख्त ही डर था। अत्यधिक सुरक्षात्मक रवैये में आकर वे अक्सर शशि का मज़ाक उड़ाते और उसके लहजे पर ताने कसते थे। शशि ने पत्रकार मधु जैन को बताया, 'वे जेनिफर के लिए झगड़ते थे और अक्सर बदतमीज़ी करते थे।'

युवा प्रेमी-प्रेमिका खुद को जेफ्री की ताक-झांक भरी निगाहों से बचने की कोशिश करते हुए पाते थे। संजना अपने माता-पिता के बारे में कहती हैं, 'जब वे थिएटर करते थे, तब वे गरीब थे। उन्हें पर्याप्त नींद और भोजन नहीं मिलता था और मेरे पिता मुझे बताते थे कि कैसे वे सड़कों पर घूमते हुए भूख से तड़पते थे—दोनों माता-पिता यह तय करने की कोशिश करते थे कि उन्हें आधा पराठा मिल पाएगा या नहीं। फिर, वे किसी रेस्तरां के पास से गुजरते और वहां मेरे दादा, जेफ्री कैंडल, बीयर के साथ भरपेट खाना खा रहे होते। मेरे पिता अंदर नहीं जा सकते थे। वे उनके कर्मचारी थे और साथ ही उनकी बेटी को भी चुरा रहे थे। इसलिए उनके लिए तूफान में उतरना नामुमकिन था।'
शशि के प्रति जेफ्री की स्पष्ट उपेक्षा ने जेनिफर को बहुत परेशान किया और उसने अपने पिता से इस बारे में बात की। फिर उसने फेलिसिटी से कहा, 'पापा ने मुझसे कहा है कि उन्हें शशि से कोई आपत्ति नहीं है, न ही इस बात से कि वह भारतीय है, न ही इस बात से कि वह मुझसे छोटा है [...] बात सिर्फ इतनी है कि वह नहीं चाहते कि हम कंपनी छोड़ दें [...] काश वह समझ पाते कि सभी बच्चे बड़े होकर कंपनी छोड़ना चाहते हैं!'
जेनिफर की मुसीबतों को और बढ़ाने वाली बात यह थी कि शशि शर्मीला, अपनी अंग्रेज़ी को लेकर सचेत और अपने माता-पिता से बेहद डरा हुआ था। अगर उनका रिश्ता आगे बढ़ा, तो यह शशि की भाभी (जो खुद भी एक अभिनेत्री थीं) गीता बाली और उनके पति (और शशि के भाई) शम्मी कपूर के अटूट समर्थन के कारण था, जिन्हें इस प्रेम प्रसंग के बारे में पता चल गया था। यह जीवन के एक अद्भुत चक्र का पूरा होना था। शम्मी की तरह, जिन्हें राज और उनकी पत्नी कृष्णा ने गीता से शादी करने के लिए प्रेरित किया था, शर्मीले शशि को भी गीता और शम्मी ने जेनिफर को मुंबई लाने और अपने माता-पिता से मिलवाने के लिए उकसाया। लेकिन शशि हमेशा आशंकित रहे। शशि हंसते हुए कहते हैं, 'मैं डर गया था क्योंकि मुझे लगा कि मेरी पिटाई हो जाएगी।' 'इसलिए मैंने समझौता किया और जेनिफर को शम्मी जी के घर ले गया और गीता भाभी को उससे तुरंत प्यार हो गया।' खुद भी एक सच्ची रोमांटिक होने के नाते, वह हमें अपनी कार और कुछ पैसे उधार देती थी ताकि हम बाहर खाना खाने और घूमने जा सकें। आखिरकार, शशि के कहने पर, शम्मी ने अपने माता-पिता से जेनिफर के बारे में बात की और उन्होंने अनिच्छा से इस रिश्ते को मंजूरी दे दी। लेकिन जेफ्री ने अपना रुख बदलने से इनकार कर दिया। वह इस रिश्ते के घोर विरोधी बने रहे और अपनी बेटी पर कड़ी पाबंदियां लगा दीं। अंततः, अपनी स्वतंत्रता का दावा करने और आगे बढ़ने के प्रयास में, जेनिफर, शशि के साथ, उनके थिएटर मंडली को छोड़कर चली गई। परिवार के मुखिया के लिए यह सबसे बड़ा झटका था, और वह अपनी बेटी के इस परित्याग को हल्के में लेने वाले नहीं थे। उन्होंने गुस्से और कठोरता से उस दिन को देखा जब वह गई थी; यह एक ऐसा क्षण है, जो समय में जम गया है, जिसका फेलिसिटी ने दिल दहला देने वाला वर्णन किया है:

उस सुबह जब हम बरामदे में खड़े थे और जेनिफर, जिसकी आँखें लाल थीं, ने अपने हाथ उसके [जियोफ्रे के] गले में डाल दिए, उसके छोटे कंधे सिसकियों से काँप रहे थे, वह एकदम सीधा और अकड़ा हुआ खड़ा था, उसकी बाहें उसके बगल में चिपकी हुई थीं, वह चुपचाप आगे देख रहा था, जब तक कि मैंने उसे उससे अलग नहीं किया और उसे गले लगाकर इंतज़ार कर रही टैक्सी में नहीं बिठा दिया। इस भयावह व्यवहार पर शशि के चेहरे पर जो हैरानी का भाव था, उसे मैं कभी नहीं भूल पाऊँगी।

जेनिफर और शशि अब एक विशाल, कभी-कभी प्रतिकूल दुनिया में अकेले थे। वे एक थिएटर शो के लिए सिंगापुर और मलेशिया के लिए रवाना हुए। लेकिन दुर्भाग्यवश, शो रद्द हो गए और उनके पास पैसे नहीं बचे। हताश शशि ने भारत में फोन किया और राज से मदद की गुहार लगाई, जिन्होंने तुरंत बॉम्बे के लिए दो इकोनॉमी टिकट भेज दिए। इस तरह जेनिफर और शशि माटुंगा में कपूर परिवार के घर पहुंचे और जुलाई 1958 में उनकी शादी हो गई।
जेफ्री शादी में शामिल नहीं हुए, लेकिन 1960 में बेटे कुणाल के जन्म के बाद जेनिफर से उनका सुलह हो गया। बीच के बच्चे करण का जन्म 1962 में हुआ और बेटी संजना का जन्म पांच साल बाद 1967 में हुआ।
वे साल बेहद रोमांचक थे—हालांकि उनके साथ कुछ खास चुनौतियां भी थीं। शर्मिला टैगोर, उस शख्स के सादे जीवन को याद करते हुए कहती हैं, जो आगे चलकर एक स्टार बना, 'शशि ने एक बार मुझसे कहा था कि जब उनकी शादी जेनिफर से हुई, तो उनका कमरा सबके लिए आने-जाने का रास्ता बन गया था—उन्हें कभी भी किसी तरह की निजता नहीं मिली।' 'सौभाग्य से, वे ऐसे माहौल में पले-बढ़े थे जहां मिल-जुलकर रहना और सहनशीलता ज़रूरी थी, और जहां सहजता से काम लेना अनिवार्य था। यह उनके व्यक्तित्व का हिस्सा था।'
शशि, उनकी पत्नी और बच्चे बाद में अल्टामाउंट रोड और फिर दक्षिण मुंबई के नेपियन सी रोड में रहने लगे, जहां जेनिफर ने अपने बच्चों को हिंदी फिल्म उद्योग की चकाचौंध और हद से ज़्यादा पागलपन से दूर एक सामान्य जीवन देने की पूरी कोशिश की। उदाहरण के लिए, उनके परिवार के पास टेलीविजन नहीं थी। जब पृथ्वीराज कपूर अभिनीत फिल्म सिकंदर का प्रसारण हुआ, तो परिवार को एक दिन के लिए टीवी किराए पर लेना पड़ा। संजना कहती हैं, 'मैं शायद तीन साल की थी, लेकिन मुझे याद है कि मैं स्क्रीन को देखकर कहती थी, "पापा।" क्योंकि मेरे दादाजी बिल्कुल मेरे पापा जैसे दिखते थे। मुझे वह बात अच्छी तरह याद है।'
दूसरी बात यह है कि जिन दिनों शशि शूटिंग के लिए यात्रा नहीं कर रहे होते थे, उन दिनों जेनिफर जोर देती थीं कि उनका परिवार सुबह एक साथ इकट्ठा हो। कुणाल कहते हैं, 'पिताजी चाहे जिस समय भी काम से घर

आते, हमारे साथ नाश्ता करते थे। हम सुबह 7 बजे उठ जाते थे और 7:30 बजे तक खाने की मेज पर बैठ जाते थे।'
अंत में, बच्चों को अन्य लोगों की तरह शहर में घूमना-फिरना सिखाया गया। संजना कहती हैं, 'हम बीईएसटी (बृहन्मुंबई इलेक्ट्रिक सप्लाई एंड ट्रांसपोर्ट) की बसों और लोकल ट्रेनों से सफर करते थे। आम लोगों की तरह, लगभग गुमनाम रहना, यह एक ऐसी चीज थी जिसकी हमने कद्र करना सीखा।' उन्हें अपनी मां द्वारा मुंबई के भीड़भाड़ वाले चोर बाज़ार में घसीटकर ले जाने की यादें भी ताज़ा हैं: 'मेरे लिए स्कूल के बाद वहां जाना सबसे बड़ी यातना थी क्योंकि मेरी मां को कुछ न कुछ खरीदना होता था - और यह कभी भी सिर्फ एक चीज नहीं होती थी। यह चार-पांच घंटे तक चलता था! लेकिन मुझे यह जगह इसलिए भी पसंद थी क्योंकि यह भारत में एकमात्र ऐसी जगह थी जहां मैं शशि कपूर की बेटी नहीं थी; मैं जेनिफर केंडल कपूर की बेटी थी। इसके अलावा, मेरी मां हमेशा मुझे क्रॉफर्ड मार्केट के सामने एक उडुपी रेस्तरां में डोसा, इडली और वड़ा खिलाकर बहलाती थीं!'
जेनिफर ने अपने परिवार को स्टारडम की चकाचौंध से दूर रखने का कड़ा संकल्प लिया था, इसलिए संजना को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि उसके पिता एक मशहूर शख्स हैं। यह घटना काफी अप्रत्याशित थी, जब संजना दो या तीन साल की थी और परिवार एक कार में था जो ट्रैफिक सिग्नल पर रुकी थी। तभी गली के कुछ बच्चे आए और बंद शीशे वाली खिड़कियों से झाँकने लगे। जल्द ही वे पागलों की तरह दरवाज़ा खटखटाने लगे और चिल्लाने लगे, 'शशि कपूर, शशि कपूर!' संजना हंसते हुए कहती है, 'मुझे बताया गया है कि मैंने अपने पिता की ओर मुड़कर पूछा, "पीपा, इन्हें आपका नाम कैसे पता चला?"'
जेनिफर का शोहरत के प्रति भावहीन रवैया होने के बावजूद, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि परिवार को शशि की प्रसिद्धि के अनुरूप अपने जीवन में बदलाव करने पड़े। संजना कहती हैं, 'मैंने अपने पूरे जीवन में कभी अपने पिता के साथ मुंबई की सड़कों पर सैर नहीं की। यह नामुमकिन था और मैं इस बात से पूरी तरह वाकिफ थी।' कुणाल को चिड़ियाघर में परिवार के साथ सुबह-सुबह की दुर्लभ यात्राएं याद हैं। 'हमें चिड़ियाघर खुलने से पहले वहां पहुंचना पड़ता था और भीड़ आने से आधे घंटे पहले अंदर जाने की अनुमति लेनी पड़ती थी। हमारी मुलाकात के अंत तक, प्रशंसक इकट्ठा हो जाते थे और पिताजी को पहचानने लगते थे।'

शशि कपूर अपनी बेटी संजना के साथ फिल्म 'हीट एंड डस्ट' के सेट पर।
फोटो साभार: मैरी एलेन मार्क। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

अंततः, गोवा ने कपूर परिवार को वह सुकून भरा आश्रय प्रदान किया जिसकी उन्हें चाह थी। परिवार का बागा बीच पर एक घर था, और यहाँ वे बिना किसी की नज़र में आए टहलते थे। फेलिसिटी के अनुसार, उनकी बहन ने ही सबसे पहले इस समुद्र तट को खोजा था और यहाँ तक कि वह घर भी ढूँढा था जिसे उन्होंने शशि को किराए पर लेने के लिए राजी किया था—जिसकी टाइल वाली छत पर एक बेडा सा दिल बना हुआ था, इसलिए सब उसे 'लव हाउस' कहने लगे। जेफ्री, जो अक्सर यहां छुट्टियां बिताने आते थे, इस इलाके को 'निस्संदेह सबसे खूबसूरत छुट्टी मनाने की जगह' कहते थे। यह घर हर सर्दियों में परिवार का छुट्टी मनाने का घर बना रहा, जब तक कि सितंबर 1984 में जेनिफर की मृत्यु नहीं हो गई।

संजना कहती हैं, ‘मुझे लगता है कि मेरे माता-पिता ने हमें जो सबसे बड़ा तोहफा दिया, वह गोवा में हमारा घर था, उस समय जब गोवा इतना विकसित नहीं था।’ ‘मुझे यकीन है कि मेरे भाई भी इस बात से सहमत होंगे। हम सामान्य थे, साधारण थे। ग्रामीणों ने हमें स्वीकार करने से पहले एक साल से अधिक समय तक हमारी परीक्षा ली। वे नहीं जानते थे कि मेरे पिता कौन हैं।’ वह आगे कहती हैं कि उस समय गोवा में केवल कुछ ही सिनेमाघर थे, और स्थानीय निवासी—जिनमें से अधिकांश कोंकणी मछुआरे थे—शायद ही कभी हिंदी फिल्में देखते थे। ‘बेशक, वे अंततः समझ गए कि पापा कौन थे। लेकिन तब, उन्हें इसकी परवाह भी नहीं थी!’

*

जेनिफर केंडल कपूर के जीवित रहते हुए, उन्होंने अपने पति के खान-पान पर कड़ी नज़र रखी। यही कारण है कि कपूर परिवार के अन्य पुरुषों के विपरीत, शशि कपूर लंबे समय तक दुबले-पतले रहे। यही वजह थी कि शशि के आसपास के कई लोग उन पर तरस खाते थे! नीतू सिंह कपूर बताती हैं, 'मुझे याद है, जब मैं उनके साथ काम करती थी, तो मैं उनके खाने को देखकर कहती थी, "क्या हुआ है शशि अंकल?"' 'वह एक संतरा और थोड़ा सा दही खाते थे। यही उनका दोपहर का भोजन होता था। और वह कहते थे, "अगर मैंने इससे ज़्यादा कुछ खाया तो मेरी पुट्टी मुझे मार डालेगी!"'
लेखक और फिल्म फाइनेंस कॉर्पोरेशन (FFC) के पूर्व प्रमुख अनिल धारकर—जो पहली बार शशि से बीबीसी (ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन) के रेडियो इंटरव्यू के दौरान मिले थे और जल्द ही उनके घनिष्ठ मित्र बन गए—भी अभिनेता की खान-पान की आदतों को याद करते हैं। ‘मुझे याद है जब शशि और जेनिफर पहली बार हमारे घर डिनर पर आए थे। शशि ने दूसरी बार खाना माँगा। लेकिन जब जेनिफर ने बहुत सख्ती से कहा, “शशि!” तो वह चुपचाप बैठ गए।’
फिर वो समय भी आता था जब शशि अनिल को दोपहर के भोजन पर बुलाती थीं। ‘मुझे राज कपूर के रसोइए द्वारा घी, नमक और मिर्ची के साथ तैयार किया गया एक खास तरह का मटन परोसा जाता था। इसे जंगली गोश्त कहते थे क्योंकि उस ज़माने में जब लोग शिकार पर जाते थे, तो वे कुछ ही सामग्रियाँ साथ ले जा सकते थे जिनसे एक लाजवाब व्यंजन बनता था! दिक्कत ये थी कि इसमें घी की अधिक मात्रा के कारण यह बहुत ही भारी होता था। इसलिए शशि मुझे फोन करके कहतीं, “देखो, जेनिफर शहर से बाहर है। चलो इसे साथ में खाते हैं।” मैं तुरंत वहाँ पहुँच जाती। हम दोनों जी भर के खाते और अगले दो दिन तक परेशान होते!’
लेकिन जब जेनिफर ने उनके खान-पान पर सख्त पाबंदियां लगाईं, तब भी शशि को शराब पीने का बहुत शौक था। नीतू सिंह कपूर कहती हैं, 'मुझे याद है, 'कभी कभी' की पार्टी बुखारा में हुई थी और हम सब वहां थे। शशि अंकल ने दो-तीन ड्रिंक्स पी लीं और और भी प्यारे हो गए। उनके चेहरे से मुस्कान हट ही नहीं रही थी। मैं उनसे कहती थी, "आप सबसे खुशमिजाज़ शराबी हैं जिन्हें मैं जानती हूं।" कुछ लोग कुछ ड्रिंक्स के बाद गुस्सा हो जाते हैं। लेकिन शशि अंकल तो और भी अच्छे इंसान बन जाते थे। एकदम मस्त! मुझे उनका ये अंदाज बहुत पसंद था।'

*

रविवार को नेपियन सी रोड स्थित कपूर परिवार पृथ्वी झोंपड़ा जाया करता था, जो जुहू के जानकी कुटीर इलाके में पृथ्वीराज कपूर का घर था। पृथ्वीराज के पड़ोसी कवि कैफी आज़मी थे। और एक व्यक्ति, विशेष रूप से, शशि कपूर के रविवार को आने पर बेहद उत्साहित हो जाती थी - कैफी की बेटी, शबाना आज़मी। उन्हें हिंदी फिल्म स्टार शशि कपूर पर बहुत बड़ा क्रश था। वह मुझे बताती हैं, 'मेरी मां (अभिनेत्री शौकत आज़मी) शशि को सात साल की उम्र से जानती थीं, क्योंकि उनका पृथ्वीराज कपूर और पृथ्वी थिएटर्स से जुड़ाव था। तो हां, परिवार बहुत करीब थे। मैं शशि की दीवानी थी। जब मैं लगभग बारह या तेरह साल की थी, तो मैं अपनी सारी पॉकेट मनी बचाकर हर हफ्ते ग्रांट रोड स्थित अपने स्कूल के पास एक विक्रेता से उनकी ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीरें खरीदती थी। जब शशि आते थे, तो मैं शर्माते हुए उन्हें तस्वीरें देती थी और वह उस पर मेरे लिए ऑटोग्राफ कर देते थे।' कई साल बाद, शबाना और शशि ने आठ फिल्मों में एक साथ काम किया।
1986 में, अपने राजनीतिक और सामाजिक सक्रियता के चरम पर, शबाना ने वृत्तचित्र निर्माता आनंद पटवर्धन के साथ भूख हड़ताल की। उनके संगठन, निवारा हक, ने कोलाबा की झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वालों के लिए वैकल्पिक आवास की मांग की, जिनके घरों को मंत्रियों के लिए छात्रावास बनाने के लिए ध्वस्त कर दिया गया था। हड़ताल के पांचवें दिन, शबाना का रक्तचाप गिरने लगा; चारों ओर अफरा-तफरी मची हुई थी। शशि तुरंत शबाना से मिलने पहुंचे और संगठन की मांगों को और गहराई से समझने की कोशिश की। फिर, वे महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री से मिलने गए। शबाना कहती हैं, 'उन्होंने मुख्यमंत्री से कहा, "जब आपको प्राकृतिक आपदाओं या संकटों से निपटने के लिए फिल्म उद्योग के समर्थन की आवश्यकता होती है, तो फिल्म उद्योग हमेशा आपके साथ खड़ा रहता है। फिर भी, जब हमारा एक प्रमुख सदस्य भूख हड़ताल पर जाता है, तो सरकार कोई ध्यान नहीं देती।"' तुरंत, मुख्यमंत्री ने राज्य के आवास मंत्री को फोन किया, जिन्होंने प्रदर्शनकारियों को बताया कि शशि के हस्तक्षेप के बाद, सरकार उनकी मांगों को मानने के लिए विवश हो गई।
शबाना कहती हैं, 'मैं मंच पर चढ़ गई। लेकिन इससे पहले कि मैं कह पाती, "निवारा हक शशि कपूर को धन्यवाद देना चाहता है", मैंने उन्हें चुपचाप कोलाबा की एक गली में गायब होते देखा। वह इसका श्रेय नहीं

लेना चाहते थे। ऐसी उदारता शशि कपूर की खासियत है।'
मुंबई की पत्रकार समीरा खान को भी शशि कपूर की दयालुता याद है। समीरा और उनके माता-पिता एटलस अपार्टमेंट्स, नेपियन सी रोड में कपूर परिवार के पड़ोसी थे। खान परिवार उस इमारत में एकमात्र मुस्लिम परिवार था। जनवरी 1993 में, मुंबई दंगों के दौरान, खान परिवार को अपनी जान बचाने के लिए भागना पड़ा। समीरा कहती हैं, 'हमें एटलस सोसाइटी से कोई मदद नहीं मिली और बेचैनी बढ़ती जा रही थी। जब हम दूर थे, सोसाइटी ने एक बैठक बुलाई और एक प्रस्ताव पारित किया कि अब से किसी भी मुस्लिम को इमारत में फ्लैट किराए पर लेने या खरीदने की अनुमति नहीं दी जाएगी। इसका पुरजोर विरोध करने और इमारत छोड़कर चले जाने वाले एकमात्र व्यक्ति शशि कपूर थे। हो सकता है कि उन्हें मैं या मेरा परिवार याद न हो, लेकिन जब भी मैं उनसे मिलती हूं, मुझे बेहद उम्मीद महसूस होती है।'

नोट्स

1. गुलज़ार, गोविंद निहलानी और सैबल चटर्जी (बॉम्बे: पॉपुलर प्रकाशन, 2003) द्वारा संपादित हिंदी सिनेमा के विश्वकोश में एक प्रविष्टि के अनुसार।

2. 1981, Kalyug, dir. Shyam Benegal prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Rekha, Raj Babbar.

3. फेलिसिटी केंडल, व्हाइट कार्गो (लंदन: माइकल जोसेफ, 1998), पृ. 157.

4. जेफ्री केंडल, द शेक्सपियर वॉलह: एक आत्मकथा (लंदन: सिडगविक एंड जैक्सन, 1986), पृ. 133.

5. फेलिसिटी केंडल, व्हाइट कार्गो (लंदन: माइकल जोसेफ, 1998), पृ. 157.

6. जेफ्री केंडल, द शेक्सपियर वॉलह: एक आत्मकथा (लंदन: सिडगविक एंड जैक्सन, 1986), पृ. 133.

7. मधु जैन, द कपूर: द फर्स्ट फैमिली ऑफ इंडियन सिनेमा (नई दिल्ली: पेंगुइन, 2005), पृ. 227.

8. फेलिसिटी केंडल, व्हाइट कार्गो (लंदन: माइकल जोसेफ, 1998), पृ. 163.

9. शम्मी कपूर, 'कपूर परिवार की वेबसाइट', <http://www.junglee.org.in/jennifer.html> में, 11 जनवरी 2015 को देखा गया।

10. फेलिसिटी केंडल, व्हाइट कार्गो (लंदन: माइकल जोसेफ, 1998), पृ. 172.

11. 1941, Sikandar, dir. Sohrab Modi, prod. Sohrab Modi, starring Prithviraj Kapoor, Sohrab Modi, Zahur Raja.

12. जेफ्री केंडल, द शेक्सपियर वॉलह: एक आत्मकथा (लंदन: सिडगविक एंड जैक्सन, 1986), पृ. 158.

13. 1976, Kabhi Kabhie, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Raakhee, Simi Garewal, Waheeda Rehman, Rishi Kapoor, Neetu Singh.

# 2

# चढ़ाई
# शशि और उनकी शुरुआती फिल्में

शशि कपूर की पहली फिल्म किसी मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शन में एक आकर्षक हीरो के रूप में नहीं, बल्कि एक व्यावसायिक फिल्म में एक गोल-मटोल किशोर के रूप में थी। उनके बड़े भाई राज कपूर द्वारा निर्देशित प्रसिद्ध भारतीय फिल्म 'आवारा' में, शांत चेहरे वाले शशि कपूर - जो पहले से ही अपने वयस्क रूप का भोलापन और आकर्षण दिखा रहे थे - ने राज द्वारा निभाए गए किरदार के युवा संस्करण की भूमिका निभाई। फिल्म रिलीज के समय शशि तेरह वर्ष के थे, जबकि राज सत्ताईस वर्ष के थे। इस फिल्म में उनके पिता पृथ्वीराज कपूर ने एक न्यायाधीश की भूमिका निभाई थी, जो अपनी गर्भवती पत्नी को छोड़कर भाग जाता है, क्योंकि उसे अपहरण करने वाले डाकू ने उसके साथ बलात्कार किया था।
स्पष्ट रूप से, आवारा की कहानी राम-सीता-रावण की कथा से काफी मिलती-जुलती थी, जिसमें भरपूर मेलोड्रामा और अतिशयोक्ति थी। इसका कथानक भी सनक और संयोग पर आधारित था—युवा शशि का किरदार अपनी प्रेमिका को खो देता है, और वयस्क होने पर उससे फिर मिलता है; उसे जग्गा डाकू गोद ले लेता है, वही आदमी जिसने कभी उसकी माँ का अपहरण किया था!
हालांकि शशि को उस दौर की कुछ अन्य फिल्मों में छोटी भूमिकाएँ निभाने का श्रेय दिया जाता है, लेकिन आवारा ही वह फिल्म है जिसे उनके प्रशंसक बार-बार देखते हैं—उस बाल कलाकार की मोहक आँखों के लिए, साथ ही साथ मनमोहक गीतों और राज और रीता (नरगिस द्वारा अभिनीत) के बीच के भावुक प्रेम दृश्यों के लिए। इसलिए, इसे शशि की 'लॉन्च' फिल्म के रूप में पहचाना जाता है—क्योंकि उस समय से ही युवा अभिनेता अपार प्रतिभा के संकेत दे रहे थे, अभिनय में उनकी प्रतिभा और अभिनय की गहरी क्षमता झलक रही थी।

*

जब शशि कपूर ने वयस्क होकर भारतीय फिल्म उद्योग में कदम रखने का फैसला किया, तो इसके पीछे कोई स्वप्निल कारण नहीं थे; उन्हें अपने परिवार का भरण-पोषण करना था। शशि कपूर ने भारतीय सिनेमा की लेखिका और प्रोफेसर राहेल ड्वायर को उनकी पुस्तक के लिए दिए एक साक्षात्कार में बताया, 'मैं पैसे के लिए एक अभिनेता के रूप में फिल्मों में आया था। मुझे रंगमंच पसंद था, लेकिन उसमें पैसा नहीं था।' कुणाल कपूर भी इस बात की पुष्टि करते हैं: 'मेरे जन्म के बाद, मेरे पिता को एहसास हुआ कि उन्हें अपने परिवार की मनचाही जीवनशैली को बनाए रखने के लिए अपनी आय में वृद्धि करनी होगी। आप जानते हैं, माँ बहुत किताबें पढ़ती थीं - और जैसा कि हम जानते हैं, किताबें महंगी होती हैं!'
एक बार जब शशि को फिल्म उद्योग में शामिल करने का फैसला हो गया, तो असली संघर्ष शुरू हुआ। शशि का पारिवारिक संबंध प्रतिष्ठित था—वे फिल्म जगत के अग्रणी अभिनेता पृथ्वीराज कपूर के पुत्र और पहले से ही विख्यात अभिनेता शम्मी कपूर और राज कपूर के भाई थे—लेकिन फिल्म जगत में उनका अनुभव सीमित था। मुंबई में फिल्म में काम की तलाश कर रहे हजारों लोगों की तरह, शशि को भी निर्देशकों और स्टूडियो से मिलने, अपने पोर्टफोलियो की तस्वीरें बांटने और व्यस्त निर्माताओं की नजर में आने के लिए कॉफी शॉप के बाहर घंटों बिताने पड़ते थे।
आखिरकार, शशि को अपना पहला मौका मिला। उन्हें एक सामाजिक नाटक, 'चार दीवारी' में अभिनय करने के लिए कहा गया, जिसमें नंदा मुख्य अभिनेत्री थीं। नंदा शशि से एक साल छोटी थीं, लेकिन तब तक वह घर-घर में जानी-मानी हस्ती और बड़ी फैन फॉलोइंग वाली स्टार बन चुकी थीं, क्योंकि उन्होंने पच्चीस से अधिक फिल्मों में अभिनय किया था, जिनमें 'धूल का फूल' और 'कानून' जैसी कुछ बड़ी हिट फिल्में शामिल थीं। कहानी यह है कि फिल्म जगत की स्टार नंदा ने नए अभिनेता शशि के साथ काम करने का फैसला राज

के कहने पर किया था। राज ने भाई होने के नाते नंदा से शशि का ध्यान रखने को कहा, क्योंकि वह उनकी 'वरिष्ठ' थीं। नंदा ने बाद में बातचीत का ब्यौरा देते हुए बताया: 'राज ने मुझसे कहा, "[शशि] मेरा भाई नहीं है। वह मेरा बेटा है। [अभिनय] उसके लिए एक बिल्कुल नया अनुभव है।"'
चार दीवारी बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाई, हालांकि इसमें सलिल चौधरी द्वारा रचित मधुर संगीत था—जिसमें मुकेश द्वारा गाया गया सदाबहार गीत 'कैसे मनाऊं पियावा' भी शामिल था। इसके तुरंत बाद, शशि ने नंदा के साथ दो और फिल्मों में अभिनय किया—मेहंदी लगी मेरे हाथ और मोहब्बत इसको कहते हैं। दोनों फिल्में फ्लॉप रहीं।
ऐसा लग रहा था मानो शशि और नंदा दोनों का करियर जल्द ही खत्म होने वाला था। लेकिन फिर आया साल 1965, और फिल्म 'जब जब फूल खिले' - कश्मीर में रची गई एक प्रेम कहानी। वर्ग सीमाओं को तोड़ने का इसका अनूठा विषय (उस समय के हिसाब से) और इसके बेहद लोकप्रिय गाने (जिनमें 'परदेसियों से ना अंखियां मिलानी' और 'ना ना करते प्यार' शामिल हैं) ने दर्शकों का दिल जीत लिया। फिल्म अप्रत्याशित रूप से हिट हो गई, और अचानक शशि और नंदा की खूब मांग होने लगी! इस जोड़ी ने 1960 के दशक में कुल आठ फिल्मों में साथ काम किया।
एक अनिश्चित शुरुआत के बाद, 1960 के दशक के उत्तरार्ध ने शशि के करियर को मजबूती से स्थापित किया। अभिनेता ने कई फिल्मों में अभिनय किया (नंदा के साथ वाली फिल्मों के अलावा) - आशा पारेख के साथ 'प्यार का मौसम' और कॉमेडी फिल्म 'प्यार किए जा', जिसमें अट्ठाईस वर्षीय अभिनेता ने अपने जोशीले भाई शम्मी को भी मात दे दी, और 'कहने की नहीं बात' गाने पर बेहद सहज और ऊर्जावान नृत्य किया, जिसमें उनका मशहूर ट्विस्ट भी शामिल था। गाने की कहानी - और वास्तव में, पूरी फिल्म की - पूरी तरह से हास्यास्पद है, लेकिन यह उस तरह का बेतुका मनोरंजन है जो अभिनेताओं से बहुत अपेक्षा रखती है। शशि ने इस चुनौती को बखूबी निभाया और उन्हें देखना आज भी आनंददायक है।
फिर प्रकाश मेहरा की पहली फीचर फिल्म, हसीना मान जाएगी—एक और बेतरतीब लेकिन हानिरहित फिल्म—जिसमें शशि ने बबीता के साथ अभिनय किया (जिन्होंने दो साल बाद उनके भतीजे रणधीर कपूर से शादी की)। फिल्म में जॉनी वॉकर और अमीता अभिनीत हास्यप्रद गाने हैं; कल्याणजी-आनंदजी द्वारा रचित गीतों से भरपूर है—जिनमें यादगार 'चले थे साथ मिलके' और बेहद रोमांटिक 'बेखुदी में सनम' शामिल हैं; और उभरते सितारे शशि को एक अनोखी दोहरी भूमिका में प्रस्तुत करती है—वह कमल और राकेश दोनों हैं। इतना ही नहीं। एक प्रफुल्लित करने वाले और चतुराई से कोरियोग्राफ किए गए गीत, 'सुनो सुनो' में, शशि के एक किरदार को, दुनिया में मौजूद महिलाओं के प्रकारों पर अपने शोध के निष्कर्षों का वर्णन करते हुए, महिला के कपड़े पहनाए जाते हैं; फिल्म में एक शानदार दृश्य है जहां शशि तवायफ की पोशाक पहनकर हिंदी फिल्मों के हिट गानों की पैरोडी पर नाचते हैं। इस गाने के सीक्वेंस में शशि इतने ऊर्जावान हैं—दौड़ते-भागते, उछलते-कूदते और अपने पैरों को इतनी कुशलता से चलाते हैं—कि शम्मी की फिल्में 'जंगली', 'प्रोफेसर' और 'जीनवर' याद आ जाती हैं—बस फर्क इतना है कि शशि का लचीला शरीर उन्हें अपने भाई से कहीं ज्यादा फुर्तीला और लचीला बनाता है! यह मानना पड़ेगा कि 'हसीना मान जाएगी' एक साधारण फिल्म है—यह समझाने की कोई कोशिश नहीं करती कि दोनों शशि एक जैसे क्यों दिखते हैं; कहानी में कोई ऐसा मोड़ नहीं लाती जिससे पता चले कि कमल और राकेश बिछड़े हुए जुड़वां भाई हैं; और हमें यह विश्वास दिलाती है कि हमशक्लों के अस्तित्व का एकमात्र कारण एक बेहद उलझन में पड़ी नायिका को और भी ज्यादा परेशान करना है। लेकिन गाना 'सुनो सुनो' शशि के प्रशंसकों के लिए एक खास तोहफा है।

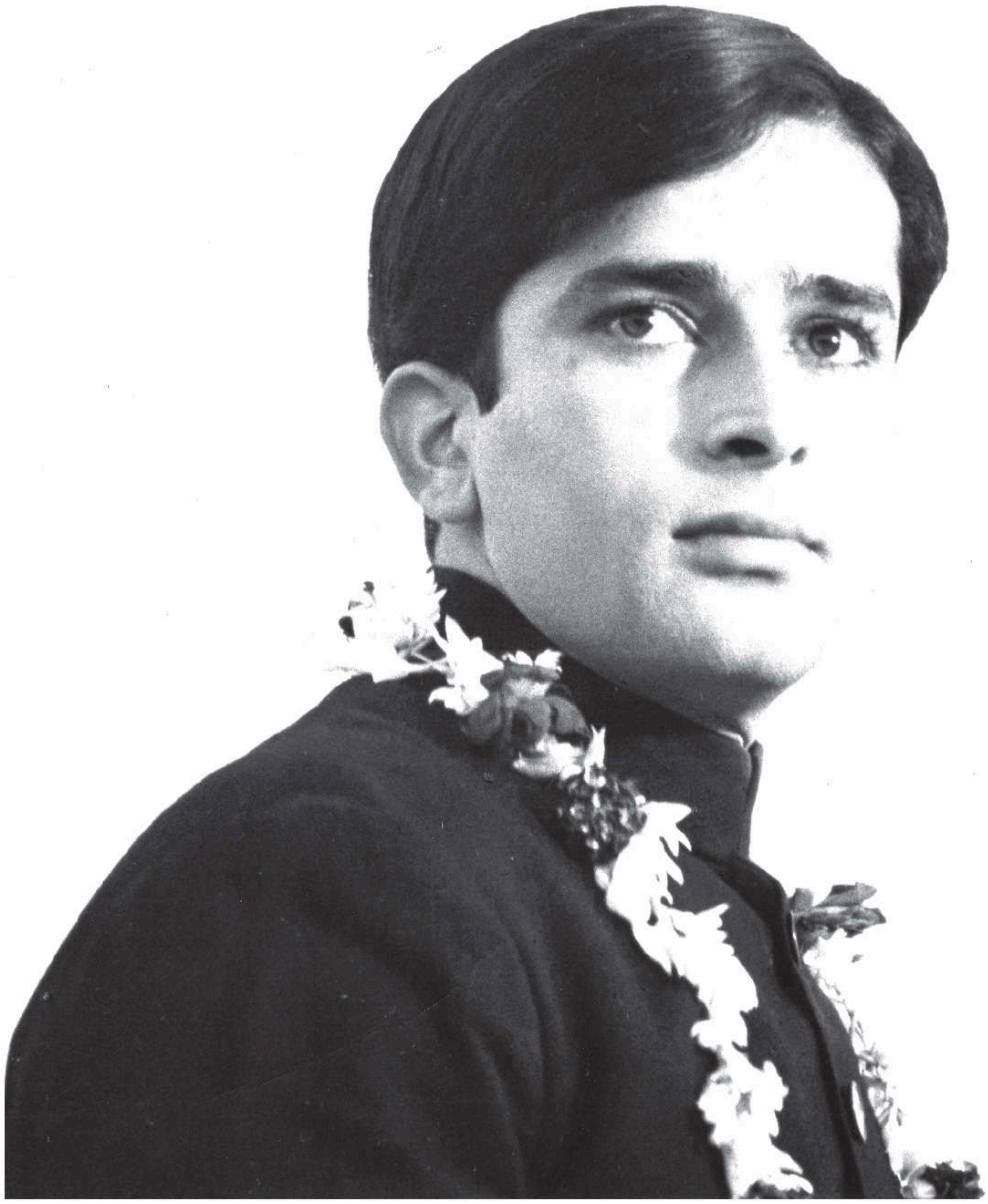

शशि कपूर: एक उभरता सितारा। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

यदि 1960 का दशक शशि के जीवन में एक महत्वपूर्ण दशक था, तो इसका एक कारण यह भी था कि इस अवधि ने उनके जीवन में तीन अन्य संबंधों को भी परिभाषित किया - फिल्म निर्माता यश चोपड़ा के साथ, जो शशि के घनिष्ठ मित्र बन गए; अभिनेत्री शर्मिला टैगोर के साथ, जिन्होंने बंगाली क्लासिक्स से पूरी तरह से व्यावसायिक फिल्मों की ओर कदम बढ़ाना शुरू कर दिया था; और दिग्गज निर्देशक बिमल रॉय के साथ, जिन्होंने अभिनेता को दो फिल्मों में कास्ट किया (हालांकि दोनों बॉक्स ऑफिस पर असफल रहीं)।

## यश चोपड़ा की शुरुआती फिल्में

यश चोपड़ा की शशि कपूर से पहली मुलाकात, संभवतः 1950 के दशक के अंत में हुई थी, जो अप्रत्याशित और आश्चर्यजनक रूप से संक्षिप्त थी। कहा जाता है कि यश ने शशि को बॉम्बे के चर्चगेट इलाके में स्थित मशहूर रेस्तरां गेलार्ड्स के पास देखा, जहां कभी संघर्षरत अभिनेता अक्सर जाया करते थे। युवा शशि के आकर्षण और अच्छे रूप से प्रभावित होकर, प्रसिद्ध निर्देशक ने उन्हें अपने यहां आमंत्रित किया। संक्षिप्त बातचीत के बाद—जिसमें शशि ने स्वाभाविक रूप से अपने पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में बताया—यश ने उभरते अभिनेता को अपने भाई बी.आर. चोपड़ा के कार्यालय, करदार स्टूडियो जाने की सलाह दी, जिसे

शशि ने बिना देरी किए मान लिया। कहा जाता है कि यहाँ यश ने अपने भाई द्वारा निर्मित की जाने वाली अपनी नई फिल्म की कहानी चकित शशि को सुनाई। इस तरह धर्मपुत्र को अपना सितारा मिला।
सामाजिक चेतना से भरपूर फिल्म 'धूल का फूल' की अपार सफलता के तुरंत बाद, यश की दूसरी फिल्म 'धर्मपुत्र', जो आचार्य चतुरसेन शास्त्री के उपन्यास पर आधारित थी, ने नव स्वतंत्र भारत में हिंदू-मुस्लिम संघर्ष के जटिल परिदृश्य को एक युवा मुस्लिम दंपति की कहानी के माध्यम से उजागर करने का विकल्प चुना; यह जोड़ा अपने नाजायज बच्चे को हिंदू दोस्तों के पास छोड़ देता है, लेकिन वर्षों बाद उन्हें पता चलता है कि उनका मुस्लिम बेटा अब एक कट्टरपंथी हिंदू बन चुका है।
फिल्म रिलीज के समय तेईस साल के शशि ने एक अति उत्साही हिंदू की चुनौतीपूर्ण भूमिका निभाई, जिसे अपनी जैविक जड़ों के बारे में कुछ भी पता नहीं था। अपने किरदार को लेकर परेशान होने के साथ-साथ, शशि को हिंदी सिनेमा की परंपराओं से भी जूझना पड़ा। राहेल डवायर के साथ एक साक्षात्कार में, शशि ने यश की वाचालता (जो अक्सर पत्रकारों के निर्देशक से मिलने पर भी एक मुद्दा बन जाती थी) के बारे में बताया: कैसे एक विषय दूसरे में उलझ जाता था; और अंत में, निर्देशक और अभिनेता के बीच मतभेद हो गए। हिंदी सिनेमा के अनिच्छुक सितारे शशि के मन में अभी भी युवावस्था के आदर्श थे—उनमें से एक यह था कि वे फिल्मों में गाने नहीं गा सकते थे; दूसरी ओर, यश उस फॉर्मूले को बदलने को तैयार नहीं थे जो पहले से ही सफल था। 'मैंने अपने किरदार को बहुत गंभीरता से लिया,' शशि ने राहेल से स्वीकार किया। अंततः, 'परिष्कृत और पश्चिमी' अभिनेता को अपने निर्देशक के आदेश के आगे झुकना पड़ा। 'एक गाना क्रांतिकारी था,' शशि ने अपने साक्षात्कार में कहा, 'और एक रोमांटिक।'
रोमांटिक गीत, 'भूल सकता है भला कौन'—जो कि मुख्य कहानी में एक छोटा, लेकिन दिल को छू लेने वाला मोड़ है—में शशि द्वारा अभिनीत दिलीप राय, महेंद्र कपूर की शांत, स्वप्निल आवाज़ में अपनी प्रेमिका मीना (इंद्राणी मुखर्जी द्वारा अभिनीत) के लिए गाते हैं, जो उनके सामने बैठी हैं। शशि ने पतली मूंछें रखी हैं—जो उन्हें और भी आकर्षक बनाती हैं—और अपने किरदार द्वारा लिखी गई प्रेम कविता सुनाते हैं; फिल्म के ब्लैक एंड व्हाइट दृश्यों से इस दृश्य की सुंदरता और भी बढ़ जाती है।
धर्मपुत्र—जिसे बाद में सर्वश्रेष्ठ हिंदी फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार (1961) मिला—बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप रही, शायद इसलिए कि विभाजन के तुरंत बाद एक युवा राष्ट्र को बांटने वाले धार्मिक विभाजन की कहानी में दर्शकों की दिलचस्पी नहीं थी। फिल्म की असफलता बी.आर. चोपड़ा के लिए एक बड़ा नुकसान साबित हुई, जिनके बैनर तले पहले कई सफल फिल्में बनी थीं।
बॉक्स ऑफिस के नतीजों को छोड़ दें तो, धर्मपुत्र फिल्म ने यश, शशि और देवेन वर्मा के बीच गहरी दोस्ती को और मजबूत किया। देवेन वर्मा ने फिल्म में नायक के छोटे भाई का किरदार निभाया था। बाद में, पामेला चोपड़ा के अनुसार, जब देवेन के परिवार ने रूपा गांगुली (अशोक कुमार की बेटी) से शादी का कड़ा विरोध किया, तो शशि और यश ने देवेन की शादी में मदद की।
शशि और यश की दोस्ती को कैसे समझाया जा सकता है? राहेल के अनुसार, उनकी दोस्ती उनके पृष्ठभूमि से प्रेरित थी। 'जेनिफर की पश्चिमी शैली के बावजूद शशि पूरी तरह पंजाबी थीं। ऐसी 'पंजाबीपन' कपूर परिवार और चोपड़ा परिवार की पहचान थी; यह खान-पान, जीवनशैली और सामाजिकता में स्पष्ट थी। अगर शशि और यशजी के बीच कोई मतभेद था, तो वह इसलिए था क्योंकि यशजी शराब नहीं पीते थे।'
राहेल आगे कहती हैं कि यश और शशि और जेनिफर कला में अपनी रुचि साझा करते थे—जो व्यावसायिक हिंदी सिनेमा के दायरे से कहीं आगे थी। 'यश जी आईपीटीए (इंडियन पीपुल्स थिएटर एसोसिएशन) के आजीवन सदस्य थे और रंगमंच के बहुत बड़े प्रशंसक थे,' वह कहती हैं। 'लोग हमेशा सोचते हैं कि पाम और वह फिल्मी थे, लेकिन मैंने उनके साथ कई कम चर्चित फिल्में और आर्ट हाउस सिनेमा देखे हैं। ऐसी जिज्ञासा ही इस दंपत्ति की पहचान थी।' शायद यही कारण है कि शशि राहेल से कहती हैं, 'वह [यश] इस्माइल मर्चेंट और [जेम्स] आइवरी के अलावा एकमात्र निर्देशक थे जिनकी फिल्में जेनिफर घर पर दिखाती थीं।'
धर्मपुत्र की असफलता के बावजूद, बी.आर. चोपड़ा ने अपने भाई यश को वक्त के साथ एक और मौका दिया—यह बैनर की पहली रंगीन फिल्म थी और इसमें कई बड़े सितारे भी थे। फिल्म में, एक सफल व्यापारी, लाला केदारनाथ (बलराज साहनी), एक विनाशकारी भूकंप (1935 में क्वेटा में आए भीषण भूकंप का संदर्भ) के बाद अपने परिवार—अपनी पत्नी और तीन छोटे बेटों—से बिछड़ जाता है। बेटे अलग-अलग बड़े होते हैं और उनका जीवन बिल्कुल अलग होता है—एक शातिर चोर बन जाता है, दूसरा ऐशो-आराम और विशेषाधिकार की दुनिया में खो जाता है, और तीसरा कम से कम शुरुआत में, कड़ी मेहनत और लगन के सीधे रास्ते पर चलता है। उनके जीवन प्रेम प्रसंगों के माध्यम से जुड़ते हैं, और अंत में, एक भावुक दृश्य में—जो दिल को छू लेने वाला है—परिवार अदालत में फिर से एक हो जाता है।
कहानी की संरचनात्मक जटिलता को देखते हुए, फिल्म में कलाकारों की एक विशाल श्रृंखला है! सबसे बड़े बेटे—गुंडे राजू—का किरदार राज कुमार ने निभाया है, जिन्हें यह लोकप्रिय डायलॉग बोलने का मौका मिलता है: 'चेनॉय सेठ, जिनके अपने घर शीशे के हों वो दूसरों के घरों पर पत्थर नहीं फेंकते।' ('चेनॉय सेठ, जिनके घर काँच के बने होते हैं वे दूसरों के घरों पर पत्थर नहीं फेंकते।') मंझले बेटे—समृद्ध वकील रवि—का किरदार सुनील दत्त ने निभाया है, जबकि शशि सबसे छोटे बेटे मुन्ना के रूप में हैं—जो अपनी माँ का सहारा बनने के लिए ड्राइवर बन जाता है, और फिर उसे एक गंभीर बीमारी से ठीक करने के लिए संदिग्ध विकल्प चुनने के लिए मजबूर हो जाता है। प्रेम प्रसंगों की बात करें तो, अचला सचदेव केदारनाथ की पत्नी लक्ष्मी की भूमिका निभाती हैं (और बलराज साहनी द्वारा अभिनीत केदारनाथ उनके लिए मन्ना डे का अविस्मरणीय गीत 'ऐ मेरी ज़ोहरा जबीन' गाते हैं); साधना मीना का किरदार निभाती हैं—रवि की प्रेमिका—

लॉकेन राज उन पर मोहित हो जाता है; और पहली बार शाश को शामेला टैगोर के साथ कास्ट किया गया है, जो अपनी पहली हिंदी फ़िल्म कश्मीर की कली की सफलता के बाद चर्चा में हैं।
वक्त न केवल बॉक्स ऑफिस पर बड़ी हिट साबित हुई, बल्कि उद्योग जगत के लिए एक मानक भी बन गई। भव्य सेट; आधुनिक गाड़ियाँ; आकर्षक और फैशनेबल कपड़े पहने सितारे; मनमोहक गाने; और साथ ही, अप्रत्याशित परिस्थितियों के कारण बिछड़े परिवारों से जुड़ी अनगिनत उपकथाएँ खूब लोकप्रिय हुईं। 1970 और 1980 के दशक में, हिंदी फ़िल्म उद्योग ने ऐसी कई कहानियाँ गढ़ीं, और इन फ़िल्मों में हमेशा उस समय के शीर्ष सितारे शामिल होते थे—जिनमें कई बार शशि सान्निध्य भी शामिल थे।

## शर्मिला टैगोर की शुरुआती फिल्में

शर्मिला टैगोर को शशि कपूर से अपनी पहली मुलाकात याद है—जब वे शक्ति सामंता की फिल्म 'कश्मीर की कली' के सेट पर आए थे। शशि अपने भाई शम्मी कपूर से मिलने आए थे, जो फिल्म में मुख्य भूमिका निभा रहे थे। शर्मिला बताती हैं, 'जेनिफर (केंडल कपूर) और शशि ने 'अपुर संसार' देखी थी और उन्हें मेरा अभिनय पसंद आया था। मैंने शशि को 'प्रेम पत्र' में देखा था। और मैं उन पर मोहित हो गई थी! उसमें वे बहुत ही आकर्षक थे। मुझे बस इतना याद है कि फिल्म में वे अंधे थे। और एक दृश्य में जब साधना साड़ियाँ तह कर रही थीं, तब शशि कुर्सी पर बैठे बेहद खूबसूरत लग रहे थे।'
कश्मीर की कली के सेट पर शशि कपूर के अचानक आने से अठारह वर्षीय शर्मिला घबरा गई थीं। “हम ‘इशारों इशारों में दिल लेनेवाले’ गाने की शूटिंग कर रहे थे और मैंने मन ही मन सोचा, ‘हे भगवान! ये शशि कपूर हैं!’ और मैं काम नहीं कर पाई। आखिरकार शक्ति ने उन्हें जाने के लिए कहा।”
जब तक वक्त फिल्म फाइनल हुई, शर्मिला, जो उम्र में थोड़ी बड़ी और अनुभवी थीं, युवा अभिनेता के साथ काफी सहज हो गई थीं। इसके अलावा, बॉक्स ऑफिस की मांग के चलते शर्मिला और शशि की रोमांटिक जोड़ी जरूरी थी। शर्मिला कहती हैं, 'जब वक्त फिल्म का प्रस्ताव आया, तो हमें युवा पीढ़ी का ध्यान मिला। हमने निश्चित रूप से एक जरूरत को पूरा किया और इसमें सफल भी रहे। एक सीन है जिसमें हम नाव पर "दिन है बहार के" गाना गाते हैं और मेरे कपड़ों तक की हर चीज़ की सराहना की गई।'
शशि और शर्मिला एक युवा प्रेम-प्रसंग के प्रतीक बन गए—ठीक वैसे ही जैसे एक दशक बाद ऋषि कपूर और नीतू सिंह की जोड़ी बनी—और यह जोड़ी न केवल यश चोपड़ा की बहु-सितारा फिल्मों में बल्कि कई अन्य फ़िल्मों में भी एक आम बात बन गई। परिणामस्वरूप, शर्मिला और शशि दस फिल्मों में एक साथ दिखाई दिए, जिनमें आमने सामने, सुहाना सफर, आ गले लग जा और राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता नई दिल्ली टाइम्स शामिल हैं।
ये दोनों न सिर्फ लोकप्रिय सह-कलाकार बने, बल्कि एक-दूसरे से सीखते हुए साथ-साथ आगे बढ़े। शर्मिला कहती हैं, 'शशि मुझे अक्सर चिढ़ाते थे क्योंकि मैं सेट पर निर्देशकों से बहुत बहस करती थी। हर बार, वह मुझे याद दिलाते थे कि काम पर ध्यान दो—झगड़ा मत करो, बस करो! यही मैंने उनसे सीखा है। जब आप पैसे के लिए या किसी दोस्त की मदद के लिए फिल्म कर रहे हों, तो अपने मकसद को लेकर स्पष्ट रहें और फिर जो करना है उसे पूरा करें। जब आप सेट पर आते हैं, और स्क्रिप्ट या निर्देशक की सीमाओं से अवगत होते हैं, तो असंभव की उम्मीद न करें।'
शर्मिला शशि की कार्यशैली की भी सराहना करने लगीं। शर्मिला कहती हैं, 'वह हमेशा अपने निर्देशक की बात सुनते थे और हमेशा समय पर सेट पर आते थे।' उनका इशारा इस बात की ओर था कि उन्होंने 1960 के दशक के मशहूर अभिनेता राजेश खन्ना की फिल्मों में काम करना इसलिए बंद कर दिया था क्योंकि वह अक्सर देर से आते थे। 'और हां, उनके बाद सबसे आखिर में आने वाले (अमिताभ) बच्चन होते थे।'
शर्मिला को सबसे ज़्यादा शशि का हर अच्छे-बुरे समय में भी हास्यबोध याद आता है। वह कहती हैं, 'हम 'सुहाना सफर' की शूटिंग कर रहे थे, और एक सीन था जिसमें मुझे ढलान पर गाड़ी चलानी थी और शशि को रास्ते से हट जाना था। लेकिन कुछ गड़बड़ हो गई—मैं क्लच और ब्रेक पर काबू नहीं रख पाई और गाड़ी एक नाले में जा घुसी। रिफ्लेक्टर पकड़े बेचारा लाइटमैन गिर गया, लेकिन शशि बाल-बाल बच गए। बाद में उन्होंने मज़ाक में कहा, "अगर तुमने ऐसा दोबारा किया, तो जेनिफर तीन बच्चों के साथ तुम्हारे पास आएगी और कहेगी कि उसके पास दूध के लिए पैसे नहीं हैं!" वह हमेशा मज़ाक करते थे, और फिर भी विनम्र और सम्मानजनक बने रहते थे।'
बीते वर्षों में शशि और शर्मिला के परिवार—उनके जीवनसाथी और बच्चे—एक-दूसरे के बहुत करीब आ गए। यह बात मददगार साबित हुई कि दोनों परिवार दक्षिण मुंबई में रहते थे, हिंदी फिल्म उद्योग के शोर-शराबे और चकाचौंध से दूर। यह भी मददगार रहा कि फिल्म निर्माण के वर्षों में शशि और शर्मिला के बीच एक ऐसा रिश्ता बन गया था जो गर्मजोशी भरा और शरारती भी था। शर्मिला कहती हैं, 'जब मैं टाइगर (उनके भावी पति और क्रिकेटर, पटौदी के नवाब) से मिली, तब तक मुझे एक साथ "अलविदा" और "खुदा हाफ़िज़" कहने की आदत पड़ चुकी थी। और शशि मुझे चिढ़ाते हुए कहते थे, "आधा उसका है और आधा मेरा!" मेरे दिल में शशि के लिए हमेशा एक खास जगह थी। मुझे उनकी पलकें याद हैं।'

## बिमल रॉय फिल्म्स

1950 के दशक के उत्तरार्ध में, शशि कपूर की मुलाकात फिल्मफेयर द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में दिग्गज फिल्म निर्माता बिमल रॉय से हुई, जो दो बीघा ज़मीन, मधुमती, और सुजाता जैसी क्लासिक फिल्मों के लिए जाने जाते थे। शशि कपूर बिमल को बचपन से जानते थे, और इस मुलाकात के बाद उन्हें मोहन स्टूडियो में निर्देशक से मिलने का निमंत्रण मिला।
जब शशि पहुंचे, तो उन्होंने फिल्म निर्माता के कई सहायकों (और भावी निर्देशकों) - गुलज़ार, हृषिकेश मुखर्जी और बासु भट्टाचार्य (जिन्होंने बाद में बिमल की बेटी रिंकी से शादी की, जिससे बिमल बेहद नाराज़ हुए) - को अपने कार्यालय के बाहर पाया। शशि ने धर्मेंद्र को भी देखा - जो उस समय, उनकी ही तरह, एक संघर्षरत अभिनेता थे। खबर थी कि बिमल अपनी दो फिल्मों - प्रेम पत्र और बंदिनी - के लिए कलाकारों का चयन कर रहे थे, और शशि ने अनुमान लगाया कि धर्मेंद्र और उनका नाम भी इन फिल्मों की दौड़ में शामिल हो सकता है।
जब उन्हें बुलाया गया, तो शशि घबराते हुए बिमल से मिलने के लिए एक कमरे में गए। निर्देशक सीधे मुद्दे पर आए और बंगाली लहजे से भरी हिंदी में बोले: 'शशिबाबू...एक पिक्चर बनाएगा...मुझे आपकी ज़रूरत है।'
शशि तो ज़ाहिर तौर पर बहुत खुश था। उसे पता नहीं था कि उसे दोनों में से किसे फिल्म में काम मिलेगा—लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। उसे जो भी मिलता, वह उससे संतुष्ट था।
पता चला कि शशि—जिन्हें रोमांटिक भूमिकाओं के लिए उपयुक्त माना जाता था—को प्रेम पत्र में भूमिका मिल गई। और धर्मेंद्र ने अंततः बंदिनी में सहायक भूमिका निभाई। अगर बिमल ने कास्टिंग उलट दी होती तो क्या होता? अगर धर्मेंद्र ने दृष्टिबाधित अरुण की भूमिका निभाई होती और शशि उस दयालु जेल डॉक्टर की भूमिका में होते जिसका प्यार अधूरा रह जाता? कोई केवल अनुमान ही लगा सकता है कि अभिनेताओं का कैरियर कितना अलग होता...
खैर, कास्टिंग का फैसला लेने के कुछ समय बाद, बिमल ने शशि से पूछा कि वह इस भूमिका के लिए कितने पैसे चाहते हैं। यह एक अजीब सवाल था, लेकिन शशि ने उन्हें बताया कि बी.आर. और यश चोपड़ा उन्हें 'धर्मपुत्र' के लिए 25,000 रुपये दे रहे हैं। एक लेख में शशि लिखते हैं: 'वह हैरान हुए और पूछा, "क्या वे आपको इतना पैसा देंगे?" मैंने कहा, "हां, वे बड़े निर्माता हैं।" उन्होंने जवाब दिया, "ठीक है, मैं भी आपको उतना ही दूंगा।"' और इसी के साथ शूटिंग शुरू हो गई।
प्रेम पत्र एक शांत ढंग से बनी फिल्म है—यह दो मेडिकल छात्रों, अरुण (शशि कपूर) और कविता (साधना) की कहानी है, जो एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं, लेकिन एक प्रेम पत्र से जुड़ी गलतफहमी के कारण उनका रिश्ता टूट जाता है। अरुण की सगाई सरोज (सीमा देव) से हो जाती है, जो अनजाने में कविता की चचेरी बहन है। इससे दिखावे और वास्तविकता, यानी जो दिखता है और जो है, के बीच एक बड़ा संघर्ष शुरू हो जाता है—और कहानी का अंत तब होता है जब अरुण अंधा हो जाता है।
बिमल रॉय गलतफहमियों को सुलझाने में समय लेते हैं—जिसकी वजह से फिल्म थोड़ी लंबी लग सकती है। लेकिन सलिल चौधरी के मधुर संगीत ('ये मेरे अंधेरे उजाले ना होते', 'दो अखियां झुकी झुकी' जैसे गाने) और शानदार अभिनय से कहानी में जान आ जाती है—ब्लैक एंड व्हाइट सिनेमैटोग्राफी उन्हें हर फ्रेम में जीवंत कर देती है। शशि विशेष रूप से आकर्षक लगते हैं, पहले अपनी करीने से कटी मूंछों में और बाद में काले चश्मे में चलते हुए। लेकिन अभिनेता की अन्य शुरुआती फिल्मों की तरह, प्रेम पत्र बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप रही।
हालांकि, इस फैसले से बिमल निराश नहीं हुए। जैसा कि शशि याद करते हैं, बिमल को प्रेम पत्र की असफलता का पछतावा था और वे अक्सर अभिनेता से कहते थे, 'फिर से तुमको लेगा...हम साथ काम करेंगे। तुम अभी भी बिमल रॉय प्रोडक्शंस में हमारे ही एक सदस्य हो।'
अपने वादे के मुताबिक, बिमल ने शशि को एक बार फिर कास्ट किया—इस बार, बिमल के बैनर तले बनी और एस. खलील द्वारा निर्देशित फिल्म बेनज़ीर में। इस बार भी, शशि को मिलने वाली फीस को लेकर एक अजीब सी बातचीत हुई। शशि लिखते हैं, 'मैंने [बिमल] से कहा कि मुझे पैसों की ज़रूरत है। मुझे अपने भाइयों या किसी और से कोई आर्थिक मदद नहीं मिल रही थी, मेरा परिवार था, और अल्टामाउंट रोड स्थित ओलंपस में रहना महंगा था।' तब शशि ने बिमल को बताया कि उन्हें वक्त फिल्म में अभिनय के लिए 1,00,000 रुपये मिल रहे थे—एक बार फिर बी.आर. चोपड़ा के बैनर को ही बेंचमार्क मान लिया। शशि याद करते हैं: '[बिमल] ने कहा, "मुझे विश्वास नहीं हो रहा," और मैंने उनसे इसकी पुष्टि करने को कहा। उन्होंने कहा, "नहीं, मैं तुम्हें उतना ही भुगतान करूंगा...बस।"'
लखनऊ में घटित होने वाली और 'मुस्लिम सामाजिक' शैली की फिल्म बेनज़ीर में शशि, अशोक कुमार के नवाब के छोटे भाई अनवर की भूमिका निभाते हैं। कहानी यह है कि दोनों भाई अलग-अलग समय पर बेनज़ीर से प्रेम करने लगते हैं, जो एक थिएटर अभिनेत्री और नर्तकी हैं, जिनका किरदार मीना कुमारी ने निभाया है। जब दोनों भाइयों के एक ही महिला से संबंध उजागर होते हैं, तो ईर्ष्या और गलतफहमियां पैदा हो जाती हैं। बेनज़ीर एक खूबसूरती से गढ़ी गई कहानी है, और बिमल रॉय के दूसरे पसंदीदा संगीतकार, एस.डी. बर्मन (उनके पसंदीदा सलिल चौधरी थे), इसे 'दिल में एक जाने तमन्ना' जैसे गीतात्मक गीतों से और भी अधिक काव्यात्मक बना देते हैं, जिसमें शशि के अनवर मोहम्मद रफी की आवाज में गाते हैं। बेनज़ीर के निर्माण के समय तक, शशि फिल्मों के लिए रोमांटिक गाने गाने में सहज हो चुके थे।
भले ही बेनजीर का भी वही हश्र हुआ जो प्रेम पात्र का हुआ था, लेकिन शशि की युवा सूरत, उसकी मुस्कान और यहां तक कि उसके दो टेढ़े-मेढ़े दांत भी, जो मुस्कुराते समय मनमोहक ढंग से बाहर झांकते थे, हमेशा याद रखे जाएंगे।

शशि को 1960 के दशक के अंत में एक अप्रिय परिस्थिति का सामना करना पड़ा, तब उन्हें सिद्धांतवादी बिमल रॉय की विशेष रूप से सराहना हुई। निर्माता एन.सी. सिप्पी ने उन्हें फिल्म आनंद में मुख्य भूमिका निभाने के लिए साइन किया था—लेकिन जैसा कि हम जानते हैं, इस फिल्म में राजेश खन्ना मुख्य किरदार में और अमिताभ बच्चन सहायक भूमिका में हैं। आखिर हुआ क्या? शशि ने द संडे गार्जियन के रिपोर्टर को बताया: 'हां, मुझे आनंद में एक भूमिका की पेशकश की गई थी। लेकिन जिस दिन मैं शूटिंग के लिए गया, मुझे बताया गया कि मेरी आवश्यकता नहीं है, इसलिए मैं वापस आ गया। मैंने निर्माता एन.सी. सिप्पी को अपनी साइनिंग राशि लौटा दी और मैं अच्छी तरह समझ गया था कि ऋषिकेश मुखर्जी कभी भी बिमल रॉय जितने नेक इंसान नहीं थे।'

नोट्स

[1].
1951, Awara, dir. Raj Kapoor, prod. Raj Kapoor, starring Prithviraj Kapoor, Raj Kapoor, Nargis, Shashi Kapoor.

[2].
राहेल ड्वायर, यश चोपड़ा: भारतीय सिनेमा के पचास वर्ष (नई दिल्ली: रोली, 2002), पृ. 54.

[3].
1961, Char Diwari, dir. Krishan Chopra, prod. Jagan Prasad Sharma, starring Shashi Kapoor, Nanda, Manmohan Krishna.

[4].
1959, Dhool Ka Phool, dir. Yash Chopra, prod. B.R. Chopra, starring Mala Sinha, Nanda, Rajendra Kumar.

[5].
1960, Kanoon, dir. B.R. Chopra, prod. B.R. Chopra, starring Rajendra Kumar, Ashok Kumar, Nanda.

[6].
मधु जैन की पुस्तक 'द कपूर्स: द फर्स्ट फैमिली ऑफ इंडियन सिनेमा' (नई दिल्ली: पेंगुइन, 2005), पृष्ठ 230 में उद्धृत।

[7].
'कैसे मनाऊं पियवा', लिर. शैलेन्द्र, कॉम्प. सलिल चौधरी, कलाकार मुकेश।

[8].
1962, Mehndi Lagi Mere Haath, dir. Suraj Prakash, prod. Hiren Khera, starring Ashok Kumar, Nanda, Shashi Kapoor.

[9].
1965, Mohabbat Isko Kahete Hain, dir. Akhtar Mirza, starring Nanda, Shashi Kapoor, Ramesh Deo.

[10].
1965, Jab Jab Phool Khile, dir. Suraj Prakash, prod. Chetan K., starring Shashi Kapoor, Nanda, Agha.

[11].
'Pardesiyon Se Na Ankhiyan Milana', lyr. Anand Bakshi, comp. Kalyanji–Anandji, artists Lata Mangeshkar, Mohammed Rafi.

[12].
'Na Na Karte Pyar', lyr. Anand Bakshi, comp. Kalyanji–Anandji, artist Mohammed Rafi.

[13].
1969, Pyar Ka Mausam, dir. Nasir Hussain, prod. Nasir Hussain, starring Shashi Kapoor, Asha Parekh, Bharat Bhushan.

[14].
1966, Pyar Kiye Jaa, dir. C.V. Sridhar, starring Shashi Kapoor, Kalpana, Mumtaz.

[15].

‘Kehne Ki Nahin Baat’, lyr. Rajendra Krishan, comp. Laxmikant–Pyarelal, artist Mohammed Rafi.

16.

1968, Haseena Maan Jayegi, dir. Prakash Mehra, prod. S.M. Abbas, starring Shashi Kapoor, Babita, Johnny Walker.

17.

‘Chale The Saath Milke’, lyr. Akhtar Romani, comp. Kalyanji–Anandji, artist Mohammed Rafi.

18.

‘Bekhudi Main Sanam’, lyr. Akhtar Romani, comp. Kalyanji–Anandji, artists Mohammed Rafi, Lata Mangeshkar.

19.

‘Suno Suno’, lyr. Prakash Mehra, comp. Kalyanji–Anandji, artist Mohammed Rafi.

20.

1961, जंगली, दिर. सुबोध मुखर्जी, प्रो. सुबोध मुखर्जी, शम्मी कपूर, सायरा बानो, शशिकला अभिनीत।

21.

1962, Professor, dir. Lekh Tandon, prod. F.C. Mehra, starring Shammi Kapoor, Kalpana, Lalita Pawar.

22.

1965, Janwar, dir. Bhappi Sonie, prod. S. Hardip, starring Shammi Kapoor, Rajshree, Rehman.

23.

1961, धर्मपुत्र, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. बी.आर. चोपड़ा, अभिनीत माला सिन्हा, शशि कपूर, रहमान।

24.

राहेल ड्वायर, यश चोपड़ा: भारतीय सिनेमा के पचास वर्ष (नई दिल्ली: रोली, 2002), पृ. 54.

25.

‘Bhool Sakta Hai Bhala Kaun’, lyr. Sahir Ludhianvi, comp. Dutta Naik, artist Mahendra Kapoor.

26.

राहेल ड्वायर, यश चोपड़ा: भारतीय सिनेमा के पचास वर्ष (नई दिल्ली: रोली, 2002), पृ. 226.

27.

1965, समय, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. बी.आर. चोपड़ा, अभिनीत बलराज साहनी, शर्मिला टैगोर, शशि कपूर।

28.

‘Ae Meri Zohra Jabeen’, lyr. Sahir Ludhianvi, comp. Ravi Shankar Sharma, artist Manna Dey.

29.

1964, Kashmir Ki Kali, dir. Shakti Samanta, prod. Shakti Samanta, starring Shammi Kapoor, Sharmila Tagore, Pran.

30.

1959, अपुर संसार, दिर. सत्यजीत रे, प्रो. सत्यजीत रे, सौमित्र चटर्जी, शर्मिला टैगोर, आलोक चक्रवर्ती अभिनीत।

31.

1962, प्रेम पत्र, दिर. बिमल रॉय, प्रो. बिमल रॉय, शशि कपूर, साधना, सीमा देव अभिनीत।

32.

‘Isharon Isharon Main Dil Lenewale’, lyr. S.H. Bihari, comp. O.P. Nayyar, artists Mohammed Rafi, Asha Bhosle.

33.

‘Din Hai Bahar Ke’, lyr. Sahir Ludhianvi, comp. Ravi, artists Asha Bhosle, Mahindra Kapoor.

34.

1967, आमने-सामने, दिर. सूरज प्रकाश, प्रो. सूरज प्रकाश, शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, प्रेम चोपड़ा अभिनीत।

35.

1970, सुहाना सफ़र, दिर. विजय, प्रो. आर.सी. कुमार, अभिनीत शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, ललिता पवार।

36.

1973, आ गले लग जा, दिर। मनमोहन देसाई, प्रो. ए.के. नाडियाडवाला, शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, शत्रुघ्न सिन्हा अभिनीत।

37.
1986, नई दिल्ली टाइम्स, निर्देशक रमेश शर्मा, निर्माता पी.के. तिवारी, कलाकार शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, ओम पुरी।

38.
1953, Do Bigha Zamin, dir. Bimal Roy, prod. Bimal Roy, starring Balraj Sahni, Nirupa Roy, Nazir Hussain.

39.
1958, Madhumati, dir. Bimal Roy, prod. Bimal Roy, starring Dilip Kumar, Vyjayanthimala, Johnny Walker.

40.
1959, Sujata, dir. Bimal Roy, prod. Bimal Roy, starring Nutan, Sunil Dutt, Lalita Pawar.

41.
1963, बंदिनी, दिर. बिमल रॉय, प्रो. बिमल रॉय, नूतन, अशोक कुमार, धर्मेंद्र अभिनीत।

42.
शशि कपूर द्वारा उद्धृत, 'मेमोरीज ऑफ दादा', बिमल रॉय: ए मैन ऑफ साइलेंस, रिंकी भट्टाचार्य द्वारा संपादित (नई दिल्ली: हार्परकॉलिन्स, 1994), पृष्ठ 136।

43.
वही, पृष्ठ 137।

44.
'Yeh Mere Andhere Ujale Na Hote', lyr. Rajinder Krishan, comp. Salil Chowdhury, artists Lata Mangeshkar, Talat Mahmood.

45.
'Do Akhiyan Jhuki Jhuki', lyr. Rajinder Krishan, comp. Salil Chowdhury, artists Lata Mangeshkar, Mukesh.

46.
शशि कपूर द्वारा उद्धृत, 'मेमोरीज ऑफ दादा', बिमल रॉय: ए मैन ऑफ साइलेंस, रिंकी भट्टाचार्य द्वारा संपादित (नई दिल्ली: हार्परकॉलिन्स, 1994) पृष्ठ 138।

47.
1964, Benazir, dir. S. Khalil, prod. Bimal Roy, starring Ashok Kumar, Meena Kumari, Shashi Kapoor.

48.
शशि कपूर, 'मेमोरीज़ ऑफ दादा', बिमल रॉय: ए मैन ऑफ साइलेंस, रिंकी भट्टाचार्य द्वारा संपादित (नई दिल्ली: हार्पर कॉलिन्स, 1994), पी। 138.

49.
वही।

50.
'Dil Mein Ek Jaane Tamanna', lyr. Shakeel Badayuni, comp. S.D. Burman, artist Mohammed Rafi.

51.
1971, Anand, dir. Hrishikesh Mukherjee, prod. Hrishikesh Mukherjee, N.C. Sippy, starring Rajesh Khanna, Amitabh Bachchan, Sumita Sanyal.

52.
रंजन दास गुप्ता, 'शम्मी कपूर एक बेहतर रोमांटिक हीरो थे: शशि कपूर', द संडे गार्डियन, 22 मार्च 2014।

# 3

# चलो अमेरिका
# शशि, व्यापारी-हाथी दांत और रूक्स

जेम्स आइवरी को यह घटना स्पष्ट रूप से याद है। नवंबर 1961 में, वे कड़ाके की ठंड में बॉम्बे पहुंचे थे, और गुजरात के एक छोटे से गांव जा रहे थे, जहां उन्होंने मानवविज्ञानी गीताल स्टीड द्वारा लिखित फीचर फिल्म 'देवगर' की शूटिंग की योजना बनाई थी। उनके न्यूयॉर्क स्थित मित्र, इस्माइल मर्चेंट, फिल्म के निर्माता बनने की योजना बना रहे थे, और सिडनी मेयर्स निर्देशक बनने वाले थे। इस्माइल शशि कपूर और युवा फ्रांसीसी-भारतीय अभिनेत्री लीला नायडू को मुख्य भूमिकाओं में लेना चाहते थे, और अनुभवी अभिनेत्री दुर्गा खोटे को बुजुर्ग मां की भूमिका निभाने के लिए लेना चाहते थे।
लेकिन सबसे पहले, इस्माइल चाहते थे कि जेम्स, शशि से मिलें। इसलिए, एक शाम, जेम्स और इस्माइल क्रिकेट क्लब ऑफ इंडिया में एक फिल्म समारोह के लिए रवाना हुए। जेम्स याद करते हुए बताते हैं, 'मुझे याद है कि मैं उस लंबे गलियारे से नीचे जा रहा था - मानो एक तंबू जैसा गलियारा हो - जहाँ शशि के होने की उम्मीद थी। लेकिन ठीक उसी समय, शशि और जेनिफर बाहर आए। तो, हमारी मुलाकात वहीं, उस बंद गलियारे में हुई। जेनिफर बहुत ही मिलनसार और मेहमाननवाज थीं। इस्माइल ने शशि को मेरे बारे में बताया था, और अभिनेता हमेशा की तरह दोस्ताना थे। यह हमारी पहली मुलाकात थी - तब वह लगभग तेईस साल के रहे होंगे - और मैं उनकी असाधारण सुंदरता को देखकर दंग रह गया।'
इससे पहले, कुछ असामान्य परिस्थितियों में, इस्माइल की मुलाकात शशि से हुई थी; एक ऑस्ट्रेलियाई महिला के साथ, जो एक विज्ञापन एजेंसी में काम करती थी, वह उस पार्टी में बिन बुलाए पहुँच गए थे जो युवा अभिनेता ने अपने घर पर कुछ फिल्म पत्रकारों के लिए आयोजित की थी। इस्माइल—जिनका 2005 में एक संक्षिप्त बीमारी के बाद निधन हो गया—अपनी आत्मकथा, 'माई पैसेज फ्रॉम इंडिया' में लिखते हैं:

मुझे समय बर्बाद करने का कोई कारण नहीं दिखा। मैंने कहा, 'मैं इस्माइल मर्चेंट हूँ। मैं अमेरिका से फिल्में बनाने आया हूँ और आप उनमें अभिनय करेंगे।' [...शशि] मेरी इस पहल से कुछ हद तक अचंभित दिखे, लेकिन शाम के अंत तक मैंने उन्हें अपने उत्साह से भर दिया था।

इस्माइल मर्चेंट, जेनिफर केंडल कपूर और चिंतनशील शशि कपूर (बाएं से दाएं)।
सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

शशि ने पुष्टि की: '[इस्माइल] ने मेरे घर में घुसते ही मुझ पर हमला करना शुरू कर दिया। खैर, जब वह अंदर आया, तो वहाँ बहुत सारे लोग थे [...] और वे आपस में बातचीत कर रहे थे। [लेकिन] मिस्टर मर्चेंट को जल्दी थी कि वह कब मुझे अपने निर्देशक के साथ देख सकते हैं।'
उस समय शशि ने दो फीचर फिल्मों में मुख्य भूमिका निभाई थी, जिनमें चार दीवारी और धर्मपुत्र शामिल थीं। उनका रिकॉर्ड कुछ खास अच्छा नहीं था—दोनों फिल्में बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप रही थीं। लेकिन इस्माइल—जो अपने जोशीले, सकारात्मक और कुशल विक्रेता के रूप में जाने जाते थे—शशि को एक सुनहरा अवसर देने के लिए तैयार थे: 'मैंने कहा, "यह आपके लिए एक अंतरराष्ट्रीय स्टार बनने का मौका है। यह आपके लिए एक शानदार भूमिका है।" [शशि] पूरी तरह से चकित रह गए [...] हमारा एक अद्भुत तालमेल बन गया।'
जब शशि की मुलाकात उस तंबू वाले गलियारे में इस्माइल और जेम्स दोनों से हुई, तो उन्हें देवगर के लिए उनकी याचिकाओं का जवाब देना अनिवार्य लगा। शशि याद करते हुए कहते हैं, 'मैंने कहा, यह किसी भी निर्णय पर पहुंचने के लिए उपयुक्त जगह नहीं है। लेकिन वे एक त्वरित निर्णय चाहते थे। इसलिए मैंने कहा, ठीक है, ठीक है, मैं यह करूँगा।'
इसी बीच, इस्माइल को कहानी का एक और पहलू याद आता है—कि शायद शशि को लगा था कि अमेरिकी निर्माता उसे अच्छी खासी रकम देने वाले हैं: 'उसे यह एहसास नहीं था कि इतनी बड़ी रकम मिलना उसके नसीब में नहीं था।'
हुआ यूं कि देवगर फिल्म कभी बन ही नहीं पाई; इस्माइल को फिल्म के लिए जो पैसा जुटाना था, वह नहीं मिल पाया। लेकिन निर्माता ने हार मानने के बजाय एक और योजना पर काम करना शुरू कर दिया।
एमजीएम (मेट्रो-गोल्डविन-मेयर) के एक हॉलीवुड पटकथा लेखक की सिफारिश पर, इस्माइल ने जर्मन लेखिका रूथ प्रावर झबवाला की एक किताब पढ़ी थी, जो अपने भारतीय वास्तुकार पति के साथ दिल्ली में रहती थीं। इस्माइल को 'द हाउसहोल्डर' की कहानी और भारतीय जीवन की बारीकियों को बखूबी दर्शाने की क्षमता बहुत पसंद आई। उन्होंने यह किताब जेम्स को दी, जो इससे बेहद प्रभावित हुए। दोनों ने तुरंत रूथ से संपर्क किया, जो फिल्म निर्माताओं से बात करने में हिचकिचाती थीं, इसलिए उन्होंने फोन पर अपनी सास होने का नाटक किया। आखिरकार, उनका यह नाटक नाकाम हो गया और कुछ हिचकिचाहट के बाद, वह उनसे मिलने के लिए राजी हो गईं। यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इस्माइल और जेम्स ने अपनी बातों से उन्हें प्रभावित कर लिया होगा, क्योंकि उनके पति की इस चेतावनी के बावजूद कि दोनों धोखेबाज फिल्म निर्माता लग रहे हैं, रूथ ने न केवल उन्हें अपने उपन्यास पर आधारित फिल्में बनाने की अनुमति दी, बल्कि पटकथा लिखने के लिए भी सहमत हो गईं।

देवगर को बेहतरीन स्टार कास्ट को छोड़ने के लिए आनेच्छुक इस्माइल और जेम्स ने शाशि, लीला और दुर्गा को एक बार फिर नए प्रोजेक्ट में शामिल करने का फैसला किया। लेकिन, अभिनेताओं को अंतिम रूप देने से पहले ही, रूथ ने एक चिंता व्यक्त की। उन्हें लगा कि शशि, द हाउसहोल्डर में बेचारे स्कूल शिक्षक प्रेम सागर की भूमिका निभाने के लिए बहुत ज्यादा आकर्षक थे। जेम्स ने मुझे बताया, 'अगर आप दिल्ली के किसी दयनीय स्कूल में एक गरीब, संघर्षरत शिक्षक पर फिल्म बनाना चाहते हैं, तो आप शायद शशि जैसे शानदार व्यक्ति को कास्ट नहीं करेंगे। वह एक महान नौजवान थे।'

जब शशि को रूथ की आपत्तियों के बारे में पता चला—कि वह इस भूमिका के लिए बहुत आकर्षक और सुंदर हैं—तो उन्होंने एक अनोखा उपाय निकाला। वह कहते हैं, "मैं दिल्ली के एक बहुत प्रसिद्ध नाई की दुकान पर गया और मैंने कहा, 'मुझे कोई खास हेयरकट नहीं चाहिए। मुझे एक आम, निम्न-मध्यम वर्ग के हिंदी शिक्षक जैसा हेयरकट चाहिए—एक ऐसे व्यक्ति के लिए जो बहुत युवा और अनुभवहीन हो। और मैं वैसा ही दिखना चाहता हूँ।'

इसके बाद, जब शशि, रूथ से मिलने गए—उनके घने बाल करीने से कटे हुए थे और एक तरफ की मांग सलीके से निकाली हुई थी—और उन्होंने प्रेम सागर के उस किरदार की तरह बात की जिसकी उन्होंने कल्पना की थी, तो रूथ उन्हें एक नए नजरिए से देखने से खुद को रोक नहीं पाए। 'तो इस तरह मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस के साथ मेरा जुड़ाव शुरू हुआ,' शशि कहते हैं।

शशि को जेम्स से करीबी रिश्ता बनाने में ज्यादा समय नहीं लगा। "मुझे जिम (जैसा कि जेम्स को उनके दोस्त कहते थे) के साथ काम करने में बहुत मज़ा आया, क्योंकि उन्होंने मुझे आत्मविश्वास दिया [...] कि मैं अपने तरीके से काम कर सकूं, अपनी प्रतिभा, अपनी बुद्धिमत्ता, अपनी संवेदनशीलता का उपयोग करके उनकी फिल्मों में किरदारों को निभा सकूं।"

जेम्स का कहना है कि शशि अपने किरदार में पूरी तरह डूब जाते थे और अपने जीवन के अनुभवों, भावनाओं और झुकावों को उस किरदार के साथ सहजता से जोड़ लेते थे, इसीलिए उन्हें उनके साथ काम करने में आनंद आता था: 'शशि के साथ काम करना बहुत आसान था। वे निर्देशों का अच्छी तरह पालन करते थे। और किसी भी अच्छे अभिनेता की तरह, वे कभी-कभी मुझे किसी दृश्य को दूसरे तरीके से करने का विकल्प देते थे—जिसे मैं स्वीकार करता था, अगर वह उचित लगता था, अगर वह फिल्म के बारे में मेरे विचार से मेल खाता था और अगर संवाद में कोई बहुत बड़ा बदलाव नहीं होता था। शशि निश्चित रूप से, और हर जगह के सभी अभिनेता, संवादों के साथ थोड़ा बहुत फेरबदल करते हैं—वे सोचते हैं कि किसी पंक्ति को कहने का थोड़ा बेहतर तरीका हो सकता है, या कोई एक शब्द दूसरे से बेहतर होगा—और मैं उनकी बात मान लेता हूँ। हमेशा नहीं, लेकिन कभी-कभी, हाँ।'

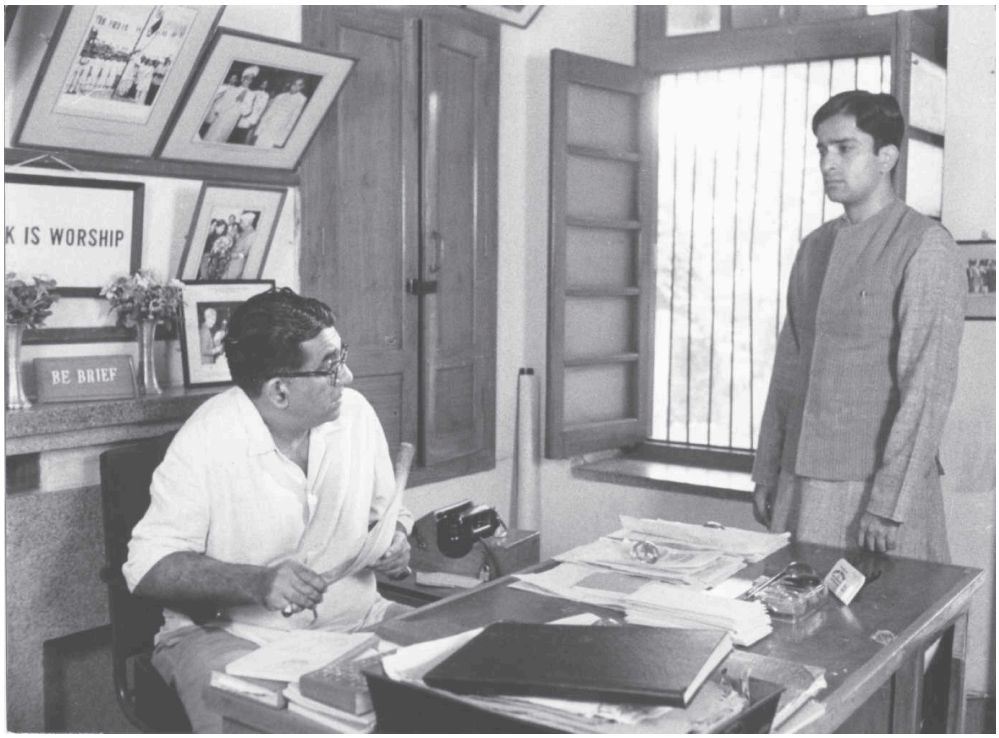


1963, द हाउसहोल्डर। शशि कपूर, प्रेम सागर के किरदार में, एक ऐसे हेयरकट के साथ जो उन्हें दुनिया से थका हुआ दिखाता है, प्रिंसिपल श्री खन्ना से मिलते हैं, जिनका किरदार दिवंगत पत्रकार रमेश थापर ने निभाया था। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

जेम्स का यह भी मानना है कि शशि को रंगमंच की पृष्ठभूमि और उनके पिता, फिर ससुर के मार्गदर्शन में वर्षों के कठोर प्रशिक्षण ने उनके अभिनय को सूक्ष्मता प्रदान की। जेम्स कहते हैं, 'वह पूरी तरह से स्वाभाविक थे। उनके अभिनय में कोई अतिरंजित शैली नहीं थी। मैंने उनकी कुछ हिंदी व्यावसायिक फिल्में देखी हैं, और उनमें वह बिल्कुल भी अतिरंजित नहीं थे। उनमें संयम की भावना थी।' जेम्स आगे कहते हैं, 'शशि को शास्त्रीय संगीत का प्रशिक्षण प्राप्त था [...] एक ऐसी पृष्ठभूमि जिसका लाभ वह एक युवा अभिनेता के रूप में उठा सकते थे, जो मुंबई फिल्म जगत के अधिकांश युवा भारतीय अभिनेताओं के पास नहीं होती। और वह बहुत अच्छी अंग्रेजी भी बोलते थे।'
इसी बीच, शशि को इस्माइल में एक आजीवन मित्र और एक ऐसा सहकर्मी मिला जिसकी वह प्रशंसा भी कर सकते थे और उसे चिढ़ा भी सकते थे: 'मेरे लिए इस्माइल मर्चेंट एक मेहनती और अच्छे निर्माता हैं। मुझे नहीं लगता कि कोई उन्हें बुरा निर्माता कह सकता है। लेकिन जब उन्हें पता होता है कि उनके पास पैसे नहीं हैं, तो वे कभी-कभी कबूतर की तरह व्यवहार करते हैं। [...] आप जानते हैं, जब आप किसी कबूतर पर बंदूक तानते हैं [...] तो कबूतर अपनी आँखें बंद कर लेता है, सोचता है कि सब कुछ खत्म हो जाएगा। तो इस्माइल भी कभी-कभी कबूतर की तरह सोचते और करते हैं!' शशि एक चंचल मुस्कान के साथ आगे कहते हैं, 'तो, जब उनके पास पैसे नहीं होते, तब भी वे फिल्में बनाते हैं। जब उनके पास डेट्स नहीं होतीं, तब भी वे अभिनेताओं को अपने साथ काम करने के लिए राजी कर लेते हैं। यह आश्चर्यजनक है कि वे यह सब कैसे करते रहते हैं!'
इस्माइल हल्के-फुल्के अंदाज़ में अपनी बाद की बुराइयों के लिए शशि को दोषी ठहराते हैं। 'द हाउसहोल्डर' के संपादन के दौरान, शशि ने ही शराब से परहेज़ करने वाले इस्माइल को पहली बार शराब का स्वाद चखने के लिए प्रेरित किया था। इस्माइल अपनी आत्मकथा में लिखते हैं:

अमेरिका में तीन साल रहने के बाद भी मैंने कभी शराब नहीं पी थी और शशि ने तय किया कि अब मुझे जीवन की बेहतर चीजों से परिचित कराने का समय आ गया है। शशि ने मुझसे कहा, 'अगर तुमने कभी शराब का स्वाद नहीं चखा, तो तुमने अपना जीवन व्यर्थ कर दिया। तुम्हें मेरे साथ एक गिलास पीना ही होगा।' उसने मुझे पूरी तरह से बदल दिया।

शशि का इस्माइल के साथ घनिष्ठ संबंध और जेम्स के प्रति उनका स्नेह, उनके साथ उनके कामकाजी संबंधों पर सीधा प्रभाव डालता था। उन्होंने मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस बैनर के तहत बनी सात फिल्मों में अपनी अपार प्रतिभाओं का संयोजन किया: द हाउसहोल्डर, शेक्सपियर वाला, बॉम्बे टॉकी, हीट एंड डस्ट—ये सभी फिल्में जेम्स आइवरी द्वारा निर्देशित थीं—और तीन अन्य निर्देशकों द्वारा निर्देशित तीन फिल्में—द डिसीवर्स, इन कस्टडी और साइड स्ट्रीट्स।

न्यूयॉर्क शहर के प्लाजा होटल के सामने पुलित्जर फाउंटेन में शशि कपूर अपने दोस्त और निर्देशक जेम्स आइवरी के साथ कुछ पल बिताते हुए काफी खुश नजर आ रहे हैं।
सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

## गृहस्वामी (1963)

फिल्म 'द हाउसहोल्डर' की शूटिंग दिल्ली में हुई, ज्यादातर पुराने जमाने के दरियागंज और ऐतिहासिक रूप से समृद्ध महरौली में। जब फिल्म की शूटिंग शुरू हुई, तो भीड़ मोहल्लों में उमड़ पड़ी, लोग बेतहाशा हाथ हिलाते हुए ऑटोग्राफ मांग रहे थे—खासकर शशि कपूर के। जेम्स आइवरी मानते हैं, 'वह पहले से ही काफी मशहूर थे, शायद इसलिए क्योंकि राज कपूर और शम्मी कपूर उनके भाई थे।'

'द हाउसहोल्डर' में शशि द्वारा निभाए गए प्रेम सागर के किरदार पर दुनिया भर की समस्याओं का बोझ है - एक खूबसूरत लेकिन दृढ़ इच्छाशक्ति वाली पत्नी; एक दखलंदाजी करने वाली मां जो उसके स्नेह के लिए उसकी पत्नी से प्रतिस्पर्धा करती है; और एक ऐसे स्कूल में हिंदी शिक्षक के रूप में कम वेतन वाली नौकरी जहां उसे अपने छात्रों, सहकर्मियों या प्रधानाचार्य से कोई सम्मान नहीं मिलता है।

फिर भी, रूथ प्रॉवर झबवाला के लेखन और जेम्स के निर्देशन के साथ, 'द हाउसहोल्डर' अपने नायक के अस्तित्व संबंधी संकटों से बोझिल होने के बजाय एक हास्यप्रद और मनमोहक फिल्म बन जाती है। शायद, पहली बार शशि को अपना हास्य अभिनय दिखाने का मौका मिलता है—जैसे कि एक दृश्य में, जब वह और उनकी पत्नी स्कूल के प्रधानाचार्य की चाय पार्टी में मेहमान होते हैं; लीला नायडू (इंदु के रूप में) अपनी प्लेट भर लेती है और खाना चट कर जाती है, जबकि प्रेम उसे धीरे खाने के लिए समझाने की पूरी कोशिश करता है। (विडंबना यह है कि दबंग प्रधानाचार्य—दिवंगत पत्रकार रमेश थापर द्वारा अभिनीत—के वास्तविक जीवन के बेटे वाल्मिक थापर की शादी कई साल बाद शशि की वास्तविक जीवन की बेटी संजना कपूर से होती है।)

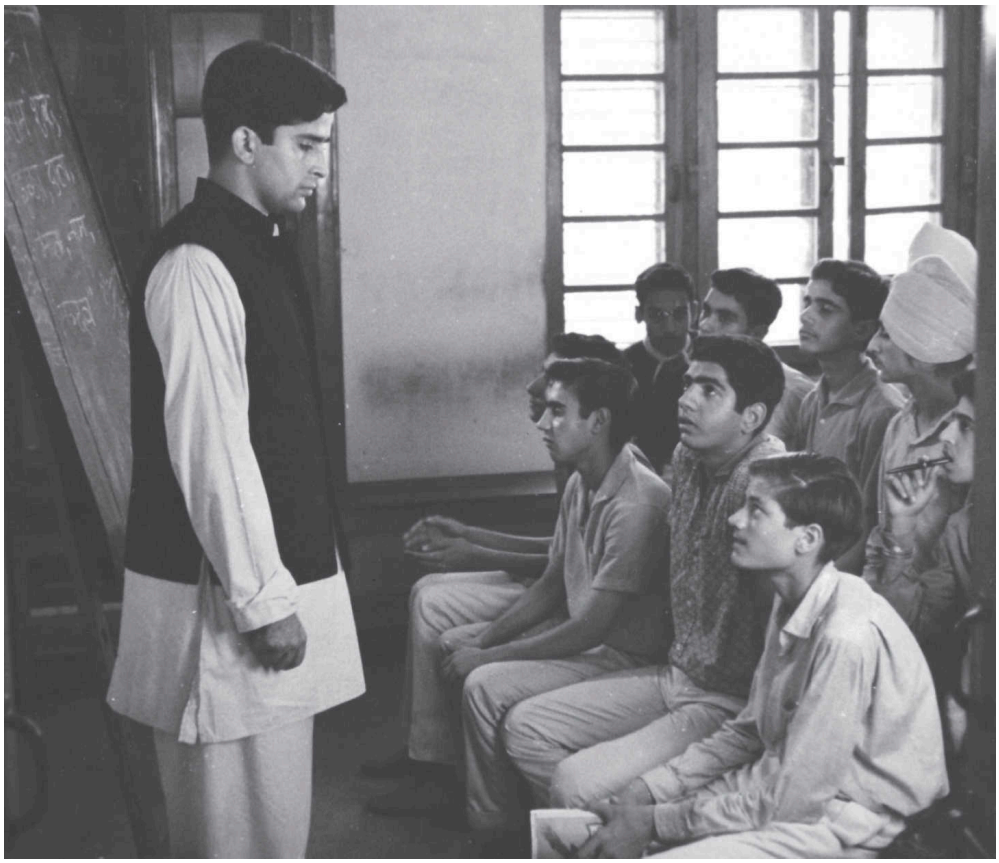

1963, द हाउसहोल्डर। शशि कपूर (एक परेशान शिक्षक की भूमिका में) अपने छात्रों के साथ।
सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

1963, द हाउसहोल्डर। शशि कपूर के साथ दुर्गा खोटे, जो एक चिड़चिड़ी और अधिकार जताने वाली माँ की भूमिका निभा रही हैं। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

1963, द हाउसहोल्डर। शशि कपूर द्वारा अभिनीत प्रेम सागर, अपने कुछ मित्र अमेरिकियों के साथ। एक अमेरिकी महिला ने उलझन में पड़े प्रेम से पूछा, 'आप किस तरह का योग करते हैं?' सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

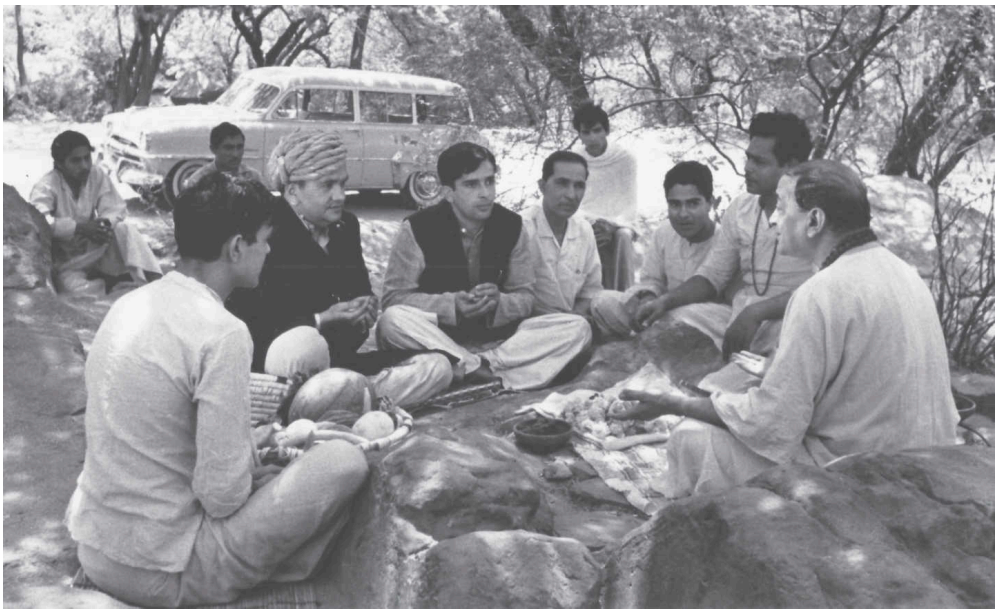

1963, गृहस्थ। शशि कपूर, एक परेशान गृहस्थ के रूप में, सलाह लेने के लिए एक स्वामी के पास जाते हैं। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

1963, द हाउसहोल्डर। शशि कपूर अपनी पत्नी लीला नायडू को सोते हुए देख रहे हैं—यह कोमलता का एक दुर्लभ क्षण है। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

इस दृश्य में, और अन्य दृश्यों में भी, शशि, भले ही सादगीपूर्ण दिखने की कोशिश करता है, बेहद आकर्षक लगता है। लीला हमेशा की तरह बेहद खूबसूरत है, और दुर्गी खोटे का किरदार भी मंत्रमुग्ध कर देता है, जब वह अपनी बहू को घूरती है और उस पर व्यंग्य करती है। तीनों कलाकारों के शानदार अभिनय से फिल्म में जान आ जाती है।

हालांकि, इस बहतरीन फिल्म को बनाना आसान नहीं था। हमेशा की तरह, पैसा ही सबसे बड़ी बाधा थी। फिल्म बहुत कम बजट में बन रही थी—देवगर के लिए जो थोड़ा-बहुत पैसा इकट्ठा हुआ था, वही द हाउसहोल्डर बनाने में लगा दिया गया; जेम्स के पिता और इस्माइल मर्चेंट के पिता ने भी निर्माण लागत में कुछ योगदान दिया; और घरेलू दृश्यों की शूटिंग के लिए इस्माइल के एक दोस्त का घर किराए पर लिया गया। लेकिन संसाधन जल्द ही खत्म हो गए। कुछ समय के लिए शूटिंग पूरी तरह रोकनी पड़ी। आखिरकार, बहुत कम पैसे में काम कर रहे शशि और रूथ ने अपनी फीस स्थगित करने पर सहमति जताई। इसके साथ ही, कुछ निवेशकों के समय पर हस्तक्षेप से द हाउसहोल्डर को पूरा करने में मदद मिली।
अगर 'द हाउसहोल्डर' को तमाम आर्थिक चुनौतियों के बावजूद भाग्यशाली माना जाता है, तो इसका श्रेय महान फिल्म निर्माता सत्यजीत रे के अप्रत्याशित हस्तक्षेप को जाता है। जेम्स की मुलाकात सत्यजीत रे से कलकत्ता यात्रा के दौरान हुई थी; संयोग से बंगाली संगीत के उस्ताद सत्यजीत रे ने उनकी एक लघु फिल्म देखी थी और उन्हें वह पसंद आई थी। सत्यजीत रे ने जेम्स और इस्माइल का परिचय अपने छायाकार सुब्रता मित्रा से कराया; उन्होंने इस प्रतिभाशाली छायाकार को जेम्स और इस्माइल को सौंप दिया, जिन्होंने 'द हाउसहोल्डर' की शूटिंग की और शानदार ब्लैक एंड व्हाइट मोंटाज के साथ इसे एक बेदाग रूप दिया। इसके अलावा, सत्यजीत रे ने 'द हाउसहोल्डर' के संगीत निर्माण में भी हाथ बटाया—सितार वादक अली अकबर खान की मदद ली—और जब जेम्स और इस्माइल ने उन्हें फिल्म का एक रफ कट दिखाया, तो उन्होंने अपने संपादक दुलल दत्ता के साथ मिलकर फिल्म का पुनः संपादन भी किया। जेम्स ने उपन्यासकार अमिताभ घोष के साथ एक साक्षात्कार में बताया है कि यह सब कैसे हुआ।

'द हाउसहोल्डर' की एडिटिंग के बाद भी, यह बहुत अव्यवस्थित और बेढंगी लग रही थी [...] मैंने [रे] से पूछा कि क्या मैं फिल्म उन्हें दिखाने के लिए ला सकता हूँ। उन्होंने कहा, ज़रूर, आ जाओ। तो इस्माइल और मैं ट्रेन में चढ़ गए—हम फिल्म का हिंदी संस्करण, वो सारे डिब्बे, लगभग चौबीस डिब्बे रहे होंगे। हम उस सारी फिल्म के साथ बॉम्बे से कलकत्ता गए। उन्होंने फिल्म देखी और उन्हें पसंद आई—उन्हें लगा कि इसमें कुछ काम करने लायक है। मैंने उनसे पूछा कि क्या वे एडिटिंग के बारे में कोई सुझाव दे सकते हैं और उन्होंने कहा, हाँ। वे इसे दोबारा एडिट करेंगे, लेकिन वे नहीं चाहते थे कि मैं एडिटिंग के दौरान दखल दूं। उन्होंने कहा, मुझे इसे करने दो, मैं इसे अपने तरीके से करूँगा, अगर तुम चाहो तो एडिटिंग रूम में रह सकते हो, जब सब काम हो जाए तो अगर तुम चाहो तो इसे बदल सकते हो, यह तुम्हारा मामला है, लेकिन मुझे वही करने दो जो मैं करना चाहता हूँ। तो फिर उन्होंने और उनके एडिटर दुलाल दत्त ने फिल्म को दोबारा एडिट किया। उन्हें लगभग चार दिन लगे और उन्होंने इसे एक नया रूप दिया। यह वही [रे] थे जिन्होंने सुझाव दिया था कि इसे फ्लैशबैक के रूप में दिखाया जाए।

द हाउसहोल्डर का वितरण कोलंबिया पिक्चर्स द्वारा किया गया था और यह अक्टूबर 1963 में न्यूयॉर्क शहर के गिल्ड थिएटर में प्रदर्शित हुई थी। हालाँकि कुछ अच्छी समीक्षाएँ मिलीं, लेकिन न्यूयॉर्क टाइम्स के बॉस्ले क्रॉथर—जिन्हें उस समय फिल्मों का सर्वोपरि विशेषज्ञ माना जाता था—ने शहर के आर्ट-हाउस सिनेमाघरों में द हाउसहोल्डर की बॉक्स ऑफिस सफलता की संभावनाओं को सिरे से खारिज कर दिया। पीछे मुड़कर देखें तो बॉस्ले की समीक्षा काफी कठोर प्रतीत होती है, क्योंकि यह फिल्म के निर्माण की स्वतंत्र भावना को समझने में विफल रहती है। विशेष रूप से कठोर, यहाँ तक कि अनुदार भाषा में, बॉस्ले शशि के बारे में यह कहते हैं:

शशि कपूर, जो पति का किरदार निभा रहे हैं, इस वास्तव में एक अप्रिय भूमिका में रंगहीन और अनाड़ी लगते हैं। यहां हम जिस अकड़ू युवा शिक्षक को देखते हैं—स्वयं को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने वाला यह चिड़चिड़ा व्यक्ति—लीला नायडू द्वारा निभाई गई सुंदर, मिलनसार और भोली पत्नी के लायक नहीं है।

इस निंदनीय समीक्षा के बाद, शशि कहती हैं: '[जेम्स] और मैं प्लाजा [होटल] गए। उसने अपने पिता का क्रेडिट कार्ड इस्तेमाल किया और हमने जमकर शराब पी। [...] हम नशे में चूर हो गए, भावुक हो गए और खुद पर तरस खाने लगे।'
उस रात शशि को बस इतना ही समय मिला कि वह अपने गम में डूबी रहे। क्योंकि अगले दिन, शांत स्वभाव वाले इस्माइल और दृढ़ निश्चयी जेम्स एक और फिल्मी सपने को पूरा करने के लिए उस निराश अभिनेता को अपने साथ शामिल कर रहे थे।

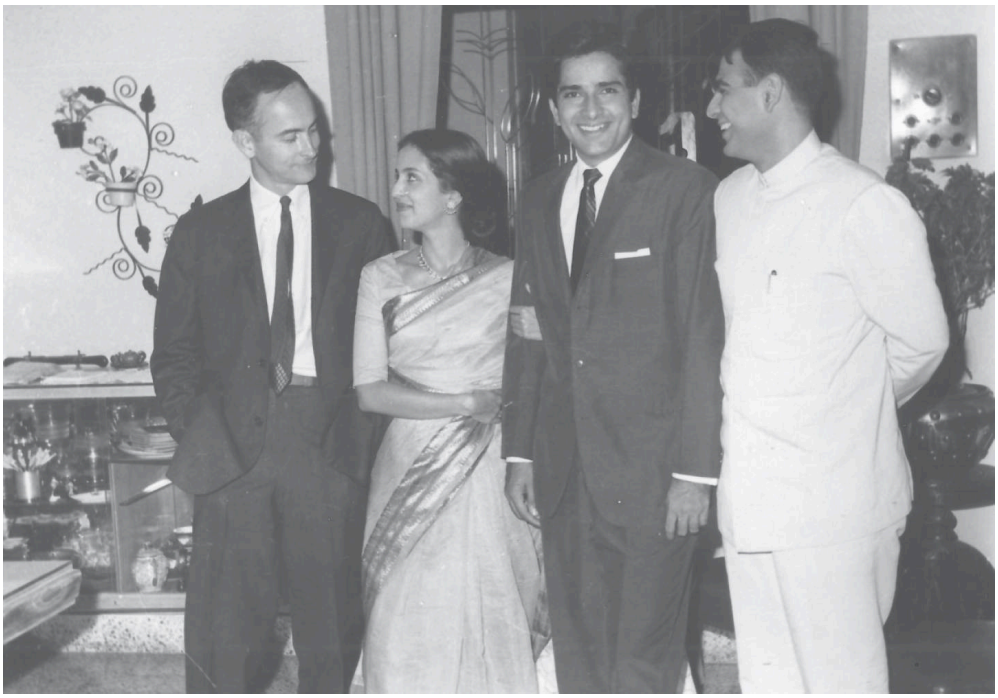

फिल्म 'द हाउसहोल्डर' के प्रीमियर पर जेम्स आइवरी, लीला नायडू, शशि कपूर और इस्माइल मर्चेंट (बाएं से दाएं) उपस्थित थे। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

## शेक्सपियर वाला (1965)

जेम्स आइवरी एक ऐसी फिल्म बनाने के बारे में सोच रहे थे जिसमें भारतीय अभिनेताओं का एक समूह शहरों में आधुनिक भारतीय-अंग्रेजी नाटक प्रस्तुत करता हुआ दिखाया जाए। लेकिन रूथ प्रावर झबवाला को यह प्रस्ताव अव्यावहारिक लगा। जेम्स कहते हैं, 'रूथ ने कहा कि जो लोग उच्च कोटि के अंग्रेजी नाटकों का हिस्सा बनना चाहेंगे, वे घुमंतू अभिनेताओं का जीवन नहीं अपनाएंगे। उन्हें यह विचार बिल्कुल पसंद नहीं आएगा। उन्होंने कहा कि यह एक निराधार धारणा है।'

लेकिन यही 'अवास्तविक' विचार था जिसने जेम्स को शेक्सपियरआना टीम तक पहुँचाया—ब्रिटिश घुमंतू अभिनेताओं का वह समूह जिसका नेतृत्व ज्योफ्री और लौरा लिंडल कंडल कर रहे थे। द हाउसहोल्डर की शूटिंग के दौरान उनकी कंडल परिवार से पहले ही मुलाकात हो चुकी थी, क्योंकि जेनिफर कंडल कपूर अपने पति के साथ दिल्ली में काफी समय बिता रही थीं। अब उन्होंने थिएटर मंडली से और अधिक घनिष्ठ संबंध बनाने का फैसला किया और रूथ को भी अपने साथ ले गए।

जॉफ्री की डायरियों से व्यापक रूप से प्रेरित, शेक्सपियर वॉलह अपनी विषयवस्तु और शैली में चेखोव से प्रेरित है। यह स्वतंत्र और तेजी से बदलते भारत में शेक्सपियर को जीवित रखने के लिए संघर्षरत घुमंतू ब्रिटिश अभिनेताओं के निराशाजनक जीवन को चित्रित करता है—एक ऐसा भारत जहाँ दर्शक गंभीर नाटकों और संघर्षरत अभिनेताओं से जुड़ने के बजाय लोकप्रिय, निम्न स्तरीय सिनेमा और हंसमुख फिल्मी सितारों में निवेश करना अधिक पसंद करते हैं।

हालांकि फिल्म में कंडल दंपति को उनके काल्पनिक संस्करणों के रूप में दिखाया गया है—जियोफ्रे को मंडली के नेता टोनी बर्किंघम और लौरा को उनकी पत्नी और साथी कार्ला के रूप में लिया गया है—जियोफ्रे पटकथा या फिल्म के परिणाम से खुश नहीं थे। जियोफ्रे अपनी आत्मकथा में लिखते हैं, 'यह फिल्म हमारे बारे में नहीं थी, बल्कि कुछ घुमंतू कलाकारों के बारे में थी जिनसे हमारा कोई लेना-देना नहीं था।' इसके बावजूद, जियोफ्रे ने अपनी पुस्तक के लिए जेम्स की फिल्म का शीर्षक उधार लेने में संकोच नहीं किया। और वर्षों बाद, उन्होंने अंततः स्वीकार किया कि वे फिल्म की भावना की सराहना करते हैं—'यह उस प्रशंसा और प्रसिद्धि की हकदार है जो इसने अर्जित की है।'

शशि कपूर को शेक्सपियर वाला में एक छिछोरे लेकिन अमीर प्लेबॉय, संजू के किरदार में लिया गया था, जो न केवल एक हिंदी फिल्म स्टारलेट के साथ, बल्कि थिएटर मंडली की एक ब्रिटिश अभिनेत्री, लिज़ी के साथ भी फ्लर्ट करता है। लिज़ी का किरदार जेनिफर की बहन, फेलिसिटी कंडल ने निभाया था, जो उस समय सत्रह साल की थीं और उन्हें पचहत्तर रुपये में अभिनय करने का अनुबंध मिला था। शशि के लिए अपनी साली के साथ अभिनय करना किसी चमत्कार से कम नहीं था। वह कहते हैं, 'चूंकि मैंने शेक्सपियरना के साथ दौरा किया था, इसलिए मैं परिवार के साथ घनिष्ठ संपर्क में था। शादी के बाद भी, फेलिसिटी कंडल मेरी पत्नी और मेरे बहुत करीब थीं। मैं उन्हें जानता था, लेकिन मुझे अंदाजा नहीं था कि [फिल्मों में बिना किसी

अनुभव वाली यह लड़की इतनी अच्छी होगी। [...] वह पूरी तरह से किरदार में डूब जाती थी और अपने असली रूप को भूल जाती थी। [...] फेलिसिटी कैंडल ने सबका दिल जीत लिया। यह उनकी फिल्म थी।'
शेक्सपियर वाला में संजू और लिज़ी के बीच 'अचानक, बिजली की तरह तेज़ और संक्षिप्त' रोमांस और उनके रिश्ते का खुलना—ये दृश्य अपने भीतर गहरी मार्मिकता समेटे हुए हैं। लेकिन पारिवारिक वृक्षों और रिश्तों के विभाजन में रुचि रखने वालों के लिए, शेक्सपियर वाला संजू और लिज़ी के बीच के कोमल चुंबन—या शशि और उनकी भाभी के बीच के चुंबन—के लिए भी यादगार है। उस पल को याद करते हुए शशि कहते हैं, 'मुझे लगता है कि यह पहली फिल्म थी जिसमें मैंने कभी चुंबन किया था [...] यह मेरे लिए थोड़ा शर्मनाक था और मुझे एहसास हुआ कि फेलिसिटी के लिए यह बहुत शर्मनाक होगा।'
शेक्सपियर वाला में एक केंद्रीय किरदार मंजुला है—जो संजू के साथ प्रेम प्रसंग में लिप्त रहने वाली एक चुलबुली, ग्लैमरस हिंदी फिल्म स्टारलेट है—इस भूमिका के लिए जेम्स और इस्माइल ने अपनी न्यूयॉर्क स्थित थिएटर अभिनेत्री मित्र मधुर ज़ाफरी को चुना। जेम्स और इस्माइल का परिचय मधुर के दिवंगत पति और अभिनेता सईद ज़ाफ़री (दोनों का तलाक हो गया था) के माध्यम से हुआ था, और बाद में, मधुर मर्चेंट-आइवरी टीम की नियमित सदस्य बन गईं, और जेम्स द्वारा निर्देशित तीन और प्रस्तुतियों—द गुरु, ऑटोबायोग्राफी ऑफ़ ए प्रिंसेस, हीट एंड डस्ट—में अभिनय किया, साथ ही द परफेक्ट मर्डर (जिसके लिए इस्माइल कार्यकारी निर्माता थे) और कॉटन मैरी (जिसका उन्होंने इस्माइल के साथ सह-निर्देशन किया था) में भी अभिनय किया।
मधुर के लिए शेक्सपियर वाला का हिस्सा बनना कई मायनों में बेहद रोमांचक था, लेकिन इसलिए भी क्योंकि वह शशि के साथ पहली बार काम कर रही थीं—जो तब तक हिंदी फिल्म जगत के एक प्रमुख सितारे बन चुके थे। मधुर कहती हैं, 'बेशक, मैं शशि को उनकी फ़िल्मों—हिंदी सिनेमा—से जानती थी। मैं हमेशा सोचती थी कि शशि सबसे आकर्षक पुरुषों में से एक हैं। और उनके साथ अभिनय करने का विचार बहुत ही रोमांचक था। फिर, मैं उनसे पहली बार मिली। और वह खुशमिजाज—एक सकारात्मक, युवा व्यक्ति—थे और उन्होंने मेरा बहुत अच्छे से अभिवादन किया। और मैंने सोचा, सब ठीक हो जाएगा।'
मधुर की मंजुला, जो लिज़ी की प्रतिद्वंदी है, शेक्सपियर वाला में कुछ सबसे दमदार दृश्यों में से एक है, जहाँ वह चिढ़कर संजू का ध्यान अपनी ओर खींचती है। यह एक ऐसा अभिनय है जिसके लिए शशि एकदम सही साथी साबित होते हैं। मधुर कहती हैं, 'शशि के साथ मेरे दृश्य अंतरंग थे। वे दो प्रेमी थे। यह मेरी पहली फिल्म थी, और शशि का यह स्पष्ट मानना था कि अभिनय तो बस मनोरंजन है—इसे ज़्यादा गंभीरता से मत लो—उनका यही रवैया था, खासकर तनावपूर्ण परिस्थितियों में जब मुझे फिल्म क्रू के सामने रहने की आदत नहीं थी।'
द हाउसहोल्डर की तरह ही, शेक्सपियर वाला भी सीमित बजट में बनी थी। एक बार फिर, रूथ और शशि ने अपने वेतन को स्थगित करने पर सहमति जताई - आखिरकार 1970 में इस्माइल ने बॉम्बे टॉकी के निर्माण के दौरान शशि को बकाया राशि का भुगतान किया।
द हाउसहोल्डर से एक और विचित्र समानता यह है कि शेक्सपियर वॉलह में भी सत्यजीत रे की उपस्थिति थी—उनके छायाकार सुब्रता मित्रा ने फिल्म की शूटिंग की और सत्यजीत ने मूल संगीत तैयार किया। वर्षों बाद, 2007 में, अमेरिकी फिल्म निर्देशक वेस एंडरसन ने अपनी भारत-आधारित ड्रामा फिल्म द दार्जिलिंग लिमिटेड के लिए शेक्सपियर वॉलह के कई संगीत का उपयोग किया।
शेक्सपियर वॉलह को 15वें बर्लिन अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव के प्रतियोगिता अनुभाग में प्रदर्शित किया गया, जिसका श्रेय आंशिक रूप से सत्यजीत की सिफारिश को जाता है, जिनकी फिल्में चारुलता—जिसे कई लोग उत्कृष्ट कृति मानते हैं—भी प्रतियोगिता में शामिल थी। मधुर ने सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का रजत भालू पुरस्कार जीता, जबकि सत्यजीत ने चारुलता के लिए सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का रजत भालू पुरस्कार जीता, जिससे 1965 जर्मनी में भारत के लिए एक उल्लेखनीय रूप से सफल वर्ष साबित हुआ।
बर्लिन में मधुर और शशि एक मजेदार गलतफहमी में फंस गए। दोनों अभिनेता होटल एमज़ो की लिफ्ट में थे, तभी उन्हें एहसास हुआ कि इतालवी अभिनेत्री जीना लोलोब्रिगिडा भी उनके साथ लिफ्ट में थीं। परिचय हुआ और जीना, जो एक सेक्स सिंबल के रूप में जानी जाती थीं, जाहिर तौर पर शशि के आकर्षक रूप से प्रभावित हो गईं। मधुर मुझे बताते हैं, 'अगले दिन, मेरे कमरे में मेरे लिए फूलों का एक बहुत बड़ा, बेहद खूबसूरत गुलदस्ता आया, जिस पर जीना के हस्ताक्षर के साथ लिखा था, "क्या आप मेरे साथ दोपहर का भोजन करेंगे?" मैंने गुलदस्ते को देखा और मुझे पता चल गया कि कोई गलती हुई है। जीना भला शशि कपूर और मधुर ज़ाफरी के नामों में कैसे फर्क कर सकती थीं—इतालवी दृष्टिकोण से कौन पुरुष है और कौन महिला? उन्होंने मुझे शशि समझ लिया होगा। मुझे याद है कि मैं शशि के कमरे में गया, उनके सामने फूल रख दिए और कहा, "शशि, मुझे पता है ये आपके लिए हैं। लेकिन अगर आप चाहते हैं कि मैं उनके साथ दोपहर का भोजन करूं, तो मैं चलूंगा।"'
इस्माइल को उस घटना के बारे में और भी बहुत कुछ याद है। अपनी आत्मकथा में वे लिखते हैं:

हमारी यात्रा की आखिरी रात, उत्सव द्वारा आयोजित एक पार्टी में, बेहद नाराज़ जीना—जिसके प्रस्तावों को, संभवतः, शायद ही कभी ठुकराया जाता था—ने शशि से खुलकर बात की और अपनी गलती का एहसास किया। बेचारा शशि बहुत निराश हुआ कि इस भ्रम के कारण वह इतना बड़ा अवसर चूक गया।

शेक्सपियर वाला ने न्यूयॉर्क और लंदन फिल्म समारोहों में प्रदर्शन किया। और शशि कपूर के अभिनय की कई लोगों ने सराहना की। वैरायटी के एक अनाम समीक्षक ने फिल्म के 'भोलेपन' की प्रशंसा करते हुए

कहा: 'भारतीय प्लेबॉय के रूप में शशि कपूर का अभिनय भी बेहद आत्मविश्वासपूर्ण है।' लाइफ पत्रिका के रिचर्ड शिकेल ने फिल्म की 'मानवता, बुद्धिमत्ता और कल्पनाशीलता' की जमकर प्रशंसा करते हुए कहा कि 'आइवरी और उनके पटकथा लेखक, आर. प्रॉवर झबवाला को उनके अभिनेताओं ने शानदार ढंग से सहयोग दिया है।' यहां तक कि द न्यूयॉर्क टाइम्स के बॉस्ले क्रॉथर भी शेक्सपियर वाला के प्रति (अपेक्षाकृत) उदार हैं।

इस कहानी [ब्रिटिश थिएटर समूह के संघर्षों और अंतिम दिनों की कहानी] के वर्णन के माध्यम से, श्री आइवरी और उनकी लगभग परिपूर्ण कलाकारों की टीम ने अनगिनत सशक्त निहितार्थों और सूक्ष्म संकेतों को व्यक्त करने में कामयाबी हासिल की है, जो विडंबना, उदासी और परिवर्तन के प्रति सौम्य स्वीकृति से ओतप्रोत हैं।

क्रॉथर की समीक्षा ने अंततः शेक्सपियर वाला को मैनहट्टन के पूर्वी हिस्से में स्थित एक आर्ट-हाउस थिएटर, बैरोनेट एंड कोरोनेट में आठ सप्ताह तक चलने का मौका दिलाने में मदद की।
लेकिन सबसे सटीक टिप्पणी शशि के ससुर, ज्योफ्री केंडल की ओर से आई, जिन्होंने अपनी बेटी फेलिसिटी को लिखे एक पत्र में कहा: 'उसे [शशि को] विदेशी निर्देशकों के साथ अंग्रेजी फिल्मों में काम करना चाहिए जो उसका फायदा उठाना जानते हों।'

## बॉम्बे टॉकी (1970)

भारत में बनी अपनी चौथी फिल्म के लिए (जेम्स आइवरी ने 1969 में इसके बीच में 'द गुरु' का निर्देशन किया था), मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस ने मुंबई के चकाचौंध भरे हिंदी फिल्म उद्योग पर ध्यान केंद्रित करने का फैसला किया। यह रूथ प्रॉवर झबवाला का विचार था—एक ब्रिटिश बेस्टसेलर लेखिका की कहानी जो अपनी अगली बड़ी किताब के लिए 'बॉलीवुड' से सामग्री की तलाश में है, और साथ ही भारतीय फिल्म जगत की स्टार-सिस्टम से भी गुज़रती है। इस्माइल मर्चेंट, जो हमेशा से हिंदी सिनेमा के बड़े प्रशंसक रहे हैं—उनकी पसंदीदा स्टार 1950 के दशक की अभिनेत्री निम्मी थीं—इस बात से बेहद खुश थे कि फिल्म में फिल्म जगत के भड़कीले और दिखावटी तत्वों को दिखाया जा सकेगा। 'बॉम्बे टॉकी' शीर्षक स्वाभाविक रूप से चुना गया, और एक बार फिर सुब्रता मित्रा छायाकार थे।
स्वाभाविक रूप से, शशि कपूर को बड़े फिल्म स्टार विक्रम की भूमिका निभाने के लिए चुना गया, जो लेखिका लूसिया लेन से प्यार कर बैठता है, जिसका किरदार उनकी वास्तविक जीवन की पत्नी जेनिफर केंडल कपूर ने निभाया है। अपने करियर में निभाए गए कुछ नकारात्मक किरदारों में से एक में, आत्ममुग्ध विक्रम अपनी युवा पत्नी माला (अपर्णा सेन द्वारा अभिनीत) को धोखा देता है और अपने शांत स्वभाव के पटकथा लेखक दोस्त हरि (पाकिस्तानी अभिनेता ज़िया मोहियुद्दीन द्वारा अभिनीत) से लूसिया का ध्यान अपनी ओर खींच लेता है।
हालांकि, शशि के बॉम्बे टॉकी के लिए प्रतिबद्ध होने से पहले, द हाउसहोल्डर और शेक्सपियर वाला के लिए उन्हें दिए गए पैसों का असहज सवाल उनके सामने था। शशि इस्माइल को अपना करीबी दोस्त मानते थे, लेकिन वे अपने पुराने वित्तीय बकाया चुकाना चाहते थे। लेकिन, इस्माइल के साथ हमेशा की तरह, उनके पास एक बार फिर पैसों की कमी थी। आखिरकार, जेनिफर ही उनकी मदद के लिए आगे आईं। इस्माइल लिखते हैं:

जेनिफर के मन में मेरे लिए हमेशा एक खास जगह थी। उसने मुझे शशि को पैसे चुकाने के लिए उधार दिए थे। इस तरह, मैंने शशि के ही पैसों से अपना कर्ज चुकाया। बेशक, मैंने जेनिफर को पैसे जितनी जल्दी हो सके लौटा दिए, लेकिन यह सारा लेन-देन शशि से गुप्त रहा।

और इसी तरह बॉम्बे टॉकी को अपना सितारा मिला। जेम्स आइवरी कहते हैं, 'बॉम्बे टॉकी बनाना वाकई एक आनंददायक अनुभव था, जिसमें शशि और जेनिफर ने प्रेमियों की भूमिका निभाई। पूरी फिल्म - खैर, कोई भी फिल्म बनाना आसान नहीं होता - लेकिन यह आनंददायक थी और शशि को इसे करने में मज़ा आया। वह काफी खुश थे।'

1970, बॉम्बे टॉकी। एक चर्चित दृश्य, जिसमें शशि कपूर अपनी पत्नी जेनिफर केंडल को किस करते हैं। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

हालांकि फिल्म में अपर्णा की भूमिका छोटी है—वह इसे शशि के साथ अपने सभी कामों में सबसे 'कम दिलचस्प' बताती हैं, जिनमें उनकी पहली निर्देशित फिल्म '36 चौरंगी लेन' में शशि का निर्माता होना भी शामिल है—लेकिन उन्हें सेट पर जेम्स, सुब्रता और शशि को करीब से देखने का मौका मिला। वह कहती हैं, 'मुझे याद है, एक बार 'बॉम्बे टॉकी' की शूटिंग के दौरान, सुब्रता को सेटअप करने में बहुत समय लग रहा था—पूरा कमरा शीशों से भरा था, और उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि अपनी लाइटें कहां छिपाएं। आखिरकार, जब सुब्रता ने कहा कि वह तैयार हैं, तो शशि ने कहा कि उनका अभिनय करने का मूड नहीं है! शशि उस समय एक जाने-माने अभिनेता थे, लेकिन सुब्रता दोनों में बड़े स्टार थे। हालांकि, शशि कॉफी देर से वहां बैठे थे, और नाराज़ थे।'

'अचानक, इस कहासुनी के बीच में, जिम [जेम्स आइवरी] अपनी नाक खींचने लगे। उनकी नाक लाल हो गई। और वे मुस्कुराने लगे। दरअसल, जब भी कुछ अप्रिय होता, जिम की पहली प्रतिक्रिया अपना आपा खोने की नहीं, बल्कि हंसने की होती थी। वे एक बच्चे की तरह थे। इसलिए, वे मुस्कुराते हुए शशि से पूछने लगे, "तुम्हें क्या लगता है कि तुम कब सही मूड में आओगे?" और शशि ने कहा, "मुझे नहीं पता, आधे घंटे बाद!" फिर, चुपचाप वे वापस आए और उस दृश्य की शूटिंग की।'

यह इकलौता मौका नहीं था जब जेम्स को मुस्कुराते हुए स्थिति को संभालना पड़ा। अपर्णा मुझे बताती हैं, 'मेरा शशि के साथ एक किसिंग सीन था। मैं बहुत परेशान थी क्योंकि मुझे पहले से बताया नहीं गया था - मुझे सेट पर ही बताया गया! जिम मुस्कुराए और बोले, हां, तुम्हें यह करना ही होगा। और शशि के साथ मिलकर, वह मुझे चिढ़ाते रहे। मुझे आखिरकार मान जाना पड़ा। यह पहली बार था जब मैंने स्क्रीन पर किस किया।'

बॉम्बे टॉकी को मिली-जुली समीक्षाएं मिलीं—न्यूयॉर्क टाइम्स ने इसे जेम्स की 'सबसे महत्वाकांक्षी' फिल्म कहा, और फिर, 'अमेरिकी संदर्भ में, सबसे कम सफल'—लेकिन यह भारतीय 'सपनों की फैक्ट्री' के भव्य चित्रण और विशाल टाइपराइटर पर बुस्बी बर्कले से प्रेरित शुरुआती नृत्य के लिए याद की जाती है; हेलेन और शशि टाइपराइटर की कुंजियों पर कूदते हैं, जबकि किशोर कुमार एक अद्भुत और जोशीला गीत गाते हैं, 'टाइपराइटर टिप टिप टिप टिप करता है, जिंदगी की हर कहानी लिखता है'। यह दृश्य 'बॉलीवुड' की पॉप भव्यता को भी मात देता है!

बॉम्बे टॉकी को शशि और उनके दोस्त अमिताभ बच्चन अभिनीत कई फिल्मों में से पहली फिल्म के रूप में जाना जा सकता था—लेकिन सिनेमाई इतिहास का यह हिस्सा बन पाना किस्मत में नहीं था। जेम्स के अनुसार, अमिताभ को एक ऐसे दृश्य में संघर्षरत अभिनेता की भूमिका निभानी थी, जहां अनुभवी अभिनेत्री नादिरा पुरुष प्रशंसकों से घिरी होती है। लेकिन अमिताभ आए ही नहीं! जेम्स कहते हैं, 'किसी कारणवश उन्होंने उस भूमिका से मना कर दिया। लेकिन समस्या यह थी कि हमने उन्हें पहले ही एक दृश्य में फिल्माया था—जहां शशि के पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार हो रहा है और कई युवक चिता के आसपास मौजूद भीड़ का हिस्सा हैं—अमिताभ उस फ्रेम में थे। आखिरकार, हमने उस दृश्य को फिल्म से हटा दिया।'

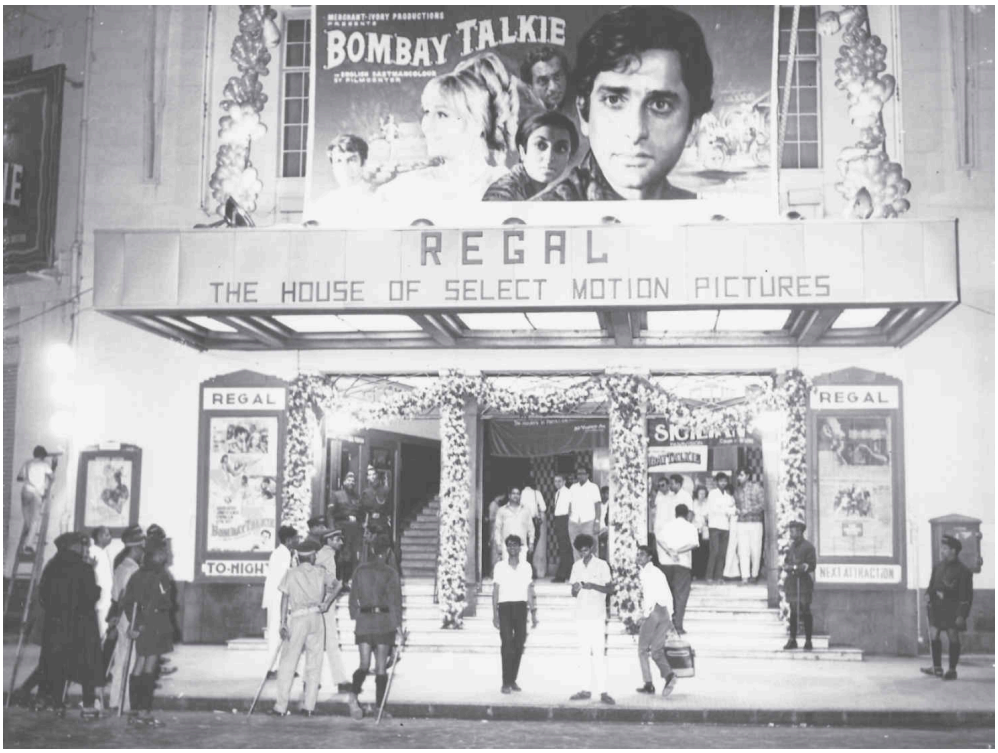


1970, बॉम्बे टॉकी। शशि कपूर की तीसरी मर्चेंट-आइवरी फिल्म विशाल परदे पर रिलीज हुई।
सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

1970, बॉम्बे टॉकी। शुरुआती दृश्य में शशि कपूर द्वारा अभिनीत विक्रम, हेलेन के साथ एक विशाल टाइपराइटर सेट पर नृत्य करते हैं, जबकि किशोर कुमार और आशा भोसले 'टाइपराइटर टिप टिप टिप टिप करता है' गीत गाते हैं। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

शशि, बॉम्बे टॉकी फ़िल्म के एक दृश्य का वर्णन करते हुए अमिताभ के रहस्यमय ढंग से गायब होने की घटना को समझाते हैं, जिसमें जेनिफर की कार अंतिम संस्कार के जुलूस के लिए सड़क पर रुकी हुई है। वे कहते हैं, 'अमिताभ उन पुरुषों की भीड़ में से एक अभिनेता थे। मैंने उनसे कहा कि वे सेट छोड़कर चले जाएं और वह भूमिका न करें। वे नाराज़ हो गए और कहने लगे कि उन्हें 50 रुपये का नुकसान होगा।'
अमिताभ भी इस बात की पुष्टि करते हैं। 'जी हां, बॉम्बे टॉकी की कहानी सही है।' फिर वे आगे कहते हैं, 'शशि ने कहा था: "ये छोटे-मोटे रोल मत करो। तुम इससे कहीं बेहतर चीजों के लिए बने हो।"'
शशि के वे शब्द—जिन्होंने उस समय संघर्षरत अमिताभ को 'परेशान' कर दिया था, जो अभी-अभी बॉम्बे आए थे और उन्हें कोई काम नहीं मिल रहा था—भविष्यवाणी साबित हुए।

## ऊष्मा और धूल **(1983)**

शशि कपूर को जेम्स आइवरी के निर्देशन में बनी चौथी और आखिरी फिल्म 'हीट एंड डस्ट' थी, जो रूथ प्रावर झबवाला के 1975 में प्रकाशित इसी नाम के बुकर पुरस्कार विजेता उपन्यास पर आधारित थी। यह पहली भव्य पैमाने की फिल्म भी थी जिसके लिए मर्चेंट-आइवरी की जोड़ी को 'अ रूम विद अ व्यू' और 'हावर्ड्स एंड' जैसी भविष्य की ऑस्कर विजेता फिल्मों के लिए जाना जाने लगा।
हीट एंड डस्ट में प्रभावशाली कलाकार हैं, जिनमें जूली क्रिस्टी एक आधुनिक अंग्रेज महिला, ऐन की भूमिका निभा रही हैं, जो उस भारत की तलाश में है जिससे उसकी परदादी का 1920 में संपर्क हुआ था। ग्रेटा स्काची - जो फिल्म की रिलीज के समय केवल तेईस वर्ष की थीं और पहली बार पर्दे पर अभिनय कर रही थीं - को ऐन की चाची और भारत में एक ब्रिटिश सिविल सेवक की पत्नी ओलिविया के रूप में कास्ट किया गया था; ओलिविया का एक स्थानीय नवाब के साथ प्रेम संबंध बन जाता है।
स्वाभाविक रूप से, शशि को नवाब के किरदार के लिए चुना गया। फिल्म रिलीज के समय वे पैंतालीस वर्ष के थे, शाही व्यक्तित्व वाले और हिंदी सिनेमा में अपने करियर के शिखर पर थे, उन्होंने शान, कलयुग, नमक हलाल और विजेता जैसी फिल्में पूरी कर ली थीं। जेम्स कहते हैं, 'द हाउसहोल्डर बनाते समय वे बीस साल बड़े लग रहे थे। वे परिपक्व और पहले की तरह ही आकर्षक दिख रहे थे। हे भगवान, वे नवाब के किरदार के लिए एकदम सही थे।' एक अन्य साक्षात्कार में, जेम्स आगे कहते हैं: 'शशि ने हमारी फिल्मों में हमेशा राजकुमारों की भूमिका निभाई है - सिवाय द हाउसहोल्डर के। शेक्सपियर वाला में वे एक अमीर प्लेबॉय की भूमिका निभाते हैं। और फिर, जब हमने बॉम्बे टॉकी बनाई, तो वे अपने करियर और खूबसूरती के चरम पर एक फिल्म स्टार थे। और फिर, जब हम हीट एंड डस्ट बनाते हैं, तो वे नवाब की भूमिका में होते हैं।' उन्हें सचमुच इस धरती पर इसी तरह की भूमिकाएँ निभाने के लिए भेजा गया था।
शेक्सपियर वॉलह में शशि की प्रेमिकाओं में से एक की भूमिका निभाने वाली मधुर जाफरी ने हीट एंड डस्ट की पटकथा पढ़ी और इस बार उनकी मां, बेगम की भूमिका निभाने के लिए उत्सुक थीं। चूंकि अभिनेत्री शशि से केवल पांच साल बड़ी थीं, इसलिए जेम्स को यकीन था कि यह कास्टिंग काम नहीं करेगी। जैसा कि मधुर याद करती हैं, 'मुझे नहीं पता कि उनके मन में कौन था, लेकिन उन्होंने मुझसे कहा, "मैं तुम्हें बेगम की भूमिका नहीं दे सकता क्योंकि यह मेरे लिए बहुत अनुचित होगा।"' अंततः मधुर के समझाने पर जेम्स मान गए और उन्होंने अपना इरादा बदल दिया।
जैसा कि मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस के साथ अक्सर होता था, फाइनेंसर अचानक पीछे हट गए और इसके साथ ही फिल्म के लिए फंड भी खत्म हो गया। हैदराबाद में शूटिंग शुरू होने के तीन हफ्ते बाद, अभिनेताओं और क्रू को भुगतान करने के लिए पैसे नहीं थे; इससे भी बुरी यह थी कि जब टीम अगले लोकेशन पर जाने के लिए तैयार थी, तो होटल के बिल चुकाने थे। इस्माइल मर्चेंट, जो पहले से ही कश्मीर में थे, ने शशि से बिलों के लिए गारंटर बनने को कहा। जेम्स कहते हैं, 'मुझे इस तरह की जानकारियों से दूर रखा गया था,' लेकिन वे इस बात की पुष्टि करते हैं कि शशि ने उनकी मदद की।
कई आर्थिक संकटों के बावजूद, हीट एंड डस्ट फिल्म बनी और यह एक बड़ी सफलता साबित हुई। रिचर्ड एटनबरो की फिल्म गांधी, जिसने पिछले साल ऑस्कर में धूम मचा दी थी, और ब्रिटिश भारत पर आधारित दो टेलीविजन श्रृंखलाओं - द ज्वेल एंड द क्राउन और द फार पवेलियंस - की सफलता के साथ, हीट एंड डस्ट ने देश को अंतरराष्ट्रीय मानचित्र पर मजबूती से स्थापित कर दिया; भारत उस दौर की शान बन गया।
कोलंबिया विश्वविद्यालय के पत्रकारिता स्कूल में एक छात्रा के रूप में, मुझे याद है कि मैंने मिडटाउन मैनहट्टन के पेरिस थिएटर में 'हीट एंड डस्ट' का उद्घाटन सप्ताहांत देखा था। टिकट धारकों की कतार पूरे ब्लॉक तक फैली हुई थी, और जब हम आखिरकार अंधे-अंधेरे हॉल में अपनी सीटों पर बैठे, तो मैं इस बात से बेहद रोमांचित थी कि भारत और एक शानदार शशि न्यूयॉर्क शहर में एक विशाल स्क्रीन पर थे।

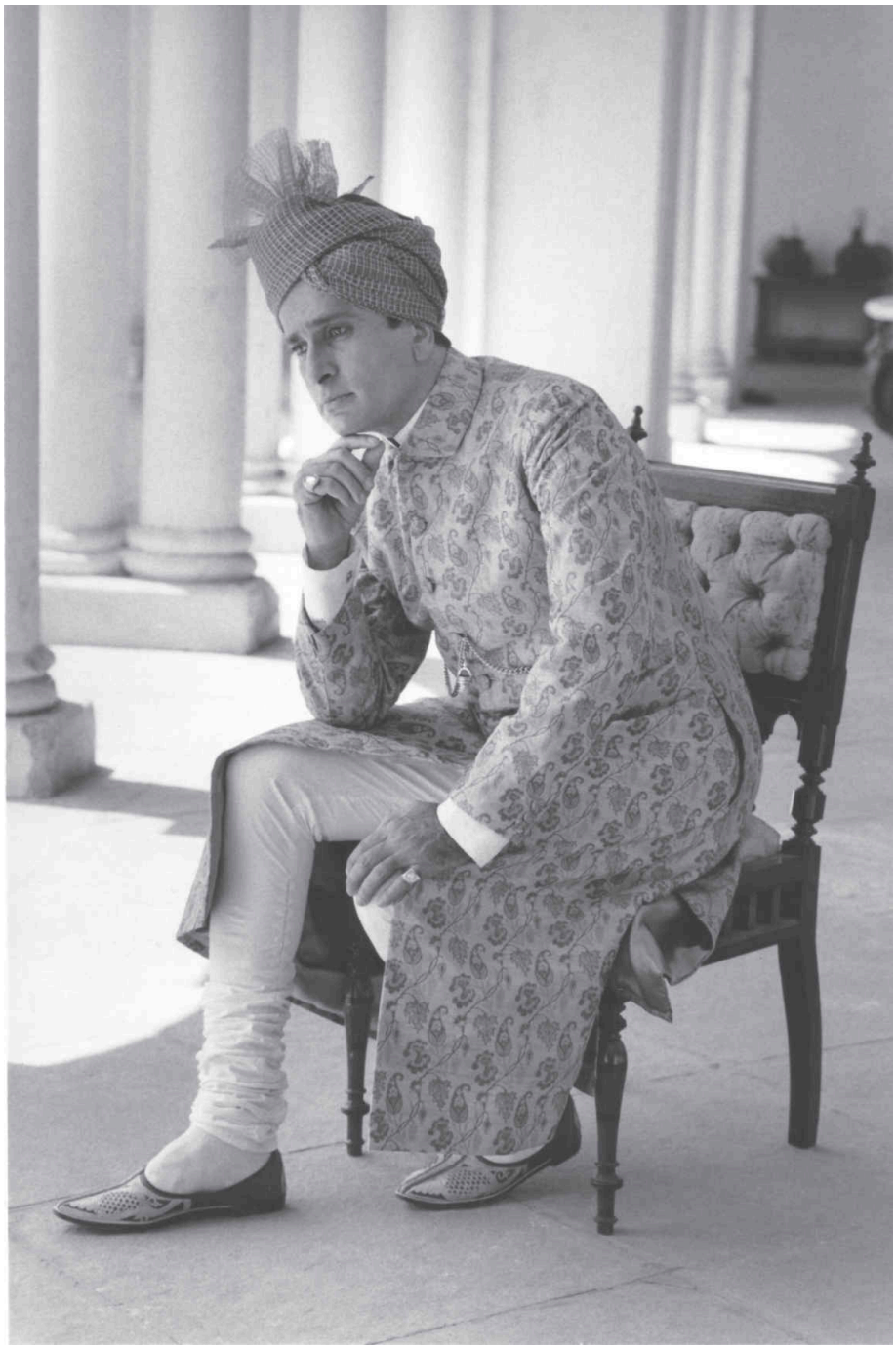

1983, हीट एंड डस्ट। शशि कपूर नवाब के किरदार में। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

1983, हीट एंड डस्ट। 'शशि कपूर को राजकुमार की भूमिका निभाने के लिए ही इस धरती पर भेजा गया था': जेम्स आइवरी। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

शशि ने शेक्सपियर वॉलह के लिए विदेश यात्रा की थी, लेकिन हीट एंड डस्ट के साथ ही उन्हें एक अमेरिकी सेलिब्रिटी होने का पूरा अनुभव मिला। शशि कहते हैं:

मैं यूनिवर्सल स्टूडियो के टूर पर गया था। वहाँ हर जगह हीट और डस्ट के पोस्टर लगे हुए थे। शशि कपूर हर जगह नज़र आ रहे थे [...] एयरलाइंस ने मेरे कपड़े खो दिए थे और मुझे न्यूयॉर्क शहर के प्लाज़ा में दिग्गज हैरी विंस्टन द्वारा आयोजित रिसेप्शन के लिए कुछ ही घंटों में एक नया सूट सिलवाना पड़ा। प्लासिडो डोमिंगो भी वहाँ मौजूद थे।

उस उद्घाटन की रात, हॉट एंड डस्ट की टीम सुबह के अखबारों में आने वाली पहली समीक्षाओं को पढ़ने के लिए जागती रही—और सभी समीक्षाएँ सकारात्मक थीं। बाद में, शिकागो सन-टाइम्स में, रोजर एबर्ट ने शशि के नवाब के किरदार को 'मनमोहक, आकर्षक और हंसमुख रूप से परिष्कृत' बताया। और द न्यूयॉर्क टाइम्स में, विंसेंट कैनबी ने पूरी टीम की सराहना करते हुए कहा—'उनके सभी सहयोगों में से, हीट एंड डस्ट से अधिक सुंदर, हास्यपूर्ण, साहित्यिक या मनोरंजक कोई नहीं रहा है'—और शशि की भूमिका की जटिलता को स्वीकार किया: 'श्री कपूर [...] नवाब के रूप में हास्यपूर्ण और रहस्यमय दोनों हैं, जिनके उत्तम शिष्टाचार एक मूर्ख या खलनायक का मुखौटा हो सकते हैं।' शशि ने एक लंबा सफर तय किया था।

## सिद्धार्थ (1972)

न्यूयॉर्क निवासी और एवन के संस्थापक अध्यक्ष के पुत्र कॉनराड रूक्स, हरमन हेस के 1922 के उपन्यास और उसके नायक सिद्धार्थ से बहुत प्रेरित थे। सिद्धार्थ एक बेचैन लड़का है जो जीवन के सच्चे अर्थ की खोज में लंबी यात्रा करता है। रास्ते में, सिद्धार्थ की मुलाकात बुद्ध से होती है, जिनकी शिक्षाओं की वह सराहना तो करता है लेकिन उन्हें आत्मसात नहीं कर पाता; एक आकर्षक वेश्या कमला से, जो (अस्थायी रूप से) उसे अपने भाग्य का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित करती है; और एक नाविक से, जो उसे याद दिलाता है कि प्रत्येक आध्यात्मिक खोज अद्वितीय होती है, और ज्ञान सिखाया जा सकता है, लेकिन बुद्धिमत्ता अनुभव से ही प्राप्त होती है।
सिद्धार्थ और कॉनराड कुछ मायनों में एक जैसे थे—दोनों ही भारत में आत्म-खोज की यात्रा पर निकले हिप्पी थे। लेकिन जहां सिद्धार्थ को नदी के किनारे आध्यात्मिक ज्ञान का अनुभव हुआ, वहीं कॉनराड को राज कपूर के स्टूडियो में ज्ञानोदय का क्षण मिला, और इसने उन्हें एक ऐसे रास्ते पर अग्रसर किया जो वास्तव में 'आध्यात्मिक' नहीं था।

तो मैं राज कपूर के छोटे से दफ्तर में था। वो एक चबूतरे पर शान से बैठे थे और नौकर बार-बार उनके लिए स्कॉच और सोडा ला रहा था। इसी बीच, सारे डिस्ट्रीब्यूटर आ गए और उनसे बाहर बन रही फिल्म को पूरा करने की गुहार लगाने लगे। साथ ही, वे उनके लिए पैसों से भरे बक्से और सूटकेस भी ला रहे थे। तब मैंने मन ही मन सोचा, यही मेरे लिए सही है, यही मेरी जिंदगी है। मुझे फिल्म इंडस्ट्री में आना ही होगा [...] मैं भारत में महाराजा की तरह रह सकता हूँ!

कॉनराड के ये बेतुके दावे सच हैं या नहीं, यह हम कभी नहीं जान पाएंगे, लेकिन हम इतना ज़रूर जानते हैं कि उन्होंने हरमन के उपन्यास पर आधारित फिल्म बनाने का फैसला किया और अभिनेताओं की एक सूची तैयार की। उन्हें मुख्य भूमिका के लिए पीटर फोंडा को लेने की सलाह दी गई थी, लेकिन निर्देशक ऐक भारतीय स्टार कास्ट चाहते थे और शशि से बेहतर नायक की भूमिका के लिए उन्हें कोई और उपयुक्त नहीं लगा—उन्होंने पहले बॉम्बे की यात्रा के दौरान जुहू के होटल सन-एन-सैंड में जेनिफर केंडल कपूर के साथ शशि से मुलाकात की थी। सिमी गरेवाल, जिन्होंने तब तक सत्यजीत रे की 'अरण्येर दिन रात्रि' से लेकर राज कपूर की 'मेरा नाम जोकर' तक कई आर्ट हाउस और व्यावसायिक फिल्मों में अभिनय किया था, को खूबसूरत कमला की भूमिका के लिए चुना गया।
कॉनराड ने कोई कसर नहीं छोड़ी और सिद्धार्थ के निर्माण के लिए अपने पिता से मिली विशाल विरासत का एक हिस्सा खर्च किया। उन्होंने इंगमार बर्गमैन के नियमित कैमरामैन (जिन्हें अक्सर बर्गमैन की 'आंखें' कहा जाता था) स्वेन नाइक्विस्ट को काम पर रखा, जो अपने साथ एक स्वीडिश टीम लेकर आए थे, ताकि उत्तर भारत की अव्यवस्थित सुंदरता और हरिद्वार और ऋषिकेश के अर्ध-रहस्यमय इलाकों को कैमरे में कैद किया जा सके। उन्होंने ब्रिटिश और अमेरिकी क्रू सदस्यों को भी शामिल किया। संगीत के लिए, उन्होंने हेमंत कुमार की प्रतिभा को चुना, जिन्होंने संगीत रचना के अलावा, अपनी पुरानी फिल्मों के दो हिट बंगाली गाने - 'ओ नोडी रे' और 'पाथेर क्लांटी भूले' का भी इस्तेमाल किया।
कॉनराड ने दिसंबर 1971 में होने वाले भारत-पाकिस्तान युद्ध की कल्पना भी नहीं की थी, जिसके कारण फिल्म की शूटिंग में देरी हुई। तनावपूर्ण पखवाड़े भर सिद्धार्थ की टीम दिल्ली के ओबेरॉय मेडेंस होटल में रुकी रही। आगे क्या होगा, इस बारे में चिंतित होकर कुछ ब्रिटिश क्रू मेंबर चले गए। डेविड मैककिबेन, जिन्हें कॉनराड ने लोकेशन स्काउट और प्रोडक्शन मैनेजर के रूप में नियुक्त किया था, प्रोडक्शन टीम की दुविधा को याद करते हुए कहते हैं, 'हम आगे बढ़ने ही वाले थे, लेकिन अब हमारे पास प्रोडक्शन या साउंड टीम नहीं थी!'
इस मोड़ पर, शशि न केवल कॉनराड के साथ एक टीम बनाने में जुट गए, बल्कि अपने संवादों का अभ्यास भी कर रहे थे ताकि निर्देशक को उनकी प्रस्तुति पसंद आए। सिमी को शशि के साथ हुए ये अभ्यास सत्र याद हैं। वह कहती हैं, 'मुझे स्वाभाविक अभिनय पसंद है, लेकिन कॉनराड चाहते थे कि हम अपने अभिनय में पारंपरिक शैली का प्रयोग करें क्योंकि यह एक ऐतिहासिक फिल्म थी, आधुनिक नहीं।'
युद्ध के दौरान कठिन पूर्वाभ्यासों की देखरेख करने के बाद, कॉनराड को एक और दुविधा का सामना करना पड़ा—शशि मशहूर थे, और ऋषिकेश की भीड़भाड़ वाली सड़कों पर शूटिंग करना असंभव था। इसलिए, शूटिंग का एक बड़ा हिस्सा भरतपुर के महाराजा की जागीर में करना पड़ा, जहाँ प्रवेश प्रतिबंधित था। यह एक अच्छा निर्णय साबित हुआ। सिमी मुझे बताती हैं, 'शूटिंग के दौरान एक तरह का शाश्वत अनुभव था। कोई जल्दबाजी नहीं। कोई हड़बड़ी नहीं। यह सहज था, ठीक फिल्म की शांति की तरह।'

फिर सिद्धार्थ और कमला के बीच अंतरंग दृश्यों की शूटिंग का समय आया—जिनके लिए कॉनरेड कोणाक और खजुराहो की मूर्तियों से प्रेरणा मिली थी। डेविड तुरंत स्पष्ट करते हैं, 'इसमें बहुत ज़्यादा यौन दृश्य नहीं थे। ये सांकेतिक और सुरुचिपूर्ण ढंग से फिल्माए गए थे।' लेकिन दृश्यों में चुंबन ज़रूरी था और सिमी को आंशिक रूप से नग्न अवस्था में शूट करना पड़ा। सिमी कहती हैं, 'मैं आपको बता नहीं सकती कि इन दृश्यों से पहले मैं कितनी घबराई हुई थी। स्वीडिश क्रू मेरी घबराहट को समझ नहीं पा रहा था। स्वेन ने मुझसे कहा, "स्वीडन में, जब हम नग्न दृश्यों की शूटिंग करते हैं, तो अभिनेता बस अपने कपड़े उतार देते हैं और इंतज़ार करते हुए बैठ जाते हैं!" आखिरकार मैंने कमर से नीचे बॉडी-स्टॉकिंग पहनी, लेकिन जब मुझे टॉपलेस होना पड़ा, तो मैं बुरी तरह घबरा गई। मैं ऊपर नहीं देख पा रही थी और बस अपनी आँखें नीचे करे लेती थी। शशि ने मेरी स्थिति को भांप लिया और मुझसे कहा, "शर्माओ मत, सिमी। तुम खूबसूरत हो।" उनके शब्दों से प्रेरित होकर, मुझे आत्मविश्वास के साथ यह सब करने का साहस मिला।'
बेहद धैर्यवान शशि ने ही सिमी को कैमरे के सामने किस करना सिखाया था। सिमी कहती हैं, 'चूंकि उन्होंने हॉलीवुड फिल्मों में प्रेम दृश्य किए थे, इसलिए शशि ने मुझे समझाया कि स्क्रीन पर किस करते समय चेहरे का एंगल कैसा रखना चाहिए।' उन्होंने आगे कहा, 'उन्होंने यह भी कहा, "दबाव कम रखें, ताकि चेहरा विकृत न हो।"'
मैंने सिद्धार्थ को पहली बार 1974 में लंदन के एक छोटे से आर्ट हाउस थिएटर में देखा था, भारत में इसके रिलीज होने से दो साल पहले। फिल्म की गति, रहस्यमयी लोकेशन और सिद्धार्थ और कमला के बीच के कोमल पलों ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया था। लेकिन सबसे ज़्यादा मुझे हेमंत की आवाज याद है, और थिएटर से बाहर निकलते समय मैं लंदन की सड़कों पर 'ओ नोडी रे' गुनगुना रहा था—वही धुन जिसे हेमंत ने बाद में कोहरा फिल्म में 'ओ बेकरार दिल' के लिए इस्तेमाल किया था।
सिद्धार्थ फिल्म 1976 में भारत में रिलीज हुई, लेकिन इससे पहले इसे कई विवादों का सामना करना पड़ा, जिनमें से अधिकांश विवाद फ़िल्म के नग्न दृश्यों को लेकर थे। प्रेस ने जमकर हंगामा मचाया, एक पत्रिका ने तो शशि के साथ सिमी की टॉपलेस तस्वीरें लीक कर दीं; सिमी ने मुकदमा दायर किया। इतने शोर-शराबे के बीच, अविश्वसनीय रूप से, फिल्म भारतीय सेंसर बोर्ड से बच गई, जिन्होंने सिद्धार्थ को मामूली कट के साथ पास कर दिया। कॉनरेड रूक्स ने गर्व से कहा: 'मैंने भारतीय सिनेमा में पहला प्रेम प्रसंग दृश्य और स्क्रीन पर पहला चुंबन या चुंबनों की श्रृंखला दिखाई।' हमेशा की तरह, उनके दावे कुछ हद तक अतिरंजित थे; भारतीय सिनेमा का पहला ऑन-स्क्रीन चुंबन चार दशक पहले, 1933 की फिल्म 'कर्मा' में फिल्माया गया था।
सिद्धार्थ को दर्शकों से अच्छा प्रतिसाद नहीं मिला। आलोचकों ने शशि के शैलीबद्ध अभिनय और बनावटी संवाद-प्रविष्टि की तुरंत निंदा की और फिल्म की समग्र रूप से आलोचना की—वैरायटी के एक अनाम आलोचक ने सिद्धार्थ की 'सतही भव्यता' की आलोचना की, जो कभी-कभी फ़िल्म से उसकी आवश्यक वास्तविकता को छीन लेती है; न्यूयॉर्क टाइम्स के विंसेंट कैनबी ने इसे 'फूल बच्चों के लिए दस आज्ञाओं का एक छोटा संस्करण' कहकर खारिज कर दिया; और शिकागो सन टाइम्स के रोजर एबर्ट ने फिल्म को खराब करने वाली खामियों का सारांश प्रस्तुत किया:

समस्या यह है कि फ़िल्म कुछ ज़्यादा ही खूबसूरत है। हमें सूर्यास्त, मनोरम दृश्य, धीमी गति से बहती नदियाँ, धूप में उड़ती धूल और शानदार भारतीय परिदृश्य (मानव निर्मित और वास्तविक) देखने को मिलते हैं। और इस सारी भव्यता के बीच, किरदारों की गतिविधियाँ कुछ अवास्तविक और महत्वहीन सी लगती हैं। ऐसा लगता है मानो फ़िल्म के लोग हमेशा खुद को परछाईं और पीछे से आती रोशनी में ही देखते रहे हों। सामान्य नियम के अनुसार, किरदारों को ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए जैसे उन्हें पता हो कि वे किसी फ़िल्म में हैं। इससे हमारा भी ध्यान भटकता है और उनका भी।

दिलचस्प बात यह है कि अमेरिका में, और विशेष रूप से कॉलेज परिसरों में, वियतनाम युद्ध और नागरिक अधिकार आंदोलन के बाद के हालातों से आहत दर्शकों को यह फ़िल्म बहुत पसंद आई, जो बेचैनी और व्यक्तिवाद की बात करती थी। सिद्धार्थ भले ही बॉक्स ऑफिस पर सफल न रही हो, लेकिन एक कल्ट क्लासिक बन गई। इसने दुनिया भर में प्रदर्शन किया।
सिमी और शशि फ़िल्म के प्रीमियर के लिए न्यूयॉर्क गए और सितंबर 1972 में कॉनराड के साथ वेनिस फ़िल्म फेस्टिवल में शामिल हुए। सिमी कहती हैं, 'सिद्धार्थ वाली रात मुझे हमेशा याद रहेगी।' 'शशि और मैं होटल एक्सेल्सियर से थिएटर तक पैदल गए। गहरे रंग की जोधपुर ड्रेस में शशि मेरे बगल में बेहद खूबसूरत लग रहे थे। मैंने सिद्धार्थ की हेड ज्वेलरी पहनी थी और अपने इवनिंग कोट का लंबा टेल लगाया था, और कुछ युवा इतालवी लड़के मेरे पीछे-पीछे चलते रहे। फ़ोटोग्राफर पागल हो गए!' स्क्रीनिंग के बाद, पंद्रह मिनट तक तालियों की गड़गड़ाहट गूंजी। सिमी कहती हैं, 'यह जादुई, अवास्तविक था।' सिद्धार्थ ने वेनिस में सिल्वर लायन पुरस्कार जीता।

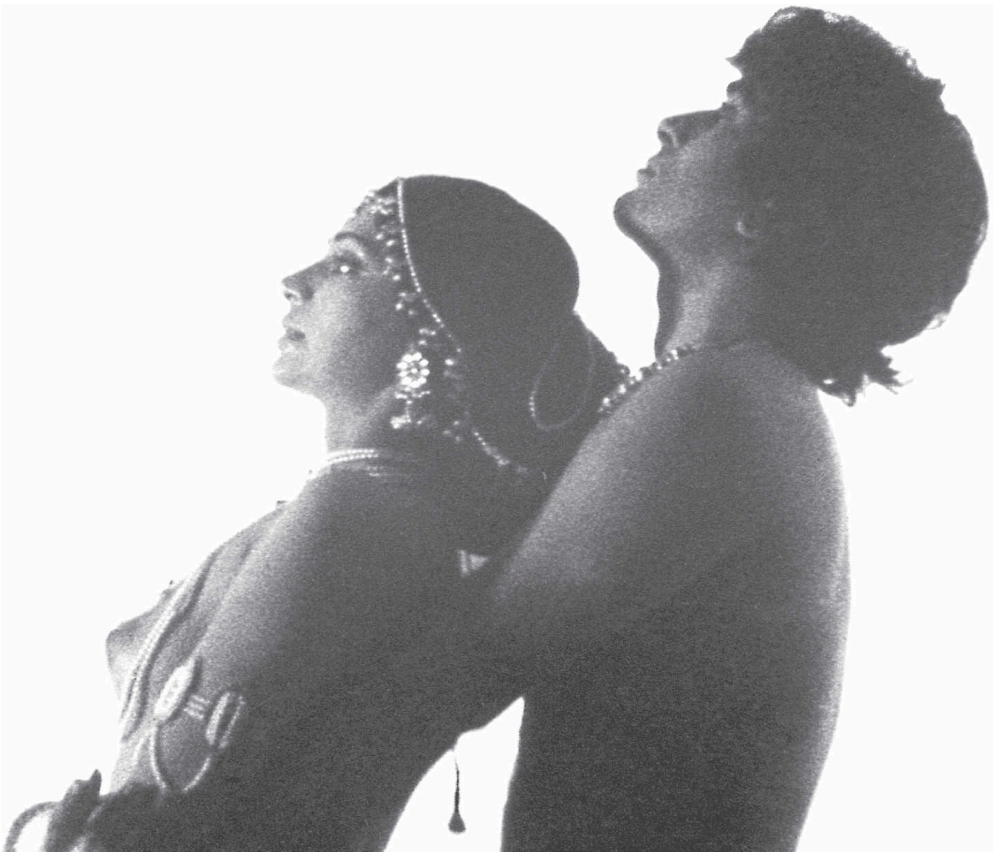

1972, सिद्धार्थ। शशि कपूर अनिच्छुक संन्यासी की भूमिका में और खूबसूरत सिमी गरेवाल एक दरबारी के रूप में। सौजन्य: अलेक्जेंडर रूक्स/लोटस फिल्म्स।

1972, सिद्धार्थ। एक ऐसी फिल्म जो विवादों में घिरी रही। इस दृश्य में, कमला सिद्धार्थ को चुंबन करना सिखाती है। असल में, शशि कपूर ने सिमी गरेवाल को कैमरे के सामने चुंबन करना सिखाया था। सौजन्य: अलेक्जेंडर रूक्स/लोटस फिल्म्स।

इटली में अपनी आखिरी रात, शशि और सिमी गोंडोला की सवारी पर गए। गोंडोला चालक गाना गा रहा था और अचानक ही शशि उछल पड़े। सिमी बताती हैं, "हमारे शांत, हमेशा गरिमापूर्ण और शालीन शशि ने गोंडोला चालक के साथ एक अजीबोगरीब आधा-हिंदी युगल गीत शुरू कर दिया! हर इतालवी पंक्ति के बाद वह एक मनगढ़ंत हिंदी पंक्ति गाते थे। वह इतने मज़ेदार थे कि मैं हँसना बंद नहीं कर पाई। फिर शशि पूरे जोश में शम्मी कपूर के कुछ गाने गाने लगे! वैसे तो शशि को गाना नहीं आता! लेकिन वहाँ से गुज़र रहे गोंडोला चालकों ने तालियाँ बजाकर उनका उत्साह बढ़ाया। यह किसी फिल्म के हास्य दृश्य जैसा था।"
शशि के सबसे करीबी दोस्तों, सहयोगियों और सह-कलाकारों से बातचीत करने पर मुझे यही बात समझ में आई है - शशि की फिल्मों में ही नहीं, बल्कि जीवन में भी उनकी सहजता और सरलता झलकती है। चाहे उनके किरदार कितने भी गंभीर हों, उनका अभिनय कितना भी संयमित हो, या आलोचकों और दर्शकों द्वारा उनकी फिल्मों को कैसे भी देखा जाए, शशि मूल रूप से एक ऐसे अभिनेता और इंसान हैं जो गंभीरता के बोझ तले दबने से इनकार करते हैं।

नोट्स

1. रॉबर्ट एमेट लॉन्ग, जेम्स आइवरी इन कन्वर्सेशन (लॉस एंजिल्स, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 2005), पृ. 67.

2. इस्माइल मर्चेंट, माई पैसेज फ्रॉम इंडिया: ए फिल्ममेकर्स जर्नी फ्रॉम बॉम्बे टू हॉलीवुड (न्यूयॉर्क: वाइकिंग स्ट्रडियो, 2002), पृ. 43.

3. यह फिल्म 1963 में बनी 'द हाउसहोल्डर' के क्राइटेरियन कलेक्शन डीवीडी में शशि कपूर के एक साक्षात्कार पर आधारित है। फिल्म का निर्देशन जेम्स आइवरी ने किया था और निर्माण इस्माइल मर्चेंट ने

किया था। इसमें शाशे कपूर, लीला नायडू और दुर्गा खोटे ने अभिनय किया था।

4. 1961, Char Diwari, dir. Krishan Chopra, prod. Jagan Prasad Sharma, starring Shashi Kapoor, Nanda, Manmohan Krishna.

5. 1961, धर्मपुत्र, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. बी.आर. चोपड़ा, अभिनीत शशि कपूर, माला सिन्हा, रहमान।

6. द हाउसहोल्डर की क्राइटेरियन कलेक्शन डीवीडी में इस्माइल मर्चेंट के साथ हुए एक साक्षात्कार पर आधारित।

7. यह फिल्म 'द हाउसहोल्डर' की क्राइटेरियन कलेक्शन डीवीडी में शशि कपूर के एक साक्षात्कार पर आधारित है।

8. द हाउसहोल्डर की क्राइटेरियन कलेक्शन डीवीडी में इस्माइल मर्चेंट के साथ हुए एक साक्षात्कार पर आधारित।

9. रूथ प्रॉवर झबवाला, द हाउसहोल्डर (न्यूयॉर्क: डब्ल्यू.डब्ल्यू. नॉर्टन एंड कंपनी, 1960)।

10. यह फिल्म 'द हाउसहोल्डर' की क्राइटेरियन कलेक्शन डीवीडी में शशि कपूर के एक साक्षात्कार पर आधारित है।

11. वही। 12. वही।

13. 1983 में बनी फिल्म 'हीट एंड डस्ट' (निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत: जूली क्रिस्टी, ग्रेटा स्काची, शशि कपूर) की क्राइटेरियन कलेक्शन डीवीडी में जेम्स आइवरी के साथ एक साक्षात्कार पर आधारित।

14. हीट एंड डस्ट की क्राइटेरियन कलेक्शन डीवीडी में शशि कपूर के एक साक्षात्कार पर आधारित।

15. इस्माइल मर्चेंट, माई पैसेज फ्रॉम इंडिया: ए फिल्ममेकर्स जर्नी फ्रॉम बॉम्बे टू हॉलीवुड (न्यूयॉर्क: वाइकिंग स्टूडियो, 2002), पृ. 50.

16. 1965, शेक्सपियर वाला, निर्देशक जेम्स आइवरी, निर्माता इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत शशि कपूर, फेलिसिटी केंडल, मधुर जाफरी।

17. 1970, बॉम्बे टॉकी, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत: शशि कपूर, जेनिफर केंडल, जिया मोहियुद्दीन।

18. 1988, द डिसीवर्स, निर्देशक निकोलस मेयर, निर्माता इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत पियर्स ब्रॉसनन, शशि कपूर, सईद जाफरी।

19. 1993, इन कस्टडी, निर्देशक: इस्माइल मर्चेंट, निर्माता: वाहिद चौहान, अभिनीत: शशि कपूर, शबाना आज़मी, ओम पुरी।

20. 1998, साइड स्ट्रीट्स, निर्देशक टोनी गेर्बर, निर्माता ब्रूस वीस, अभिनीत वैलेरिया गोलिनो, शशि कपूर, शबाना आज़मी।

21. अमिताव घोष, 'सत्यजीत रे', आउटलुक, 22 जून 2004।

[22] बॉस्ले क्रॉथर, 'द हाउसहोल्डर: मूवी रिव्यू', द न्यूयॉर्क टाइम्स, 22 अक्टूबर 1963।

[23] मधु जैन द्वारा लिखित पुस्तक 'द कपूर्स: द फर्स्ट फैमिली ऑफ इंडियन सिनेमा' (नई दिल्ली: पेंगुइन, 2005), पृष्ठ 238 में उद्धृत।

[24] जेफ्री केंडल, द शेक्सपियर वॉलह: एक आत्मकथा (लंदन: सिडगविक एंड जैक्सन, 1986), पृ. 145.

[25] वही, पृष्ठ 154।

[26] शेक्सपियर वॉलह की क्राइटेरियन कलेक्शन डीवीडी में शशि कपूर के एक साक्षात्कार पर आधारित।

[27] बॉस्ले क्रॉथर, 'शेक्सपियर वॉलह: मूवी रिव्यू', द न्यूयॉर्क टाइम्स, 23 मार्च 1966।

[28] शेक्सपियर वॉलह की क्राइटेरियन कलेक्शन डीवीडी में शशि कपूर के एक साक्षात्कार पर आधारित।

[29] 1969, The Guru, dir. James Ivory, prod. Ismail Merchant, starring Michael York, Madhur Jaffrey, Zohra Sehgal.

[30] 1975, ऑटोबायोग्राफी ऑफ ए प्रिंसेस, निर्देशक जेम्स आइवरी, निर्माता इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत जेम्स मेसन, मधुर जाफरी, डायने फ्लेचर।

[31] 1988, The Perfect Murder, dir. Zafar Hai, prod. Wahid Chowhan, starring Naseeruddin Shah, Madhur Jaffrey, Ratna Pathak.

[32] 1999, Cotton Mary, dir. Ismail Merchant, prod. Nayeem Hafizka, Richard Hawley, starring Greta Scacchi, Madhur Jaffrey, James Wilby.

[33] 2007, द दार्जिलिंग लिमिटेड, निर्देशक: वेस एंडरसन, निर्माता: वेस एंडरसन, रोमन कोपोला, लिडिया डीन पिल्चर, स्कॉट रूडिन, अभिनीत: ओवेन विल्सन, एड्रियन ब्रॉडी, जेसन श्वार्ट्जमैन।

[34] 1964, चारुलता, दिर. सत्यजीत रे, प्रो. आर.डी. बंसल, अभिनीत सौमित्र चटर्जी, माधबी मुखर्जी, सैलेन मुखर्जी।

[35] इस्माइल मर्चेंट, माई पैसेज फ्रॉम इंडिया: ए फिल्ममेकर्स जर्नी फ्रॉम बॉम्बे टू हॉलीवुड (न्यूयॉर्क: वाइकिंग स्टूडियो, 2002), पृ. 63.

[36] 'समीक्षा: शेक्सपियर वाला', वैरायटी, 31 दिसंबर 1964।

[37] रिचर्ड शिकेल, 'भारत में एक मधुर और सूक्ष्म इंडिल: शेक्सपियर वाला', लाइफ, 19 अप्रैल 1966।

[38] बॉस्ले क्रॉथर, 'शेक्सपियर वॉलह: मूवी रिव्यू', द न्यूयॉर्क टाइम्स, 23 मार्च 1966।

[39] जेफ्री केंडल ने फेलिसिटी केंडल को 30 जुलाई 1965 को लिखे एक पत्र में यह बात कही थी। फेलिसिटी केंडल, व्हाइट कागो (लंदन: माइकल जोसेफ, 1998), पृष्ठ 207।

[40] इस्माइल मर्चेंट, माई पैसेज फ्रॉम इंडिया: ए फिल्ममेकर्स जर्नी फ्रॉम बॉम्बे टू हॉलीवुड (न्यूयॉर्क: वाइकिंग स्टूडियो, 2002), पृ. 73.

[41] 1981, 36 चौरंगी लेन, दिर। अपर्णा सेन, प्रो. शशि कपूर, जेनिफर केंडल, देबाश्री रॉय, धृतिमान चटर्जी अभिनीत।

[42] विन्सेंट कैनबी, 'बॉम्बे टॉकी: मूवी रिव्यू', द न्यूयॉर्क टाइम्स, 19 नवंबर 1970।

[43] 'Typewriter Tip Tip Tip Tip Karta Hai', lyr. Hasrat Jaipuri, comp. Shankar–Jaikishan, artists Asha Bhosle, Kishore Kumar.

[44]

जोसेका ह्वाइन्स की पुस्तक 'लुकिंग फॉर द बिग बी: बॉलीवुड, बच्चन एंड मी' (लंदन: ब्लूम्सबरी, 2007), पृष्ठ 101 में उद्धृत।

[45]. वही, पृष्ठ 102।

[46]. 1985, ए रूम विद ए व्यू, निर्देशक जेम्स आइवरी, निर्माता इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत मैगी स्मिथ, हेलेना बोनहम कार्टर, डेनहोम इलियट।

[47]. 1992, हॉवर्ड्स एंड, निर्देशक जेम्स आइवरी, निर्माता इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत एंथनी हॉपकिंस, वैनेसा रेडग्रेव, हेलेना बोनहम कार्टर।

[48]. 1980, शान, दिर. रमेश सिप्पी, प्रो. जी.पी. सिप्पी, अभिनीत सुनील दत्त, अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, राखी, परवीन बाबी।

[49]. 1981, Kalyug, dir. Shyam Benegal, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Rekha, Raj Babbar.

[50]. 1982, Namak Halaal, dir. Prakash Mehra, prod. Satyendra Pal, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Smita Patil, Waheeda Rehman, Parveen Babi.

[51]. 1982, Vijeta, dir. Govind Nihalani, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Rekha, Kunal Kapoor.

[52]. हीट एंड डस्ट की क्राइटेरियन कलेक्शन डीवीडी में जेम्स आइवरी के साथ हुए एक साक्षात्कार पर आधारित।

[53]. 1982, गांधी, निर्देशक: रिचर्ड एटनबरो, निर्माता: रिचर्ड एटनबरो, अभिनीत: बेन किंग्सले, रोहिणी हट्टंगडी, रोशन सेठ।

[54]. 1984, द ज्वेल इन द क्राउन [टीवी श्रृंखला], निर्देशक: जिम ओ'ब्रायन, क्रिस्टोफर मोराहन, निर्माता: क्रिस्टोफर मोराहन, अभिनीत: आर्ट मलिक, सईद जाफरी, पेगी एशक्रॉफ्ट।

[55]. 1984, द फार पवेलियंस [टीवी श्रृंखला], निर्देशक पीटर डफेल, निर्माता ज्योफ्री रीव, अभिनीत बेन क्रॉस, एमी इरविंग, क्रिस्टोफर ली।

[56]. मधु जैन द्वारा लिखित पुस्तक 'द कपूर्स: द फर्स्ट फैमिली ऑफ इंडियन सिनेमा' (नई दिल्ली: पेंगुइन, 2005), पृष्ठ 244 में उद्धृत।

[57]. रोजर एबर्ट, 'गर्मी और धूल', शिकागो सन-टाइम्स, 20 अक्टूबर 1983।

[58]. विन्सेंट क्रैनबी, 'हीट एंड डस्ट: मूवी रिव्यू', द न्यूयॉर्क टाइम्स, 15 सितंबर 1983।

[59]. हरमन हेस, सिद्धार्थ, हिल्डा रोस्नर द्वारा अनुवादित (नई दिल्ली: रूपा, 2010)।

[60]. यह कहानी 1972 में बनी फिल्म सिद्धार्थ की डीवीडी में मौजूद एक साक्षात्कार पर आधारित है, जिसके निर्देशक कॉनरैड रूक्स और निर्माता भी कॉनरैड रूक्स हैं। इस फिल्म में शशि कपूर, सिमी गरेवाल और रमेश शर्मा ने अभिनय किया है।

1970, अरण्येर दिन रात्रि, दिर. सत्यजीत रे, प्रो. असीम दत्ता, नेपाल दत्ता, सौमित्र चटर्जी, शर्मिला टैगोर, सिमी गरेवाल अभिनीत।[61]

1970, Mera Naam Joker, dir. Raj Kapoor, prod. Raj Kapoor, starring Raj Kapoor, Simi Garewal, Manoj Kumar.[62]

‘O Nodi Re’, lyr. Gouri Prasanna Majumdar, comp. Hemant Kumar, artist Hemant Kumar.[63]

'पाथेर क्लांति भूले', गीतकार। गौरी प्रसन्ना मजूमदार, कंप. हेमन्त कुमार, कलाकार हेमन्त कुमार।[64]

‘O Bekarar Dil’, lyr. Kaifi Azmi, comp. Hemant Kumar, artist Lata Mangeshkar.[65]

1964, कोहरा, दिर. बीरेन नाग, प्रो. हेमन्त कुमार, मुख्य भूमिका में विश्वजीत, वहीदा रहमान, ललिता पवार।[66]

सिद्धार्थ की डीवीडी में कॉनरैड रूक्स के साथ हुए एक साक्षात्कार पर आधारित।[67]

1933, Karma, dir. J.L. Freer Hunt, prod. Himanshu Rai, starring Devika Rani, Himanshu Rai, Abraham Sofaer.[68]

‘समीक्षा: सिद्धार्थ’, वैरायटी, 31 दिसंबर 1971।[69]

विन्सेंट कैनबी, ‘सिद्धार्थ: फिल्म समीक्षा’, द न्यूयॉर्क टाइम्स, 19 जुलाई 1973।[70]

रोजर एबर्ट, ‘सिद्धार्थ’, शिकागो सन-टाइम्स, 18 जुलाई 1973।[71]

# 4

# टैक्सी
# शशि और 1970 के दशक की पागलपन भरी घटनाएं

‘My father-in-law used to call Shashi Uncle “taxi” back then,’ Neetu Singh Kapoor says. ‘Ki kisi ko bhi apni gaadi main bitha leta hai!’ (‘He’d seat anyone and everyone in his car.’)

नीतू की बात में लाक्षणिक अर्थ निकलता है। राज कपूर ने अपने भाई को 'टैक्सी' कहा था, जब वे शशि कपूर से 'सत्यम शिवम सुंदरम' के लिए शूटिंग की तारीखें लेने की पुरजोर कोशिश कर रहे थे। यह फिल्म ऊपरी तौर पर शारीरिक और आध्यात्मिक प्रेम के बीच अंतर को दर्शाती है, लेकिन असल में राज कपूर का गायिका लता मंगेशकर के प्रति प्रेम दिखाती है। फिल्म में मुख्य भूमिका निभाने के लिए कई अभिनेता कतार में थे, लेकिन राज कपूर को दृढ़ विश्वास था कि इस आत्मकथात्मक कहानी में उनके युवा रूप को केवल शशि कपूर ही निभा सकते हैं। इसलिए उन्होंने अपने भाई का शेड्यूल देखा और बड़ी चतुराई से उन सभी तारीखों को अपने नाम कर लिया जो उन्होंने अन्य फिल्म निर्माताओं को दी थीं। शशि कपूर ने फिल्म समीक्षक दीपा गहलोत को बताया, 'उन्होंने यह भी ज़िद की कि जिन दिनों मुझे उनके साथ शूटिंग करनी है, उन दिनों मैं किसी और के साथ शूटिंग नहीं करूंगा।' ‘राजजी की सुविधा के लिए मुझे दिन-रात काम करना पड़ता था, दिन में चार से पांच शिफ्टें करनी पड़ती थीं और कार में सोना पड़ता था।’ उनकी इस भागदौड़ भरी जीवनशैली के कारण, जिसमें कार ही उनका अर्धस्थायी ठिकाना बन गई थी, उन्हें ‘टैक्सी’ उपनाम मिल गया था।

लेकिन शशि का उपनाम 'टैक्सी' अन्य कारणों से भी पड़ा। लेखक बन्नी रूबेन का कहना है कि जब राज को शशि और ज़ीनत अमान (सत्यम शिवम सुंदरम में शशि की सह-कलाकार) के शूटिंग शेड्यूल के बारे में पता चला, तो दोनों को उनकी खरी-खोटी सुननी पड़ी। राज ने उन्हें डांटते हुए कहा, 'तुम लोग सितारे नहीं हो। तुम सब टैक्सी हो। कोई मीटर चालू करता है - तुम वहां जाते हो! फिर कोई दूसरा मीटर चालू करता है - और तुम वहां जाते हो। दो घंटे यहां...दो घंटे कहीं और। टैक्सी! कलाकार यही बने गए हैं।'

शशि कपूर, 1970 के दशक के सबसे व्यस्त सितारों में से एक। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

अपने बड़े भाई और पिता समान राज कपूर द्वारा सार्वजनिक रूप से फटकारे जाने का दर्द शशि को कई वर्षों तक सताता रहा। मधु जैन कहती हैं, 'इससे उन्हें बहुत दुख हुआ। वे बहुत संवेदनशील थे, वे किसी को भी अपने बारे में कुछ भी कहने पर कभी नहीं भूलते थे, खासकर अगर वह राज कपूर हों।'

फिर भी, शशि अपने फिल्मी शेड्यूल में बदलाव करने के लिए कुछ खास नहीं कर सकते थे। 1970 के दशक के उत्तरार्ध—वह दशक जिसने भारत में शशि के करियर को परिभाषित किया—में उन्होंने अनगिनत प्रोजेक्ट हाथ में लिए, एक स्टूडियो से दूसरे स्टूडियो में जाते रहे और तरह-तरह के किरदार निभाए। दरअसल, शर्मिली में शशि को निर्देशित करने वाले समीर गांगुली कहते हैं कि हिंदी सिनेमा में शिफ्ट सिस्टम शशि की वजह से ही शुरू हुआ। उनका कहना है, 'वह उन दिनों के सबसे व्यस्त अभिनेताओं में से एक थे।'

व्यस्त दिनचर्या के बावजूद, शशि ने कभी भी अपने निर्देशकों को निराश नहीं किया। समीर कहते हैं, "[वे] बिल्कुल समय के पाबंद थे। कभी-कभी, उनकी व्यस्त दिनचर्या के कारण, उन्हें देर हो जाती थी, लेकिन हममें से किसी को भी इससे कोई आपत्ति नहीं होती थी क्योंकि हम जानते थे कि एक बार जब वे सेट पर पहुंच जाते थे, तो वे अपना काम पूरी लगन से करते थे।"

लेकिन शशि की व्यस्त फिल्मों की वजह से एक बड़ी खामी भी थी—जिसका प्रत्यक्ष अनुभव नीतू ने किया, जिन्होंने उनके साथ दस फिल्मों में काम किया। नीतू कहती हैं, 'मैं बहुत छोटी थी और मैंने इंडस्ट्री में ऐसे दौर में कदम रखा जब हम साथ में बेहद खराब फिल्में करते थे। हम तीन शिफ्ट में काम करते थे। मुझे पता ही नहीं होता था कि मैं किसका किरदार निभा रही हूं, क्या कर रही हूं। शशि अंकल भी सेट पर आकर पूछते थे, "हां क्या लाइनें हैं?"'

फिल्मी प्रतिबद्धताओं के चलते तनावग्रस्त शशि के लिए कथानक और किरदारों को याद रखना लगभग नामुमकिन था। संजना कपूर को याद है कि उन्हें इस बात का एहसास तब हुआ जब वे परिवार के साथ दक्षिण मुंबई से पृथ्वीराज कपूर से मिलने जुहू तक लंबी यात्रा पर जाया करती थीं। 'जब पापाजी जीवित थे—और हर रविवार हम उनसे मिलने जाते थे, अगर मेरे पिताजी शहर में होते थे—मैं अपने पिताजी से उस फिल्म की कहानी सुनाने को कहती थी जिसमें वे अभिनय कर रहे होते थे। और वे उसे मनगढ़ंत कहानी बना देते थे। उन्हें कुछ पता नहीं होता था। उन्हें बिल्कुल भी अंदाजा नहीं होता था!'

यदि 1970 का दशक शशि का सबसे व्यस्त दौर था, तो उसी दशक में उन्होंने ऐसी फिल्मों में भी अभिनय किया जो असाधारण रूप से हिंसक और प्रतिगामी थीं। 'चोर मचाए शोर'—शशि और मुमताज के साथ अभिनीत कुछ फिल्मों में से एक—वास्तव में आपत्तिजनक दृश्यों से भरी हुई है। वास्तव में, जैसा कि आलोचक टॉड स्टैडटमैन ने बताया है, इसमें 'बलात्कार के प्रति एक तरह का जुनून' है। विजय (शशि) को अपनी प्रेमिका रेखा (मुमताज) के साथ बलात्कार के झूठे आरोप में जेल भेज दिया जाता है। जेल से भागने के बाद, वह सोचता है कि चूंकि उसे झूठा फंसाया गया है, इसलिए वह अपने आरोप लगाने वालों को सही

साबित कर दे—जिससे एक भयावह दृश्य सामने आता है जहां विजय अपनी प्रेमिका के साथ बलात्कार करने का इरादा जाहिर करता है। इसके तुरंत बाद, रेखा विजय को शर्मिंदा करने के प्रयास में अपने स्तन दिखाती है, और विजय, खुद को एक अच्छा भारतीय लड़का साबित करते हुए, तुरंत अपनी आँखें ढक लेता है और रेखा से भी अपने शरीर को ढकने का आग्रह करता है—जो इस फिल्म को पूरी तरह से समझ से परे और बेहद परेशान करने वाली बना देता है। हालांकि कुछ सहनीय क्षण हैं, जो पूरी तरह से गानों—जैसे 'घुंघरू की तरह' और 'एक दाल पर तोता बोले'—की बदौलत हैं, लेकिन चौंकाने वाला अंत, जहां हमारा 'नायक' बदला लेने के लिए बलात्कार का प्रयास करने के बाद, अपनी प्रेमिका की वफादारी जीत लेता है, संगीत से जो थोड़ी बहुत उम्मीद बची थी, उसे भी खत्म कर देता है।
फिर आती है बेहद खराब फिल्म 'इम्मान धरम'—सलीम (खान)-जावेद (अख्तर) की कई फिल्मों में से एक जिसमें शशि कपूर ने अभिनय किया था—जिसे दर्शकों ने भी नकार दिया, और इसी वजह से यह पटकथा लेखक जोड़ी की इकलौती फ्लॉप फिल्म बन गई। कहानी समझ से परे घटनाओं का एक बेमेल ताना-बाना है—अंधी श्यामली (अपर्णा सेन) के साथ लगभग बलात्कार हो जाता है; शराबी जेनी (हेलेन) को अपनी नियति का सामना करने और मरने के लिए मजबूर किया जाता है; और दलाल मोहन (शशि) और अहमद (अमिताभ बच्चन) आत्मधर्मी कबीर (संजीव कुमार) की वजह से पश्चाताप के मार्ग पर चल पड़ते हैं।
संजना ने अपने पिता को इन फिल्मों में काम करते हुए देखकर कहा, 'मुझे याद है मैंने अपनी माँ से पूछा था, "वो इतनी घटिया फिल्मों में कैसे काम कर सकते हैं?" सच कहूँ तो मैं कोई कट्टर नारीवादी नहीं हूँ, लेकिन हिंदी सिनेमा का एक ऐसा दौर है जो मुझे बहुत परेशान करता है—न सिर्फ हिंसा, बल्कि महिलाओं के साथ किया जाने वाला बर्ताव भी।' फिर जेनिफर केंडल कपूर ने संजना को समझाया कि अगर आर्थिक रूप से संभव होता तो उनके पिता स्टेज एक्टर बने रहते। 'लेकिन उनका परिवार था और परिवार बढ़ता गया। इसके साथ ही जीवनशैली भी बदल गई और आरामदायक हो गई। अगर आप हर गर्मियों में लंदन जाने का फैसला करते हैं और गोवा में भी घर रखते हैं, तो आपको एक निश्चित रकम कमानी ही पड़ती है। आप इस चक्र में फंस जाते हैं और इससे बाहर नहीं निकल पाते।'
अनिल धारकर आगे कहते हैं, 'मुझे लगता है शशि ने हर बात को सहजता से स्वीकार कर लिया। उन्होंने शुरू से ही इसे मान लिया था - व्यावसायिक सिनेमा पहले ऐसा ही हुआ करता था और जब आप किसी भूमिका के लिए "हां" कहते थे, तो आपको वही करना होता था जो आपसे करने को कहा जाता था।'
हालांकि 1970 के दशक में शशि की कई ऐसी फिल्में आईं जिन्हें भुला दिया गया, लेकिन कुछ देखने लायक भी थीं, जिनमें से एक है 'शर्मीली'। यह फिल्म निस्संदेह राखी की फिल्म है क्योंकि उन्होंने इसमें दोहरी भूमिका निभाई है, लेकिन इस फिल्म ने शशि को एक स्टार के रूप में स्थापित करने में भी कामयाबी हासिल की, जिससे उन्हें 'खिलते हैं गुल यहां', 'ओह मेरी शर्मीली' और दिल को छू लेने वाले 'कैसे कहें हम' जैसे गीतों में अपने बेहद आकर्षक व्यक्तित्व को दिखाने का मौका मिला। इसके अलावा, उन्हें अपनी अभिनय क्षमता दिखाने का भी मौका मिला, क्योंकि वह एक प्यार में डूबे युवक से लेकर गलत जुड़वां से शादी करने पर टूट चुके शराबी और फिर अपने पूर्वाग्रहों पर काबू पाने वाले पति के रूप में बदलते हैं।
अगर मुझे शर्मिली याद आती है, तो इसके पीछे निजी कारण भी हैं—मैंने स्कूल के नाटक की रिहर्सल छोड़ दी थी ताकि कुछ दोस्तों के साथ दिल्ली के कनॉट प्लेस स्थित रीगल सिनेमा में फिल्म देख सकूं। मैंने अपनी माँ को नहीं बताया था, लेकिन किसी तरह उन्हें पता चल गया—जैसा कि अक्सर माता-पिता को पता चल ही जाता है—कि मैं स्कूल से बंक करके आई थी। और वह निराश हुईं—इसलिए नहीं कि मैंने क्लास बंक की थी, बल्कि इसलिए कि मैंने उनसे सच छुपाने का फैसला किया था। आज भी, जब मैं शर्मिली देखती हूँ, तो उस समय की यादें मेरे मन में बस जाती हैं।

*

अगर 1970 का दशक शशि कपूर के करियर में एक महत्वपूर्ण दशक था, तो इसका एक कारण यह भी था कि शबाना आज़मी, अमिताभ बच्चन और यश चोपड़ा के साथ उनके तीन संबंध और मजबूत हुए।
अंकुर में राष्ट्रीय पुरस्कार जीतने के बाद शबाना की पहली व्यावसायिक फिल्म शशि के साथ फकीरा थी, जो जेम्स बॉन्ड से प्रेरित एक अजीबोगरीब थ्रिलर और कॉमेडी थी। शबाना कहती हैं, 'शशि और उनकी पत्नी ने अंकुर देखी थी और उन्हें मेरा काम बहुत पसंद आया था,' जिससे यह संकेत मिलता है कि शायद कपूर परिवार ने ही उन्हें उनकी पहली व्यावसायिक फिल्म के लिए सिफारिश की थी। 'लेकिन मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि मैं इस अभिनेता के साथ काम करूंगी। मैंने हमेशा उन्हें एक प्रशंसक के रूप में देखा था।'
शशि के मार्गदर्शन में, शबाना ने पहली बार मुख्यधारा के सिनेमा की बारीकियां सीखीं। कश्मीर में फिल्म 'फकीरा' की शूटिंग के दौरान, पुणे के भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान (एफटीआईआई) से अभिनय में स्वर्ण पदक विजेता शबाना को प्रकाश परावर्तकों को देखने में कठिनाई हो रही थी। वह मुझे बताती हैं, 'अगर हम कोई आउटडोर सीन कर रहे होते—चाहे वह नाटकीय हो, रोमांटिक हो या दुखद—मेरी आंखें बंद रहती थीं। और मेरी आंखों से आंसू बहते थे।' शशि, जो शबाना को उनकी किशोरावस्था से जानते थे और उनसे बारह साल बड़े थे, अक्सर दूसरों की उपस्थिति में उनके साथ बनावटी गुस्से वाला लहजा अपनाते थे—ठीक वैसे ही जैसे कोई भाई अपनी छोटी बहन को, जिसका वह सम्मान करता है, लेकिन उसमें कुछ कमियां भी पाता है, डांटता है; अब, वह डांटते हुए कहते थे: 'इतना बड़ा गोल्ड मेडल लेकर फायदा क्या है? आंखें नहीं खोल सकती हो?' ('इतना बड़ा गोल्ड मेडल जीतने का क्या फायदा? आंखें नहीं खोल सकती हो?') फिर, उन्होंने शबाना को परावर्तकों को देखना सिखाया। वह कहती हैं, 'उसने मुझे तब तक घूरने के

लिए मजबूर किया, जब तक कि मुझे इसकी आदत नहीं हो गई,' और इस प्रक्रिया को वह पूरी तरह से 'यातना' बताती हैं।
फिर शशि ने उन्हें टॉप लाइटिंग के बारे में सिखाया, जो गलत परिस्थितियों में किसी अभिनेत्री की आंखों को गायब कर सकती है और उसे भूतिया रूप दे सकती है। शबाना कहती हैं, 'उन्होंने मुझे बताया कि अगर आपको टॉप लाइट के साथ शूटिंग करनी है, तो आपको अपना चेहरा ऊपर की ओर झुकाना होगा, ताकि परछाई कम पड़े।' 'मैंने उनसे कई तकनीकी बारीकियां सीखीं।'
शशि के करियर के 1970 के दशक को भी स्वीकार किया जाना चाहिए क्योंकि इसी दौरान एक ऐसी घटना का जन्म हुआ जिसे शशिताभ के नाम से जाना जाने लगा - शशि और अमिताभ भारतीय सिनेमाई इतिहास में सबसे सफल दो-नायक जोड़ियों में से एक बन गए।
यह जोड़ी कैसे बनी? अमिताभ स्वीकार करते हैं, 'मुझे नहीं पता कि निर्माताओं और निर्देशकों ने हमें एक जोड़ी के रूप में क्यों चुना।' 'मुझे लगता है कि हम भाइयों जैसे दिखते थे और हमारी कुछ फिल्मों की सफलता ने इस जोड़ी को और मजबूत बना दिया।' रमेश तलवार, जो 'दीवार' के मुख्य सहायक निर्देशक थे, आगे कहते हैं, 'निर्देशक एक ही अभिनेताओं के साथ काम करने के आदी हो जाते हैं। जैसे ही कोई अच्छी भूमिका लिखी जाती है, कई निर्देशक सबसे पहले यही सोचते हैं कि अपने पसंदीदा सितारों के साथ फिर से कैसे काम किया जाए - कास्टिंग इसी तरह होती है। वे सोचते हैं, "यह मेरा अभिनेता है और यह भूमिका उसकी अभिनय शैली के लिए एकदम सही होगी।" सत्यजीत रे ने भी इसी पैटर्न का पालन किया, क्योंकि उन्होंने अक्सर सौमित्र चटर्जी को कई तरह की भूमिकाओं में लिया।'
शशि और अमिताभ ने चौदह फिल्मों में एक साथ काम किया—जिनमें मनमोहन देसाई की फिल्म सुहाग में जुड़वां भाइयों की भूमिका भी शामिल है—और जल्द ही शशि को अमिताभ की पसंदीदा नायिका के रूप में जाना जाने लगा। निस्संदेह, यह एक लैंगिक भेदभावपूर्ण टिप्पणी है, लेकिन इसका अर्थ शशि के कोमल चेहरे और आकर्षक रूप-रंग पर भी है, और इस तथ्य पर भी कि उन्होंने अमिताभ द्वारा अपनाई गई गंभीर भूमिकाओं के विपरीत, गर्मजोशी भरे और सकारात्मक चरित्रों को निभाया। निर्देशक करण जौहर ने इस पुस्तक की प्रस्तावना में इस बात का उल्लेख किया है, जब वे शशि के 'शांत शालीनता और सौम्यता' वाले व्यक्तित्व का जिक्र करते हैं, और लिखते हैं कि उन्हें अक्सर 'बॉलीवुड जिस 'बदला या कुछ नहीं' के दौर से गुजर रहा था, उसके विपरीत' के रूप में कास्ट किया जाता था। अमिताभ आगे कहते हैं: 'शशि जी बेहद आकर्षक व्यक्ति थे, और ऐसी भूमिकाएँ उन पर अधिक जंचती थीं। इसीलिए निर्देशकों और लेखकों ने उन्हें वे भूमिकाएँ दीं जो उन्होंने निभाईं।' मुझे लगता है कि वह अंधकारमय, परेशान किरदार मुझ पर ज्यादा जंचता था!' इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि अमिताभ के इस व्यक्तित्व ने उन्हें 'गुस्से वाले नौजवान' का उपनाम दिला दिया।
शशि और अमिताभ की पहली फिल्म (भले ही उनकी जोड़ी दमदार न रही हो) कई सितारों से सजी फिल्म 'रोटी, कपड़ा और मकान' थी। यह एक विचित्र संरचना वाली फिल्म है जिसमें मोहन बाबू (शशि), जो संघर्षरत लेकिन महत्वाकांक्षी शीतल (ज़ीनत अमान) के धनी बॉस हैं, उसे रिझाने की कोशिश करते हैं, लेकिन बाद में उन्हें पता चलता है कि शीतल बेरोजगार भरत (मनोज कुमार) की मंगेतर है। इस कहानी के विपरीत, अमिताभ, जो भरत के छोटे भाई और देशभक्त सैनिक विजय का किरदार निभा रहे हैं, हमेशा की तरह गुस्से में हैं। उन्हें पता चलता है कि जिस भाई को वे अपना आदर्श मानते थे, वह अब डॉन बनकर सफल हो गया है! शशि और अमिताभ दोनों ने ही अपने-अपने किरदारों में जान डाली है, लेकिन दुख की बात यह है कि वे दोनों बहुत कम स्क्रीन टाइम साथ बिताते हैं।
इस विशाल कलाकारों की टोली में यह स्पष्ट है कि शशि कपूर ही असली 'स्टार' हैं - एक ऐसा तथ्य जिसे मनोज कुमार फिल्म के शुरुआती क्रेडिट में प्रमुख अभिनेताओं के नामों के साथ-साथ एक अलग स्लाइड में यह घोषणा करते हुए स्वीकार करते हैं: 'और सबसे बढ़कर शशि कपूर'।
शशि की 'स्टार' होने की बात उनके बेहद शानदार कपड़ों से और भी पुख्ता हो जाती है—शानदार सूट और टाई, जिन्हें अनिल धारकर के अनुसार, जेनिफर केंडल कपूर ने डिज़ाइन किया था। जब शशि के किरदार मोहन बाबू शीतल को शादी का प्रस्ताव देते हैं, तो वे सफेद सूट और काले पोल्का डॉट्स वाली लाल सिल्क टाई पहने होते हैं; और सगाई समारोह के दौरान, वे अपनी टाई बदलकर सफेद बैकग्राउंड पर बड़े नारंगी डॉट्स वाली टाई पहन लेते हैं। अनिल कहते हैं, 'जेनिफर में एक खास बात थी जिसे हम 'स्वाद' कहते हैं। बहुत ही परिष्कृत स्वाद। उस स्वाद का असर शशि पर भी पड़ा।'
अंत में, शशि का अपने मित्र और उस्ताद निर्देशक यश चोपड़ा के साथ फलता-फूलता संबंध है; उनके कुशल निर्देशन में, अमिताभ और शशि के बीच की केमिस्ट्री का भरपूर फायदा दीवार से शुरू होने वाली कई ब्लॉकबस्टर फिल्मों में उठाया गया।

## Deewaar (1975)

वक्त की सफलता के बाद, यश चोपड़ा शशि कपूर को आदमी और इंसान और इत्तेफाक में लेना चाहते थे। दुर्भाग्य से, शशि कपूर पहले ही बहुत व्यस्त हो चुके थे और दोनों फिल्मों के लिए उपलब्ध नहीं थे। आखिरकार, वक्त के एक दशक बाद, यश और शशि कपूर को हिंदी सिनेमा की सबसे यादगार फिल्मों में से एक, दीवार में एक साथ काम करने का मौका मिला। शशि कपूर को एक ईमानदार पुलिस वाले की भूमिका निभानी थी, जिसे अमिताभ बच्चन द्वारा अभिनीत एक निर्मम अपराधी का पीछा करने के लिए नियुक्त किया जाता है; उसे इस बात का पता नहीं होता कि अपराधी उसका भाई है।

हालांकि, परिस्थितियाँ अनुकूल होने और कास्टिंग से जुड़ी सभी चीज़ें सही जगह पर बैठने में थोड़ा समय लगा। एक तो, 'दीवार' के निर्माता गुलशन राय राजेश खन्ना को गैंगस्टर की भूमिका में लेना चाहते थे, जिन्होंने यश की हिट फिल्म 'दाग' में मुख्य भूमिका निभाई थी और जो 1960 के दशक के उत्तरार्ध और 1970 के दशक के आरंभिक वर्षों के सबसे बड़े स्टार थे। लेकिन यश ने अमिताभ बच्चन को 'ज़ंजीर' में देखा था और वे चाहते थे कि अमिताभ बच्चन यह भूमिका निभाएँ; बड़ी मुश्किल से यश गुलशन राय को मनाने में कामयाब हुए।

फिर आए शशि की बात। यश उन्हें किसी फिल्म में लेने के लिए काफी समय से इंतज़ार कर रहे थे, लेकिन गुलशन को एक बार फिर से मनाना पड़ा, न सिर्फ निर्देशक से, बल्कि पटकथा लेखकों सलीम-जावेद से भी, जिन्होंने लगातार हिट फिल्में दी थीं और फिल्म की कास्टिंग प्रक्रिया को प्रभावित करने का उन्हें पूरा अधिकार था। जावेद अख्तर पत्रकार राजीव विजयकर को बताते हैं, 'हम शशि साहब को लेकर आपस में लड़ पड़े क्योंकि, हालांकि वह एक वरिष्ठ अभिनेता थे, अमिताभ से उम्र में बड़े थे और हम चाहते थे कि वह 'दीवार' में छोटे भाई का किरदार निभाएं। हमें पता था कि वह यह कर सकते हैं, और शशि भी उतने आश्वस्त नहीं थे जितने हम थे! और हमें निर्माता गुलशन राय को भी मनाना था।' आखिरकार, उनकी मेहनत रंग लाई।

वक्त फिल्म में शशि का नाम विजय था, वहीं दीवार फिल्म में उन्हें रवि कहा गया और अमिताभ को विजय (रोटी कपड़ा और मकान की तरह) के नाम से पुकारा गया। ये नाम इतने लोकप्रिय हो गए कि यश की फिल्मों में काम न करने के बावजूद भी ये नाम उनके साथ जुड़े रहे।

शशि को अधिक 'महान' भूमिका और अमिताभ को अधिक भावुक भूमिका देने के कास्टिंग निर्णय ने आलोचकों और दर्शकों को यह टिप्पणी करने पर मजबूर कर दिया है कि 'दीवार' में अमिताभ दोनों में से अधिक यादगार हैं। हालांकि, रमेश सिप्पी, जिन्होंने बाद में 'शान' में इन दोनों अभिनेताओं को निर्देशित किया, बताते हैं कि इस तरह की तुलनाएँ शशि द्वारा एक अभिनेता के रूप में लिए गए सचेत निर्णयों को समझने में विफल रहती हैं: 'अगर शशि को 'दीवार' में वह भूमिका निभानी थी और उसके प्रति ईमानदार रहना था, तो उन्हें उसे संयमित तरीके से निभाना पड़ा। [...] हालांकि, अगर उन्होंने एक कलाकार के रूप में अलग दिखने की कोशिश की होती और उस तरह का प्रदर्शन किया होता जिससे स्टारडम मिलता है, तो वे भूमिका के साथ न्याय नहीं कर पाते। [...] उन्होंने इसे सही तरीके से निभाया।'

दिलचस्प बात यह है कि अपने प्रदर्शन के बारे में इन विरोधाभासी आकलन से अवगत होने के बावजूद, शशि अविचलित रहे। शर्मिला टैगोर कहती हैं, 'उनमें हमेशा हास्यबोध था। उन्हें दीवार में या कहीं और अमिताभ बच्चन के "नंबर दो" होने में कोई आपत्ति नहीं थी।'

सबसे बढ़कर, 'दीवार' के कास्टिंग निर्णयों ने शशि और अमिताभ के बीच एक मज़बूत दोस्ती की नींव रखी। शशि कहती हैं, 'हमने साथ में खूब मस्ती की।' एक बार पुणे में एक सौंदर्य प्रतियोगिता में जज के तौर पर, जहां ज़ीनत अमान भी निर्णायक थीं, शशि और अमिताभ इतने नशे में धुत हो गए कि वे यह तय नहीं कर पा रहे थे कि विजेता किसे चुनें। शशि आगे कहती हैं, 'वे सभी हमें खूबसूरत लग रही थीं। हमें लगा कि सभी को पुरस्कार मिलना चाहिए।' आखिरकार, ज़ीनत, जो खुद एक ब्यूटी क्वीन रह चुकी थीं, ने हस्तक्षेप किया और नशे में धुत अभिनेताओं के लिए फैसला सुनाया। यह दोनों सितारों के बीच कई सहज खुशनुमा पलों में से एक था।

आज, 'दीवार' को यश की अन्य फिल्मों से अलग माना जाता है, क्योंकि इसमें मजबूत रोमांटिक संरचना का अभाव है। अमिताभ/विजय की प्रेमिका परवीन बाबी/अनीता हैं और फिल्म में शशि के किरदार की प्रेमिका वीरा हैं, जिसका किरदार नीतू सिंह ने निभाया है। लेकिन रोमांटिक पल संक्षिप्त हैं, अक्सर गानों के इर्द-गिर्द घूमते हैं, और मुख्य कथानक को बाधित नहीं करते। नीतू—जो उस समय ऋषि कपूर को डेट कर रही थीं—कहती हैं, 'दीवार में शशि अंकल और मेरे दो गाने थे और क्योंकि वे रोमांटिक थे, इसीलिए उन्हें कोरियोग्राफर की ज़रूरत नहीं पड़ी। एक था "कहूं तुम्हें"—जो बहुत लोकप्रिय हुआ, और आज भी सभी मशहूर जगहों पर बजता है—और दूसरा था "मैंने तुझे मांगा, तुझे पाया है"। आमतौर पर, उस समय एक गाने को फिल्माने में दो या तीन दिन लगते थे। लेकिन—और मैं मज़ाक नहीं कर रही हूं—हमने दोनों गानों की शूटिंग डेढ़ दिन में पूरी कर ली!' यशजी इसी तरह काम करते थे। वे बहुत ही तेज गति से काम करने के लिए जाने जाते थे।'

अगर 'दीवार' को याद किया जाता है, तो सिर्फ़ कलाकारों के लिए ही नहीं, बल्कि सलीम-जावेद (जो यश के साथ पहली बार काम कर रहे थे) की लेखन प्रतिभा और फिल्म के अंत में अमिताभ/विजय के लंबे मोनोलॉग पर शशि/रवि के चार शब्दों के क्लासिक जवाब—अविस्मरणीय, 'मेरे पास मां है!' के लिए भी। इस दमदार पंचलाइन को लिखने में बहुत सोच-विचार किया गया था। जावेद निर्देशक और लेखिका नसरीन मुन्नी कबीर को बताते हैं, 'रवि कई तरह की बातें कह सकते थे... "आज मेरे पास मां का प्यार है, मुझे ये मिल गया, मुझे वो मिल गया।" इसके विपरीत, विजय को ही लीजिए [...] जो इस पंचलाइन के लिए मंच प्रदान कर रहे हैं। रवि के एक ही वाक्य से अपनी छाप छोड़ने से पहले उनके पास कई संवाद हैं।' शायद विजय के एकालाप के बिना रवि के संवाद कारगर नहीं होते।' वे आगे कहते हैं, 'आपको एक दृश्य को सुनियोजित करना पड़ता है। अगर आप श्रोता की भावनाओं पर लगातार प्रहार करने की कोशिश करेंगे, तो उसकी संवेदनशीलता इतनी चकनाचूर हो जाएगी कि जब आप चाहेंगे कि वह कुछ महसूस करे, तो वह थक चुका होगा।'

अमिताभ/विजय और शशि/रवि के बीच का मशहूर दृश्य राजकमल स्टूडियो में फिल्माया गया था। अमिताभ कहते हैं, 'मुझे और फिल्म से जुड़े किसी भी व्यक्ति को यह बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि यह दृश्य और इसके संवाद इतने लोकप्रिय हो जाएंगे।' हालांकि इस लंबे संवाद का उचित प्रभाव पैदा करने के लिए पूरी तरह से पूर्वाभ्यास किया गया था, अमिताभ कहते हैं कि इससे यह अंदाजा नहीं लगाया जा सकता

था कि यह दृश्य भारतीय फिल्म इतिहास का हिस्सा बन जाएगा: 'पेशावर होने के नाते, हां, हम पूर्वाभ्यास करते हैं। लेकिन कलाकारों के बीच यह सामान्य बात है।'
बाद में, 'दीवार' के प्रीमियर पर अमिताभ शशि के बगल में बैठे थे। अमिताभ याद करते हैं:

हमने एक शब्द भी नहीं कहा। लेकिन 'मेरे पास मां है' वाले पल में, मैंने अपने हाथ पर एक कोमल हाथ महसूस किया। वह शशि जी का हाथ था। उन्होंने कुछ नहीं कहा, लेकिन जिस तरह से उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा, उससे सब कुछ स्पष्ट हो गया। वह आश्वासन था, स्नेह था, स्वीकृति थी, प्रशंसा थी, सराहना थी, वह सब कुछ था जिसकी एक संघर्षरत अभिनेता ने, जिसने कभी जेम्स आइवरी की फिल्म 'बॉम्बे टॉकी' में एक अतिरिक्त कलाकार की भूमिका निभाई थी, कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि ऐसा होगा।

दीवार ने बॉक्स ऑफिस पर खूब कमाई की और समीक्षकों से भी खूब प्रशंसा बटोरी। फिल्मफेयर पुरस्कार जीतने वाली इस फिल्म को शशि (सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता), यश (सर्वश्रेष्ठ निर्देशक) और सलीम-जावेद (सर्वश्रेष्ठ पटकथा, कहानी और संवाद) के लिए पुरस्कार मिले। साथ ही, इसे साल की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का दर्जा भी मिला। यह फिल्म स्वर्ण जयंती पर हिट हुई और फिर पचास हफ्तों तक लगातार चलती रही, जिससे यह हिंदी सिनेमा की सबसे बड़ी ब्लॉकबस्टर फिल्मों में से एक बन गई।

## Kabhi Kabhie (1976)

In 1976, Yash Chopra released Kabhi Kabhie,[34] his ultimate ode to romance, with a huge multi-star cast that included Shashi Kapoor, Amitabh Bachchan, Raakhee, Waheeda Rahman, Rishi Kapoor, Neetu Singh, Simi Garewal and Parikshit Sahni.
कभी कभी एक कवि अमित और उसकी प्रेमिका पूजा की कहानी है, जो अपनी इच्छा के विरुद्ध शादी करने के लिए मजबूर होने के बावजूद अपने भावुक प्रेम प्रसंग की यादों को जीवित रखते हैं; वर्षों बाद, उनके बच्चों के माध्यम से उनका अतीत आपस में टकराता है।
कई पीढ़ियों को समेटे हुए इस कथानक को भले ही लंबा, उलझा हुआ और नाटकीय माना जा सकता है, लेकिन फिल्म में कुछ ऐसे पहलू भी हैं जो बेहद खूबसूरत हैं—उदाहरण के लिए, गाने यादगार हैं, खासकर टाइटल ट्रैक, जिसे अमिताभ (अमित के रूप में) अपनी प्रेमिका राखी (पूजा के रूप में) के लिए गाते हैं, और राखी शादी के समय इसे शशि (विजय के रूप में) के लिए गाती हैं। फिर कश्मीर के रोमांटिक दृश्य हैं, जिनमें अमिताभ की भावपूर्ण आवाज में कविता सुनाई देती है। (इस समय से कश्मीर के परिदृश्य यश जी की फिल्मों का एक अहम हिस्सा बन गए, जब तक कि निर्देशक ने स्विस आल्प्स की बर्फीली चोटियों की खोज नहीं कर ली।) अंत में, फिल्म की स्वाभाविक अनुभूति मन को मोह लेती है—किरदार असली घरों में रहते हैं (नकली स्टूडियो सेटों के विपरीत), और अक्सर अपने असली कपड़े पहनते हैं। नीतू मुझे बताती हैं, 'यश जी नहीं चाहते थे कि हम कॉस्ट्यूम डिजाइनर रखें। वे कहते थे, "तुम वही पहनो जो तुम असल जिंदगी में पहनते हो। मैं इसे फिल्मी नहीं बनाना चाहता।"'
जहां 'कभी कभी' यश के मित्र और नियमित गीतकार साहिर लुधियानवी से प्रेरित थी (अमिताभ के अमित का किरदार उन्हीं पर आधारित था), वहीं शशि का विजय का किरदार यश पर ही आधारित था—एक हंसमुख व्यक्ति जो गुप्त रूप से कवि बनने की ख्वाहिश रखता था और खुले विचारों वाला था। दरअसल, यश की पत्नी पामेला चोपड़ा कहती हैं, 'शशि की ज्यादातर फिल्में, 'दीवार' से शुरू करके, उनके किरदार काफी हद तक यश पर आधारित थे। मेरे पति शशि के सबसे करीब महसूस करते थे क्योंकि उनका स्वभाव मिलता-जुलता था। उन्होंने 'कभी कभी' में शशि के किरदार को व्यक्तिगत रूप से गढ़ा क्योंकि विजय का किरदार यश के स्वभाव जैसा ही था।'
फिर विजय और उनके बेटे विक्रम के बीच का रिश्ता है, जो यश और उनके बेटों आदित्य और उदय के बीच के रिश्ते से काफी मिलता-जुलता है। विक्रम का किरदार निभाने वाले ऋषि कहते हैं, 'आज भी लोग विक्रम और विजय के बारे में बात करते हैं, लेकिन 1970 के दशक के मध्य में, एक पिता और बेटे के बीच पीठ थपथपाने जैसा रिश्ता होना अनसुना था।'
विक्रम की भूमिका कपूर परिवार के एक युवा सदस्य को देने की यह एक चतुर कास्टिंग योजना थी। लेकिन ऋषि इसे स्वीकार करने में हिचकिचा रहे थे क्योंकि जब 'कभी कभी' फिल्म बननी थी, तब तक वे स्टार बन चुके थे और उनकी काफी बड़ी फैन फॉलोइंग थी, साथ ही उनकी तत्कालीन प्रेमिका नीतू के साथ दो हिट फिल्में भी आ चुकी थीं - 'खेल खेल में' और 'रफू चक्कर'। वे एक मल्टी-स्टार फिल्म में काम करने को लेकर कुछ खास उत्सुक नहीं थे। शशि मजाक में कहते हैं, 'यश ने मुझे फोन करके कहा कि ऋषि यह फिल्म नहीं कर रहे हैं। मैंने कहा, चलो उसकी पिटाई करते हैं।'
जब आखिरकार उन्हें यह भूमिका स्वीकार करने के लिए मजबूर किया गया, तो ऋषि को अपने 'चाचा' के साथ काम करना एक बहुत बड़ा सीखने का अनुभव लगा। वे कहते हैं, 'मुझे याद है, एक बार शशि अंकल ने मेरे अभिनय पर टिप्पणी की थी: "तुम प्रतिक्रिया नहीं करते हो। तुम अपने संवादों में बहुत अच्छे हो, लेकिन तुम्हें प्रतिक्रिया भी देनी चाहिए।" तब मुझे समझ नहीं आया कि वे क्या कहना चाह रहे थे। मुझे लगा कि मुझे बिना कारण प्रतिक्रिया नहीं देनी चाहिए या ज़ोरदार भाव नहीं दिखाने चाहिए। जैसे आदमी जीवन में प्रतिक्रिया करता है ना, वैसा होना चाहिए। लेकिन फिर, समय के साथ, मुझे उनका मतलब समझ में आया।

मैंने देखा कि मेरे लिए सही संकेत देना महत्वपूर्ण था, ताकि दूसरा अभिनेता उन्हें समझ सके और अपने संवादों को अच्छी तरह से बोल सके। एक अभिनेता के रूप में, शशि अंकल से यह सीखना मेरे लिए बहुत मददगार साबित हुआ।'
कभी कभी बॉक्स ऑफिस पर ज़बरदस्त सफ़ल रही, पचास हफ़्तों तक सिनेमाघरों में चली और इसे स्वर्ण जयंती का दर्जा मिला। आज भी यह एक प्रतिष्ठित फिल्म बनी हुई है, जिसे इसकी समकालीन भावना और इस तथ्य के लिए सराहा जाता है कि शशि और अमिताभ दोनों ने पहली बार जटिल अतीत वाले वृद्ध पुरुषों की भूमिका निभाई है।

## Doosra Aadmi (1977)

निर्देशक के रूप में अपनी पहली फिल्म के लिए रमेश तलवार ने अपने गुरु यश राज फिल्म्स के बैनर तले काम किया। यह यश चोपड़ा की किसी अन्य निर्देशक के साथ निर्मित पहली फ़िल्म होगी।
कभी कभी की तरह, दूसरा आदमी भी ऋषि कपूर, नीतू सिंह, राखी और शशि कपूर जैसे सितारों से सजी फिल्म है। यह एक अधेड़ उम्र की महिला (राखी द्वारा अभिनीत निशा) की कहानी है, जो एक युवा विवाहित पुरुष के प्यार में पड़ जाती है, जो उसे उसके मृत प्रेमी की याद दिलाता है।
रमेश इस बात पर अड़े थे कि वे ऋषि को मृत प्रेमी और विवाहित पुरुष की दोहरी भूमिका नहीं देना चाहते थे —उनका मानना था कि ऐसा करने से कहानी का सार स्पष्ट हो जाएगा। इसके बजाय, वे मृत प्रेमी की भूमिका के लिए ऋषि से मिलते-जुलते दिखने वाले किसी अभिनेता को लेना चाहते थे। जब वे विकल्पों पर विचार कर रहे थे, तभी उनकी नज़र 'कभी कभी' की शूटिंग के तुरंत बाद 'द इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इंडिया' में ऋषि की एक तस्वीर पर पड़ी, जिसके कैप्शन में लिखा था कि ऋषि अपने चाचा शशि से हूबहू मिलते-जुलते हैं। रमेश कहते हैं, 'इससे मुझे प्रेरणा मिली। मैंने ऋषि की वह तस्वीर अपने साथ ली और शशि से मिलने गया।'
जब रमेश ने शशि को बताया कि वह उन्हें निशा के दिवंगत प्रेमी की भूमिका में एक अतिथि भूमिका देना चाहते हैं, तो अभिनेता हिचकिचाए। रमेश बताते हैं, 'उन्होंने मुझसे कहा, "देखिए, मैंने आज तक कोई अतिथि भूमिका स्वीकार नहीं की है। मैंने मनमोहन देसाई के लिए भी ऐसा नहीं किया।" लेकिन शशि पटकथा सुनने के लिए तैयार थे। उन्होंने कहा, "अगर यह भूमिका कहानी में कुछ नयापन लाती है, तो मैं इसे करूंगा। लेकिन अगर मुझे लगता है कि यह मेरे लिए सही नहीं है, और अगर मैं मना कर देता हूं, तो नाराज़ या परेशान मत होना।"'
तो, एक सुबह रमेश ने शशि के घर पर उनके साथ नाश्ता किया और फिर दक्षिण मुंबई से अंधेरी स्थित नटराज स्टूडियो तक कार से गए। रास्ते में, उन्होंने 'दूसरा आदमी' की कहानी सुनाई। यात्रा समाप्त होते-होते शशि फिल्म करने के लिए राजी हो गए। रमेश बताते हैं, 'उनकी एक ही शर्त थी कि हम फिल्म के प्रचार सामग्री में उनके नाम का इस्तेमाल नहीं करेंगे।' 'वह चाहते थे कि दर्शक भी उतने ही हैरान हों, जितने कि वे तब हुए थे जब मैंने उन्हें कहानी का चौंकाने वाला मोड़ सुनाया था।'
जब फिल्म सिनेमाघरों में आई, तो दर्शक सचमुच मंत्रमुग्ध हो गए! उन्हें मधुर गीत (जिनमें राजेश रोशन द्वारा रचित 'आओ मनाएं जश्न-ए-मोहब्बत' और 'आँखों में काजल है' शामिल हैं), खूबसूरत कलाकार और यश की पसंद से ओतप्रोत कथानक बहुत पसंद आए—जिससे 'दूसरा आदमी' स्पष्ट रूप से यश राज प्रोडक्शन बन गया। और उन्हें शशि विशेष रूप से पसंद आए। रमेश कहते हैं, 'जब शशि हिट गाने "क्या मौसम है" का गाना "ये क्या मस्तियां" गाते हुए पहली बार स्क्रीन पर आते थे, तो लोग अपनी सीटों से उछल पड़ते थे।'
अगर फिल्म को लेकर कोई आपत्तियां थीं, तो वे छोटे कस्बों, खासकर पंजाब और हरियाणा के कस्बों से आईं, जिसका कारण राखी का किरदार था—एक ऐसी महिला जो बार में सिगरेट पीती और शराब पीती थी। रमेश कहते हैं, 'उस समय राखी 'तपस्या' नाम की एक फिल्म में थीं, जिसमें उन्होंने काफी धार्मिक भूमिका निभाई थी। कुछ लोग उनके जैसी स्टार को, जिन्होंने हाल ही में धार्मिक भूमिकाएं निभाई थीं, सिगरेट पीते और शराब पीते हुए देखकर स्वीकार नहीं कर पाए। हालांकि मुझे व्यक्तिगत रूप से राखी का किरदार अजीब नहीं लगा—शायद मेरी आधुनिक सोच और इस तथ्य के कारण कि मेरी सभी सहेलियां शराब पीती थीं—लेकिन छोटे कस्बों के लोगों की राय अलग थी।'
पंजाब और हरियाणा से मिली ठंडी प्रतिक्रिया के बावजूद, दूसरा आदमी ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छा कारोबार किया और कुछ सिनेमाघरों में सौ दिनों तक चली।

## Trishul (1978)

वक्त से शुरू करके, और फिर कभी कभी तक, यश चोपड़ा ने अपने किरदारों को दिल्ली में ही स्थापित करने पर जोर दिया (बॉम्बे में नहीं), शायद इसलिए कि वे उन्हें अलौकिक और फिल्मी के बजाय स्वाभाविक और वास्तविक दिखाना चाहते थे। इसी तरह, त्रिशूल की कहानी भी नई दिल्ली के मोहल्लों में घटित हुई।
दीवार के बाद, त्रिशूल यश द्वारा निर्देशित सलीम-जावेद की पटकथा पर आधारित दूसरी फिल्म थी। एक बार फिर, अमिताभ बच्चन और शशि कपूर को मुख्य भूमिकाएँ दी गईं, इस बार सौतेले भाइयों के रूप में (अलग-अलग माताओं और एक ही पिता के साथ)। एक बार फिर, अमिताभ का किरदार (जिसका नाम - और क्या? - विजय है) गंभीर और चिड़चिड़ा है, जो अपने पिता द्वारा गर्भवती माँ को छोड़ दिए जाने के

कारण बदले की भावना से प्रेरित है। और एक बार फिर, शशि (जिन्हें - रवि नहीं - बल्कि शेखर के रूप में कास्ट किया गया है) आकर्षक हैं, जो विजय की प्रतिशोध की प्रवृत्ति को समझ नहीं पाते हैं, क्योंकि विजय गरीबी से उठकर अपने पिता के व्यवसायों को चुनौती देता है।
दीवार की कुछ हद तक सरल संरचना के विपरीत, त्रिशूल संजीव कुमार (दोहरी पत्नी वाले पिता की भूमिका में) जैसे अभिनेताओं के अतिरंजित अभिनय और बहुत सारे कलाकारों (विजय की प्रेमिका के रूप में राखी, शेखर की प्रेमिका के रूप में हेमा मालिनी और पूनम ढिल्लों और सचिन द्वारा अभिनीत युवा पीढ़ी) के कारण बोझिल लगता है। हालांकि, इन कमियों के बावजूद, त्रिशूल एक बड़ी हिट साबित हुई, जो सिनेमाघरों में पचहत्तर सप्ताह तक चली और फिर उससे भी अधिक समय तक मैटिनी शो के रूप में प्रदर्शित हुई।
आज त्रिशूल का ज़िक्र न सिर्फ लोकप्रिय फ़िल्म निर्माता करते हैं—जिनमें अनुराग कश्यप ने अपनी क्लासिक फ़िल्म गैंग्स ऑफ़ वासेपुर में भी इसका ज़िक्र किया है—बल्कि इसे उस फ़िल्म के रूप में भी याद किया जाता है जिसने दीवार के बाद शशि और अमिताभ के रिश्ते को और मज़बूत किया। फ़िल्म की शूटिंग के दौरान, दोनों दक्षिण दिल्ली के ओबेरॉय इंटरकॉन्टिनेंटल होटल में ठहरे थे, और उन्हें रात में साथ समय बिताने के भरपूर मौके मिले। अमिताभ कहते हैं, 'काम के बाद हम होटल के अंदर ही मौजूद शहर के इकलौते डिस्को, तबेला में काफ़ी समय साथ बिताते थे। और हाँ, कभी-कभी देर हो जाती थी, तो हम वहीं से सीधे शूटिंग के लिए चले जाते थे।'
यश ने भी इस बात की पुष्टि की है, जो शराब न पीने के कारण तबेला में होने वाले मौज-मस्ती में शायद ही कभी शामिल होते थे: 'एक रात अमिताभ और शशि पार्टी करने बाहर गए और जब वे सुबह 6:30 बजे होटल लौटे, तो मैंने यूनिट को शूटिंग के लिए तैयार कर रखा था।' वे आगे कहते हैं, 'मुझे पता ही नहीं चला कि वे अभी-अभी आए हैं। उनके पास फिल्म की शूटिंग के लिए सीधे जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, वे ब्रेक में झपकी लेते रहे।'
दिल्ली के इस अब बंद हो चुके मशहूर ठिकाने के प्रति दोनों की दीवानगी को अमिताभ के मधु जैन के साथ हुए इंटरव्यू में और भी बेहतर तरीके से समझा जा सकता है; इसमें अभिनेता कहते हैं: 'एक छात्र के रूप में तबला जाना हमेशा से मेरा सपना था और मुझे कभी मौका नहीं मिला।' शशि की बात करें तो उन्हें वह करने का मौका मिला जो उन्हें पसंद था—'शशि एक अच्छे डांसर थे,' अमिताभ कहते हैं।[46] शराब पीने, नाचने और जश्न मनाने के इसी दौर में शशि और अमिताभ घनिष्ठ मित्र बन गए।

## काला पत्थर (1979)

छह मुख्य कलाकारों - अमिताभ बच्चन, राखी, शशि कपूर, प्रवीण बाबी, शत्रुघ्न सिन्हा और नीतू सिंह - वाली एक और बहु-सितारा एक्शन ड्रामा फिल्म 'काला पत्थर' की पटकथा (जैसा कि अपेक्षित था) सलीम-जावेद ने लिखी थी। एक बार फिर, अमिताभ, विजय के रूप में, एक गुस्सैल नौजवान की भूमिका निभाते हैं, इस बार एक गहरे राज़ के साथ। एक बार फिर, शशि, रवि के रूप में, एक उत्साही और मिलनसार व्यक्ति की भूमिका निभाते हैं, इस बार एक कोयला खदान के प्रभारी इंजीनियर के रूप में।
पिछली फिल्मों से स्पष्ट समानताओं के बावजूद, काला पत्थर यश चोपड़ा की फिल्मों से बिल्कुल अलग है। एक तो, शशि को एक मिलनसार किरदार से कहीं अधिक विकसित होने का मौका मिलता है, कई दृश्यों में उसे खदानों की प्रतिकूल कार्य परिस्थितियों के प्रति अपनी निराशा व्यक्त करनी पड़ती है; प्रेम चोपड़ा द्वारा अभिनीत कोयला खदान मालिक धनराज के साथ उसके संवाद क्रोध से भरे हुए हैं।
दूसरी ओर, काला पत्थर को भारत की पहली आपदा फिल्म कहा जा सकता है, जो दिसंबर 1975 में धनबाद की चासनाला कोयला खदान में हुई त्रासदी पर आधारित है, जहां पानी भर गया था और 500 से अधिक मजदूर फंस गए थे। यह फिल्म हॉलीवुड की सफल फिल्मों जैसे द पोसाइडन एडवेंचर और द टावरिंग इन्फर्नो के जवाब में हिंदी फिल्म उद्योग की प्रतिक्रिया भी है (स्वाभाविक रूप से गीतों और रोमांस के साथ)।
अंत में, काला पत्थर अपने सेटों के लिए अद्वितीय है, जिसमें कला निर्देशक सुधेंदु रॉय ने कोयला खदानों की कठोरता और उनके अथाह अंधकार को बखूबी दर्शाया है। खदानों के अंदर के भयावह दृश्यों को फिर से जीवंत करने के लिए, फिल्म सिटी में सेट बनाए गए थे, जो उस समय अपेक्षाकृत नया स्टूडियो था, और प्रभावों की निगरानी के लिए एक अमेरिकी तकनीकी टीम को बुलाया गया था।
सेट की बात करें तो, 'काला पत्थर' की शूटिंग के दौरान यश ने कुछ दृश्यों के लिए पुणे के पास लोनी में राज कपूर के फार्म को बुक किया था। उस समय शहर में केवल एक ही बड़ा होटल था, ब्लू डायमंड (अब ताज विवांता), जिसमें सिर्फ एक ही सुइट था। अमिताभ और शशि कपूर दोनों ने उसी कमरे में ठहरने की इच्छा जताई। स्थिति को बिगड़ने से बचाने और पक्षपात के आरोपों से बचने के लिए, यश ने अंततः खुद उसी बड़े सुइट में ठहरने का फैसला किया।
अपनी ताजगी और नवीनता के बावजूद, 'काला पत्थर' बॉक्स ऑफिस पर सफल नहीं हो पाई। इसकी जटिल कहानी, जो क्रूर पूंजीवाद की धज्जियां उड़ाती थी और सर्वहारा वर्ग के उत्थान का गुणगान करती थी —एक तरह से 'भाईयों का समूह'—उन दर्शकों को लुभाने में नाकाम रही जो मनोरंजन की तलाश में थे। इसके अलावा, क्लाइमेक्स सीन को ज़रूरत से ज़्यादा लंबा और उबाऊ माना गया। रमेश तलवार बताते हैं कि छोटे शहरों में, सिनेमाघरों के मालिकों ने खुद फिल्म को सफल बनाने के लिए उसमें बदलाव करना शुरू कर दिया। वे कहते हैं, 'फिर बड़े सिनेमाघरों के मालिक हमसे अनुमति मांगने लगे, पहले यह समझाते हुए कि कुछ दृश्य बहुत लंबे क्यों लग रहे हैं।' 'वे हमसे एडिटर भेजने का अनुरोध करते थे।' फिल्म में कुछ

बदलाव होने के बाद, बॉक्स ऑफिस पर कुछ हद तक वापसी ज़रूर हुई। लेकिन यह वापसी अल्पकालिक साबित हुई।

## श्रृंखला (1981)

सिलसिला मूलतः अमिताभ बच्चन (अमित के रूप में), जया बच्चन (भदुरी, शोभा के रूप में) और रेखा (चांदनी के रूप में) के बीच एक प्रेम त्रिकोण की कहानी है। अमित चांदनी से प्रेम करता है, लेकिन परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि उसे उसे छोड़ना पड़ता है और उसे डॉ. आनंद (संजीव कुमार) से शादी करते देखना पड़ता है—जो इस प्रेम कहानी का चौथा किरदार है। अमित का यह निर्णय उसके भाई शेखर के अचानक निधन के कारण होता है—जो अपने पीछे एक दुखी मंगेतर शोभा को छोड़ जाता है, जिससे अमित को शादी करने के लिए विवश होना पड़ता है।
यश चोपड़ा को शेखर की भूमिका के लिए अपने पसंदीदा अभिनेता और पर्सनैलिटी शशि कपूर से बेहतर कोई और नहीं सूझा। यह यश के साथ शशि की आठ फ़िल्मों में से आखिरी फिल्म थी। सिलसिला एकमात्र ऐसी फिल्म भी थी जिसमें शशि ने अमिताभ के बड़े भाई का किरदार निभाया था। और शायद इसलिए कि फिल्म की पटकथा सलीम-जावेद ने नहीं बल्कि खुद यश ने लिखी थी, अमिताभ और शशि विजय और रवि नाम के किरदारों को निभाने के बोझ से मुक्त हो गए। (बेशक, यह रमेश सिप्पी की जेम्स बॉन्ड से प्रेरित फिल्म शान में विजय और रवि के किरदार को कई बार निभाने के बाद हुआ, जिसकी पटकथा सलीम-जावेद ने लिखी थी और जो सिलसिला से कुछ समय पहले ही रिलीज हुई थी।)
जब शशि और अमिताभ एक साथ स्क्रीन शेयर करते हैं तो सिलसिला फिल्म का रंग और भी निखर उठता है, और उनके बीच कुछ बेहद जोशीले दृश्य हैं—जैसे कि जब वे नशे में होते हैं, या जब वे एक साथ नहाते हैं, जैसा कि पश्चिमी देशों के जिम में अक्सर पुरुष करते हैं। दरअसल, यह पहली हिंदी फिल्म है जिसमें उद्योग के दो शीर्ष अभिनेताओं को एक ही फ्रेम में, बेहद स्वाभाविक परिवेश में नहाते हुए दिखाया गया है।
लेकिन विमान दुर्घटना के बाद, शशि का किरदार अचानक कहानी से गायब हो जाता है, और सिलसिला अपनी कुछ ऊर्जा और जीवंतता खो देता है। अब जो कहानी आगे बढ़ती है, वह एक जटिल, भावनात्मक रूप से झकझोर देने वाली कहानी है, जिसमें परिपक्व किरदार, अमित और चांदनी के बीच विवाहेतर संबंध और विनाशकारी परिणाम शामिल हैं—यह गंभीरता कभी-कभार होली के हिट गीत, 'रंग बरसे' जैसे गानों से ही टूटती है।
फिल्म रिलीज होने से पहले मीडिया में इस बात को लेकर काफ़ी अटकलें लगाई जा रही थीं कि क्या अभिनेताओं के चयन का मुख्य सितारों के वास्तविक जीवन के संबंधों से कोई संबंध था। लेकिन टैब्लॉइड की गपशप फिल्म के लिए आर्थिक रूप से फायदेमंद साबित नहीं हुई—सिलसिला बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाई। पामेला चोपड़ा मानती हैं कि फिल्म शायद थोड़ी अलग थी; दूसरे शब्दों में, यह अपने समय से आगे थी। वह कहती हैं: 'भारत में विवाह एक बहुत ही पवित्र संस्था है, और जब निर्देशक ने उन दो प्रेमियों के लिए सहानुभूति पैदा की जो अपने विवाह से बाहर जाकर अपने प्रेम संबंध को जारी रखने को तैयार थे, तो वह दर्शकों को अपने साथ नहीं जोड़ पाए।'
बहरहाल, आज सिलसिला को एक कल्ट फिल्म के तौर पर देखा जाता है। और शशि को, उनकी छोटी भूमिका के बावजूद, ऐसी पंक्तियों के लिए याद किया जाता है: 'हम गायब होने वालों में से नहीं हैं।' जहां जहां से गुज़रते हैं जलवे दिखाते हैं. दोस्त तो क्या, दुश्मन भी याद रखते हैं।

नोट्स

[1].
1978, Satyam Shivam Sundaram, dir. Raj Kapoor, prod. Raj Kapoor, starring Shashi Kapoor, Zeenat Aman, Padmini Kolhapure.

[2].
दीपा गहलोत, शशि कपूर, द पृथ्वीवालाज़ (नई दिल्ली: रोली, 2004), पी. 64.

[3].
बनी रूबेन द्वारा उद्धृत, दिलीप कुमार: स्टार लीजेंड ऑफ इंडियन सिनेमा (नई दिल्ली: हार्परकॉलिन्स, 2004), पृष्ठ 119।

[4].
1971, शर्मीली, दिर. समीर गांगुली, प्रो. सुबोध मुखर्जी, शशि कपूर, राखी, नज़ीर हुसैन अभिनीत।

[5].
सुरेखा कपडा-बोस में उद्धृत, 'शशि कपूर: प्रतिबंधित लेकिन अविश्वसनीय', डॉन, 9 अप्रैल 2015। [6]. वही।

[7].
1974, Chor Machaye Shor, dir. Ashok Roy, prod. N.N. Sippy, starring Shashi Kapoor, Mumtaz, Danny Denzongpa.

[8].

टॉड स्टैडटमैन, फंकी बॉलीवुड: 1970 के दशक के भारतीय एक्शन सिनेमा की जंगली दुनिया (सरे: एफएबी प्रेस, 2015), पृ. 102.

9. वही।

10. 'Ghungroo Ki Tarah', lyr. Ravindra Jain, comp. Ravindra Jain, artist Kishore Kumar.

11. 'Ek Daal Par Tota Bole', lyr. Indrajeet Singh Tulsi, comp. Ravindra Jain, artists Mohammed Rafi, Lata Mangeshkar.

12. 1977, Immaan Dharam, dir. Desh Mukherjee, prod. Premji, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Sanjeev Kumar, Rekha.

13. 'Khilte Hain Gul Yahan,' lyr. Neeraj, comp. S.D. Burman, artist Kishore Kumar.

14. 'ओह मेरी शर्मिली', गीतकार: नीरज, संगीतकार: एस.डी. बर्मन, कलाकार: किशोर कुमार।

15. 'Kaise Kahen Hum', lyr. Neeraj, comp. S.D. Burman, artist Kishore Kumar.

16. 1974, Ankur, dir. Shyam Benegal, prod. Mohan J. Bijlani, Freni Variava, starring Shabana Azmi, Anant Nag, Sadhu Meher.

17. 1976, फकीरा, दिर. सी.पी. दीक्षित, प्रो. एन.एन. सिप्पी, शशि कपूर, शबाना आज़मी, डैनी डेन्जोंगपा अभिनीत।

18. 1975, Deewaar, dir. Yash Chopra, prod. Gulshan Rai, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Neetu Singh, Parveen Babi.

19. 1979, Suhaag, dir. Manmohan Desai, prod. Rajinder Kumar Sharma, Shakti Subhash Sharma, Prakash Trehan, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Rekha, Parveen Babi.

20. 1974, Roti Kapada Aur Makaan, dir. Manoj Kumar, prod. Manoj Kumar, starring Manoj Kumar, Shashi Kapoor, Amitabh Bachchan, Zeenat Aman.

21. 1965, समय, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. बी.आर. चोपड़ा, अभिनीत बलराज साहनी, शर्मिला टैगोर, शशि कपूर।

22. 1969, Aadmi Aur Insaan, dir. Yash Chopra, prod. B.R. Chopra, starring Dharmendra, Saira Banu, Feroz Khan.

23. 1969, इत्तेफाक, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. बी.आर. चोपड़ा, अभिनीत राजेश खन्ना, नंदा, मदन पुरी।

24. 1973, दाग़, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. यश चोपड़ा, शर्मिला टैगोर, राजेश खन्ना, राखी अभिनीत।

25. 1973, Zanjeer, dir. Prakash Mehra, prod. Prakash Mehra, starring Amitabh Bachchan, Jaya Bhaduri, Pran.

26. राजीव विजयकर, 'नेवर बिफोर, नेवर अगेन: द शशि कपूर-अमिताभ बच्चन केमिस्ट्री', बॉलीवुड हंगामा, <http://www.bollywoodhungama.com/movies/features/type/view/id/8260/> में, 24 दिसंबर 2015 को एक्सेस किया गया।

27. 1980, शान, दिर. रमेश सिप्पी, प्रो. जी.पी. सिप्पी, अभिनीत सुनील दत्त, अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, राखी, परवीन बाबी।

28.

मधु जैन द्वारा लिखित पुस्तक 'द कपूर्स: द फर्स्ट फैमिली ऑफ इंडियन सिनेमा' (नई दिल्ली: पेंगुइन, 2005), पृष्ठ 236 में उद्धृत।

29. जेसिका हाइन्स की पुस्तक 'लुकिंग फॉर द बिग बी: बॉलीवुड, बच्चन एंड मी' (लंदन: ब्लूम्सबरी, 2007), पृष्ठ 102 में उद्धृत।

30. 'Keh Doon Tumhe', lyr. Sahir Ludhianvi, comp. R.D. Burman, artists Asha Bhosle, Kishore Kumar.

31. 'Maine Tujhe Maanga, Tujhe Paya Hai', lyr. Sahir Ludhianvi, comp. R.D. Burman, artists Asha Bhosle, Kishore Kumar.

32. नसरीन मुन्नी कबीर, टॉकिंग फिल्म्स: जावेद अख्तर के साथ हिंदी सिनेमा पर बातचीत (नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2006), पृ. 43.

33. 'मैंने शशि से नौकरी मांगी: अमिताभ', द टाइम्स ऑफ इंडिया, 17 सितंबर 2009 में उद्धृत।

34. 1976, Kabhi Kabhie, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Raakhee, Simi Garewal, Waheeda Rehman, Rishi Kapoor, Neetu Singh.

35. 1975, Khel Khel Mein, dir. Ravi Tandon, prod. Ravi Malhotra, starring Rishi Kapoor, Neetu Singh, Rakesh Roshan.

36. 1975, रफू चक्कर, दिर. नरेंद्र बेदी, प्रो. आई.ए. नाडियाडवाला, ऋषि कपूर, नीतू सिंह, मदन पुरी अभिनीत।

37. राहेल ड्वायर की पुस्तक यश चोपड़ा: फिफ्टी इयर्स ऑफ इंडियन सिनेमा (नई दिल्ली: रोली, 2002) में उद्धृत।

38. 1977, दूसरा आदमी, दिर. रमेश तलवार, प्रो. यश चोपड़ा, ऋषि कपूर, राखी, शशि कपूर, नीतू सिंह अभिनीत।

39. 'Aao Manayen Jashn-E-Mohabbat', lyr. Majrooh Sultanpuri, comp. Rajesh Roshan, artists Kishore Kumar, Lata Mangeshkar.

40. 'Ankhon Mein Kajal Hai', lyr. Majrooh Sultanpuri, comp. Rajesh Roshan, artists Kishore Kumar, Lata Mangeshkar.

41. 'Kya Mausam Hai', lyr. Majrooh Sultanpuri, comp. Rajesh Roshan, artists Kishore Kumar, Lata Mangeshkar, Mohammed Rafi.

42. 1976, तपस्या, दिर. अनिल गांगुली, प्रो. ताराचंद बड़जात्या, अभिनीत परीक्षित साहनी, राखी, असरानी।

43. 1978, Trishul, dir. Yash Chopra, prod. Gulshan Rai, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Hema Malini, Raakhee.

44. 2012, गैंग्स ऑफ वासेपुर, दिर. अनुराग कश्यप, प्रो. अनुराग कश्यप, सुनील बोहरा, विक्रम मल्होत्रा, गुनीत मोंगा, मुख्य भूमिका में मनोज बाजपेयी, नवाजुद्दीन सिद्दीकी, हुमा कुरेशी हैं।

[45] राहेल ड्वायर द्वारा उद्धृत, यश चोपड़ा: भारतीय सिनेमा के पचास वर्ष (नई दिल्ली: रोली, 2002), पृष्ठ 106।

[46] मधु जैन द्वारा लिखित पुस्तक 'द कपूर्स: द फर्स्ट फैमिली ऑफ इंडियन सिनेमा' (नई दिल्ली: पेंगुइन, 2005), पृष्ठ 249 में उद्धृत।

[47] 1979, Kaala Patthar, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Shatrughan Sinha, Neetu Singh, Parveen Babi.

[48] 1972, द पोसाइडन एडवेंचर, निर्देशक रोनाल्ड नीमे, निर्माता इरविन एलन, अभिनीत जीन हैकमैन, अर्नेस्ट बोर्गनाइन, रेड बटन्स।

[49] 1974, द टावरिंग इन्फर्नो, निर्देशक जॉन गिलर्मिन, निर्माता इरविन एलन, अभिनीत स्टीव मैकक्वीन, पॉल न्यूमैन, विलियम होल्डन।

[50] 1981, Silsila, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Sanjeev Kumar, Rekha, Jaya Bhaduri.

[51] ‘Rang Barse’, lyr. Harivanshrai Bachchan, comp. Shiv–Hari, singer Amitabh Bachchan.

[52] तेजस्विनी गंती, प्रोड्यूसिंग बॉलीवुड: इनसाइड द कंटेम्परेरी हिंदी फिल्म इंडस्ट्री (नॉर्थ कैरोलिना: ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस, 2012), पी में उद्धृत। 284.

# 5

# एकदम सही
# शशि, निर्माता और व्यवसायी

'आपको याद रखना होगा, पिताजी ने कभी नहीं कहा था, "मैं फिल्म स्टार बनना चाहता हूँ,"' कुणाल कपूर ने शशि कपूर के बारे में बात करते हुए मुझसे कहा। 'ऐसे अभिनेता और फिल्म जगत के लोग हैं जो बहुत अच्छा कर रहे हैं और जिनका मकसद स्टार बनना है। पिताजी की ऐसी कोई योजना नहीं थी।'

अगर हम शशि कपूर को उनके 'स्टार' वाले रूप से परे देखें, तो हमें एक ऐसे व्यक्ति के रूप में नज़र आते हैं जो न केवल अभिनय की कला से, बल्कि पोस्ट-प्रोडक्शन के बारीक कामों से भी बेहद प्रभावित हैं। इस लिहाज़ से वे अपने बड़े भाई राज कपूर की तरह हैं, जो खुद को सिर्फ एक 'हीरो' नहीं, बल्कि एक फिल्म निर्माता मानते थे।

1970 के दशक में, शशि ने विदुषक आर्ट्स नाम की एक कंपनी शुरू की, जो उपकरण और कैमरे किराए पर देती थी। शशि के इस उद्यम ने कई फिल्म निर्माताओं को सहारा दिया—क्योंकि उस समय उन्हें ज़्यादातर उपकरण विदेशों से आयात करने पड़ते थे, और वे ऐसा तभी कर सकते थे जब वे यह साबित कर सकें कि वे विदेशी मुद्रा अर्जित कर रहे हैं। फिल्म निर्माता देव बेनेगल कहते हैं, 'यह भूल जाना स्वाभाविक है कि उस समय फिल्में बनाना कितना मुश्किल था। ऐसा लगता था मानो सरकार ही नहीं चाहती थी कि आप फिल्में बनाएं। नेगेटिव फिल्म, साउंड एडिटिंग उपकरण, कैमरे और लाइट आयात करने पर लाइसेंस लगता था। हालात बेहद दयनीय थे।'

शशि उन शुरुआती लोगों में से एक थे जिन्हें फ्लैटबेड एडिटिंग मशीन - एक स्टीनबेक - आयात करने का लाइसेंस मिला था, जिसका उपयोग करने का सौभाग्य देव को मिला। स्टीनबेक बॉम्बे फिल्म लेबोरेटरीज में स्थित थी - जो अब बॉम्बे के प्रभादेवी में एक अपार्टमेंट बिल्डिंग है - और कई प्रतिभाशाली लोग वहां से गुजरे, जिनमें श्याम बेनेगल (जिन्होंने अपनी कुछ फिल्मों के लिए विदुषक आर्ट्स के उपकरणों का उपयोग किया) और सत्यजीत रे के छायाकार सुब्रता मित्रा (जिन्होंने, जैसा कि हम जानते हैं, मर्चेंट-आइवरी की शुरुआती कुछ फिल्मों की छाया ली थी) शामिल हैं।

शशि—जो कभी सिर्फ एक सपने का पीछा करने वाले व्यक्ति नहीं थे—की यह भी इच्छा थी कि वे अपनी बनाई फिल्मों को वितरकों के जाल पर निर्भर हुए बिना सीधे दर्शकों तक पहुंचा सकें। उनकी राय में, वितरक पहले व्यापारी थे, जिन्हें सिनेमा को एक कला के रूप में कोई खास सम्मान नहीं था। शशि पूछते हैं, 'हीरा व्यापारियों को फिल्मों के बारे में क्या पता? [अगर मैं यह काम संभाल लूं], तो फिल्म बनाने और वितरक का इंतज़ार करने के बजाय, मैं दोनों काम एक साथ कर सकता हूं।'

यह विचार मन में बैठ गया, और 1960 के दशक के उत्तरार्ध में, जब उन्हें इस्माइल मर्चेंट को आर्थिक संकट से उबारना पड़ा, तो उन्होंने भारत में बॉम्बे टॉकी के वितरण का अधिकार प्राप्त करने के बदले में ऐसा किया। दुर्भाग्यवश, मर्चेंट-आइवरी की फिल्म बॉक्स ऑफिस पर कोई खास कमाई नहीं कर पाई, और शशि भी लाभ कमाने में असफल रहे।

इसके कुछ समय बाद, 1970 के दशक की शुरुआत में, शशि ने एक विचित्र जापानी एनीमे फिल्म, 'हजार और एक रात' (सेनया इचिया मोनोगतारी) के भारतीय वितरण अधिकार हासिल कर लिए, जो केवल वयस्कों के लिए थी और जिसका निर्देशन ईइची यामामोटो ने किया था। यह फिल्म अमेरिका में एक एक्स-रेटेड फिल्म के रूप में रिलीज़ हुई थी। एक पुरानी कहानी पर आधारित यह फिल्म, अपने नायक अलादीन के गरीबी से अमीरी और फिर गरीबी तक के सफर को दर्शाती है, साथ ही वह कई महिलाओं के साथ प्रेम प्रसंग भी करता है—मरियम, एक खूबसूरत दासी; कामुक अमेजन महिलाएं; और याहिज़, जो बाद में उसकी बेटी निकली। यह साइकेडेलिक और कामुकता से भरपूर फिल्म जापान में तो सफल रही, लेकिन भारत में इसका प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा।

दो असफलताओं के बाद, शशि ने फिल्म वितरक के रूप में अगला बड़ा कदम तब उठाया जब उन्होंने राज कपूर की फिल्म बॉबी (और बाद में सत्यम शिवम सुंदरम) के लिए दिल्ली और उत्तर प्रदेश (यूपी) के क्षेत्रों में अधिकार खरीदे। राज के लिए, उनके भाई का हस्तक्षेप एक स्वागत योग्य राहत थी। मेरा नाम जोकर की बॉक्स ऑफिस पर असफलता के बाद, उन्हें वितरकों को बॉबी के अधिकार खरीदने के लिए राजी करने में काफी मुश्किल हुई - एक ऐसी फिल्म जिसमें दो नवोदित कलाकारों - इक्कीस वर्षीय ऋषि कपूर (मेरा नाम जोकर में एक कैमियो के बाद अपनी पहली मुख्य भूमिका में) और सोलह वर्षीय डिंपल कपाडिया - के साथ मुख्य भूमिका निभाने के कारण कुछ खास नहीं लग रहा था।
शशि के लिए इस फिल्म को डिस्ट्रीब्यूट करने का फैसला कुछ हद तक रणनीतिक था और कुछ हद तक सहज प्रवृत्ति पर आधारित था। ऋषि कहते हैं, 'वह पैसा कमाना चाहता था। शशि अंकल को पूरा भरोसा था कि बॉबी एक बड़ी हिट होगी। उन्होंने अपने भाई का आत्मविश्वास बढ़ाते हुए कहा, "मुझे पता है यह फिल्म ब्लॉकबस्टर होगी!"'
शशि का विश्वास शायद इस तथ्य से उपजा हो कि बॉबी एक ऐसी कहानी सुनाता है जो कभी उबाऊ नहीं लगती—एक अमीर लड़का (राज के रूप में ऋषि) एक गरीब लड़की (बॉबी के रूप में डिंपल) के प्यार में पड़ जाता है और माता-पिता के विरोध से लेकर अपहरण के प्रयासों तक, सभी बाधाओं को पार करते हुए विजयी होता है। इसके अलावा, मुख्य कलाकारों के बीच पर्दे पर दिखाई देने वाली केमिस्ट्री और लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल के मनमोहक गीतों से प्रभावित हुए बिना रहना मुश्किल है—राज को शंकर-जयकिशन के अलावा किसी अन्य संगीतकार के साथ काम करने का यह पहला मौका था।
शशि की भविष्यवाणियां बिलकुल सटीक साबित हुईं। बॉबी फिल्म ज़बरदस्त हिट हुई। रातोंरात ऋषि और डिंपल स्टार बन गए। जब ऋषि का विमान दिल्ली में उतरा, तो शशि ने हवाई अड्डे पर लगभग 500 युवतियों को अपने भतीजे के स्वागत के लिए बुलाया, जिन्होंने बॉबी के पोस्टर पकड़े हुए युवा अभिनेता का नाम चिल्लाया। ऋषि मुझे बताते हैं, 'यह मेरे लिए बहुत बड़ी बात थी। ज़ाहिर है, मैं शशि अंकल का भतीजा था और सारी लाइमलाइट मुझ पर थी—खासकर तब जब डिंपल शादी के बाद व्यस्त थीं (फिल्म की शूटिंग के तुरंत बाद उनकी शादी सुपरस्टार राजेश खन्ना से हो गई थी)। अखबारों में ऋषि कपूर के शहर में होने की खबरें छाई हुई थीं। और फिल्म में एस्कॉर्ट्स बाइक—मैंने भी वैसी ही बाइक से हवाई अड्डे से यात्रा की थी, और इसने काफी हलचल मचा दी थी।'
दुर्भाग्य से, बॉबी की बॉक्स ऑफिस सफलता और युवा सितारों की लोकप्रियता शशि अंकल के लिए बड़ा लाभ नहीं ला सकी। ऋषि कहते हैं: 'सभी कपूरों की तरह, शशि अंकल को भी ज्यादा कमाई नहीं हुई। उन्हें बहुत ज्यादा कमाना चाहिए था। लेकिन पैसा इधर-उधर गँवा दिया गया।' कुणाल भी इस बात से सहमत हैं। 'मेरे पिता के साथ धोखा हुआ। अगर कोई फिल्म आंशिक रूप से सफल होती है तो आप हिसाब-किताब छिपा सकते हैं, लेकिन सुपर हिट फिल्म के मामले में आप कितना छिपा सकते हैं?'
शशि की फिल्म 'बॉबी' के फ्लॉप होने का कारण उस दौर से भी जुड़ा था जब वे फिल्म बनाते थे—इंटरनेट और वीडियो पायरेसी का कोई नामोनिशान नहीं था। बड़े बजट की हिंदी फिल्में कभी-कभी भारत भर में अलग-अलग चरणों में रिलीज होती थीं, जहां वितरक उन्हें क्षेत्रवार, एक निश्चित समय अवधि में दिखाते थे—कुछ हद तक अमेरिका में आर्ट हाउस फिल्मों की प्लेटफॉर्म रिलीज की तरह। तो, 'बॉबी' पहले मुंबई, हरियाणा और पंजाब में रिलीज हुई, और बाद में शशि के गढ़ दिल्ली और उत्तर प्रदेश में। 'बॉबी' की जनता के साथ तुरंत हुई लोकप्रियता को देखते हुए, हरियाणा और पंजाब के वितरकों ने इस बात का पूरा फायदा उठाया कि शशि ने अभी तक फिल्म को राजधानी में रिलीज नहीं किया था। उन्होंने दिल्ली से पड़ोसी राज्यों में फिल्म देखने वालों से भरी बसें भेजकर अपना बाजार बढ़ाने का फैसला किया। ऋषि बताते हैं, 'दिल्ली से भर, भर के बसें जाती थीं गुड़गांव और फरीदाबाद!'—इतना कि जब अभिनेता फिल्म के प्रीमियर के लिए दिल्ली पहुंचे, तब तक कई लोग 'बॉबी' देख चुके थे!
लेकिन शशि कुछ असफलताओं के बाद हार मानने वालों में से नहीं थे। उनके भीतर का असली व्यवसायी एक बार फिर सामने आया, प्रतिष्ठित फिल्म जुनून के साथ (इसके बारे में थोड़ा और विस्तार से)। इसके तुरंत बाद, 1976 में, शशि ने अपनी कंपनी फिल्म-वीलास की स्थापना की—जो स्पष्ट रूप से मर्चेंट-आइवरी की उस फिल्म के शीर्षक से प्रेरित थी जिसमें उन्होंने अभिनय किया था, शेक्सपियर वाला। फिल्म-वालास ने 1970 के दशक के उत्तरार्ध और 1980 के दशक की कुछ सबसे प्रसिद्ध आर्ट-हाउस फिल्मों का निर्माण किया। कुणाल कहते हैं, 'पिताजी जिस तरह की फिल्मों में काम कर रहे थे, उनसे थोड़ा निराश हो रहे थे,' हालांकि वे यह भी स्वीकार करते हैं कि शशि हिंदी फिल्म अभिनेता के रूप में अच्छा पैसा कमा रहे थे। इस प्रकार, फिल्म-वालास और उसके निर्माण ने शशि की रचनात्मक भूख को संतुष्ट किया।

## Junoon (1978)

1970 के दशक के उत्तरार्ध में, श्याम बेनेगल भारत की नई लहर, या समानांतर सिनेमा आंदोलन के अग्रणी व्यक्ति बन गए। उनकी प्रत्येक कथात्मक फिल्म—अंकुर, निशांत, मंथन और भूमिका—ने यथार्थवाद के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और मुख्यधारा के हिंदी सिनेमा के गीत-नृत्य की अतिरंजना को अस्वीकार करने के कारण कलात्मक और बॉक्स ऑफिस दोनों ही क्षेत्रों में सफलता प्राप्त की। उदाहरण के लिए, अंकुर एक युवा किसान महिला लक्ष्मी की कहानी के माध्यम से जाति, महिलाओं के अधिकार और आर्थिक असमानता जैसे संवेदनशील विषयों को बिना किसी स्पष्ट रोमांटिकरण के उजागर करती है; वहीं निशांत स्वतंत्रता की दहलीज पर खड़े भारत में सामंती व्यवस्था के अत्याचार का निर्मम और मार्मिक चित्रण करती है।

शशि कपूर श्याम की फिल्मों को बड़े चाव से देखते थे, और जब फिल्म-वालास की शुरुआत हुई, तो उन्होंने निर्देशक से पूछा कि क्या उनके पास अपनी पहली फिल्म के लिए कोई विषय या कहानी है। श्याम बताते हैं, 'मुझे यह विचार बहुत पसंद आया।' रस्किन बॉन्ड की लघु उपन्यास 'अ फ्लाइट ऑफ पिजन्स' पढ़ने के बाद, श्याम ने शशि को शाहजहाँपुर में 1857 के भारतीय विद्रोह के दौरान की एक कहानी सुनाई - एक विवाहित पठान, जावेद खान, एक युवा एंग्लो-इंडियन महिला, रूथ से इतना मोहित हो जाता है कि वह उसके परिवार और उसे अगवा कर लेता है, इस उम्मीद में कि वह उस युवती से शादी कर लेगा। श्याम कहते हैं, 'शशि को कहानी बहुत पसंद आई और उन्होंने कहा, "हां, हम इसे बनाएंगे!" और बस बात बन गई।'
'अ फ्लाइट ऑफ पिजन्स' को विस्तार देकर 'जुनून' की पटकथा तैयार की गई - जिसे श्याम ने स्वयं लिखा था और सत्यदेव दुबे और इस्मत चुगताई ने संवाद लिखे थे। पटकथा इतनी प्रभावशाली थी कि शशि, जिन्होंने पहले केवल फिल्म का निर्माण करने की योजना बनाई थी, ने श्याम से अनुरोध किया। शशि मधु जैन को बताती हैं, 'पटकथा पढ़ने के बाद, मैंने श्याम से पूछा कि क्या वह चाहते हैं कि मैं फिल्म में अभिनय करूं।'
श्याम के लिए फैसला आसान था। अपेक्षाकृत कम प्रसिद्ध थिएटर कलाकारों या नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा और/या फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया के नए प्रतिभाशाली कलाकारों के साथ काम करने के बाद, उन्हें अपने प्रोजेक्ट से एक बड़े नाम के जुड़ने की खुशी थी। श्याम ने शशि को जावेद खान की मुख्य भूमिका की पेशकश की।
शशि कपूर, अपनी ओर से, फिल्मी हीरो की तरह अहंकारी नहीं थे, बल्कि एक टीम प्लेयर थे। श्याम कहते हैं, 'वे बेहद मेहनती थे। उन्होंने कभी भी स्टार होने का घमंड नहीं दिखाया—हालांकि उस समय वे बहुत बड़े स्टार थे। उन्होंने थिएटर कलाकार की तरह अनुशासन से काम किया। आप जानते हैं, रिपर्टरी थिएटर कंपनी के कलाकार कितने अनुशासित होते हैं। आप उन्हें एक निश्चित समय देते हैं, और वे हमेशा तय समय पर कैमरे के सामने आने के लिए तैयार रहते हैं—मेकअप किया हुआ, पोशाक पहनी हुई। यही थे शशि कपूर, मेरे अभिनेता।'
हालांकि नफीसा अली (राष्ट्रीय तैराकी चैंपियन और मिस इंडिया) ने रूथ की भूमिका निभाई, श्याम को पूरा यकीन था कि रूथ की निर्दयी मां मरियम की भूमिका, जो जावेद से लड़ने के लिए उग्रता और चालाकी का शक्तिशाली मिश्रण इस्तेमाल करती है, जेनिफर केंडल कपूर को ही दी जानी चाहिए - जिन्होंने बॉम्बे टॉकीज के बाद लगभग एक दशक तक कैमरे के सामने कदम नहीं रखा था। श्याम कहते हैं, 'जेनिफर शुरू में बहुत घबराई हुई थीं। उन्होंने तो यहां तक पूछ लिया था, "क्या आप किसी और को नहीं ले सकते?" लेकिन जैसे ही वह कैमरे के सामने आईं, उनकी सारी झिझक गायब हो गई।'
जुनून में सभी कलाकारों का अभिनय शानदार है, लेकिन फिल्म के सबसे बेहतरीन पल जेनिफर/मरियम और शशि/जावेद के बीच के हैं, जब वे रूथ से शादी करने की उसकी इच्छा को लेकर बहस करते हैं। एक बेहद मार्मिक दृश्य में, मरियम, चल रहे सिपाही विद्रोह और विद्रोहियों पर जावेद के विश्वास का फायदा उठाते हुए, अपने बंदी बनाने वाले से चतुराई से सौदा करती है। अगर दिल्ली विद्रोहियों के कब्जे में आ जाती है, तो जावेद रूथ से शादी कर सकता है। फिर वह कहती है: 'अगर अंग्रेजों का कब्जा हो गया दिल्ली पर, तो फिर आप ना तो रूथ से बात करने की कोशिश करेंगे, ना शादी के लिए दबाव डालेंगे। मंज़ूर?' ('अगर अंग्रेज दिल्ली पर कब्जा कर लेते हैं, तो आप रूथ से बात करने की कोशिश नहीं करेंगे, न ही उस पर शादी के लिए दबाव डालेंगे। सहमत?') जावेद मरियम को स्तब्ध होकर देखता रहता है, साथ ही वह सौदे के परिणामों पर विचार भी करता है।
बाद में, जेनिफर के पिता, जेफ्री केंडल, फिल्म में अपनी बेटी के संवाद-प्रस्तुति की जमकर प्रशंसा करेंगे। वे अपनी आत्मकथा में लिखते हैं, 'जेनिफर ने शादी के बाद ही हिंदी सीखना शुरू किया था, और जुनून में इतने लंबे किरदार को सहजता से निभाते हुए उन्हें देखना अद्भुत था।'

1978, जुनून। शशि कपूर, 1987 के विद्रोही के रूप में। फिल्म के अंत में, वह एंग्लो-इंडियन रूथ (नफीसा अली) की तलाश में बेताब हैं। सौजन्य: श्याम बेनेगल।

दिलचस्प बात यह है कि जेनिफ़र, शशि की तरह ही, फिल्म निर्माण के दौरान दोहरी भूमिका निभा रही थीं—वह न केवल मुख्य अभिनेत्री थीं, बल्कि अक्सर की तरह, वेशभूषा डिजाइन करने की ज़िम्मेदारी भी उन्हीं पर थी। संजना कपूर को वह समय अच्छी तरह याद है जब जुनून प्री-प्रोडक्शन चरण में थी। वह कहती हैं, 'उस समय हमारा घर एक दर्जी की दुकान में बदल गया था। जहां मां पश्चिमी वेशभूषा डिजाइन करती थीं, वहीं वह खुद सभी टोपियां सिलती थीं।' शायद जेनिफ़र की बारीकियों पर पैनी नज़र के कारण ही जुनून का एक सबसे उल्लेखनीय पहलू ब्रिटिश और भारतीय किरदारों का पहनावा है, यहां तक कि अतिरिक्त कलाकारों का भी। श्याम कहते हैं, 'वे इतने सटीक और प्रामाणिक थे।' 'भारत में बनी किसी फिल्म के लिए वेशभूषा के माध्यम से किसी कालखंड को जीवंत करना दुर्लभ था।' बाद में, नवंबर 1983 में, जब ओम पुरी को पहले पृथ्वी थिएटर महोत्सव के लिए मजमा थिएटर के हिट प्रोडक्शन 'बिच्छू' का मंचन करते समय धन की कमी का सामना करना पड़ा, तो जेनिफ़र उन्हें फिल्म-वालास के स्टोर रूम में ले गईं, सभी बक्से निकाले और उन्हें नाटक के लिए 'जुनून' फ़िल्म की वेशभूषा दीं।

शशि, नफीसा और जेनिफ़र के अलावा, जुनून की विशाल कलाकार-कलाकार टीम में शबाना आज़मी (जावेद की पत्नी के रूप में), नसीरुद्दीन शाह (जावेद के बहनोई के रूप में) और इस्मत चुगताई (मरियम की माँ के रूप में) शामिल हैं। लखनऊ के पास मलिहाबाद और काकोरी के विशाल इलाकों में फिल्माई गई इस फिल्म में विस्तृत युद्ध दृश्य भी हैं, जिनमें पृष्ठभूमि कलाकारों, घोड़ों और हाथियों की एक बड़ी टीम शामिल है। अंत में महत्वपूर्ण पलायन दृश्य में लगभग 3,000 अतिरिक्त कलाकार, 300 जानवर, 40 घोड़ागाड़ियाँ और बैलगाड़ियाँ दिखाई देती हैं।

इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है कि जुनून श्याम द्वारा निर्देशित अब तक की सबसे महंगी फिल्म साबित हुई। निर्देशक कहते हैं, 'यह मेरे लिए एक बहुत बड़ी फिल्म थी। बेशक, राजेश खन्ना की फिल्म जितनी बड़ी तो नहीं, लेकिन उन फिल्मों की तुलना में बड़ी थी जो मैं उस समय 8-10 लाख रुपये में बना रहा था।' कुणाल कपूर का कहना है कि जुनून की लागत 34 लाख रुपये थी, जबकि निर्देशक और लेखिका संगीता दत्ता इससे कहीं अधिक आंकड़ा '55 लाख रुपये' बताती हैं।

अब बात करते हैं निर्माता शशि की, और श्याम तुरंत मुझे बताते हैं, 'मैंने उनसे बेहतर निर्माता कभी नहीं देखा!' वे आगे कहते हैं, 'शशि सिर्फ बैठकर पैसा लगाने और आलोचना करने वाले नहीं थे। उन्होंने इससे कहीं अधिक किया। उन्होंने पूरी प्रक्रिया में भाग लिया। उन्होंने चीजों को एक फिल्म निर्माता और अंदरूनी व्यक्ति के नजरिए से देखा। उन्हें किसी स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं थी। वे समझते थे कि क्या आवश्यक है। ऐसे निर्माता बहुत कम होते हैं - आप उन्हें सचमुच उंगलियों पर गिन सकते हैं।'

निर्माता के तौर पर शशि हमेशा सेट पर सबसे पहले आते थे और सबसे आखिर में जाते थे। अनुशासन के लिए तो उनकी काफी ख्याति थी ही, साथ ही वे अपने उच्च नैतिक मूल्यों के लिए भी जाने जाते थे। श्याम बताते हैं, 'मुझे याद है, एक बार कोई सिगरेट पीते हुए इधर-उधर पड़ी हुआ था। शशि उस पर बहुत गुस्सा

हुए! उन्होंने कहा, "सुनो, सेट एक मंदिर की तरह है। तुम मंच पर ऐसा नहीं करोगे, है ना? तो फिर फिल्म सेट पर इस तरह की हरकतें करने की कोशिश मत करो!'"
शबाना, जो हमेशा शशि के साथ मजाक में नोकझोंक करती रहती थीं, उनके पास भी एक किस्सा है। 'मुझे याद है, फिल्म 'जुनून' की शूटिंग के दौरान मैं अपनी बारी का इंतजार कर रही थी और बीटल्स के गाने सुन रही थी। तभी शशि चिल्लाते हुए आए, "ये कोई मतलब है? 1857 की फिल्म बन रही है और तुम बीटल्स सुन रही हो?" तो मैंने पूछा, "ये क्या दादागिरी है आपकी?" और उन्होंने कहा, "बेगम अख्तर लगाओ।" मैंने कहा, "माफ़ करना, बेगम अख्तर भी 1857 में नहीं थीं।" और मैंने कहा, "माफ़ कीजिए, बेगम अख्तर भी 1857 में नहीं थीं।"'
शबाना के लिए, निर्माता के रूप में शशि का सबसे उल्लेखनीय गुण यह था कि वे सभी के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करते थे। वे कहती हैं, "आप जानते हैं, फिल्म उद्योग एक बहुत ही पदानुक्रमित जगह है। सितारों और छोटी भूमिकाओं में अभिनय करने वालों में बहुत बड़ा अंतर होता है। शशि, शायद रंगमंच की दुनिया से आने के कारण, सभी अभिनेताओं, चाहे वे बड़े हों या छोटे, की ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील रहे।" उनके लोकतांत्रिक स्वभाव के कारण ही उन्होंने जुनून फिल्म के पूरे कलाकारों को—सिर्फ मुख्य कलाकारों को ही नहीं—दो महीने के लिए लखनऊ के क्लार्क्स अवध होटल में ठहराया था। शबाना कहती हैं, "ये वे छोटी-छोटी बातें थीं जिनके लिए उन्होंने पैसे दिए और जो उन्हें बहुत ही असाधारण बनाती थीं। लेकिन इससे वे बिल्कुल अपने पिता की तरह भी बन गए—मेरी माँ बताती हैं कि पृथ्वीराज कपूर अपने कामगारों का बहुत सम्मान करते थे।" शशि कई मायनों में अपने पिता के पुत्र थे।
निर्माण लागत में लगातार वृद्धि के बावजूद, जुनून ने अंततः लागत की भरपाई कर ली या, जैसा कि श्याम कहते हैं, 'पैसा वसूलने में कोई समस्या नहीं थी, लेकिन मुनाफा कमाने में दिक्कत आ रही थी।' वे आगे कहते हैं, 'फिल्म उद्योग के लोग कहते थे, "ठीक है, शशि और श्याम अच्छे अभिनय वाली आर्ट-हाउस फिल्में बनाते हैं, लेकिन कमाई कहां से हो रही है?"'
लेकिन पैसा ही सफलता का एकमात्र पैमाना नहीं हो सकता। जुनून ने दुनिया भर में यात्रा की, मॉस्को, मॉन्ट्रियल, काहिरा और सिडनी का दौरा किया और कई पुरस्कार जीते। इसे 1979 के राष्ट्रीय पुरस्कारों में हिंदी की सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के रूप में मान्यता मिली और 1980 के फिल्मफेयर पुरस्कारों में इसने धूम मचा दी, जिसमें सर्वश्रेष्ठ फिल्म, निर्देशक और संवाद का पुरस्कार शामिल था।

## Kalyug (1981)

जुनून के तुरंत बाद, शशि कपूर और श्याम बेनेगल ने भविष्य की योजनाएँ बनाना शुरू कर दिया। श्याम कहते हैं, "मैंने शशि से पूछा कि क्या वह एक दूसरी फिल्म का निर्माण करना चाहेंगे, जो उस विचार पर आधारित हो जिस पर (अभिनेता और नाटककार) गिरीश कर्नाड और मैं कुछ समय से काम कर रहे थे। यह चचेरे भाइयों के बीच पारिवारिक कलह का आधुनिक रूपांतरण होना था—जो वास्तव में महाभारत का आधार है। गिरीश ने पटकथा की रूपरेखा तैयार कर ली थी और शशि इसे बनाने के लिए सहमत हो गए।" इस तरह कलयुग, शशि-श्याम का दूसरा संयुक्त प्रयास, जिसने एक भारतीय महाकाव्य को आधुनिक रूप दिया, की शुरुआत हुई।
इस फिल्म में कलाकारों की संख्या लगभग महाभारत जितनी ही थी, और श्याम ने राज बब्बर, अनंत नाग, सुषमा सेठ, कुलभूषण खरबंदा, विजया मेहता, सुप्रिया पाठक और विक्टर बनर्जी सहित कई युवा और वरिष्ठ अभिनेताओं को शामिल किया। इनमें दो बड़े सितारे भी थे—शशि, जिन्होंने खूबचंद वंश के सलाहकार और वफ़ादार करण सिंह (या कौरवों के कर्ण) की भूमिका निभाई; और रेखा, जिन्होंने प्रतिद्वंद्वी पुरंचंद परिवार के मुखिया धर्मराज (राज बब्बर द्वारा अभिनीत युधिष्ठिर के समान एक किरदार) की द्रौपदी जैसी पत्नी सुप्रिया की भूमिका निभाई। इस जटिल कथानक को और भी पेचीदा बनाने के लिए एक उपकथा भी है जिसमें सुप्रिया अपने देवर भरत (अनंत नाग, आधुनिक युग के अर्जुन के रूप में) से गुप्त रूप से प्रेम करती है। इसके बाद हिंसक कॉरपोरेट संघर्ष और पारिवारिक रक्तपात की कहानी सामने आती है।
श्याम बताते हैं कि रेखा 'वास्तव में शशि की वजह से' कलयुग का हिस्सा बनीं। वे मुझे याद दिलाते हैं कि कलयुग शशि की उनके साथ ग्यारहवीं फिल्म थी। शशि ने अंततः इस अभिनेत्री के साथ अठारह फिल्मों में काम किया - किसी भी हिंदी फिल्म अभिनेता के साथ उनके द्वारा स्वीकार की गई फिल्मों की यह सबसे अधिक संख्या थी। श्याम आगे कहते हैं, 'यह एक संयुक्त निर्णय था। मैं खुद कलयुग के लिए रेखा को चुनता, लेकिन मुझे नहीं लगता कि अगर मैंने उनसे पूछा होता तो वह मेरे लिए काम करतीं।' कई साल बाद, श्याम ने रेखा को फिर से कास्ट किया, इस बार खालिद मोहम्मद द्वारा लिखित ड्रामा फिल्म 'जुबैदा' में।
जुनून के विपरीत, शशि ने कलयुग में करण की भूमिका स्वेच्छा से नहीं निभाई—हालांकि यह भूमिका फिल्म की कहानी के लिए निस्संदेह महत्वपूर्ण थी, फिर भी इसकी भूमिका सहायक ही थी। इसके बजाय, शशि धर्मराज की मुख्य भूमिका निभाना चाहते थे और उन्होंने अमिताभ बच्चन को करण का किरदार देने की योजना बनाई थी। श्याम कहते हैं, 'लेकिन ऐसा नहीं हो पाया।' 'मैं शशि को केवल करण सिंह के रूप में ही देख सकता था और मैंने अमिताभ से संपर्क नहीं किया। मुझे लगता है कि शशि ने किया था। लेकिन उस समय अमिताभ अपने करियर के शिखर पर थे और उनकी अलग महत्वाकांक्षाएं और अन्य काम थे।' एक समय तो शशि ने सत्यजीत रे के पसंदीदा अभिनेता सौमित्र चटर्जी को करण की भूमिका देने पर भी विचार किया था। शशि कहते हैं कि यह लगभग एकमात्र ऐसा समय था जब सौमित्र किसी हिंदी फिल्म में काम करने के करीब आए थे: '[लेकिन] चूंकि वे अस्वस्थ थे, इसलिए वे मेरा प्रस्ताव स्वीकार नहीं कर सके।'

अपनी योजनाएँ विफल होने पर, शाश ने बिना किसी कड़वाहट के करण की भूमिका स्वीकार कर ली, यहाँ तक कि उन्होंने यह भी कहा, 'अगर सौमित्र ने अभिनय किया होता तो वह मुझसे कहीं ज़्यादा इस किरदार के साथ न्याय करते।' श्याम कहते हैं, 'उनका स्वभाव ही ऐसा था—एक बड़े स्टार होने के बावजूद उन्हें दूसरों के साथ काम करने में कोई आपत्ति नहीं थी। आजकल ऐसे लोग बहुत कम हैं।' दिलचस्प बात यह है कि मुख्य अभिनेता न होने के बावजूद, कलयुग में शशि को शीर्ष भूमिका मिली, उसके बाद रेखा का नंबर था—वास्तव में, यह उद्योग में उनकी स्टारडम का ही नतीजा था।
देव बेनेगल, जिन्हें कलयुग फिल्म में अपना पहला फिल्म यूनिट का काम मिला था, के अनुसार, शशि ने करण की भूमिका स्वीकार करने के बाद कहा, 'वह एक बिल्कुल पेशेवर अभिनेता थे। वह किरदार में इस कदर ढल जाते थे मानो वह मंच पर हों। स्क्रिप्ट मिलने के एक घंटे के भीतर ही वह मंच के पीछे पहुंच जाते थे और अपने किरदार में पूरी तरह डूब जाते थे।'
कलयुग में एक महत्वपूर्ण दृश्य है, जहाँ शशि द्वारा अभिनीत करण को अपनी माँ की पहचान का पता चलता है—यह दृश्य कर्ण से काफी मिलता-जुलता है, जिसे यह जानकर बहुत दुख होता है कि उसकी माँ कुंती है। करण इतना आहत होता है कि वह भ्रूण की मुद्रा में बिस्तर पर सिकुड़कर लेट जाता है—यह दृश्य हिंदी फिल्म के सबसे बेहतरीन दृश्यों में से एक है और श्याम और शशि के बीच सबसे उत्कृष्ट सहयोगों में से एक है। श्याम कहते हैं, 'उन्होंने इस पर बहुत मेहनत की।' देव आगे कहते हैं, 'यह टॉप-एंगल शॉट था और इसे सेट करने में काफी समय लगा। दृश्य पूरा होने के बाद, शशि बाहर आए और पूछा कि क्या सब ठीक है। उस समय हमारे पास मॉनिटर नहीं थे, लेकिन मुझे कैमरों के पास खड़े होने की अनुमति दी गई थी। मैंने उनसे कहा कि उन्होंने बिल्कुल शानदार काम किया है और माहौल को पूरी तरह से सेट कर दिया है। शशि मुस्कुराए और बोले, "अच्छा, तुम्हें पता है मैं क्या सोच रहा था?" मैं एक अनुभवहीन लड़का था, बहुत शांत और शर्मीला—शशि और उनकी पत्नी एक दंपत्ति के रूप में इतने मिलनसार और स्वागत करने वाले थे कि मेरी ये झिझक दूर हो जानी चाहिए थी—फिर भी, मैंने उन्हें खाली निगाहों से देखा।' और शशि ने कहा, "मैं सोच रहा था, उम्मीद है मेरी पत्नी आज रात के खाने में बैंगन नहीं बना रही होगी। उम्मीद है खाने के लिए कुछ और होगा।" मैं बस मुस्कुरा दिया। लेकिन वह बात मेरे दिमाग में रह गई।
शशि को अपनी मां के बारे में पता चलने का क्षण कलयुग के कई उल्लेखनीय पलों में से एक है। हालांकि हर किरदार को सीमित स्क्रीन-टाइम मिलता है, लेकिन कई किरदारों के दृश्य बेहद मार्मिक हैं—चाहे वह सुषमा सेठ की सावित्री हों, जो पुरंचन्द परिवार की मुखिया (या कुंती) हैं और परिवार के कलह के प्रति अपनी असहमति को बड़ी करुणा के साथ व्यक्त करती हैं; या वह क्षण जब विक्टर बनर्जी के धनराज (या दुर्योधन) करण का इस्तीफा स्वीकार करते हैं। ये अभिनय से भरपूर दृश्य; साजिशों की झलकियाँ; और परेशान करने वाला, कामुक अंत, जो हिंदी सिनेमा में पहले कभी नहीं देखा गया, कलयुग को एक उल्लेखनीय नाटक बनाते हैं।
फिर भी, महाभारत की कथा को दो समकालीन औद्योगिक परिवारों के जीवन में पिरोना, जो प्रतिस्पर्धी व्यवसायों को लेकर आपस में लड़ रहे थे, चुनौतियों से भरा था। श्याम कहते हैं, 'मैं कलयुग के परिणाम से कभी संतुष्ट नहीं था'; यह पहली बार था जब उन्हें किसी फिल्म के उनके इरादे के अनुरूप न बन पाने पर समझौता करना पड़ा। निर्देशक संगीता दत्ता ने फिल्म का आलोचनात्मक विश्लेषण करते हुए कमियों को उजागर किया: 'कलयुग के पात्र घटनाओं के एक उग्र प्रवाह में बह रहे हैं, इसलिए फिल्म निर्माता उनके आंतरिक जगत का पता लगाने में असमर्थ रहे।' श्याम ने संगीता से स्वीकार किया, 'पटकथा में कुछ समस्याएं थीं जो अंत तक सुलझ नहीं पाईं।'
दरअसल, देव—जिन्हें श्याम के नियमित पटकथा लेखक सत्यदेव दुबे द्वारा लिखे गए संवादों को देवनागरी और अंग्रेजी में लिखकर सभी अभिनेताओं को वितरित करना था—का कहना है कि एक संपूर्ण पटकथा का अभाव ही फिल्म की असफलता का कारण बना। वे कहते हैं, 'वास्तव में कोई पटकथा नहीं थी जिस पर हम फिल्म बना रहे थे, या मैंने कभी कोई पटकथा देखी ही नहीं।' 'मेरे पास एक फाइल थी जिसमें फिल्म की एक पृष्ठ की चरणबद्ध रूपरेखा थी।' कभी-कभी संवाद अभिनेताओं को शूटिंग से एक रात पहले सौंप दिए जाते थे, लेकिन कभी-कभी उन्हें शूटिंग के दिन, शॉट की तैयारी के दौरान मिलते थे। कई बार संवाद अचानक बदल जाते थे। देव कहते हैं, 'विक्टर बनर्जी वास्तव में संवाद पहले से चाहते थे। उन्हें हिंदी में ज्यादा सहजता नहीं थी। वे भाषा को समझने के लिए कुछ समय चाहते थे। लेकिन वे कभी भी समय पर संवाद प्राप्त नहीं कर पाए।' शशि—भले ही उसे अपनी लाइनें समय से पहले न मिलने पर गुस्सा आता था—लेकिन वह दूसरे अभिनेताओं के बारे में और भी ज्यादा चिंतित हो जाता था।'

1981, Kalyug. Shyam Benegal to the left; Govind Nihalani behind the camera; and Shashi Kapoor to his right in a recent avatar as producer. Courtesy: Shyam Benegal.

यह शशि की चिंता का एकमात्र कारण नहीं था। देव को याद है कि कलयुग में अभिनय करते समय भी शशि को निर्माण संबंधी संकटों का सामना करना पड़ा था। देव कहते हैं, 'निर्माण व्यवस्था कुछ इस तरह से चल रही थी जो कि तात्कालिक या यूं कहें कि तदर्थ थी। और शशि फिल्म निर्माण की इस शैली को अपनाने की कोशिश कर रहे थे। स्पष्ट रूप से कुछ तनाव था।'
अच्छे इरादों और कुछ बेहतरीन अभिनय के बावजूद, कलयुग बॉक्स ऑफिस पर असफल रही। शशि ने मधु जैन को बताया कि फिल्म को 10 लाख रुपये का नुकसान हुआ।
1988 में, बी.आर. चोपड़ा ने दूरदर्शन के लिए 94 एपिसोड का एक धारावाहिक निर्मित और निर्देशित किया —महाभारत की एक सटीक, हालांकि कुछ अतिरंजित, पुनर्कथा। गहरे धार्मिक भावों से भरपूर यह धारावाहिक बेहद सफल रहा। इसके विपरीत, कलयुग, जिसने एक प्राचीन महाकाव्य में समकालीन अर्थ खोजने का प्रारंभिक प्रयास किया, दर्शकों को पसंद नहीं आया।

## 36 चौरिंगी लेन (1981)

सत्यजीत रे की फिल्म 'समाप्ति' (तीन कन्या त्रयी का एक भाग) से अपने अभिनय करियर की शुरुआत करने वाली अपर्णा सेन ने कई बंगाली फिल्मों में काम किया और फिर हिंदी व्यावसायिक सिनेमा में भी अपनी पहचान बनाई। इसी दौरान उन्होंने लेखन कार्य भी जारी रखा—पहले एक लघु कहानी, जो काफी लंबी हो गई और अंततः एक अंग्रेजी पटकथा बन गई—यह कहानी आधुनिक कोलकाता में रहने वाली एक अकेली, बुजुर्ग एंग्लो-इंडियन स्कूल शिक्षिका की मार्मिक कहानी है, जिसका एकमात्र सहारा शेक्सपियर पढ़ाना है।
स्क्रिप्ट हाथ में लेकर अपर्णा ने कुछ संभावित निर्माताओं से संपर्क किया। अपर्णा कहती हैं, "वे मुझसे पूछते थे, 'सेक्स? हिंसा? आप क्या बेचना चाहती हैं?' और मैं जवाब देती थी, 'एक छोटी सी मानवीय कहानी।' यह वापसी ज्यादातर निर्माताओं के लिए बहुत रुचिकर नहीं थी।
आखिरकार, हताश होकर अपर्णा ने अपनी पटकथा अपने गुरु सत्यजीत को दिखाई, जिन्होंने जवाब देने में कुछ महीने लगा दिए। उनका जवाब उत्साहवर्धक था—उन्हें पटकथा पसंद आई—और उन्होंने अपर्णा से कहा कि उन्हें यह फिल्म बनानी चाहिए। जब अभिनेत्री ने निर्माताओं को ढूंढने में आ रही कठिनाइयों का जिक्र किया, तो सत्यजीत ने उन्हें शशि कपूर से संपर्क करने का सुझाव दिया, क्योंकि उन्होंने हाल ही में 'जुनून' का निर्माण किया था। अपर्णा कहती हैं, 'दरअसल, उन्होंने मुझसे कहा कि उन्हें अंदर से महसूस हो रहा था कि शशि कपूर इस फिल्म को बनाएंगे।'

अपर्णा ने शशि को एक सारांश भेजा, जिनसे वह बॉम्बे टॉकीज और सलीम-जावेद द्वारा लिखित इम्मान धरम के माध्यम से पहले से ही परिचित थीं। शशि ने कुछ दिनों बाद उन्हें वापस फोन किया। उन्होंने कहा, “हमें सारांश बहुत पसंद आया, लेकिन हमें कैसे पता चलेगा कि आप इससे एक अच्छी फिल्म बना पाएंगी?” मैंने कहा, “मुझे नहीं पता कि मैं आपको कैसे मनाऊं।” तो उन्होंने कहा, “क्यों न आप कलकत्ता से बॉम्बे आकर हमें पटकथा पढ़कर सुनाएं? और अगर हम आपको फिल्म में लेते हैं, तो हम आपके वापस जाने का किराया देंगे।”
इसी तरह अपर्णा की मुलाकात शशि कपूर से मिलने मुंबई गई। उन्होंने कपूर परिवार के घर पर अभिनेता, उनकी पत्नी और निर्देशक एवं छायाकार गोविंद निहलानी को पटकथा पढ़कर सुनाई। कुणाल कपूर बताते हैं कि पटकथा पढ़ने के बाद उनके माता-पिता को कहानी इतनी पसंद आई कि वे चाहते थे कि श्याम बेनेगल फिल्म का निर्देशन करें। लेकिन अंततः अपर्णा उन्हें यह समझाने में कामयाब रहीं कि वह '36 चौरंगी लेन' फिल्म की निर्देशक बनने के लिए तैयार हैं—यह फिल्म मुख्य किरदार के वीरान घर को संदर्भित करती है, और दिलचस्प बात यह है कि इसकी शूटिंग लगभग उसी पते पर हुई थी: 26 चौरंगी रोड।
शुरुआत में, अपर्णा गोविंद के साथ छायांकन करना चाहती थीं। लेकिन उस समय गोविंद रिचर्ड एटनबरो की फिल्म 'गांधी' के लिए द्वितीय इकाई के सिनेमैटोग्राफर (डीओपी) के रूप में व्यस्त थे—यह एक ऐसी प्रतिबद्धता थी जिसमें उन्हें कम से कम एक साल लग जाता। अपर्णा—लंबे समय तक इंतजार करने के बाद—शूटिंग शुरू करने के लिए बेचैन थीं, और शशि ने उनकी इस बेचैनी को भांप लिया। उन्होंने कई छायाककों की सिफारिश की, जिनमें 'विटनेस' के छायांकक अशोक मेहता भी शामिल थे—जिन्होंने कई साक्षात्कारों में शशि को अपना सर्वश्रेष्ठ जनसंपर्क अधिकारी बताया है। 'विटनेस'—शशि अभिनीत एक खूबसूरती से फिल्माई गई फिल्म, जो दुर्भाग्य से कभी रिलीज नहीं हुई—देखने के बाद अपर्णा को यकीन हो गया कि उन्हें वह प्रतिभा मिल गई है जिसकी उन्हें तलाश थी। अशोक '36 चौरंगी लेन' के छायांकक बने। एक अखबार के साक्षात्कार में अपर्णा कहती हैं:

अशोक और मैं बैठकर फिल्म की दृश्य शैली पर चर्चा करने लगे। हमने चित्रों, कला पुस्तकों, और अन्य रचनाओं का अध्ययन किया। फिर अशोक ने मुझसे अपनी फिल्म के स्वरूप का एक पंक्ति में वर्णन करने को कहा। मैंने कहा, 'अगर एक गुलाब को लंबे समय तक किताब के अंदर दबाकर रखा जाए, तो आप जानते हैं कि उसके रंग क्या होंगे?' अशोक तुरंत समझ गए कि मैं क्या कहना चाहता हूँ।

फिर कास्टिंग का सवाल आया। अपर्णा ने एंग्लो-इंडियन महिला वायलेट स्टोनहैम के मुख्य किरदार के लिए आदर्श उम्मीदवार खोजने में काफी समय बिताया। आखिरकार, अभिनेता और निर्देशक उत्पल दत्त ने जेनिफर केंडल कपूर का नाम सुझाया। 'मैंने जेनिफर को जुनून में देखा था, हाँ। लेकिन वह बहुत ही शालीन लग रही थीं। वह दुखी, बूढ़ी मिसेस स्टोनहैम का किरदार कैसे निभा सकती थीं? लेकिन उत्पल दत्त ने जोर देकर कहा कि वह एक अद्भुत, दमदार अभिनेत्री हैं। इसलिए, मैंने जेनिफर से बात की, और मैंने अपनी झिझक के बारे में खुलकर बताया—कि वह युवा दिखती हैं। जेनिफर ने कहा, "चिंता मत करो, मैं झुर्रियों के बारे में सोच सकती हूँ।"' अपर्णा उस बातचीत को याद करके हंसती हैं। अंततः, जेनिफ़र ने एक मेकअप आर्टिस्ट से अपने बालों को गर्दन के पीछे जूड़ा बनवाया और अपनी तस्वीरें अपर्णा को भेल कीं। 'जब मुझे वे तस्वीरें मिलीं, तो मुझे एहसास हुआ कि उन्होंने किरदार का सार पकड़ लिया था।'
एक तरह से अप्रत्याशित कास्टिंग करते हुए, अपर्णा ने ज्योफ्री केंडल को भी फिल्म में शामिल कर लिया। ज्योफ्री अपनी आत्मकथा में लिखते हैं: 'मुझे जेनिफर के भाई (बूढ़े और बीमार एडी) का किरदार निभाना था, एक ऐसा किरदार जो मुझे पहले इसलिए नहीं दिया गया था क्योंकि उन्हें लगा था कि मैं बूढ़ा और कमजोर नहीं दिखता। जाहिर है, उन्होंने अपना मन बदल लिया था।' जेम्स आइवरी की फिल्म 'शेक्सपियर वाला' के बाद, जिसमें फेलिसिटी और ज्योफ्री (और जेनिफर को एक छोटी, बिना श्रेय वाली भूमिका) थे, यह पिता-पुत्री की जोड़ी एक ही फिल्म में एक साथ अभिनय करेगी - अनोखे ढंग से, भाई-बहन के रूप में। संजना कपूर कहती हैं, 'मेरे दादाजी ने इसमें शानदार अभिनय किया था।'
और जैसा कि अक्सर उनके घरेलू निर्माणों में होता था, शशि और जेनिफर के बच्चों ने भी 36 चौरंगी लेन में संक्षिप्त भूमिका निभाई। संजना ने मुंबई के माढ द्वीप में फिल्माए गए एक स्वप्न दृश्य में युवा वायलेट स्टोनहैम की भूमिका निभाई है। और संजना के बड़े भाई, करण कपूर ने वायलेट के प्रेमी डेवी की भूमिका निभाई है, जिसकी द्वितीय विश्व युद्ध में मृत्यु हो जाती है।
अंत में, बिल्ली को शामिल करने की बारी आई! अपर्णा कहती हैं, 'जब सत्यजीत रे ने पटकथा पढ़ी, तो उन्होंने कहा, "आपने इसमें एक बिल्ली को शामिल कर दिया है। वातानुकूलित कमरे में बैठकर बिल्ली के बारे में लिखना तो ठीक है, लेकिन मैं आपको बता रहा हूँ, आप जो करने का प्रस्ताव दे रही हैं वह बहुत मुश्किल है।" उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने अपूर संसार में एक बिल्ली के साथ काम करने की कोशिश की थी और वह कुछ ही दिनों में भाग गई थी।' हालाँकि उन्हें धैर्यपूर्वक समझाया गया कि बिल्लियों को फिल्मों के लिए प्रशिक्षित नहीं किया जा सकता, अपर्णा अपनी बात पर अड़ी रहीं। अंततः, शशि ने मद्रास से उनके लिए एक बिल्ली मंगवाई। 36 चौरंगी लेन में, सर टोबी बेल्च नामक की काली धारीदार बिल्ली - ट्वेल्थ नाइट के एक पात्र के नाम पर - मिस स्टोनहैम की घर पर साथी बनी हुई है।
शशि और गोविंद ने मिलकर फिल्म का बजट तैयार किया था। अपर्णा का मानना है कि शुरुआती योजना लगभग 16 लाख रुपये की थी, लेकिन बजट बढ़कर 24 लाख रुपये तक हो गया होगा। हालाँकि, वह कहती हैं, 'मैं इस पर शर्त नहीं लगा सकती। असल बात यह है कि बजट पर मुझसे कभी चर्चा ही नहीं हुई।'

संभवतः, शाशे ने मुंबई के बाहरी इलाके पनवेल के पास श्रीदी गांव में 18 एकड़ जमीन बेचकर '36 चौरंगी लेन' फिल्म के लिए पैसे जुटाए थे, इस बात पर भी अपर्णा से कभी चर्चा नहीं हुई। वह आगे कहती हैं, 'मेरी पिछली तीन फिल्मों के निर्माता ने मुझे तय दिनों में शूटिंग पूरी करने के लिए कहा था, लेकिन शशि ने मुझे यह भी नहीं बताया। उन्होंने बस इतना ही सुझाव दिया कि मुझे लागत कम रखने की कोशिश करनी चाहिए।'
अपर्णा कहती हैं कि निर्माता शशि कंजूस नहीं थे। 'शशि काफी खर्चीले थे,' वह कहती हैं। 'हम रविवार को काम नहीं करते थे। चूंकि शूटिंग कलकत्ता में थी, इसलिए वह फिल्म-वालास के पूरे लाइटिंग उपकरण लेकर मुंबई से आते थे और पांच सितारा होटलों में ठहरते थे। फिर, वह हर सप्ताहांत यूनिट के लड़कों के लिए खाने-पीने का बहुत उदारतापूर्वक इंतजाम करते थे—वह हमेशा टीम को खुश रखते थे।'
शर्मिला टैगोर आगे कहती हैं कि निर्माता शशि भी बेहद मेहनती थे। 'जब वे 36 चौरंगी लेन का निर्माण कर रहे थे, तब शशि, जेनिफर और मैं कलकत्ता जाते या वापस आते थे—यह हवाई यात्रा का लंबा सफर होता था। और शशि ने बताया कि वे सुबह-सुबह नींद से भरी आंखों से उठते थे और सीधे काम पर लग जाते थे, क्योंकि वे अपर्णा के साथ एक अच्छी फिल्म बनाने के लिए प्रतिबद्ध थे।'
अगर शशि और अपर्णा के बीच कोई अनबन हुई थी, तो वह '36 चौरंगी लेन' की एडिटिंग के दौरान हुई थी। चूंकि शशि को निर्देशक का कट थोड़ा लंबा लगा, इसलिए उन्होंने उसमें काफी काट-छांट कर दी। अपर्णा कहती हैं, 'मुझे यह बात पसंद नहीं आई और हमारी थोड़ी कहा-सुनी हो गई। लेकिन फिर मैंने इसे स्वीकार कर लिया। आखिरकार सब ठीक हो गया।'
36 चौरंगी लेन वृद्धावस्था और अकेलेपन पर आधारित एक सुंदर और शांत फिल्म है, जो कलकत्ता के एंग्लो-इंडियनों के जीवन की गहरी झलक भी प्रस्तुत करती है। फिल्म की समीक्षकों ने खूब सराहना की और इसे कई पुरस्कार मिले, जिनमें 1982 में जेनिफर को सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के रूप में बाफ्टा (ब्रिटिश एकेडमी ऑफ फिल्म एंड टेलीविजन आर्ट्स) नामांकन भी शामिल है—शायद यह एकमात्र ऐसा मौका था जब भारत में भारतीयों द्वारा निर्मित और निर्देशित किसी फिल्म की नायिका को यह सम्मान मिला। जेनिफर की सह-नामांकित अभिनेत्रियां मिसिंग के लिए सिसी स्पेसक और रेड्स के लिए डायने कीटन थीं, लेकिन अंततः वे ऑन गोल्डन पॉन्ड के लिए कैथरीन हेपबर्न से हार गईं। हालांकि, जेनिफर को 1982 में इवनिंग स्टैंडर्ड ब्रिटिश फिल्म अवार्ड्स द्वारा सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के रूप में सम्मानित किया गया।
जेनिफर ऐसी प्रशंसा से अप्रभावित रहीं, लगभग विनम्र। एक साक्षात्कार में, वह कहती हैं, 'मुझे नहीं लगता कि [36 चौरंगी लेन में] मेरा अभिनय उतना अच्छा है जितना लोग कहते हैं। मुझे लगता है कि बॉम्बे टॉकी और जुनून के बीच लंबे अंतराल के कारण, लोग भूल गए थे कि मैंने कभी अभिनय भी किया है।' फिर, वह अपर्णा की प्रशंसा करती हैं।

36 चौरंगी लेन किसी के करियर में उन दुर्लभ उदाहरणों में से एक है जब एक लेखक, जो निर्देशक भी है, ने एक ऐसा संपूर्ण चरित्र रचा है... मुझे मिस स्टोनहैम के किसी भी कार्य को अपने मन में सही ठहराने की कभी आवश्यकता नहीं पड़ी... कुछ भी उस चरित्र के विपरीत नहीं था... शायद इसलिए कि [अपर्णा] भी एक अभिनेत्री हैं, इसलिए यह इतना आसान हो गया।

अपर्णा ने 1981 में सर्वश्रेष्ठ निर्देशक श्रेणी में राष्ट्रीय पुरस्कार जीता, जबकि अशोक को उनकी छाया लेखन के लिए सम्मानित किया गया। फिर, 1982 में मनीला में सिनेमनिला अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव हुआ। सत्यजीत, जिन्होंने अपर्णा से कहा था कि उन्हें फिल्म पसंद आई है, निर्णायक मंडल के प्रमुख थे। अपर्णा मुझे बताती हैं, 'कई महत्वपूर्ण फिल्में प्रतिस्पर्धा कर रही थीं, जिनमें 'द फ्रेंच लेफ्टिनेंट्स वुमन', फासबिंडर की 'लोला' और ट्रफॉट की 'द वुमन नेक्स्ट डोर' शामिल थीं। उनकी तुलना में, मैं तो बिल्कुल नई थी।' इतनी कड़ी प्रतिस्पर्धा के बावजूद, '36 चौरंगी लेन' को सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के लिए गोल्डन ईगल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। बाद में, अपर्णा ने सत्यजीत से पूछा कि क्या उन्होंने निर्णायक मंडल के फैसले में अहम भूमिका निभाई थी, और उस महान निर्देशक ने दिल को छू लेने वाला जवाब दिया कि यह सर्वसम्मत निर्णय था।
अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इतनी प्रशंसा मिलने के बावजूद, 36 चौरंगी लेन बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप रही। कुणाल इस फिल्म को 'आत्मघाती' बताते हैं क्योंकि यह अंग्रेजी में बनी थी, जबकि जेफ्री अपनी आत्मकथा में लिखते हैं, 'एक अकेली एंग्लो-इंडियन अविवाहित महिला की कहानी, जिसका जीवन का एकमात्र आनंद अपने छात्रों को शेक्सपियर पढ़ाना था, जरूरी नहीं कि व्यापक दर्शकों को पसंद आए।' द हिंदू को दिए एक साक्षात्कार में शशि फिल्म की प्रतिक्रिया से अपनी निराशा व्यक्त करते हैं। वे कहते हैं, '36 चौरंगी लेन पूरी तरह से घाटे में रही। मुझे प्रचार का खर्च खुद उठाना पड़ा और कई जगहों पर तो इसे प्रदर्शित करने के लिए थिएटर भी खुद किराए पर लेने पड़े।' शशि आगे कहते हैं कि उनके अनुमान के अनुसार, फिल्म को कम से कम 24 लाख रुपये का नुकसान हुआ (जो अपर्णा द्वारा फिल्म के बजट के रूप में बताया गया आंकड़ा है)।
बाद में देखा जाए तो, फिल्म का निर्माण करना और फिर उसे खुद ही रिलीज़ करना शशि का सबसे अच्छा व्यावसायिक निर्णय नहीं था। लेकिन तब उनके पास कोई और विकल्प नहीं था। यह भारत में सिंगल-स्क्रीन सिनेमाघरों का दौर था। मल्टीप्लेक्स, जो स्वतंत्र फिल्मों को जगह देते थे, अभी दूर की बात थे। जैसा कि कई लोगों ने कहा है, निर्माता के रूप में शशि अपने समय से आगे थे।

## विजेता (1982)

1960 के दशक की शुरुआत में जब शशि कपूर को उनकी पहली बड़ी सफलता मिल रही थी, तब गोविंद निहलानी की मुलाकात उनसे हुई। युवा अभिनेता 'मोहब्बत इसको कहते हैं' में मुख्य भूमिका निभा रहे थे, जबकि गोविंद फिल्म उद्योग में अपने शुरुआती काम को समझने की कोशिश कर रहे थे। गोविंद मुझे बताते हैं, 'मुझे वे दिन बहुत स्नेह से याद हैं। शशि कपूर एक युवा, उभरते हुए अभिनेता थे, जबकि मैं सिर्फ एक सहायक कैमरामैन था। लेकिन वे हमेशा मेरे साथ बहुत दयालु, मित्रवत और स्नेहपूर्ण थे, और उनका यही रवैया सभी तकनीशियनों के प्रति था।'

शूटिंग खत्म होने के बाद गोविंद और शशि का संपर्क टूट गया, लेकिन मशहूर छायाकार गोविंद की फिल्मों पर नज़र रखते रहे। आखिरकार, श्याम बेनेगल ने जब 'जुनून' और 'कलियुग' बनाई, तब उनकी ज़िंदगी फिर से टकराई और गोविंद (छायाकार के रूप में) और शशि (अभिनेता/निर्माता के रूप में) दोनों को अपनी फिल्मों में लिया। उनकी रिश्ता तब और मजबूत हुआ जब शशि ने गोविंद की समीक्षकों द्वारा सराही गई फिल्म 'आक्रोश' (जिसे 1981 में छह फिल्मफेयर पुरस्कार मिले थे) देखने के बाद उन्हें अपने गृह नगर के प्रोडक्शन 'विजेता' का निर्देशन करने के लिए कहा।

विजेता की उत्पत्ति कुछ अनोखी थी। 1980 के दशक की शुरुआत में, जब शशि अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव के लिए दिल्ली में थे, तब उनकी मुलाकात वायु सेना प्रमुख मार्शल दिलबाग सिंह से हुई, जिन्होंने भारतीय वायु सेना (आईएएफ) का जश्न मनाने और 1982 में इसकी पचासवीं वर्षगांठ को चिह्नित करने वाली एक हिंदी फिल्म में रुचि व्यक्त की। दिलबाग ने बदले में फिल्म के लिए सभी सुविधाएं प्रदान करने की पेशकश की - हैदराबाद में वायु सेना अकादमी और पुणे में वायु सेना स्टेशन और राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में बड़े हिस्से की शूटिंग की अनुमति दी। शशि निर्माता और वित्तपोषक बने रहे, लेकिन यह पहली बार था कि आईएएफ किसी हिंदी फिल्म निर्माण कंपनी के साथ सहयोग कर रहा था।

इसके अलावा, भारतीय वायु सेना एक ऐसी कहानी देखना चाहती थी जो पुरानी धारणाओं को तोड़ दे। हिंदी सिनेमा की उस पुरानी परंपरा का पालन करने के बजाय, जिसमें सेना के पायलटों को ऐसे योद्धाओं के रूप में दिखाया जाता है जो अपनी गर्भवती पत्नियों या शोक संतप्त प्रेमिकाओं को पीछे छोड़ जाते हैं, वे एक समकालीन कहानी देखना चाहते थे, एक ऐसी कहानी जो संस्था को आधुनिक चिंताओं से जुड़ा हुआ दिखाए। गोविंद कहते हैं, 'वे युवाओं को आकर्षित करने के लिए एक शिक्षित पायलट चाहते थे। वे वायु सेना की उस पारंपरिक छवि को नहीं दिखाना चाहते थे, जिसमें पति युद्ध में जाते हैं और शहीद हो जाते हैं।'

इस संक्षिप्त निर्देश के आधार पर, गोविंद ने श्याम के संवाद-लेखन सहयोगी सत्यदेव दुबे और प्रसिद्ध कवि दिलीप चित्रे के साथ मिलकर एक मौलिक कहानी तैयार की। सत्यदेव की एक सिख सज्जन और उनकी महाराष्ट्रीयन पत्नी से जान-पहचान को आधार बनाकर, टीम ने एक आकर्षक पारिवारिक परिदृश्य का निर्माण किया।

विजेता एक सख्त मिजाज, कभी अय्याश रहे सिख निहाल (शशि) की कहानी है, जिसका अपनी महाराष्ट्रीयन पत्नी नीलिमा (रेखा) और लक्ष्यहीन बेटे अंगद (कुणाल कपूर) के साथ बेहद तनावपूर्ण रिश्ता है। हताश अंगद, जो अपने बिखरे परिवार से जूझते हुए भी लगातार असफलताओं की ओर बढ़ रहा है, आखिरकार वायुसेना में शामिल होकर अपना मकसद पा लेता है। इसके बाद अंगद के परिपक्व होने की कहानी शुरू होती है—उदासी से आत्म-साक्षात्कार की ओर उसका सफर।

गोविंद ने श्याम के मार्गदर्शन में शशि को अभिनय करते देखा था, इसलिए उन्हें निर्देशित करना अपेक्षाकृत आसान साबित हुआ। गोविंद कहते हैं, 'मुझे बस दृश्य सुनाना होता था। चूंकि शशि शुरू से ही जानते थे कि हमने कुछ ऐसे किरदार बनाए हैं जिनमें कुछ अस्पष्ट पहलू हैं, इसलिए वे उन बारीकियों को बखूबी समझ पाए। एक अभिनेता के रूप में वे बहुत ही प्रतिभाशाली थे।' विजेता में शशि ने एक ऐसे पति की मार्मिक अभिनय किया है जो अपने बेटे के प्यार के कारण एक दुखी वैवाहिक जीवन को निभा रहा है। विजेता, जुनून और कलयुग के साथ, शशि को एक अभिनेता के रूप में अपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन पर दिखाया गया है; इन सभी फिल्मों में, जटिल और परेशान किरदारों को निभाते हुए भी उन्होंने अपार संयम दिखाया है।

अगर विजेता फिल्म में निहाल/शशि की सख्ती पृष्ठभूमि का काम करती है, तो फिल्म का केंद्र बिंदु अंगद है। शशि के बेटे कुणाल को कई अन्य फिल्मों में छोटी भूमिकाओं के बाद इस फिल्म से अपना पहला बड़ा ब्रेक मिला। ऐसा माना जाता है कि शशि विजेता फिल्म के जरिए अपने बेटे के करियर को लॉन्च करना चाहते थे, लेकिन गोविंद कहते हैं कि ऐसा कोई दबाव नहीं था: 'शशि ने इसे कोई शर्त नहीं बनाया था। उन्होंने इसे हम पर छोड़ दिया और सुझाव दिया कि अगर कुणाल यह भूमिका निभा सकता है, तो ठीक है।'

फिल्म निर्माण के दौरान, कुणाल ने एक अभिनेता से कहीं अधिक प्रतिभा का परिचय दिया। विजेता (जिसका नाम आज भी कुछ लंबा लगता है) फिल्म से कुणाल ने शशि की स्टीनबेक मशीन का उपयोग करके बाईस मिनट काट दिए थे, जिसमें भानुदास दिवाकर का कुशल मार्गदर्शन भी शामिल था (जिन्होंने जुनून और कलयुग का संपादन किया था और उस समय श्याम की मुंडी पर काम कर रहे थे)। कुणाल कहते हैं, 'मुझे विजेता का शुरुआती संस्करण बहुत नीरस लगा और मैंने सोचा कि इसे छोटा किया जाना चाहिए। मैंने पिताजी को फोन किया और उन्हें संपादित संस्करण दिखाया। उन्हें यह पसंद आया।' बेशक, यह सब गोविंद की जानकारी के बिना किया गया था, और जब निर्देशक को इस गुप्त संपादन सत्र के बारे में पता चला, तो वे बहुत नाराज हुए! अंत में, गोविंद को मनाने के लिए, अंतिम संस्करण में बारह मिनट वापस जोड़ दिए गए।

विजेता के फाइनेंसर शाशे को गोविंद बड़े स्नेह से याद करते हैं और उन्हें एक दुर्लभ निर्माता बताते हैं, जो निर्देशक की जरूरतों को समझते थे। गोविंद कहते हैं, 'वे समझते थे कि सिनेमा अंततः निर्देशक का माध्यम है। निर्देशकों को वही मिलना चाहिए जो वे चाहते हैं।' विजेता की शूटिंग के दौरान वित्तीय कठिनाइयों के बावजूद भी शशि का अपने निर्देशक के दृष्टिकोण को साकार करने का समर्पण स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। गोविंद कहते हैं, 'शशि बहुत अमीर निर्माता नहीं थे, इसलिए फंडिंग कहीं न कहीं से तो आनी ही थी, है ना? लेकिन उन्होंने कभी भी इस तनाव को निर्देशक या फिल्म निर्माता यूनिट तक नहीं पहुंचने दिया।'
दुर्भाग्य से, जैसा कि शशि द्वारा निर्मित अन्य फिल्मों के साथ नियमित रूप से होता आ रहा था, विजेता को भी नुकसान हुआ—40 लाख रुपये, शशि ने मधु जैन को बताया। कुणाल विजेता की असफलता पर स्पष्ट रूप से खेद व्यक्त करते हैं, खासकर अंगद के रूप में उनके दमदार अभिनय को देखते हुए। मिंट के एक लेख में, वह उदास होकर कहते हैं, 'अगर शशि इस्माइल मर्चेंट या एकता कपूर होते तो विजेता ने अच्छा मुनाफा कमाया होता। फिल्म दर्शकों के दिलों को छू गई, लेकिन इसका सही प्रचार नहीं हुआ।' यही आलोचना शशि के अगले निर्माण के लिए भी उठाई गई।

## उत्सव (1984)

शूद्रक द्वारा रचित मृच्छकटिका (जिसका अनुवाद 'मिट्टी की छोटी गाड़ी' के रूप में किया जाता है) दस अंकों का एक हास्यपूर्ण नाटक है, जो राजनीतिक उथल-पुथल की पृष्ठभूमि में वासना का गुणगान करता है। इसकी कहानी सीधी-सादी है—एक गरीब ब्राह्मण, चारुदत्त, एक धनी वेश्या, वसंतसेना के प्रेम में पड़ जाता है, जबकि राजा का बहनोई, समस्थानक, उसका पीछा करता रहता है; वात्स्यायन (कामसूत्र के लिए प्रसिद्ध) कथावाचक हैं जो घटनाओं को आपस में जोड़ते हैं, साथ ही साथ उस विषय पर विस्तार से चर्चा करते हैं जिससे वे सबसे अच्छी तरह परिचित हैं: यौन सुख। मृच्छकटिका आज भी एक प्रसिद्ध नाटक है, क्योंकि यह प्राचीन भारत में कामुकता और इच्छा जैसे विषयों को हास्य और नवीनता के साथ प्रस्तुत करता है।
कलयुग के बाद शशि कपूर के संपर्क में रहे गिरीश कर्णाद ने अभिनेता को बताया कि वे शूद्रक की क्लासिक कृति पर आधारित एक फिल्म का निर्देशन करना चाहते हैं। लगभग पचास वर्ष पूर्व, पृथ्वीराज कपूर ने इसी नाटक में मुख्य भूमिका, चारुदत्त, निभाई थी। अब, गिरीश शेखर सुमन को उत्सव नामक फिल्म में मुख्य भूमिका देना चाहते थे, जिसका निर्माण पृथ्वीराज के पुत्र शशि कपूर ने किया। यह शशि कपूर द्वारा भारत के आर्ट हाउस सिनेमा से जुड़े निर्देशकों के लिए वित्तपोषित की गई पाँच फिल्मों में से अंतिम फिल्म थी।
रेखा को खूबसूरत वसंतसेना का किरदार निभाना था और अमजद खान को वत्स्यायन के रूप में चुना गया था, वहीं शशि ने अपने दोस्त अमिताभ बच्चन को मोटे और कामुक समस्थानक के किरदार में लेने की योजना बनाई थी। हालांकि, मनमोहन देसाई की फिल्म 'कुली' की शूटिंग के दौरान गंभीर रूप से घायल होने के बाद, अमिताभ के पास फिल्म से हटने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा; शशि को निर्माता की भूमिका निभाते हुए सहायक भूमिका स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ा। पहली बार—क्योंकि इस भूमिका के लिए इसकी आवश्यकता थी—शशि ने अपना वजन बढ़ाया।
अमिताभ की दुर्घटना फिल्म 'उत्सव' के निर्माण में आई दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं की एक लंबी श्रृंखला की शुरुआत थी। कर्नाटक में फिल्म का सेट चक्रवात से तबाह हो गया। फिर, शूटिंग के पहले ही दिन, रेखा के घर पर आयकर विभाग ने छापा मारा। सबसे बुरी बात यह थी कि फिल्म का बजट 1.2 करोड़ रुपये से बढ़कर 2 करोड़ रुपये हो गया।
शशि की शुरुआती वित्तीय योजनाएँ कई कारणों से विफल हो गईं। एक कारण यह था कि शशि और गिरीश, जिन्हें उत्सव से बहुत उम्मीदें थीं और उन्हें पूरा विश्वास था कि यह फिल्म कम से कम पश्चिमी देशों के आर्ट हाउस सिनेमाघरों में तो सफल होगी ही, ने हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में एक साथ शूटिंग करने का फैसला किया। अंग्रेजी में डबिंग के लिए ब्रिटिश कलाकारों को नियुक्त किया गया और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काफी पैसा खर्च किया गया।
दुर्भाग्यवश, यह पैसा वापस नहीं मिल सका, क्योंकि अंग्रेजी संस्करण कभी बड़े पर्दे पर नहीं आ सका। देव बेनेगल, जो मुंबई में कुणाल कपूर के साथ उत्सव के सेट पर समय बिताते थे और बाद में लंदन में फिल्म के पोस्ट-प्रोडक्शन चरण के दौरान अंग्रेजी संस्करण पर काम किया, कहते हैं, 'मुझे नहीं लगता कि इसमें किसी की दिलचस्पी थी।' 'उस समय, अंग्रेजी बोलने वाले भारतीय अभिनेताओं की मांग नहीं थी।' उत्सव में एक सहायक भूमिका निभाने वाले कुणाल आगे कहते हैं, 'उस समय, अंतरराष्ट्रीय बाजार में किसी को भी भारत के उस दौर में दिलचस्पी नहीं थी। यह फिल्म न तो आर्ट हाउस थी और न ही व्यावसायिक। मैंने इसे डगलस फेयरबैंक्स जैसी साहसिक फिल्म के रूप में कल्पना की थी।'
दूसरी समस्या यह थी कि खर्चों पर लगाम नहीं लगाई जा रही थी। शर्मिला टैगोर कहती हैं: 'उत्सव के निर्माण के दौरान बहुत सारा पैसा खर्च हो रहा था, जिससे एक दोस्त के तौर पर मुझे बहुत दुख हुआ। उदाहरण के लिए, शशि उन लोगों को हवाई जहाज से भेज देते थे जो ट्रेन से यात्रा करने के आदी थे।' देव आगे कहते हैं: 'इससे भी बुरा यह था कि उत्सव की टीम फिल्म को पानी की तरह बहा रही थी!' बढ़ते खर्चों का शशि पर काफी बुरा असर पड़ा, और आखिरकार उनका गिरीश से झगड़ा हो गया। देव बताते हैं, 'फिल्म स्टॉक के इस्तेमाल को लेकर क्रू के सामने ही दोनों में बहस हो गई। यही एक समय था जब मैंने शशि को दबाव में झुकते हुए देखा। क्योंकि, वैसे तो वह एक आदर्श निर्माता थे। वह कभी किसी बात के लिए मना नहीं करते थे।'

जब उत्सव का हिंदी संस्करण भारत में रिलीज़ हुआ, तो यह बुरी तरह फ़्लॉप हो गया। इसकी असफलता के कई कारण बताए गए। संजना कपूर ने उत्सव में अपने पिता की प्रशंसा करते हुए कहा, 'वह अद्भुत थे: अय्याश और भावुक', साथ ही साथ उन्होंने यह भी कहा कि कुल मिलाकर कलाकारों का अभिनय एक जैसा नहीं था। 'अलग-अलग एक्टिंग स्कूलों के इतने सारे कलाकार एक साथ चिपकाए गए थे!'
देव आगे कहते हैं कि फ़िल्म का मिज़ाज पूरी तरह गलत था। मृच्छकटिका एक हास्य नाटक है जो मंच पर लगभग हमेशा सफल होता है। लेकिन उत्सव—जो ऐतिहासिक बारीकियों, प्रोडक्शन डिज़ाइन, वेशभूषा और आभूषणों से बोझिल है—बिल्कुल भी हास्यप्रद नहीं है। देव याद करते हुए कहते हैं, 'मुझे याद है, एक बार शशि ने मुझसे कहा था, "तुम फ़िल्म निर्माताओं के साथ समस्या यह है कि तुम कॉमेडी बनाने से डरते हो, तुम्हारे पास हास्यबोध नहीं है।"' 'सच कहूँ तो, उत्सव में हास्य की कमी थी। गिरीश के निर्देशन में यह एक नीरस, सीधा-सादा नाटक बन गया जिसमें कोई चतुराई नहीं थी।'
कुणाल का कहना है कि फ़िल्म का मकसद कामुकता को दर्शाना तो है, लेकिन यह विषय की गहराई में जाने से चूक जाती है। फ़िल्म के शुरुआती दृश्यों में से एक में, वसंतसेना चारुदत्त को फंसाने के बाद निर्वस्त्र हो जाती है, लेकिन कैमरा उसके शरीर के कुछ हिस्सों पर फोकस करते हुए भी अश्लीलता से बचता है। एक अन्य दृश्य में, जब वत्स्यायन एक वेश्यालय में ताक-झांक करता है, तो दर्शकों को जो कुछ वह देखता है, उसका बस एक हल्का सा संकेत मिलता है, इससे ज्यादा कुछ नहीं। कुणाल लिखते हैं, 'मुझे लगता है कि गिरीश को फ़िल्म को और अधिक ग्लैमरस और कामुक बनाना चाहिए था। अंग्रेजी संस्करण में कुछ नग्नता थी। लेकिन हिंदी संस्करण में, अमजद खान द्वारा देखे गए कुछ दृश्यों को काट दिया गया था।'
समीक्षक सुनील सेठी ने इंडिया टुडे में अपनी समीक्षा में इस बात से सहमति जताई है कि फ़िल्म में दिखाई गई ये झिझक फ़िल्म को नुकसान पहुंचाती है—और फिर आगे कहते हैं कि उत्सव की मुख्य कमी यह है कि इसमें सामंजस्य का अभाव है।

बेहद खूबसूरत ढंग से फिल्माई गई, भव्य रूप से प्रस्तुत की गई, और सावधानीपूर्वक पुनर्निर्मित की गई, [लेकिन] दो घंटे की इस फ़िल्म में क्या घटित हो रहा है, यह कोई भी पूरी तरह से नहीं समझ पाता। [...] इसमें बहुत सारी उपकथाएं हैं, बहुत सारे पात्र हैं जो कथित तौर पर शुद्ध हिंदी में घटिया ढंग से लिखे गए संवाद बोलते हैं, बहुत सारे विषयांतर हैं [...] जिससे असल मुद्दे तक पहुँचना मुश्किल हो जाता है [...] उत्सव सेंसरशिप की परेशानी में पड़ने की उम्मीद के अलावा कुछ खास हासिल नहीं कर पाती। यह एक व्यर्थता है, एक महँगी व्यर्थता, और यह भी उसी राह पर चल पड़ती है जिस राह पर सभी नश्वर प्राणी चलते हैं। राख और धूल में मिल जाती है।

मुझे भी 'उत्सव' कभी पूरी तरह से पसंद नहीं आई। इसकी भव्यता के बावजूद, फिल्म में आंतरिक ऊर्जा की कमी महसूस हुई। यह खोखली और थोड़ी दिखावटी लगी, साथ ही संवाद भी बनावटी थे।
इन खामियों के बावजूद, उत्सव काफी सफल हो सकती थी—लेकिन शशि के निर्माणों में अब आम हो चुकी समस्या—इसका प्रभावी विपणन न होने—की वजह से ऐसा नहीं हो पाया। कुणाल कहते हैं, 'मर्चेंट-आइवरी को ही ले लीजिए—उनकी फिल्में ऐसी नहीं होती थीं कि आप हर जगह जाकर उन्हें देखना चाहें। फिर भी, वितरकों की लंबी कतार बाहर खड़ी रहती थी। वे ऑस्कर-नामांकित फिल्मों जैसे 'अ रूम विद अ व्यू' की सफलता के बाद भी अपने प्रोजेक्ट्स को प्रमोट करते थे। पिताजी प्रमोट नहीं करते थे। इस्माइल तो बहुत मेहनती थे, पिताजी नहीं।'
उत्सव में लगभग 1.5 करोड़ रुपये का नुकसान हो गया। कुणाल लिखते हैं कि यह परिवार के लिए विशेष रूप से कठिन समय था, 'उत्सव की वजह से पिताजी की आर्थिक स्थिति पूरी तरह से खराब हो गई थी। इससे हमारी तिजोरी भरने के बजाय, हम पूरी तरह से कर्ज में डूब गए।' घर चलाने के लिए कुणाल ने एक विज्ञापन एजेंसी खोली और उनके भाई करण कपूर, जो उस समय मॉडलिंग कर रहे थे, भी इसमें शामिल हो गए। उनकी कमाई ने परिवार को उस दौर से उबरने में मदद की जब वे वास्तव में आर्थिक तंगी से जूझ रहे थे।
यह एक बेहद कठिन समय था जब जेनिफर केंडल कपूर अस्वस्थ थीं और लंदन में कैंसर का इलाज करा रही थीं। शशि मधु जैन को बताती हैं, 'जेनिफर ने तब मुझसे कहा, "चलो कारोबार बंद कर देते हैं।"'
लेकिन अपने प्रोडक्शन हाउस को बंद करने के बजाय, शशि ने एक आखिरी प्रयास किया, इस बार खुद एक फ़िल्म का निर्देशन करने का—एक विशाल, बेहद खर्चीली सिनेमाई फंतासी, जो अरेबियन नाइट्स और हॉलीवुड की सुपरहीरो फिल्मों की शैली पर आधारित थी। अजूबा शशि की निर्माता के रूप में आखिरी फिल्म साबित हुई।

## Ajooba (1991)

अजूबा की कहानी तब शुरू हुई जब कुणाल कपूर उत्सव के प्रचार के लिए मॉस्को गए थे। वहां उनकी मुलाकात एक भारतीय व्यक्ति से हुई, जो उनके पिता के व्यापारिक मित्रों में से एक थे। उन्होंने जोखिम को बाँटने की उम्मीद में भारत-सोवियत सह-निर्माण का सुझाव दिया। यह विचार शशि कपूर को पसंद आया, जो पहले भी कई बार असफल हो चुके थे। उन्होंने सोवियत सह-निर्देशक गेन्नादी वासिलयेव के साथ फ़िल्म का निर्देशन करने और सोवियत वित्तपोषकों की मदद से इसका निर्माण करने का फैसला किया। सोवियत संबंध को देखते हुए, यह भी तय किया गया कि फिल्म की अधिकांश शूटिंग सोवियत संघ में ही की जाएगी,

जिसमें काला सागर के किनारे स्थित याल्टा शहर भी शामिल है, जहां स्थानीय कलाकार अतिरिक्त भूमिकाओं में नजर आएंगे।
परिणामस्वरूप बनी फिल्म 'अजूबा', एक नकाबपोश ज़ोरो जैसे नायक की कहानी बयां करती है—जो 'बहारिस्तान' राज्य के लोगों का रक्षक और दुष्ट, शैतान की पूजा करने वाले वज़ीर का नाश करता है। इस बार शशि अपने मित्र और सुपरस्टार अमिताभ बच्चन को मुख्य भूमिका निभाने के लिए मनाने में कामयाब रहे। डिंपल कपाड़िया, ऋषि कपूर, अमरीश पुरी और शम्मी कपूर सहायक कलाकारों का हिस्सा बने।
कलाकारों के साइन होने के बाद, शूटिंग ज़ोर-शोर से शुरू हो गई। ऋषि कहते हैं, 'शशि अंकल हाथ में छड़ी लेकर निर्देशन करते थे। मजे के लिए।' अमिताभ भी इस किस्से की पुष्टि करते हैं: 'सेट पर छड़ी ले जाने की कहानी बिल्कुल सही है। इसका इस्तेमाल अनुशासन और व्यवस्था बनाए रखने के लिए किया जाता था—यह किसी और चीज़ से ज़्यादा एक दोस्ताना उपकरण था।' अमिताभ आगे बताते हैं कि शशि का छड़ी लेकर निर्देशन करने का यह कारनामा सिर्फ़ मुंबई में फ़िल्म की शूटिंग के दौरान ही चला। 'उन्होंने रूस में छड़ी खो दी। भगवान का शुक्र है!'
शुरुआत में तो सब कुछ अच्छा चल रहा था, लेकिन अजूबा गंभीर मुश्किलों में फंस गई। कुणाल का दावा है कि आर्थिक संकट के संकेत हर समय मौजूद थे। सोवियत संघ की कुछ रेकी यात्राओं के दौरान उन्होंने महसूस किया कि खर्च खतरनाक रूप से बढ़ता जा रहा था। कुणाल कहते हैं, 'मैंने पिताजी से डबू (रणधीर कपूर) से मिलने की ज़िद की। डबू और रणधीर कपूर बहुत करीबी दोस्त हैं और डबू बेबाक और निष्पक्ष व्यक्ति हैं। जब मैंने पिताजी को बताया कि हमारा बजट पहले ही ज़्यादा हो चुका है और हमें फिल्म रद्द कर देनी चाहिए, तो डबू मुझसे सहमत हो गए। लेकिन पिताजी ने साफ मना कर दिया। और उन्होंने अजूबा फिल्म बनाने का फैसला किया।'
कुणाल को जहां एक ओर आर्थिक संकट का आभास हो रहा था, वहीं संजना कपूर ने शुरुआत में ही देख लिया था कि फिल्म ठीक से बन नहीं रही है। 'मैं शूटिंग के लिए रूस गई थी—यह एक परंपरा थी कि हम एक्स्ट्रा कलाकार के तौर पर काम करते थे। मुझे याद है पापा ने मुझे एक दृश्य के बारे में बताया था जिसमें चिंटू (उनका चचेरा भाई, ऋषि) गधे की पीठ पर बैठा था। जिस तरह से उन्होंने बताया था, वह बहुत सुंदर था। लेकिन जब मैंने उसे देखा, तो वह रोशनी से बचने के लिए दोपहर के समय का एक लंबा शॉट था। वह भयानक था,' वह हंसती हैं। 'सच में, यह बहुत ही बुरा था। पापा, वह निर्देशक नहीं हैं।'
इससे भी बुरी बात यह हुई कि आने वाले दिनों में निर्माण कार्य में जो कुछ भी गड़बड़ हो सकता था, वह सब हो गया। शूटिंग के अंत में, जब सोवियत संघ और उसकी अर्थव्यवस्था चरमराने लगी, तो फ़ाइनेंसरों ने हाथ खींच लिया। अभी भी कुछ हफ्तों की शूटिंग बाकी थी, और स्पेशल इफेक्ट्स के कई हिस्से अभी भी लंबित थे। फिल्म को पूरा करने के प्रयास में, शशि को सारा खर्च अपनी जेब से उठाना पड़ा।
अजूबा उतनी सफल नहीं रही जितनी शशि ने उम्मीद की थी। यह फिल्म भारतीय बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप हुई और शशि को लगभग 3.5 करोड़ रुपये का भारी नुकसान उठाना पड़ा। अगर किसी ने कुछ मुआवज़ा हासिल किया तो वो अमिताभ बच्चन थे, जिन्होंने दिल्ली और उत्तर प्रदेश के लिए वितरण अधिकार हासिल किए और दर्शकों को आकर्षित करने में कामयाब रहे।
आलोचकों ने अजूबा की जमकर आलोचना की— इसके घटिया स्पेशल इफेक्ट्स, खराब अभिनय और कथानक में कई विसंगतियों के लिए इसकी निंदा की। फिल्म से जुड़े लोग भी इसका बचाव करने से कतरा गए। ऋषि, जो अपनी बात कहने में कभी संकोच नहीं करते, कहते हैं: 'अजूबा बिल्कुल बकवास थी!' संजना आगे कहती हैं: 'पिताजी ने अजूबा का निर्देशन करने और सभी सितारों के साथ पैसा कमाने का फैसला किया। लेकिन इससे पता चलता है कि सिर्फ स्टार्स होने से फिल्म अच्छी नहीं बन जाती। फिल्म का अच्छा होना जरूरी है।' मिंट में अपने लेख में कुणाल ने अंतिम बात कही: 'अजूबा न तो अच्छी फिल्म थी और न ही है। हमने पिताजी को इसके बाद कोई और फिल्म नहीं बनाने दी।'
जब मैंने अजूबा को रिलीज़ के समय देखा था, तब यह बताना मुश्किल था कि यह बच्चों की काल्पनिक कहानी है या वयस्कों के लिए एक एक्शन एडवेंचर ड्रामा। अब, यह फिल्म बेहद पुरानी और लगभग शर्मनाक लगती है। फिर भी, समय के साथ अजूबा ने एक कल्ट फिल्म का दर्जा हासिल कर लिया है। कुछ प्रशंसक इसे इतना बुरा मानते हैं कि यह अच्छी लगती है—मधु जैन भी उनमें से एक हैं, जब वह अपनी समीक्षा में लिखती हैं:

[अजूबा] आपको थोड़ा रोमांचित कर देती है। लेकिन एक बार जब आप अविश्वास को किनारे रखकर इस पर विश्वास करने लगते हैं, तो यह बच्चों और उनके भीतर छिपे बच्चे को भी पसंद आनी चाहिए। शशि अपने निर्देशन की पहली फिल्म में बड़े भाई राज की विरासत को हथियाने की कोशिश नहीं कर रहे हैं—'मैं कभी उनकी जगह नहीं ले सकता। वह एक महान फिल्मकार थे।' लेकिन एक शोमैन की झलक ज़रूर दिखती है। सोवियत संघ से जुड़ाव। मनोरंजन में विश्वास। 'मेरी सारी रुचि आपके मनोरंजन के लिए है,' वे कवि के शब्दों को उद्धृत करते हुए कहते हैं। [...] अधिकांश आलोचकों ने अजूबा पर सवाल उठाए हैं। लेकिन तर्क को एक तरफ रख दें, यह एक अच्छा मनोरंजक मनोरंजन है।

*

अक्सर यह सवाल उठता है कि क्या शशि कपूर एक अच्छे निर्माता थे। कुछ लोग—खासकर वे निर्देशक जिन्हें उन्होंने काम पर रखा था—उनकी उदारता की अंतहीन चर्चा करते हैं। मधु जैन, जो न केवल एक

आलोचक और पत्रकार हैं, बल्कि शशि का मित्र भी हैं, इन्हीं भावनाओं को दोहराते हैं: 'मुझे लगता है कि शशि एक सच्चे कलाकार थे क्योंकि वे हर काम दिल से करते थे। बॉबी के लिए, उन्होंने एक बड़ी पार्टी दी, हर तकनीशियन को रेडियो दिए और फिर सेट पर सभी का ख्याल रखा, न केवल सितारों का। शशि अपने पिता की तरह थे—आप देखिए, दोनों को बचपन में बचा हुआ खाना मिलता था।'
शशि के बच्चों को भी अपने पिता की उदारता की यादें हैं। कुणाल कपूर को 'जब जब फूल खिले' के लिए उनके पिता द्वारा दी जाने वाली भव्य पार्टियां याद हैं, वहीं संजना कपूर को सिंगापुर के मशहूर पांच सितारा होटल रैफल्स होटल में अपने पिता के साथ घूमने की याद आती है, जब उन्होंने अपनी शुरुआती ब्रिटिश फिल्मों में से एक, 'प्रीटी पॉली' की शूटिंग पूरी की थी। 'प्रीटी पॉली के समय, उनके पिता का करियर मंदी के दौर से गुजर रहा था। फिर भी, उन्होंने हमेशा की तरह इस शानदार होटल में क्रू के लिए एक भव्य पार्टी दी।'
शर्मिला टैगोर ने इस बात पर और जोर दिया है कि शशि की दयालुता कभी कम नहीं हुई, यहां तक कि जब वे आर्थिक संकट से जूझ रहे थे तब भी। वे कहती हैं, 'वे इतने उदार और इतने अच्छे थे। यहां तक कि जब वे अंततः दिवालिया हो गए, तब भी उन्होंने हर व्यक्ति को उसकी मूल राशि लौटा दी।'
स्वाभाविक रूप से, शशि कपूर अपनी उदारता के कारण अभिनेताओं, फिल्म क्रू और निर्देशकों के चहेते थे। संजना कहती हैं: 'मुझे याद है सुप्रिया पाठक ने मुझसे कहा था, "ओह, शशि कपूर सबसे अच्छे निर्माता थे क्योंकि उन्होंने हम सभी को लखनऊ ले जाकर 'जुनून' की शूटिंग के दौरान क्लार्क्स अवध होटल में ठहराया था। उन्होंने कहा था कि हम जो चाहें ऑर्डर कर सकते हैं। इसलिए हम नाश्ते, दोपहर के भोजन और रात के खाने में वनीला आइसक्रीम के साथ हॉट चॉकलेट सॉस खाते थे।" उन्होंने मुझे यही बताया था।'
फिर भी, शशि की उदारता हमेशा फायदेमंद नहीं रही, और उनके बच्चे इस बारे में खुलकर बात करते हैं। संजना कहती हैं: 'बात यह है कि पापा हद से ज्यादा खर्चीले थे, जो मूर्खतापूर्ण लगता था। क्योंकि उन्होंने "दूसरी तरफ" का जीवन देखा था, इसलिए वे निर्देशकों को उनकी हर मांग पूरी कर देते थे, जितना वे दे सकते थे। और यह हमेशा समझदारी भरा नहीं होता था। निर्देशकों को भी नियंत्रित करने की जरूरत होती है। लेकिन पापा इसमें बिल्कुल नाकाम थे। वे लगभग हर चीज पर बहुत पैसा खर्च करते थे।'
जो तस्वीर उभर कर सामने आती है, वह काफी जटिल है—शशि निःसंदेह निर्देशक/अभिनेता के निर्माता थे। लेकिन इससे वे एक अच्छे निर्माता नहीं बन गए। उनके बेटे कुणाल भी इस बात से सहमत हैं: 'मेरे पिता एक बुरे व्यवसायी थे। जुनून जैसी फिल्म में भी, जहाँ उन्हें मुनाफा कमाना चाहिए था—यह उनकी अपनी कंपनी थी—उन्होंने नाममात्र का ही मुनाफा कमाया।' एक अन्य लेख में, वे और भी तीखे शब्दों में लिखते हैं, 'मेरे पिता दुनिया के सबसे बुरे निर्माता थे! वे कभी ना नहीं कहते थे [...] वे पैसे के लिए यह काम नहीं करते थे। उन्हें तो यह भी नहीं पता होता था कि उनकी जेब में कितना पैसा है।'
फिर भी, निश्चित रूप से, इसी वजह से शशि एक असाधारण फाइनेंसर थे—एक ऐसे व्यक्ति जिन्होंने अपने आदर्शों पर अडिग रहते हुए भी, फिल्म निर्माण के व्यवसाय से जुड़े होने के बावजूद, अपने प्रिय सिनेमा को समर्थन देने का जोखिम उठाया। देव बेनेगल मुझे बताते हैं कि शशि एकमात्र ऐसे निर्माता थे जो भारत में नई, आर्ट-हाउस फिल्मों को वित्तपोषित करने के लिए अपने स्वयं के पैसे या उधार लिए गए पैसे का उपयोग कर रहे थे। अन्य, जो 1970 और 1980 के दशक में भारत के नए दौर के समानांतर सिनेमा आंदोलन का हिस्सा थे, उन्हें सरकारी स्वामित्व वाली एफएफसी (बाद में एनएफडीसी के नाम से जानी गई) द्वारा वित्तपोषित किया गया था। देव कहते हैं, 'शशि द्वारा निर्मित फिल्में उनके जुनून से प्रेरित परियोजनाएं थीं—वे ऐसे निर्देशकों को लेते थे जो व्यावसायिक नहीं थे और उनकी फिल्मों को बनाने के लिए उन्हें वित्तपोषित करते थे।' 'यह उस दौर से पहले का है जब द वेनस्टीन कंपनी या सोनी पिक्चर्स क्लासिक्स आज काम कर रही हैं या डेविड पुटनाम इंग्लैंड में प्रयास कर रहे थे।'
फिर भी, गोविंद निहलानी मुझे बताते हैं कि फिल्म निर्माण के प्रति यही बचकाना उत्साह शशि जी की विवेकपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता में बाधा बनता था: 'वे फिल्मों के निर्माण की कला या रचनात्मक पहलू में इतना खो जाते थे कि समय के साथ लोग कहने लगे, "शशिजी बड़े दिलवाले हैं, बहुत अलग तरह की फिल्में बनाते हैं।" लेकिन फिर वे कहते, उन्हें फाइनेंसरों के साथ किए जाने वाले सौदों के बारे में सावधान रहना चाहिए। मैं ऐसी बातें सुनता था, "शशिजी व्यापार में ज्यादा ध्यान देते तो और भी अच्छा होता।" यह कहने का एक विनम्र तरीका था कि लोग उनकी अच्छाई का फायदा उठा रहे थे।'
देव इस आकलन से सहमत हैं: 'शशि ने लोगों को काम पर रखा, उन पर भरोसा किया, खूब पैसा लुटाया और उन्हें पूरी छूट दे दी। उनके पास खुली छूट थी और वे जो चाहें कर सकते थे। कई मायनों में, मुझे लगता है कि उन्होंने उस भरोसे को तोड़ा।' शर्मिला भी इस बात पर टिप्पणी करती हैं: 'शशि ने सबके साथ समान व्यवहार किया और पेशेवर रवैया अपनाया, लेकिन ज़ाहिर है, भारत में किसी ने इसकी सराहना नहीं की।'
शशि को इस तरह की निराशाओं को समझने में थोड़ा समय लगा। अनिल धारकर कहते हैं, 'मुझे याद है एक दिन शशि ने मुझे एक निर्देशक के बारे में बताया—मैं उनका नाम नहीं लूंगा, लेकिन वह उस फिल्म का हिस्सा थे जिसे शशि ने प्रोड्यूस किया था। उन्होंने कहा, "जब एफएफसी के लिए फिल्में बनाते हैं, तो निर्देशक कम बजट में काम करते हैं। लेकिन अब शशि कपूर निर्माता बन गए हैं, वे अचानक पैसे खर्च करने में कंजूसी नहीं करते और खर्चों पर उनका कोई नियंत्रण नहीं रहता!" यह कड़वाहट का एक दुर्लभ प्रदर्शन था।'
अन्य कई लोगों की तरह, जो शशि को एक इंसान के रूप में पसंद करते हैं, अनिल का मानना है कि फिल्म व्यवसायी के रूप में शशि असफल रहे—'उनका दिल बहुत बड़ा था और उनके इरादे नेक थे। लेकिन उनकी उदारता ने एक निर्माता के रूप में बजट पर पालन किए जाने वाले अनुशासन को पीछे छोड़ दिया।'

यह सवाल मन में उठता ही है: अगर शशि एक ज़्यादा सतर्क निर्माता होते, तो क्या उनकी फिल्मों का भविष्य अलग होता? क्या वे बॉक्स ऑफिस पर सफल होतीं? शायद नहीं—क्योंकि उनकी हर फिल्म एक नया प्रयोग थी। लेकिन कम से कम वे बुरी तरह फ्लॉप तो नहीं होतीं। हालांकि, अनिल अब भी आशावादी हैं: 'अगर शशि की फिल्में सीमित बजट में बनी होतीं, तो मुझे लगता है कि वे मुनाफा कमातीं!'
आज तो सब कुछ अनुमान ही है।

नोट्स

[1]. मधु जैन द्वारा लिखित पुस्तक 'द कपूर्स: द फर्स्ट फैमिली ऑफ इंडियन सिनेमा' (नई दिल्ली: पेंगुइन, 2005), पृष्ठ 247 में उद्धृत।

[2]. 1970, बॉम्बे टॉकी, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत: शशि कपूर, जेनिफर केंडल, जिया मोहियुद्दीन।

[3]. 1969, *एक हजार और एक रातें*, एडुची यामामोटो द्वारा निर्देशित, ओसामु तेजुका द्वारा निर्मित, जिसमें यूकिओ आओशिमा, क्योको किशिदा और हिरोशी अकुतागावा ने (आवाज के रूप में) अभिनय किया।

[4]. 1973, बॉबी, निर्देशक राज कपूर, निर्माता राज कपूर, अभिनीत ऋषि कपूर, डिंपल कपाडिया, प्रेम नाथ।

[5]. 1978, Satyam Shivam Sundaram, dir. Raj Kapoor, prod. Raj Kapoor, starring Shashi Kapoor, Zeenat Aman, Padmini Kolhapure.

[6]. 1970, Mera Naam Joker, dir. Raj Kapoor, prod. Raj Kapoor, starring Raj Kapoor, Simi Garewal, Manoj Kumar.

[7]. 1978, Junoon, dir. Shyam Benegal, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Shabana Azmi, Jennifer Kendal.

[8]. 1974, Ankur, dir. Shyam Benegal, prod. Mohan J. Bijlani, Freni Variava, starring Shabana Azmi, Anant Nag, Sadhu Meher.

[9]. 1975, Nishant, dir. Shyam Benegal, prod. Mohan J. Bijlani, Freni Variava, starring Shabana Azmi, Naseeruddin Shah, Girish Karnad.

[10]. 1976, Manthan, dir. Shyam Benegal, prod. Gujarat Co-operative Milk Marketing Federation Ltd and Sahyadri Films, starring Smita Patil, Girish Karnad, Naseeruddin Shah.

[11]. 1977, Bhumika, dir. Shyam Benegal, prod. Lalit M. Bijlani, Freni Variava, starring Smita Patil, Amol Palekar, Anant Nag.

[12]. रस्किन बॉन्ड, ए फ्लाइट ऑफ पिजन्स (नई दिल्ली: पेंगुइन, 2007)।

[13]. मधु जैन, द कपूर: द फर्स्ट फैमिली ऑफ इंडियन सिनेमा (नई दिल्ली: पेंगुइन, 2005), पृ. 247.

[14]. जेफ्री केंडल, द शेक्सपियर वॉलह: एक आत्मकथा (लंदन: सिडगविक एंड जैक्सन, 1986), पृ. 174.

[15]. Sangeeta Datta, Shyam Benegal (London: British Film Institute, 2002), p. 120.

[16]. 1981, Kalyug, dir. Shyam Benegal, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Rekha, Raj Babbar.

[17]. 2001, ज़ुबैदा, दिर. श्याम बेनेगल, प्रो. फ़ारूक़ रट्टोंसे, करिश्मा कपूर, रेखा, मनोज बाजपेयी अभिनीत।

[18]. प्रियंका दासगुप्ता द्वारा लिखित, 'Why B'wood Didn't Cast Soumitra Chatterjee', द टाइम्स ऑफ इंडिया, 23 मार्च 2012 में उद्धृत।

[19]. वही। [20]. Sangeeta Datta, Shyam Benegal (London: British Film Institute, 2002), pp. 128–29.

[21]. मधु जैन, द कपूर: द फर्स्ट फैमिली ऑफ इंडियन सिनेमा (नई दिल्ली: पेंगुइन, 2005), पृ. 248.

[22]. 1961, 'समाप्ति', तीन कन्या, दिर. सत्यजीत रे, प्रो. सत्यजीत रे, सौमित्र चटर्जी, अपर्णा सेन, सीता मुखर्जी अभिनीत।

[23]. 'सेन इन द सिटी', द हिंदू, 5 जुलाई 2004 में उद्धृत।

[24]. 1970, बॉम्बे टॉकी, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत: शशि कपूर, जेनिफर केंडल, जिया मोहियुद्दीन।

[25]. 1977, Immaan Dharam, dir. Desh Mukherjee, prod. Premji, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Sanjeev Kumar, Rekha.

[26]. कुणाल कपूर, 'शशि कपूर', मिंट, 4 मई 2013।

[27]. 1981, 36 चौरंगी लेन, दिर। अपर्णा सेन, प्रो. शशि कपूर, जेनिफर केंडल, देबाश्री रॉय, धृतिमान चटर्जी अभिनीत।

[28]. 1982, गांधी, निर्देशक: रिचर्ड एटनबरो, निर्माता: रिचर्ड एटनबरो, अभिनीत: बेन किंग्सले, रोहिणी हट्टंगडी, रोशन सेठ।

[29]. 1974, साक्षी, दिर. राज मार्ब्रोस, अभिनीत शशि कपूर, राखी, उत्पल दत्त।

[30]. सुभाष के. झा, 'अशोक मेहता की मृत्यु से अपर्णा सेन स्तब्ध', द टाइम्स ऑफ इंडिया, 27 अगस्त 2012।

[31]. जेफ्री केंडल, द शेक्सपियर वॉलह: एक आत्मकथा (लंदन: सिडगविक एंड जैक्सन, 1986), पृ. 169.

[32]. 1965, शेक्सपियर वाला, निर्देशक जेम्स आइवरी, निर्माता इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत शशि कपूर, फेलिसिटी केंडल, मधुर जाफरी।

[33]. 1959, अपुर संसार, दिर. सत्यजीत रे, प्रो. सत्यजीत रे, सौमित्र चटर्जी, शर्मिला टैगोर, आलोक चक्रवर्ती अभिनीत।

[34]. विलियम शेक्सपियर, ट्वेल्थ नाईट (लंदन: वर्डसवर्थ, 1995)।

[35]. 1982, मिसिंग, निर्देशक: कोस्टा-गावरास, निर्माता: एडवर्ड लुईस, मिल्ड्रेड लुईस, पीटर गुबर, जॉन पीटर्स, अभिनीत: जैक लेमन, सिसी स्पेसक, मेलानी मेयरोन।

[36]. 1981, रेड्स, निर्देशक: वॉरेन बीट्टी, निर्माता: वॉरेन बीट्टी, कलाकार: वॉरेन बीट्टी, डायने कीटन, एडवर्ड हरमन।

[37]. 1981, ऑन गोल्डन पॉन्ड, निर्देशक: मार्क राइडेल, निर्माता: ब्रूस गिल्बर्ट, अभिनीत: कैथरीन हेपबर्न, हेनरी फोंडा, जेन फोंडा।

[38]. सुरेंद्र भाटिया द्वारा उद्धृत, 'जेनिफर कपूर कपूर खानदान में होने के बारे में बात करने के लिए हमारे अभिलेखागार से वापस आ गई हैं', सोसाइटी, 7 जून 2013।

1981, द फ्रेंच लेफ्टिनेंट्स वुमन, निर्देशक: कारेल रीज़, निर्माता: लियोन क्लोर, अभिनीत: मेरिल स्ट्रीप, जेरेमी आयरन्स, डेविड वार्नर।[39]

1981, लोला, दिर. रेनर वर्नर फासबिंदर, उत्पाद। वुल्फ-डिट्रिच ब्रुकर, होर्स्ट वेंडलैंड, अभिनीत बारबरा सुकोवा, आर्मिन म्यूएलर-स्टाहल, मारियो एडॉर्फ।[40]

1981, द वुमन नेक्स्ट डोर, दिर। फ़्राँस्वा ट्रूफ़ोट, उत्पाद। फ़्राँस्वा ट्रूफ़ोट, अभिनीत फैनी अर्दंत, जेरार्ड डेपार्डियू, हेनरी गार्सिन।[41]

जेफ्री केंडल, द शेक्सपियर वॉलह: एक आत्मकथा (लंदन: सिडगविक एंड जैक्सन, 1986), पृ. 169.[42]

'शशि कपूर के लिए एक नई भूमिका', द हिंदू, 11 दिसंबर 2004 में उद्धृत।[43]

मधु जैन द्वारा लिखित पुस्तक 'द कपूर्स: द फर्स्ट फैमिली ऑफ इंडियन सिनेमा' (नई दिल्ली: पेंगुइन, 2005), पृष्ठ 248 में उद्धृत।[44]

1965, Mohabbat Isko Kahete Hain, dir. Akhtar Mirza, starring Nanda, Shashi Kapoor, Ramesh Deo.[45]

1982, Vijeta, dir. Govind Nihalani, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Rekha, Kunal Kapoor.[46]

1980, Aakrosh, dir. Govind Nihalani, prod. Devi Dutt, Narayan Kenny, starring Naseeruddin Shah, Smita Patil, Om Puri.[47]

1983, मंडी, दिर. श्याम बेनेगल, प्रो. ललित एम. बिजलानी, फ्रेनी वरियावा, अभिनीत शबाना आज़मी, स्मिता पाटिल, नसीरुद्दीन शाह।[48]

मधु जैन, द कपूर: द फर्स्ट फैमिली ऑफ इंडियन सिनेमा (नई दिल्ली: पेंगुइन, 2005), पृ. 248.[49]

कुणाल कपूर, 'शशि कपूर', मिंट, 4 मई 2013।[50]

सुद्रक, मृच्छकटिका, आर्थर लेवेलिन बाशम, अरविंद शर्मा द्वारा अनुवादित (न्यूयॉर्क: स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क प्रेस, 1994)।[51]

Vatsyayana, Kamasutra, translated by Richard Burton (New York: Dover, 2006).[52]

1984, Utsav, dir. Girish Karnad, prod. Shashi Kapoor, starring Shekhar Suman, Rekha, Shashi Kapoor.[53]

1983, Coolie, dir. Manmohan Desai, prod. Ketan Desai, starring Amitabh Bachchan, Rishi Kapoor, Rati Agnihotri.[54]

कुणाल कपूर, 'शशि कपूर', मिंट, 4 मई 2013।[55] [56] वही।

सुनील सेठी, 'द वे ऑफ ऑल फ्लेश', इंडिया टुडे, 15 मई 1984।[57]

1985, ए रूम विद ए व्यू, निर्देशक जेम्स आइवरी, निर्माता इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत मैगी स्मिथ, हेलेना बोनहम कार्टर, डेनहोम इलियट।[58]

[59]

कुणाल कपूर, 'शाशे कपूर', मिंट, 4 मई 2013।

[60] मधु जैन, द कपूर: द फर्स्ट फैमिली ऑफ इंडियन सिनेमा (नई दिल्ली: पेंगुइन, 2005), पृ. 248.

[61] अरेबियन नाइट्स, हुसैन हद्दावी द्वारा अनुवादित, संपादक मुहसिन महदी (न्यूयॉर्क: नॉर्टन, 1990)।

[62] 1991, Ajooba, dir. Shashi Kapoor, prod. Shashi Kapoor, starring Amitabh Bachchan, Rishi Kapoor, Dimple Kapadia.

[63] कुणाल कपूर, 'शशि कपूर', मिंट, 4 मई 2013। [64] मधु जैन, 'शानदार भोजन', इंडिया टुडे, 15 मई 1991।

[65] 1973, बॉबी, निर्देशक राज कपूर, निर्माता राज कपूर, अभिनीत ऋषि कपूर, डिंपल कपाडिया, प्रेम नाथ।

[66] 1965, Jab Jab Phool Khile, dir. Suraj Prakash, prod. Chetan K., starring Shashi Kapoor, Nanda, Agha.

[67] 1967, प्रीटी पॉली, निर्देशक: गाय ग्रीन, निर्माता: जॉर्ज डब्ल्यू जॉर्ज, फ्रैंक ग्रैनट, अभिनीत: हेले मिल्स, शशि कपूर, ट्रेवर हॉवर्ड।

[68] कुणाल कपूर, 'शशि कपूर', मिंट, 4 मई 2013।

# 6
# बाद के दौर की फिल्में
# शशि, 1980 का दशक और उसके बाद

1980 के दशक की शुरुआत में, रमेश शर्मा—एक युवा निर्देशक, जिन्होंने तिब्बती बौद्ध धर्म पर बनी लघु वृत्तचित्र फिल्म 'रुमटेक' के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार (सर्वश्रेष्ठ सूचनात्मक फिल्म, 1978) जीता था—एक कथात्मक फीचर फिल्म के साथ कुछ नया करना चाहते थे। पत्रकारिता की पृष्ठभूमि से आने के कारण, उन्होंने आपातकाल के बाद अरुण शौरी और एम.जे. अकबर जैसे पत्रकारों द्वारा की जा रही खोजी पत्रकारिता से प्रेरित एक कहानी पर विचार किया। वे मुझे बताते हैं, 'सत्ता-विरोधी भावना प्रबल थी। लोगों का मानना था कि सरकार कुछ छिपाने की कोशिश कर रही है।' इसलिए, रमेश ने पटकथा लिखना शुरू किया और फिर, अप्रत्याशित रूप से, एक सामान्य मित्र के माध्यम से उनकी मुलाकात महान कवि गुलज़ार से हुई। रमेश कहते हैं, 'गुलज़ार को मेरी कहानी की रूपरेखा बहुत पसंद आई और वे बहुत कम पैसों में पटकथा लेखक बनने के लिए तैयार हो गए।'

संयोगवश ही रमेश की मुलाकात दिल्ली हवाई अड्डे पर अपने एक धनी कॉलेज मित्र से हुई, जिसने संक्षिप्त बातचीत के बाद निर्देशक की 25 लाख रुपये की छोटी इंडी फिल्म में निवेश करने पर सहमति जताई। लेकिन मित्र की एक शर्त थी। वह मुख्य भूमिका के लिए एक बड़े व्यावसायिक अभिनेता को लेना चाहता था। इससे रमेश के सामने एक समस्या खड़ी हो गई, जो ओम पुरी या नसीरुद्दीन शाह जैसे विशिष्ट अभिनेताओं को लेने की योजना बना रहे थे—ये दोनों ही कलाकार आर्ट हाउस और न्यू वेव सिनेमा जगत में अपने करियर के शिखर पर थे। रमेश ने अपने मित्र और कैमरामैन सुब्रता मित्रा (दोनों ने 'रमटेक' में साथ काम किया था) से इस बारे में बात की, जिन्होंने युवा फिल्म निर्माता को रहस्यमय तरीके से बताया कि एक प्रतिभाशाली स्टार है जो मुख्य भूमिका निभा सकता है। एक दिन बाद, सुब्रता ने उस अभिनेता का नाम बताया जिस पर वे विचार कर रहे थे—शशि कपूर।

सुब्रता ने शशि कपूर के साथ मर्चेंट-आइवरी की कुछ फिल्मों में काम किया था, इसलिए छायाकार को अभिनेता की छोटी, यथार्थवादी फिल्मों के प्रति प्रतिबद्धता का पता था; उन्हें यह भी पता था कि शशि कपूर जटिल किरदारों को बखूबी निभा सकते हैं। रमेश याद करते हुए बताते हैं, 'तब सुब्रता ने कहा, "अब शशि कपूर को मनाना तुम्हारी जिम्मेदारी है।"'

## नई दिल्ली टाइम्स (1986)

यह सन् 1983 की बात है। रमेश शर्मा एक जोखिम उठाने के लिए तैयार थे—उन्होंने शशि कपूर से संपर्क किया और उन्हें अपनी फिल्म 'न्यू दिल्ली टाइम्स' में मुख्य भूमिका निभाने के लिए राजी किया। फिल्म में एक ईमानदार अखबार संपादक विकास पांडे की कहानी दिखाई जानी थी, जो एक राजनेता की हत्या की जांच करने निकलता है। रमेश कहते हैं, 'मैं मुंबई के लिए रवाना हुआ—मैं बहुत घबराया हुआ था। यह मेरी पहली फीचर फिल्म थी; मैं युवा था, कॉलेज से अभी-अभी निकला था, और मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि मैं शशि कपूर नाम के इस "स्टार" को क्या बताऊंगा।'

चिंतित रमेश, ताज महल होटल के गोल्डन ड्रैगन रेस्तरां में शशि से डिनर पर मिले। अचानक, रमेश और शशि की बातचीत के बीच में ही, शशि अपने कुछ दोस्तों के साथ बगल की मेज पर बैठे हिंदी फिल्म अभिनेता जीतेंद्र के पास गए। रमेश बताते हैं, 'शशि ने मुझे अपनी अगली फिल्म के निर्देशक के रूप में मिलवाया। मैं दंग रह गया क्योंकि मैंने अभी-अभी कहानी सुनाना शुरू ही किया था! लेकिन फिर, मैं खुश भी था।'

अब उत्साहित रमेश ने शशि को फिल्म की बाकी कहानी बताई—पत्रकार विकास पांडे द्वारा राजनेता की हत्या की जांच के दौरान एक बड़ी राजनीतिक साजिश का पर्दाफाश करना; अपने खुलासे को दबने से

बचाने के लिए उनका संघर्ष; और बाद में राजनेताओं और मीडिया दिग्गजों के बीच के घिनौने गठजोड़ का पता लगाना। रमेश ने मुझे बताया, 'शशि को कहानी बहुत पसंद आई। सच में, शशि बहुत अच्छे इंसान थे। उन्होंने मेरे साथ एक पेशेवर और बराबरी का व्यवहार किया, मानो मैंने दर्जनों फिल्में बनाई हों।'

लेकिन फिर, अहम सवाल सामने आया। रमेश बताते हैं, 'शशि ने मुझसे फिल्म का बजट पूछा। मैंने अपनी ज़बान पर काबू रखा और धीरे से कहा, "25 लाख रुपये।" शशि ने मुझे हैरानी से देखा और आखिर में पूछा, "रमेश, क्या तुम सच कह रहे हो?" मैंने उन्हें बताया कि मेरे पास बस इतना ही है और सभी लोग लगभग बिना वेतन के काम कर रहे हैं।' शशि चुप हो गए। फिर उन्होंने युवा निर्देशक से पूछा कि उनकी जेब में कितने पैसे हैं। 'मैंने उन्हें बताया कि मेरे पास कुछ हज़ार रुपये हैं। शशि ने कहा, "मुझे एक सौ एक रुपये दो।" मैं काफी उलझन में था। फिर उन्होंने आगे कहा, "यह मेरी साइनिंग फीस है। आज जुम्मा है - एक शुभ दिन - और तुमने मुझे साइन कर लिया है।" बस इतना ही। उन्होंने स्क्रिप्ट भी नहीं पढ़ी थी।'

अब बारी थी स्टार की सैलरी पर चर्चा करने की। लेकिन इस समय तक शशि इस प्रोजेक्ट से इतने प्रभावित हो चुके थे कि उन्होंने स्वेच्छा से मात्र एक लाख रुपये में काम करने का फैसला किया—ठीक उतनी ही रकम जितनी बी.आर. चोपड़ा ने उन्हें लगभग दो दशक पहले फिल्म 'वक्त' के लिए दी थी। हालांकि, बदले में शशि ने दो शर्तें रखीं (जो बाद में मान ली गईं)। रमेश को पहली शर्त याद है: 'शशि ने कहा, "मैं आमतौर पर ऐसा नहीं करता और तुम भुगतान की शर्तें अपने तक ही रखना; किसी और निर्देशक या निर्माता को मत बताना क्योंकि वे सोचेंगे कि मैं काम के लिए बेताब हूं।"' फिर दूसरी शर्त आई। रमेश कहते हैं, 'वह दिल्ली के ताज मानसिंह होटल में रुकना चाहते थे। उन्होंने अपने खाने-पीने और फोन कॉल का खर्च खुद उठाने की पेशकश की, लेकिन होटल का स्थान तय था।' उन्होंने मुझसे कहा, "जब लोग मुझसे मिलें, तो उन्हें पता होना चाहिए कि शशि कपूर के मानदंड पूरी तरह से गिरे नहीं हैं।" बाद में, एक तीसरी शर्त की भी बात चली - कि शशि को फिल्म से 5 प्रतिशत का बैक-एंड शेयर मिलेगा।

शशि ने रमेश की फिल्म क्यों स्वीकार की? न्यूयॉर्क टाइम्स के लॉरेंस वैन गेल्डर के साथ एक साक्षात्कार में, शशि ने अपने निर्णय के पीछे के तर्क का संकेत दिया: 'मैंने बहुत कम राजनीतिक रूप से प्रेरित फिल्में की हैं,' उन्होंने कहा, और नई दिल्ली टाइम्स को खोजी पत्रकारिता की दुनिया में वाटरगेट कांड जैसी फिल्म बताया।

शशि के साथ जुड़ने के बाद, शर्मिला टैगोर को निशा की भूमिका निभाने के लिए चुना गया, जो एक सफल वकील और नायक की पत्नी है। यह भी तय किया गया कि फिल्म की शूटिंग जुलाई और अगस्त 1984 में दिल्ली में होगी। लेकिन यह योजना कई बार पटरी से उतर गई।

शुरुआत में, शशि खुद को एक भयानक व्यक्तिगत संकट के बीच फंसा हुआ पाया। एक दिन रमेश को स्टार का एक परेशान करने वाला फोन आया। उन्होंने बताया कि जेनिफर लंदन में कैंसर से जूझ रही हैं और उनकी तबीयत खराब है; वह उनका साथ नहीं छोड़ सकते। रमेश याद करते हैं, 'वह बार-बार विनती कर रहे थे कि वह फिल्म नहीं कर सकते, लेकिन मैंने उनसे कहा कि मैं उनका इंतजार करूंगा।' जेनिफर का निधन सितंबर 1984 की शुरुआत में हुआ।

इसके कुछ ही समय बाद एक राष्ट्रीय आपदा आ पड़ी। इंदिरा गांधी की हत्या कर दी गई और राजधानी सिख विरोधी दंगों की चपेट में आ गई। रमेश कहते हैं, 'दिल्ली में पूरी तरह से अफरा-तफरी मची हुई थी और हमें फिल्म की शूटिंग एक बार फिर स्थगित करनी पड़ी। लेकिन कम से कम इससे शशि को थोड़ा आराम करने का समय मिल गया। जैसा कि हमें बाद में पता चला, वह पूरी तरह से ठीक नहीं हो पाए—लेकिन फिर भी, वह लोगों से मिलने की स्थिति में थे।'

आखिरकार, जनवरी 1985 में शूटिंग शुरू हुई और लोकेशन दिल्ली से बदलकर बॉम्बे की फिल्म सिटी कर दी गई। अब पीछे मुड़कर देखने पर रमेश को लगता है कि इंतज़ार करने का उनका फैसला समझदारी भरा था, खासकर इसलिए क्योंकि इससे उन्हें शशि के साथ काम करने का मौका मिला। रमेश कहते हैं, 'वह पूरी तरह से पेशेवर थे। वह हमेशा समय पर आते थे। उनके डायलॉग तैयार रहते थे। और ज़्यादातर वह एक ही टेक में सीन खत्म कर देते थे—बहुत सहज थे। मुझे उस आदमी के साथ कोई दिक्कत नहीं थी!' फिल्म में शशि को मूंछें देने का फैसला रमेश का ही था। 'वह एक आकर्षक व्यक्ति थे और मैं नहीं चाहता था कि उनकी शक्ल-सूरत दर्शकों का ध्यान उनके किरदार से भटकाए। साथ ही, मुझे लगा कि मूंछें उन्हें बौद्धिक गंभीरता प्रदान करेंगी।'

नई दिल्ली टाइम्स एक दमदार राजनीतिक थ्रिलर साबित हुई, जिसमें किरदारों को बारीकी से गढ़ा गया था और एक ऐसी अनोखी कहानी थी जो पत्रकारिता की निष्पक्षता और मीडिया भ्रष्टाचार जैसे संवेदनशील विषयों पर प्रकाश डालती थी। लेकिन फिल्म को तमाम मुश्किलों का सामना करना पड़ा। एक व्यक्ति ने फिल्म के खिलाफ मुकदमा दायर किया, जिसे एक संवाद से आपत्ति थी जिसमें विकास/शशि, निशा/शर्मिला से कहता है कि सभी वकील झूठे होते हैं; किसी और ने फिल्म पर प्रतिबंध लगाने की कोशिश की क्योंकि इसमें एक राजनेता को सांप्रदायिक दंगे भड़काते हुए दिखाया गया था। जब नई दिल्ली टाइम्स को दूरदर्शन पर दिखाया जाना था, तो कानूनी विवादों के कारण इसे आखिरी समय में हटा दिया गया। हालात और भी बदतर हो गए जब फिल्म को बड़े पैमाने पर पायरेसी हुई; पहले हफ्ते के बाद बड़े सिंगल-स्क्रीन सिनेमाघरों को भरना मुश्किल हो गया। रमेश अफसोस जताते हुए कहते हैं, 'अगर उस समय हमारे पास आज की तरह मल्टीप्लेक्स होते, तो नई दिल्ली टाइम्स और भी लंबे समय तक चलती।'

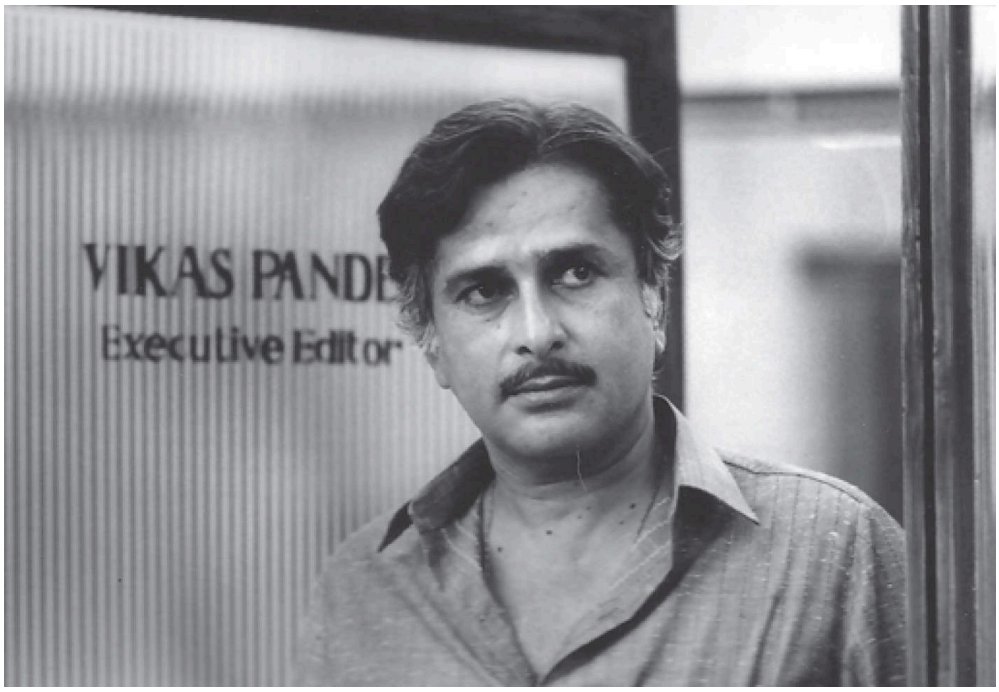


सन् 1986, नई दिल्ली टाइम्स। शशि कपूर ने एक ईमानदार पत्रकार विकास पांडे की भूमिका निभाई है। सौजन्य: रमेश शर्मा।

सन् 1986, नई दिल्ली टाइम्स। शशि कपूर, व्यस्त पत्रकार विकास पांडे के रूप में, अपने एक सहकर्मी से बात कर रहे हैं। सौजन्य: रमेश शर्मा।

1986, नई दिल्ली टाइम्स। 'यह फिल्म खोजी पत्रकारिता पर आधारित वाटरगेट कांड जैसी फिल्म है': शशि कपूर। सौजन्य: रमेश शर्मा।

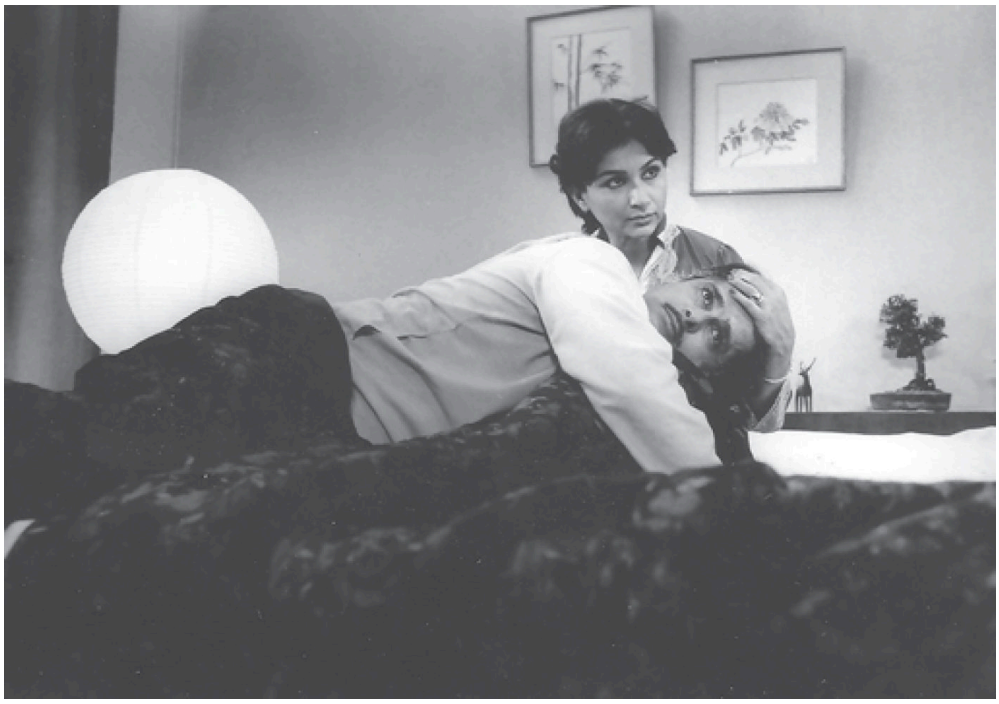

सन् 1986, नई दिल्ली टाइम्स। इस दृश्य में, शर्मिला टैगोर, जो एक पत्रकार की वकील पत्नी की भूमिका निभा रही हैं, अपने पति (शशि कपूर द्वारा अभिनीत) को सांत्वना दे रही हैं, क्योंकि जांच लगातार तनावपूर्ण होती जा रही है। सौजन्य: रमेश शर्मा।

दो बार प्रोजेक्ट टलने के कारण न्यू दिल्ली टाइम्स का बजट पहले ही बढ़ चुका था—शुरू में 25 लाख रुपये के बजाय, आखिरकार इसकी लागत 35 लाख रुपये हो गई। अब, मुकदमों और पायरेसी की चिंताओं से घिरी इस फिल्म का अस्तित्व खतरे में था। रमेश, जो शशि के संपर्क में थे, याद करते हैं कि अभिनेता कभी-कभी उनसे पूछते थे: 'कुछ आ रहा है 5 परसेंट?' (क्या मुझे 5 परसेंट मिल रहा है?) अफसोस, बांटने के लिए पैसे नहीं थे।

पिछले कुछ वर्षों में, न्यू दिल्ली टाइम्स को अधिकतर सकारात्मक समीक्षाएँ मिली हैं; आलोचक खालिद मोहम्मद कहते हैं: 'बहुत कम फिल्में मीडिया के बारे में बात करते हुए सच्चाई का कुछ अंश प्रकट कर पाई हैं। उनमें से, रमेश शर्मा की न्यू दिल्ली टाइम्स, जो राजनेताओं और मीडिया दिग्गजों के बीच सांठगांठ की पड़ताल करती है, अब तक की सबसे तीक्ष्ण फिल्म रही है।'
1986 में, न्यू दिल्ली टाइम्स को निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ पहली फ़िल्म के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार मिला, और शशि के अभिनय की व्यापक रूप से सराहना हुई, जिसके लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला—यह सम्मान उन्हें केवल एक बार ही मिला। लेकिन शशि के लिए यह बहुत कम और बहुत देर से आया था। उन्होंने पत्रकार ज्योति वेंकटेश से कहा:

काश, ये पुरस्कार मेरी पत्नी जेनिफर को उनकी जीवित रहते ही मेरी फिल्म '36 चौरंगी लेन' में उनके अभिनय के लिए दिया गया होता। सच कहूँ तो, इस समय मेरे लिए इन पुरस्कारों का कोई महत्व नहीं है, क्योंकि अब वो मेरे साथ इसे साझा करने के लिए मौजूद नहीं हैं।

## सैमी एंड रोजी गेट लेड (1987) और द डिसीवर्स (1988)

1980 के दशक के मध्य में, ब्रिटिश फिल्म निर्माता स्टीफन फ्रीयर्स - जो आज हाई फिडेलिटी, डर्टी प्रीटी थिंग्स और द क्वीन के लिए जाने जाते हैं - इस्माइल मर्चेंट के कहने पर भारत की उड़ान पर सवार हो गए।
स्टीफन और इस्माइल दोनों ही नई ऊंचाइयों पर थे। स्टीफन ने हाल ही में हनीफ कुरैशी द्वारा लिखित सनसनीखेज ब्रिटिश-एशियाई फिल्म 'माई ब्यूटीफुल लॉन्ड्रेट' का निर्देशन किया था, जो लंदन में पाकिस्तानी समुदाय के कई पहलुओं (और विशेष रूप से उसके गुप्त जीवन) को उजागर करती है, साथ ही एक युवा पाकिस्तानी लड़के और उसके श्वेत सहपाठी (जिसे युवा डैनियल डे-लुईस ने आकर्षक ढंग से निभाया था) के बीच समलैंगिक प्रेम कहानी को भी दर्शाती है। फिल्म की सफलता के साथ (हनीफ की पटकथा को ऑस्कर के लिए नामांकित किया गया था), स्टीफन फिल्म समारोहों और कला-गृह जगत में काफी लोकप्रिय हो गए थे।
इसी बीच, इस्माइल ने जॉन मास्टर्स का उपन्यास, द डिसीवर्स पढ़ा था—यह पुस्तक ब्रिटिश भारत में ठगी पंथ के विस्तार से वर्णन करती है, जिसमें ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी विलियम सेवेज की कहानी है, जो इन हिंसक गिरोहों में घुसपैठ करता है और खुद इस पंथ की अत्यधिक रक्तपात की प्रवृत्ति का अनुभव करता है—और वह इस पर एक फिल्म बनाना चाहते थे। लेकिन, न तो जेम्स आइवरी और न ही रूथ प्रॉवर झबवाला इस विचार से उत्साहित थे, और इस्माइल को अपने दायरे से बाहर देखना पड़ा। स्टीफन की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए, उन्होंने न केवल इस युवा निर्देशक को, बल्कि एक नए पटकथा लेखक, नाटककार चार्ल्स वुड को भी चुना। (परियोजना की मुख्य टीम में समय के साथ बदलाव होते रहे, और अंततः, एलिज़ाबेथ की पटकथा के लिए प्रसिद्ध माइकल हिर्स्ट पटकथा लेखक बने।)
इस तरह स्टीफन हलचल भरे भारत पहुंचे। भारत पहुंचते ही इस्माइल ने सबसे पहले उन्हें दक्षिण मुंबई स्थित शशि कपूर के अपार्टमेंट में उनसे मिलवाया। स्टीफन कहते हैं, 'मैं शशि कपूर को जानता था क्योंकि मैंने 'शेक्सपियरे वाला' फिल्म देखी थी। इसलिए मुझे पता था कि वे बेहद प्रतिभाशाली हैं। लेकिन उनसे मिलने पर ही मुझे एहसास हुआ कि वे एक बेहद परिष्कृत व्यक्ति भी हैं।'
अंततः स्टीफन ने फिल्म न बनाने का फैसला किया। निर्देशक के इस फैसले के बारे में सुनकर जेम्स कहते हैं, 'हम बहुत निराश हुए।' इस्माइल अपनी आत्मकथा में लिखते हैं कि स्टीफन को 'द डिसीवर्स' की पटकथा पसंद नहीं आई थी। लेकिन एक पर्यवेक्षक, जिसने लोकेशन की तलाश के दौरान स्टीफन और इस्माइल के साथ ट्रेन में यात्रा की थी, का मानना है कि ब्रिटिश निर्देशक को भारत में काम करने में आपत्ति थी। कारण चाहे जो भी हो, 'द डिसीवर्स' का निर्देशन अंततः निकोलस मेयर ने किया - जो 'स्टार ट्रेक II: द रैथ ऑफ खान' के लिए सबसे ज़्यादा जाने जाते हैं - और शशि ने इसमें एक सहायक भूमिका निभाई, एक भारतीय जमींदार के रूप में जो नायक विलियम सैवेज (पियर्स ब्रॉसनन) से दोस्ती करता है। फ़िल्म को मिली-जुली समीक्षाएं मिलीं, कुछ ने दावा किया कि इसने 'काफी जादू कर दिया', जबकि अन्य ने कहा कि यह 'एक साहसिक महाकाव्य है जिसमें रोमांच की भावना बहुत कम है।'
इस फिल्म ने शशि को एक और प्रशंसक दिला दिया; पियर्स ब्रॉसनन ने शशि की अंग्रेजी की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह 'हॉलीवुड के किसी भी प्रमुख अभिनेता जितनी अच्छी' थी, और उनके 'सहज' अभिनय की भी तारीफ की। फिर उन्होंने आगे कहा: 'एक दृश्य में, [शशि] ने बस मेरी तरफ देखा और मुस्कुरा दिए, मानो उन्होंने हजारों शब्द कह दिए हों, जो केवल एक उच्च कोटि का अभिनेता ही कर सकता है।'

*

जब 'द डिसीवर्स' फ़िल्म बन रही थी, उसी दौरान स्टीफन फ्रीयर्स और शशि कपूर की मुलाकात एक बार फिर हुई; इस बार दोनों ने सचमुच साथ काम किया। नतीजा यह हुआ कि हनीफ कुरैशी की पटकथा पर आधारित दूसरी फिल्म 'सैमी एंड रोजी गेट लेड' बनी।
सैमी एंड रोज़ी गेट लेड एक अपरंपरागत, बोहेमियन जोड़े के इर्द-गिर्द घूमती है, जिनका जीवन अस्त-व्यस्त होने के बावजूद बेहद स्वतंत्र है। फिर सैमी के पिता रफी रहमान अपने बेटे, बहू और एक लंबे समय से बिछड़ी प्रेमिका के साथ अपने रिश्ते को फिर से जोड़ने के लिए इंग्लैंड लौट आते हैं। रिश्ते सुधारने की

कोशिश के बावजूद, हमें पता चलता है कि रफी पाकिस्तान में एक राजनेता के रूप में अपने भ्रष्ट और क्रूर अतीत से भाग रहे हैं।
फिल्म में सैमी, रोज़ी और रफी की अहम भूमिकाएँ हैं, लेकिन लंदन शहर भी उतना ही महत्वपूर्ण किरदार है। हनीफ द्वारा परिकल्पित ब्रिटिश राजधानी का चित्रण उस दौर के अखबारों से लिया गया था। कलाकार, कार्यकर्ता, हिप्पी और स्वतंत्र विचारक जमकर मौज-मस्ती कर रहे थे, वहीं मार्गरेट थैचर के शासनकाल के चरम पर नस्लीय दंगे और वर्ग संघर्ष शहर को अपनी चपेट में ले रहे थे। फिल्म शहरी पतन के दृश्यों को बखूबी दर्शाती है—रफी ने जिन गलियों को रोमांटिक अंदाज में चित्रित किया था, उन पर अब गिरोहों का राज चलता है, और टैक्सी चालक खून से सने हेडबैंड पहने नज़र आते हैं। कई मायनों में, यह फिल्म ब्रिटिश प्रधानमंत्री को एक तीखा संदेश है, और हनीफ के निर्देशन में बनी 'सैमी एंड रोजी गेट लेड' अराजक ऊर्जा से ओतप्रोत है, उस दौर की यौन राजनीति से रंगी हुई है, और वर्ग और आप्रवासन से जुड़े सवालों से भरी हुई है।
एक ढहते शहर में रफी का आगमन हनीफ के अपने अनुभवों पर आधारित है। हनीफ बताते हैं, 'कहानी के कुछ अंश मेरे एक चाचा के अनुभवों पर आधारित हैं, जो तीस साल के अंतराल के बाद लंदन आए थे - उस समय ब्रिक्सटन और सेंट पॉल्स में थैचर विरोधी दंगे और विद्रोह चल रहे थे। लंदन आग की लपटों में घिरा था। मेरे चाचा की अंग्रेजों, बीबीसी और इस देश की सभ्यता के बारे में बहुत अच्छी राय थी। लेकिन अब, उन्हें यह जगह एक युद्धक्षेत्र जैसी लगी, जहाँ पुलिस और अश्वेत बच्चों के बीच झड़पें हो रही थीं।'

1987 में आई फिल्म 'सैमी एंड रोजी गेट लेड' में शशि कपूर ने रफी का किरदार निभाया है और क्लेयर ब्लूम ने एलिस की भूमिका निभाई है। रफी, एलिस के साथ अपने पुराने रिश्ते को फिर से संजोने के लिए लंदन जाती है।

अपने चाचा के अलावा, हनीफ यह भी मानते हैं कि रफी का किरदार जुल्फिकार अली भुट्टो पर भी आधारित हो सकता था। वे कहते हैं, 'मैं भुट्टो से नहीं मिला, इसलिए मैं उन्हें नहीं जानता। लेकिन वे मेरे परिवार से परिचित थे—मेरे पिता के बहुत पुराने दोस्त, जिनके साथ उन्होंने स्कूल में पढ़ाई की थी।' वे आगे कहते हैं, 'मेरे ज़्यादातर पुराने भारतीय या पाकिस्तानी किरदारों की तरह, रफी किसी एक व्यक्ति पर आधारित नहीं था, बल्कि मेरे कई चाचाओं और एक राजनेता के जीवन के संभावित अनुभवों का मिश्रण था।'
रफी की जटिल भूमिका निभाने के लिए, हनीफ कहते हैं कि उन्हें 'एक बेहद सभ्य, सहज और बुद्धिमान अभिनेता' की आवश्यकता थी, जो एक ऐसे पाकिस्तानी राजनेता का किरदार निभा सके जो संघर्ष के एक उन्मादी रंगमंच में प्रवेश करे और 'राजनीति, कामुकता और हद से ज़्यादा बेहूदगी से चकित हो जाए'। हनीफ के लिए, शशि आदर्श उम्मीदवार थे।
दिलचस्प बात यह है कि स्टीफन भी इसी निष्कर्ष पर पहुंचे। निर्देशक कहते हैं, 'उस समय, ऐसे बहुत कम भारतीय अभिनेता थे जो अंग्रेजी बोलते थे और इंग्लैंड में काम करने का अनुभव रखते थे। विकल्प वाकई बहुत सीमित थे। फिर अचानक एक ऐसे महान भारतीय अभिनेता का मिलना जो परिष्कृत भी थे—यह मेरे

लिए सचमुच एक सौभाग्य की बात थी। जब मैंने हनीफ की पटकथा पढ़ी, तो मुझे पता चल गया कि यह शशि के लिए ही बनी भूमिका है।'
फिर भी, जब उन्होंने मिलकर इस कास्टिंग का फैसला किया, तो हनीफ और स्टीफन को काफी डर था कि शशि यह भूमिका स्वीकार नहीं करेंगे; आखिरकार, वह एक स्टार थे और उनका करिश्माई व्यक्तित्व लोगों को डरा देती था। हनीफ ने फिल्म की शूटिंग के दौरान रखी अपनी डायरी में लिखा है कि दोनों की मुलाकात भारतीय अभिनेता शशि से 9 अगस्त 1986 को नॉटिंग हिल के '192' रेस्टोरेंट में लंच के लिए हुई, जो उस समय मशहूर हस्तियों के लिए सबसे आकर्षक जगहों में से एक था। हनीफ के अनुसार, शशि ने एक ढीला भूरा गाउन पहना था, जिसके कंधे पर गहरे लाल और चॉकलेट रंग का स्कार्फ लिपटा हुआ था [...] वह इतने शाही और गरिमामय, स्टाइलिश और अनोखे थे कि पूरे रेस्टोरेंट में सिहरन दौड़ गई।
दोनों की आशंकाओं के बावजूद, शशि—जिन्हें हनीफ 'विनम्र' बताते हैं—ने लेखक और निर्देशक से कहा कि उन्हें लगता है कि सैमी एंड रोज़ी गेट लेड की पटकथा माई ब्यूटीफुल लॉन्ड्रेट की पटकथा से बेहतर है; फिर उन्होंने कहा कि फिल्म निर्माताओं की सुविधानुसार वह रफी की भूमिका निभाने के लिए उपलब्ध रहेंगे।
हालांकि हनीफ और स्टीफन की शशि को कास्ट करने की उत्सुकता समझ में आती है, लेकिन मन में एक सवाल उठता है: आखिर उस अभिनेता ने 'माई ब्यूटीफुल लॉन्ड्रेट' बनाने वाली टीम के साथ फिल्म करने के लिए क्यों हामी भरी—खासकर तब जब, तब तक, कम से कम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, उन्होंने केवल मर्चेंट-आइवरी टीम में ही रुचि दिखाई थी (कभी-कभी 'सिद्धार्थ' और 'प्रीटी पॉली' में भी)? हनीफ अनुमान लगाते हैं: 'शायद शशि ने सोचा होगा, ये बच्चे—जैसे हम तब थे—कुछ रोमांचक करने वाले हैं! तो क्यों न मैं भी उनके साथ जुड़ जाऊं, कोशिश करूं और देखूं कि वे क्या कर रहे हैं?'
इसके बाद हनीफ, जेनिफर केंडल कपूर के प्रभाव और शशि को प्रयोग करने की इच्छा को स्वीकार करते हैं, भले ही वह किसी छोटी ब्रिटिश इंडी फिल्म में ही क्यों न हो। वे कहते हैं, 'अगर यह फिल्म नहीं होती, तो शशि हिंदी सिनेमा में बार-बार वही किरदार निभाते रहते। और वे ऐसा नहीं कर सकते थे। वे बेहद बुद्धिमान व्यक्ति थे। मैं कई फिल्मी सितारों से मिला हूं और उनमें से अधिकतर बहुत नीरस होते हैं। वहीं दूसरी ओर, शशि पढ़े-लिखे थे; उन्हें क्रिकेट और हर तरह की चीजों का ज्ञान था। उनमें हॉलीवुड/बॉलीवुड जैसी खोखली सोच नहीं थी। वे एक फिल्मी सितारे थे, लेकिन वे खुद को या तो फिल्मी सितारे की तरह दिखाना या बोलना नहीं चाहते थे।'
तो ऐसा हुआ—अयूब खान-दीन (जो बाद में नाटक और फिल्म 'ईस्ट इज़ ईस्ट' के लेखक के रूप में मशहूर हुए) को सैमी के किरदार में लिया गया; फ्रांसिस बाबर ने रोज़ी का किरदार निभाया; और मूंछों वाले, बेहद सुरुचिपूर्ण (हालांकि अब मोटे हो चुके) अड़तालीस वर्षीय शशि ने बुजुर्ग पाकिस्तानी सज्जन रफी की भूमिका निभाई। रफी को मूंछें लगाने का फैसला शशि का ही था, और हनीफ ने इसे पूरी तरह से मंजूरी दी। उन्होंने अपनी डायरी में लिखा, 'इससे वह बूढ़े, कम आकर्षक, और कम फिल्मी हीरो लगते हैं। लेकिन [यह उन्हें] दुर्जेय, प्रभावशाली और एक तरह से ब्रिटिश भी बनाता है, सही मायने में सैन्य सत्तावादी तरीके से।'
हालांकि हनीफ (और स्टीफन भी) उस मूंछ की बहुत तारीफ करते थे, लेकिन अभिनेता के वजन को लेकर उनकी चिंता बढ़ती जा रही थी। शशि ने रोल के लिए वजन कम करने पर सहमति जताई; स्टीफन और हनीफ तो अभिनेता को 'हेल्थ फार्म' भेजने की भी सोच रहे थे, ताकि वह 'फिट और स्लिम' दिख सकें। लेकिन जाहिर तौर पर यह योजना नाकाम हो गई क्योंकि शशि शूटिंग के लिए मुश्किल से ही समय पर पहुंच पाए। हनीफ कहते हैं, 'मुझे याद है मैंने उनसे इसे बारे में बात की थी। शशि ने मुझसे पूछा, "हनीफ, मैं पतला कैसे हो सकता हूं?" मैंने कहा, "तुम्हें कम खाना होगा और ज्यादा व्यायाम करना होगा।" तब शशि ने जवाब दिया, "मैं कुछ भी करने को तैयार हूं, बस कम खाना और ज्यादा व्यायाम करना मुझे पसंद नहीं है।"' और बात यहीं खत्म हो गई।
आगे जो होने वाला था, उसके मुकाबले शशि का वजन एक मामूली चिंता का विषय साबित हुआ। शूटिंग के पहले दिन, जब हनीफ शशि को उनके होटल से लेने गए, तो अभिनेता फिल्म की कहानी को लेकर अनिश्चित लग रहे थे, जबकि उन्होंने स्क्रिप्ट पहले ही पढ़ ली थी। जैसा कि अक्सर मुख्यधारा के भारतीय फिल्म सितारे करते हैं, शशि ने कहानी को याद दिलाने के लिए कहा। इसी सवाल ने हनीफ के मन में खतरे की घंटी बजा दी। पटकथा लेखक को संदेह होने लगा कि क्या स्टीफन और उन्होंने सही कास्टिंग का चुनाव किया है। ये संदेह तब और बढ़ गए जब शशि ने स्टीफन से पूछा कि क्या वह शूटिंग के पहले दिन जल्दी जा सकते हैं क्योंकि उन्हें एक कॉकटेल पार्टी का निमंत्रण था। हनीफ अपनी डायरी में थोड़ा चिंतित होकर लिखते हैं, 'फ्रीअर्स ने कहा था, अगर सितारे ऐसे ही व्यवहार करते हैं, तो [उसके साथ] काम करना मुश्किल हो सकता है।' बाद में वे खुद को आश्वस्त करने की पूरी कोशिश करते हुए लिखते हैं, 'लेकिन वह गंभीर और उत्सुक है।'
सौभाग्य से, शशि को काम करते देख लेखक और निर्देशक की शुरुआती आशंकाएँ उनकी प्रशंसा में तब्दील हो गईं। हनीफ़ कहते हैं, 'उन्होंने पूरे उत्साह से काम किया। उन्होंने कभी यह नहीं सोचा कि हम जैसे सीधे-सादे लोगों के साथ काम करने के लिए वे बहुत अच्छे हैं। सचमुच, हर कोई उन्हें पसंद करता था और उनकी प्रशंसा करता था। वे सबके पास जाते, हाथ मिलाते, क्रू को 'गुड मॉर्निंग' कहते - एक सच्चे सज्जन। उनमें ज़रा भी घमंड नहीं था।' शूटिंग के दौरान जब लंदन की दक्षिण एशियाई आबादी ने उन्हें पहचाना, तो शशि ने वैसा ही सौहार्द दिखाया - वे अपने प्रशंसकों का अभिवादन करते, भले ही वे उनके लिए खाना लाते और तस्वीरें लेते।

शाश ने यह भी साबित कर दिया कि वह एक ऐसे अभिनेता हैं जो शूटिंग कितनी भी चुनौतीपूर्ण क्यों न हो, उसे सहजता से स्वीकार कर लेते हैं। सैमी एंड रोजी गेट लेड के अंतिम दृश्यों में से एक में रियल एस्टेट डेवलपर्स का एक समूह अतिक्रमणकारियों द्वारा कब्जा किए गए क्षेत्र को खाली कराता हुआ दिखाया गया है। इन अवैध निवासियों में रफी भी शामिल है, जो एक ट्रेलर घर में रात बिताता है, और फिर उसे बुलडोजर से गिराया जा रहा होता है। फिल्म में, रफी को बिस्तर पर उछलते हुए दिखाया गया है, जबकि किताबें उसके सिर पर गिर रही होती हैं। स्पष्ट रूप से, हिंदी फिल्म उद्योग में कुछ सुख-सुविधाओं के आदी अभिनेता के लिए यह एक चुनौतीपूर्ण दृश्य रहा होगा। हनीफ भी इस बात से सहमत प्रतीत होते हैं, जैसा कि वह मजाक में लिखते हैं:

जब शशि घबराया हुआ, परेशान, चक्कर खा रहा और तंग आकर बाहर निकलता है, तो वह बॉम्बे वापस जाने की धमकी देता है। अगली सुबह हम उससे मजाक में कहते हैं कि हमें कारवां के पीछे वाले हिस्से में उसके दृश्य को दोबारा शूट करना होगा, और यह सुनकर उसका चेहरा पीला पड़ जाता है।

सैमी और रोज़ी गेट लेड में यह कई दुर्लभ पलों में से एक है, और स्टीफन का निर्देशन और हनीफ़ का लेखन —जो स्टीफन के शब्दों में, हमेशा 'एशियाई लोगों के प्रति अंग्रेज़ों के रवैये पर व्यंग्यात्मक' होता है—एक दूसरे के पूरक हैं। एक मज़ेदार दृश्य में, सैमी और रोज़ी के घर पर एक पार्टी के दौरान, एक मेहमान, अन्ना (विंडी गर्जेल), रफ़ी से पूछती है, 'क्या आप मंत्र जाप करते हैं?' यह दृश्य मुझे द हाउसहोल्डर की याद दिलाता है, जहाँ एक अमेरिकी महिला शशि के प्रेम सागर से पूछती है कि वह किस प्रकार का योग करते हैं। प्रेम, जो इस प्रश्न से बुरी तरह भ्रमित दिखाई देता है, के विपरीत, शशि के रफ़ी, जो बीस साल से अधिक बड़े हैं, सहज आत्मविश्वास के साथ जवाब देते हैं: 'किसका जाप, मेरी प्यारी?' अन्ना कहती है, 'स्वयं को शांत रखने के लिए मंत्र।' इस पर रफ़ी जवाब देते हैं: 'मैं शांत हूँ। आप युवा, विदेशी लोग मुझे रहस्यमय लगते हैं। आपके लिए, दुनिया और संस्कृति एक डिपार्टमेंटल स्टोर की तरह है।' तुम आते हो और हर मंजिल से जो चाहो ले जाते हो। तुम्हें किसी चीज से लगाव नहीं है। तुम्हारे लिए जीवन निरर्थक और खोखला है।' यह एक शानदार दृश्य है जिसे पूरी तरह से सराहने के लिए देखना जरूरी है—क्योंकि शशि अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में हैं, चेहरे पर शरारती मुस्कान लिए हुए, अन्ना की पूर्वी दर्शन की घिसी-पिटी समझ का खंडन करते हुए।
फिल्म के मध्य में एक और चतुर दृश्य सामने आता है, जब स्टीफन स्क्रीन को तीन क्षैतिज खंडों में विभाजित करके छह पात्रों को प्रेम करते हुए दिखाते हैं—एक मोटा लेकिन आकर्षक रफी अपनी दशकों पुरानी प्रेमिका एलिस (क्लेयर ब्लूम) के साथ बिस्तर पर; रफी की बहू रोज़ी डेनी (सुंदर रोनाल्ड गिफ्ट, जो संगीत समूह फाइन यंग कैनिबल्स के मुख्य गायक भी हैं) के साथ यौन संबंध बनाते हुए; और सैमी अन्ना के साथ रोमांस करते हुए—यह सब ओटिस रेडिंग के क्लासिक गीत 'माई गर्ल' के द गेटो लाइट्स के रेगे रीमिक्स की पृष्ठभूमि में घटित होता है। हनीफ लिखते हैं: 'यह निर्लज्जतापूर्वक कामुक है, उत्तेजना पैदा करने वाला है, जो हमारे युग की संकीर्ण एकविवाही भावना के बिल्कुल विपरीत है। इसे फिल्म में किसी भी अन्य फिल्म की तुलना में अधिक कामुकता का प्रदर्शन है।'
जब मैंने बोस्टन में दोस्तों के एक समूह के साथ 'सैमी एंड रोज़ी गेट लेड' देखी, तो उनमें से कुछ को फिल्म की यौन राजनीति से आपत्ति हुई। मुझे यह स्वीकार करना होगा कि उनकी असहजता देखकर मुझे खुशी हुई। यह फिल्म मेरे लिए एक और कारण से खास थी: 'सैमी एंड रोजी गेट लेड' में ही मैंने पहली बार नुसरत फतेह अली खान की कव्वालियां सुनी थीं।

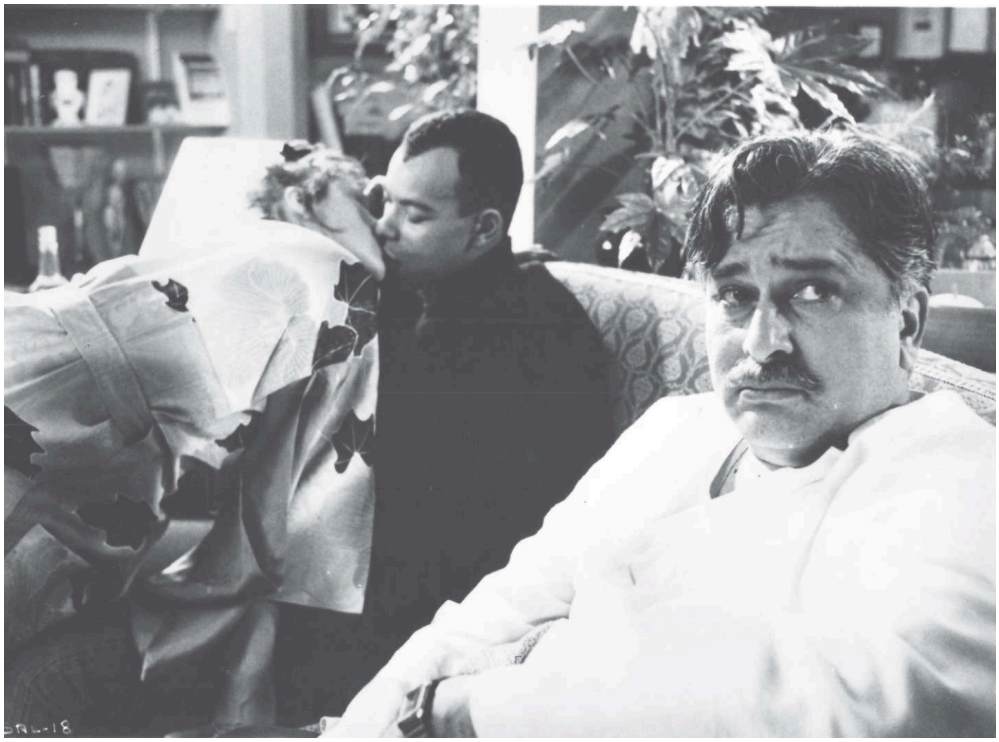

1987, सैमी और रोज़ी का रोमांस। शशि कपूर द्वारा अभिनीत रफ़ी एक पार्टी में हैरान और असमंजस में नज़र आते हैं। उनके बगल में, डैनी का किरदार निभाने वाले रोलैंड गिफ़्ट, रफ़ी की बहू रोज़ी (फ्रांसिस बारबर) को चूम रहे हैं।

सैमी एंड रोजी गेट लेड अक्टूबर 1987 के अंत में अमेरिका में रिलीज़ हुई और आलोचकों की प्रतिक्रियाएँ कुछ खास अच्छी नहीं रहीं। द न्यूयॉर्क टाइम्स के विंसेंट कैनबी कहते हैं: 'श्री कुरैशी की पटकथा में इतनी सारी चीज़ें घटित हो रही हैं कि किसी एक व्यक्ति या चीज़ का संतोषजनक ढंग से विश्लेषण करना मुश्किल है [...] जैसे-जैसे प्रत्येक किरदार विरोधाभासी आवेगों से कम या ज़्यादा प्रभावित होता है, वैसे ही फिल्म भी प्रभावित होती है।' द न्यू यॉर्कर की पॉलीन केल भी उतनी ही कठोर हैं। वह लिखती हैं, 'इस फिल्म में कोई भावनात्मक शक्ति नहीं है। फिल्म की चतुराई में भी कोई खास हास्य नहीं है।' लेकिन फिर वह आगे कहती हैं: 'यह कपूर के अभिनय में दिखता है [...] शशि कपूर एक ऐसे व्यक्ति के रूप में अद्भुत हैं जो हर परिस्थिति में ढल जाते हैं (या एक हद तक ढल जाते हैं)।'
यह प्रशंसा बिल्कुल जायज़ है, क्योंकि शशि ने इस भूमिका में खुद को पूरी तरह से ढाल लिया था। न्यूयॉर्क टाइम्स के लॉरेंस वैन गेल्डर द्वारा लिए गए साक्षात्कार में शशि ने बतायी कि जहां आम धारणा यह है कि अभिनय में नौ रस होते हैं, वहीं रफी के किरदार में अठारह रसों की आवश्यकता थी। 'मुझे अच्छा बनना था, मुझे बुरा बनना था, मुझे दुष्ट बनना था, मुझे हास्यपूर्ण, कभी-कभी विनोदी भी बनना था, और फिर भी मुझे भावुक होना था—एक बहुत ही स्नेही पिता, एक प्रेमपूर्ण प्रेमी और फिर भी एक धूर्त, धोखेबाज़, स्वार्थी और एक फासीवादी राजनेता जिसने अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए शायद भयानक काम किए थे। उनका किरदार मुझे लियर की याद दिलाता था। [...] मैं इस भूमिका से मंत्रमुग्ध हो गया था।'
लॉरेंस आगे सुझाव देते हैं कि शशि 'रॉबर्ट रेडफोर्ड या स्टीव मैक्क्वीन के भारतीय समकक्ष' हैं। लेकिन सच्चाई यह भी है कि अपने करियर के इस चरण में, शशि पूरी तरह से अपनी एक अलग ही श्रेणी में थे।

## हिरासत में **(1993)**

'अ रूम विद अ व्यू', 'हावर्ड्स एंड' और 'द रिमेन्स ऑफ द डे' जैसी साहित्यिक रूपांतरणों की अपार सफलता के बाद—जिसने हॉलीवुड में बॉक्स ऑफिस पर सफलता के अलावा मर्चेंट-आइवरी जोड़ी को कुल मिलाकर छह ऑस्कर दिलाए—इस्माइल मर्चेंट ने अपनी भारतीय जड़ों की ओर लौटने का फैसला किया। इस बार, उन्होंने खुद एक फिल्म का निर्देशन करने का निर्णय लिया—'इन कस्टडी'—जो लेखिका अनीता देसाई के इसी नाम के उपन्यास पर आधारित उनकी पहली फीचर फिल्म थी।
1984 में मैन बुकर पुरस्कार के लिए चयनित इस पुस्तक में, अनीता एक बूढ़े उर्दू कवि नूर की मार्मिक कहानी बयां करती हैं, जो शराब के नशे में डूबे अपने अंतिम दिन बिता रहे हैं। उनके चारों ओर उनकी दो झगड़ालू पत्नियां हैं, जो एक जर्जर हवेली की अलग-अलग मंजिलों पर रहती हैं, और कुछ चापलूस और चमचे मुफ्त शराब और खाने की उम्मीद में उनके साथ हैं। उनका एकमात्र सहारा एक अभागे शिक्षक का संक्षिप्त और अचानक आगमन है, जिसे एक साहित्यिक प्रकाशन के लिए उनका साक्षात्कार लेने का काम

सौंपा गया है। इस कहानी को कहते हुए, 'इन कस्टडी' एक भाषा के धीरे-धीरे लुप्त होने की पड़ताल करती है। जैसा कि अनीता अपने एक पात्र के माध्यम से लिखती हैं:

हिंदी जैसे शाकाहारी राक्षस के इस युग में उर्दू कैसे जीवित रहेगी? [...] किसानों की वह भाषा... मूली और आलू खाकर पली-बढ़ी वह भाषा... फिर भी इन सब्जियों की तरह ही फूल-फूल रही है, जबकि उर्दू—राजसी युग में दरबार की भाषा—अब शहर की तंग गलियों और गटरों में विरक्ति कर रही है। उसे अपने उस अंदाज में जीने का कोई स्थान नहीं, न ही कोई सम्राट और नवाब उसके संरक्षक बन पाए।

दूसरी जगह, अनीता (नूर के माध्यम से) यह दावा करती है:

जब उर्दू भाषा का अस्तित्व ही नहीं है, तो उर्दू कविता कैसे हो सकती है? यह मर चुकी है, समाप्त हो चुकी है। अंग्रेजों द्वारा मुगलों की पराजय ने इसके सिर पर फंदा डाल दिया, और हिंदी भाषी लोगों द्वारा अंग्रेजों की पराजय ने इसे और कस दिया। इसलिए अब आप इसका शव यहाँ पड़ा हुआ देखते हैं, दफनाए जाने की प्रतीक्षा में।

इस्माइल को ऐसी ही टिप्पणियों ने मोहित कर लिया। 1999 में न्यूयॉर्क शहर की एशिया सोसाइटी में आयोजित एक कार्यक्रम में, निर्देशक ने दावा किया कि वे पुस्तक में उर्दू कविता और एक पतनशील संस्कृति के वातावरण पर केंद्रित दृष्टिकोण से आकर्षित हुए थे। अपनी आत्मकथा में, इस्माइल आगे बताते हैं कि आधुनिक भारत में उर्दू के पतन की कहानी ने उन्हें क्यों आकर्षित किया। वे लिखते हैं, 'उर्दू मेरी भाषा और मेरी संस्कृति है। मैंने इस फिल्म को अपनी विरासत को श्रद्धांजलि के रूप में देखा।'
इन कस्टडी में कई जाने-माने कलाकार हैं। ओम पुरी ने कॉलेज शिक्षक देवेन की भूमिका निभाई है, जो उर्दू के प्रति अपने प्रेम से परेशान है, जिससे उसे आर्थिक सहायता नहीं मिलती, और साथ ही परिवार की आजीविका की ज़रूरतों को भी पूरा करने के लिए संघर्ष करता है। शबाना आज़मी और सुषमा सेठ नूर की पत्नियों की भूमिका निभाती हैं, जबकि नीना गुप्ता देवेन की असंतुष्ट पत्नी हैं।

1993, इन कस्टडी। मोटे शशि कपूर उदास कवि नूर की भूमिका निभा रहे हैं। इस दृश्य में, कॉलेज प्रोफेसर के रूप में ओम पुरी को नूर का साक्षात्कार लेने के लिए भेजा जाता है।
सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

लेकिन सबसे पहले सवाल यह था कि मोटापे से ग्रस्त और दुखद किरदार नूर को कौन निभाएगा। इस्माइल के लिए शशि कपूर पहली पसंद थे। हालांकि, इस बार उन्हें इस भूमिका के लिए राजी करना आसान नहीं था, क्योंकि शशि मुख्य भूमिका निभाने को तैयार नहीं थे। एक साक्षात्कार में शशि कहते हैं, 'मैं बार-बार कहता रहा कि मैं यह नहीं कर सकता। मुझे भाषा नहीं आती, मैं कभी उर्दू कवियों के मुशायरों में नहीं गया। मैं कुछ कवियों को जानता था, जैसे कैफी आज़मी - एक बहुत प्रसिद्ध उर्दू कवि जो मेरे पिता के पड़ोसी थे।

लेकिन मैंने कभी किसी कवि के जीवन का अध्ययन नहीं किया। और मुझे शुद्ध उर्दू और शुद्ध फारसी बोलने से बहुत डर लगता था।'
संकोची शशि ने इस्माइल को दिलीप कुमार समेत अन्य अभिनेताओं के नाम सुझाए, जो उनकी राय में इस भूमिका के लिए अधिक योग्य थे। लेकिन इस्माइल संतुष्ट नहीं हुए, और अंततः, कुछ वर्षों बाद, अपनी दृढ़ता के लिए प्रसिद्ध निर्देशक ने शशि के करीबी लोगों (उनके बच्चों और उनके भाई शम्मी कपूर) को यह समझाने में कामयाबी हासिल की कि यह अभिनेता के लिए एक सपनों का प्रोजेक्ट होगा। उसके बाद, शशि को मनाना आसान हो गया। अभिनेता खुद यह स्वीकार करते हैं कि इस्माइल ने 'सभी को अपने पक्ष में कर लिया और मुझे इस भूमिका को स्वीकार करने और करने के लिए राज़ी कर लिया।'
इस्माइल की प्रभावशाली क्षमता का सबसे बड़ा प्रमाण शायद यह है कि उन्होंने उपन्यास के लेखक से ही फिल्म की पटकथा लिखवाई (जिसका उर्दू अनुवाद शाहरुख हुसैन ने किया)। उन्होंने फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ की कविताओं का भी उपयोग किया, जो फिल्म की कल्पना से बहुत पहले लिखी गई थीं; आज वे कथानक में इतनी सहज लगती हैं कि मानो उन्हें फिल्म के लिए ही लिखवाया गया हो। एशिया सोसाइटी के कार्यक्रम में इस्माइल ने कहा कि फ़ैज़ की रचनाओं का उपयोग करना उन्हें स्वाभाविक लगा क्योंकि अनीता ने वास्तव में 'इन कस्टडी' लिखते समय पाकिस्तानी कवि को ध्यान में रखा था। यह एक बड़ा संयोग है कि फ़ैज़ का निधन 1984 में हुआ, उसी वर्ष अनीता का उपन्यास प्रकाशित हुआ था।
हालांकि उपन्यास की कहानी दिल्ली में घटित होती है, लेकिन इस्माइल ने कहानी का स्थान भोपाल में स्थानांतरित कर दिया, जिसे वे भारत में कला और संस्कृति का केंद्र बताते हैं। जेम्स आइवरी फिल्म के निर्माण से जुड़े नहीं थे, फिर भी वे कुछ हफ्तों के लिए शूटिंग देखने भोपाल गए; इस दौरान वे हर दिन सेट पर जाते और शशि को काम करते हुए देखते। एक सुबह अचानक, इस्माइल ने उनसे कहा कि वे थक गए हैं। जेम्स बताते हैं, "उन्होंने मुझसे कहा, 'मैं थोड़ी देर सोना चाहता हूँ। आप अगला दृश्य निर्देशित कीजिए।' यह शशि और ओम के साथ एक शॉट था, और उस बच्चे (सीकू, जिसका किरदार सागर आर्य ने निभाया था) को साक्षात्कार रिकॉर्ड करने थे। शशि बिस्तर पर थे और अंग्रेज़ी कविताएँ सुना रहे थे। बच्चा इस बात को लेकर असमंजस में था कि उसे माइक चालू करना चाहिए या नहीं, जबकि ओम उसे बार-बार माइक चालू करने के लिए कह रहे थे। मैंने उस दृश्य का निर्देशन किया और शशि के साथ दोबारा काम करना बहुत मज़ेदार था, उनके साथ सेट पर वापस आना बहुत अच्छा लगा।' शशि के लिए भी यह एक खास दिन रहा होगा—उस निर्देशक के निर्देशन में काम करना, जिन्होंने उन्हें 'द हाउसहोल्डर' में शुरुआती मौका दिया था और जिन्होंने उन्हें शुरुआती अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलाई थी।
जेम्स का मानना है कि 'इन कस्टडी' शशि के बेहतरीन अभिनय में से एक है। वे कहते हैं, 'हाल ही में होनोलूलू में हमारी कई भारतीय फिल्में दिखाई गईं और मैंने 'इन कस्टडी' पूरी देखी। यह एक शानदार फिल्म है—बेहद मार्मिक और अनोखी। और शशि का अभिनय लाजवाब था।' शशि भी नूर के अपने किरदार से संतुष्ट थे। शशि कहते हैं, 'मुझे खुशी है, बहुत खुशी है कि मैंने कवि का किरदार निभाया। मुझे इस बात पर गर्व है कि मैं एक ऐसे किरदार को निभा सका जो मुझसे बिल्कुल अलग, मुझसे बहुत भिन्न और मेरे लिए बिल्कुल अनजान था।'
इन कस्टडी को अमेरिका में अच्छी समीक्षाएं मिलीं, और द न्यूयॉर्क टाइम्स की कैरिन जेम्स ने शशि की जमकर प्रशंसा की।

नूर एक विलक्षण रूप से प्रभावशाली व्यक्तित्व है, भले ही उसकी पीठ कैमरे की ओर हो, और यह शशि कपूर के लंबे करियर में शायद सबसे बेहतरीन भूमिका है। [...] लगभग तीस साल पहले, श्री कपूर मर्चेंट-आइवरी की शुरुआती फिल्म शेक्सपियर वाला में दुबले-पतले, आकर्षक युवक के रूप में थे, और हाल ही में स्टीफन फ्रीयर्स की फिल्म सैमी एंड रोजी गेट लेड में क्रोधित पिता की भूमिका में थे। इस्माइल मर्चेंट की समृद्ध और आकर्षक फिल्म इन कस्टडी में, श्री कपूर नूर को आज के बील्ज़ाक में बदल देते हैं: उग्र और बुद्धिमान, फिर भी जीवन में कुछ ज्यादा ही सुख-सुविधाओं का अनुभव करने के सभी संकेतों के साथ।

कैरिन का कहना है कि इस्माइल ने अपने पहले निर्देशन प्रयास में भारतीय संस्कृति के प्रति अपने पूरे स्नेह को समाहित कर लिया है—जिससे फिल्म कई बार 'कलात्मक राजदूत की गरिमामय भूमिका' निभाती हुई प्रतीत होती है—वह आगे कहती हैं कि फिल्म को इसके अभिनेताओं का भरपूर समर्थन प्राप्त है: 'इन कस्टडी अपने नायकों की उलझी हुई मानवता को कभी नहीं भूलती, जिन्हें श्री कपूर और श्री पुरी ने बेहद सशक्त ढंग से निभाया है।'
अन्य फिल्म समीक्षाओं में अभिनेताओं की प्रतिभा, और विशेष रूप से शशि कपूर (एक मोटे अवतार में), पर टिप्पणी की गई है। वैरायटी के डेरेक एली लिखते हैं: 'थके-हारे, गोल-मटोल कवि के रूप में, शशि कपूर, अपने दुबले-पतले, लोकप्रिय अभिनेता के दिनों से लगभग पहचाने नहीं जा सकते, एक प्रभावशाली व्यक्तित्व को चित्रित करते हैं, जो भारतीय चार्ल्स लॉटन और सिडनी ग्रीनस्ट्रीट के बीच कहीं है।' वाशिंगटन पोस्ट की रीटा केम्पली लिखती हैं, 'एक दहाड़ते भैंस जैसे अभिनेता शशि कपूर, गठिया से पीड़ित होकर ढेर की तरह पड़े हुए, नशे में धुत प्रशंसकों के एक समूह के सामने अपनी कलात्मक क्षीणता का विलाप करते हुए, ओर्सन वेल्स की याद दिलाते हैं।'
शशि के अभिनय की प्रशंसा करने के लिए अक्सर उनके वजन का जिक्र किया जाता था (साथ ही साथ अन्य मोटे पश्चिमी अभिनेताओं का भी हवाला दिया जाता था), और भले ही उनके मोटेपन ने उन्हें नूर के किरदार में ढलने में मदद की हो, शबाना को शूटिंग के दौरान अभिनेता के भारी वजन के कारण कुछ कठिन पल

याद हैं। वह कहती हैं, 'शाशी का वजन बहुत बढ़ गया था और शराब के नशे में उन्हें जमीन पर लेट देखना बहुत दर्दनाक होता था। मुझे बहुत बुरा लगता था।' संजना कपूर आगे कहती हैं, 'पापा उस समय काफी शराब पीते थे। उन्हें एक दिन में एक बोतल वोदका पीने की आदत हो गई थी।'
फिर, शशि को सबसे अच्छी तरह जानने वाली और उनकी सबसे बड़ी आलोचक होने के नाते, संजना कहती हैं, 'मुझे लगता है कि पापा ने 'इन कस्टडी' में उतना शानदार अभिनय नहीं किया जितना उन्हें करना चाहिए था। उन्होंने किरदार के हिसाब से चीज़ों को कुछ ज़्यादा ही सुंदर बना दिया था—वे कुछ ज़्यादा ही आकर्षक लग रहे थे। मैं थोड़ा और पतन देखना पसंद करती। फिल्म देखने के बाद मुझे और देखने की इच्छा हुई।'
'इन कस्टडी' का अंत नूर की अंतिम यात्रा के साथ होता है। कवि के ताबूत को उनकी जर्जर हवेली से सड़कों पर ले जाया जाता है, जबकि उनकी विधवाएँ अपने नौकरों से घिरी हुई अपने घर की दो मंजिलों से यह सब देखती रहती हैं। ताबूत के चारों ओर भीड़ जमा हो जाती है, कुछ लोग तो उसे कंधे पर उठाकर ले जाते हैं। पृष्ठभूमि में हरिहरन द्वारा फैज़ की कविता 'आज बाजार में पा-बा जोलां चलो' का गायन सुनाई देता है, जिसका मोटे तौर पर अनुवाद है 'आज हमें बाजार में बेड़ियों में चलना होगा'।
उस दृश्य को याद करते हुए जेम्स मुझे बताते हैं, 'वह पल फिर से दोहराया गया। इस्माइल की मृत्यु के बाद मैं बॉम्बे में नहीं था—हालाँकि उनका निधन लंदन में हुआ था, लेकिन उनका अंतिम संस्कार बॉम्बे में हुआ था। बाद में मुझे पता चला कि शशि ने सभी शोक मनाने वालों को शहर की सड़कों से होते हुए ले जाया था। मैंने सोचा, यह कितना अजीब—नहीं, अजीब से भी बढ़कर—कितना विचित्र है, ऐसी किसी चीज़ की समरूपता। कितना मार्मिक, भावनात्मक गहराई।' जेम्स का वर्णन मेरे मन में कला के जीवन में अनुकरण के एक दुर्लभ उदाहरण के रूप में बसा हुआ है।

## जिन्ना (1998)

पाकिस्तान के निर्माण की पचासवीं वर्षगांठ के अवसर पर, फिल्म निर्माता जमील देहलवी और सह-लेखक/कार्यकारी निर्माता अकबर अहमद ने अपने देश के संस्थापक पिता मुहम्मद अली जिन्ना पर एक निर्णायक फिल्म बनाने का निश्चय किया - एक ऐसी फिल्म जिसे कुछ लोग रिचर्ड एटनबरो की गांधी फिल्म के प्रति पाकिस्तान की प्रतिक्रिया के रूप में संदर्भित करते हैं। लेकिन परियोजना में एक वर्ष की देरी हुई और जिन्ना फिल्म अंततः 1998 में बनकर तैयार हुई।
जमील के अनुसार, जिन्ना की जीवनी का उद्देश्य तीन गुना था: इतिहास को सही करना; इस्लाम के उदार पक्ष को प्रस्तुत करना; और एक ऐसे व्यक्ति को जीवंत करना जो देश-विदेश में रहने वाले युवा पाकिस्तानियों के लिए काफी हद तक अज्ञात है। लेकिन इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए, जमील एक सीधी-सादी जीवनी बनाने में रुचि नहीं रखते थे। इसके बजाय, उनकी पटकथा समय में आगे-पीछे चलती रही, और जिन्ना के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाती रही। परंपरा से हटकर, एक दुर्लभ बदलाव के रूप में, फ्लैशबैक में मृत नेता की आत्मा एक देवदूत के साथ लंबी यात्रा करती है—जो बदले में, जिन्ना के जीवन का विश्लेषण करता है, उनके अच्छे कर्मों और विवादास्पद कर्मों का संतुलन बनाता है और एक अंतिम निर्णय पर पहुँचता है। अकबर के हवाले से कहा गया है, 'सीधी-सादी पटकथा को कल्पना की दुनिया में ले जाने का विचार जमील का था। उन्हें लगा कि इस तरह यह अधिक रोमांचक होगा। शुरू में मुझे असहजता हुई, लेकिन मुझे एहसास हुआ कि इससे एक बेहतर फिल्म बनेगी।'

1998, जिन्ना। शाश कपूर, 'कथावाचक' क रूप म, मुहम्मद अली जिन्ना (क्रिस्टाफर ली) क पापा का आकलन करत ह। साजन्य: जमाल दहलवा।

1998, जिन्ना। शशि कपूर, मोहम्मद अली जिन्ना के जीवन का आकलन करते हुए, 'कथावाचक' की भूमिका में, हमेशा ही जिज्ञासु बने रहते हैं। सौजन्य: जमील देहलवी।

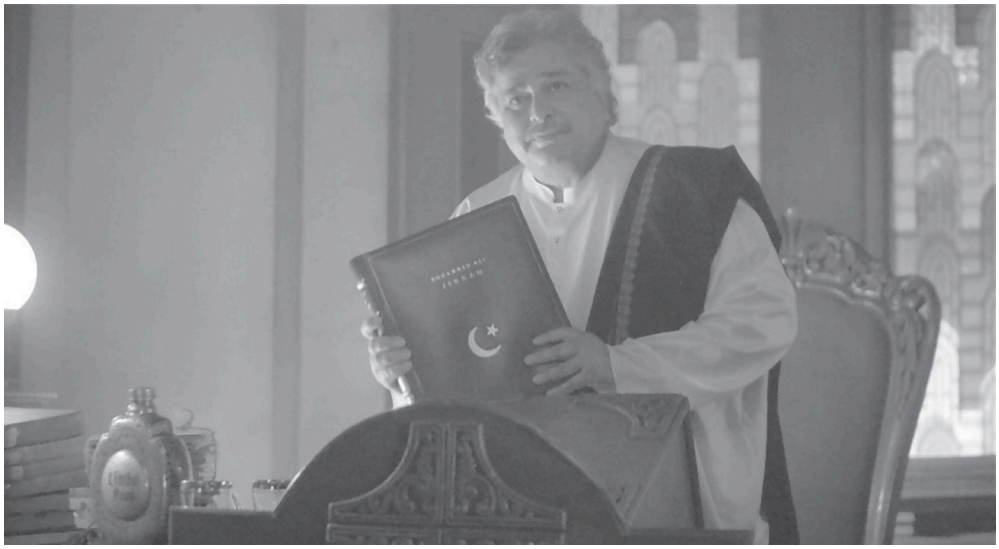

1998, जिन्ना। शशि कपूर, जो कथावाचक हैं, जिन्ना के जीवन पर लिखी पुस्तक के साथ। सौजन्य: जमील देहलवी।

1998, जिन्ना। शशि कपूर, जो 'कथावाचक' की भूमिका में हैं, मुहम्मद अली जिन्ना के जीवन के महत्वपूर्ण क्षणों को याद करते हुए देखते हैं। सौजन्य: जमील देहलवी।

जमील एक अंतरराष्ट्रीय कलाकारों की टीम को लेना चाहते थे, खासकर इसलिए क्योंकि उन्हें अंग्रेजी भाषा की फिल्म में जिन्ना की भूमिका निभाने के लिए कोई पाकिस्तानी स्टार नहीं मिल रहा था। जमील मुझे बताते हैं, 'मैंने जिन पाकिस्तानी अभिनेताओं के साथ काम किया है, उनमें से ज्यादातर अंग्रेजी में अभिनय करने में सहज नहीं हैं। उनका अभिनय काफी बनावटी लगता है। इसलिए, मेरे सामने एक ऐसे अभिनेता को ढूंढने की बड़ी चुनौती थी जो जिन्ना जैसा दिखता हो और उनकी भूमिका और मिथक को बखूबी निभा सके - इसीलिए मैंने क्रिस्टोफर ली को चुना, जो शानदार हैं।'

देवदूत की भूमिका के लिए जमील ने शशि कपूर को चुना। 'हमें एक ऐसे अभिनेता की ज़रूरत थी जो दमदार हो, क्रिस्टोफर के बराबर का स्टार हो, और थोड़ा सनकी भी हो, जिसमें हास्य का पुट भी हो। शशि कपूर एक स्वाभाविक पसंद लगे। वो अब वो युवा सुपरस्टार नहीं रहे थे जो कभी हुआ करते थे और मुझे लगा कि वो किरदार की विलक्षणताओं को बखूबी निभा सकते हैं।' जमील का यह भी मानना था कि शशि कपूर का बढ़ा हुआ वज़न उस जिज्ञासु देवदूत के किरदार के साथ बखूबी मेल खाता था जिसे वो निभा रहे थे।

हालांकि, मैंने बताया कि जिन्ना के अंतिम संस्करण में, देवदूत को कथावाचक कहा गया है; जमील ने मुझे बताया कि पटकथा में बदलाव क्यों हुआ: 'जब आप दुनिया के इस हिस्से में फिल्में बनाते हैं, तो आपको बहुत सावधान रहना पड़ता है, क्योंकि आप लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंचा सकते हैं। आप बिना किसी कारण के विवाद खड़ा कर सकते हैं।' शशि को 'महादूत गेब्रियल' की भूमिका निभाने के खतरों के बारे में जरूर आगाह किया गया होगा, क्योंकि बाद में, जब उनसे एक साक्षात्कार में जिन्ना में उनके किरदार के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने तुरंत कहा, 'अरे नहीं! मैं महादूत की भूमिका नहीं निभा रहा हूँ। फिल्म में ऐसा कोई किरदार नहीं है। मैं कथावाचक की भूमिका निभा रहा हूँ - यह भारतीय नाटकों में सूत्रधार की भूमिका के समान है; यह शेक्सपियर के नाटकों में गायक मंडली की तरह है।' फिर उन्होंने आगे कहा, 'मेरा किरदार अधर में है; यह कल्पना और अमूर्त चीजों का मिश्रण है।'

शशि और जमील की सावधानी के बावजूद, जिन्ना को गंभीर मुश्किलों का सामना करना पड़ा। सबसे पहले, स्थानीय अखबारों में दुर्भावनापूर्ण अफवाहें छपने लगीं। कराची में ग्यारह सप्ताह तक चले शूट के दौरान, क्रिस्टोफर की कास्टिंग को लेकर ज़बरदस्त विरोध प्रदर्शन हुए। सितंबर 1998 में, बीबीसी की एक रिपोर्ट में कला संवाददाता रजिया इकबाल के हवाले से कहा गया, 'लोगों को इस बात से आपत्ति है कि श्री ली का संबंध काउंट ड्रैकुला से है, न कि इसलिए कि वह एक यूरोपीय हैं और एक एशियाई का किरदार निभा रहे हैं।' कार्यकर्ताओं ने कथित तौर पर क्रिस्टोफर की गिरफ्तारी और पाकिस्तान से निर्वासन की मांग की। वह तनावपूर्ण समय था, और निर्माताओं को ब्रिटिश अभिनेता के लिए सशस्त्र गार्ड मुहैया कराने पड़े। इसके अलावा, उन्हें शशि को भी सुरक्षा प्रदान करनी पड़ी। एक साक्षात्कार में शशि स्पष्ट करने की कोशिश करते

हुए कहती हैं, 'ऐसा नहीं है कि कोई समस्या है। मैं घूमती-फिरती रहती हूं, लोगों के घरों में दोपहर के भोजन के लिए जाती हूं, सिंध क्लब जाती हूं। यह बहुत अच्छी जगह है, और वहां बहुत अच्छे लोग रहते हैं।' [...] माहौल बहुत ही खुशनुमा है।' हमेशा की तरह समझदारी से भरे शशि आगे कहते हैं, 'यार, ये तो हमारे ही लोग हैं। वही लोग, वही संस्कृति, ऐसा बिल्कुल नहीं लगता कि आप भारत से बाहर शूटिंग कर रहे हैं।'
फिर खबर आई कि पाकिस्तानी सरकार—जो जिन्ना की शुरुआती समर्थकों में से एक थी—ने फिल्म के निर्माण के बीच में ही फंडिंग वापस ले ली। जमील को कुछ त्वरित बदलाव करने पड़े—जिनमें शशि की भूमिका को कुछ हद तक कम करना भी शामिल था। जमील बताते हैं, "फिल्म में एक दृश्य था जिसमें शशि और जिन्ना समय से परे जाकर आधुनिक मुस्लिम नेताओं, जैसे सद्दाम हुसैन से मिलते हैं। यह फिल्म का एक दिलचस्प पहलू था। लेकिन हम इसे पूरा नहीं कर पाए। हमारे पास पैसे खत्म हो गए थे।"
इन सभी मुश्किलों के बावजूद, शशि के मन में शूटिंग की मार्मिक यादें बसी हुई हैं—उनमें से एक में क्रिस्टोफर दर्शकों की भारी भीड़ के बीच खड़े हैं। फिल्म के एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा, 'भीड़ वाले दृश्य देखना बहुत ही भावुक कर देने वाला है। जब जिन्ना भीड़ के बीच से गुज़र रहे थे, तो क्रू मेंबर न होने के बावजूद कुछ बुजुर्ग उन्हें छू रहे थे... इससे मुझे बॉम्बे और दिल्ली में गांधी जी की शूटिंग की याद आ गई। यहां के लोग उनका बहुत सम्मान करते हैं।'
जमील शशि के साथ बिताए समय को बड़े प्यार से याद करते हैं: 'शशि एक अद्भुत इंसान हैं, बेहद विनम्र। सच कहूं तो, मुझे सुखद आश्चर्य हुआ, क्योंकि उनका लंबा अनुभव है और वे मुश्किल स्वभाव के भी हो सकते थे। लेकिन नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं था। वे विनम्र थे, उनके साथ काम करना आसान था।' जिन्ना फिल्म में, कड़क सफेद कुर्ता-पायजामा पहने हुए हट्टे-कट्टे शशि अपने चेहरे पर एक प्यारी सी मुस्कान लिए चलते हैं, मानो वे 'कथावाचक' होने के हर पल का आनंद ले रहे हों।
यह एक ऐसी भूमिका है जिसमें शशि, क्रिस्टोफर के लिए एकदम सही साथी साबित होते हैं। शशि कहते हैं कि उन्हें ब्रिटिश स्टार के साथ काम करना बहुत पसंद आया ('वह एक अद्भुत अभिनेता हैं,' वे जोर देकर कहते हैं, 'एक अच्छे इंसान होने के साथ-साथ, कायद-ए-आज़म की भूमिका निभाने की अपनी जिम्मेदारी के प्रति बहुत सचेत भी हैं')। वहीं, क्रिस्टोफर ने भी 2001 में पाकिस्तान न्यूज़ सर्विस के साथ एक रेडियो साक्षात्कार में विनम्रता बनाए रखी: 'फिल्म में पाकिस्तानी कलाकार मेरे प्रति बहुत दयालु थे और फिल्म में हमारे साथ एक बहुत ही प्रतिष्ठित भारतीय अभिनेता, शशि कपूर भी थे।'
दिसंबर 1998 में, लॉस एंजिल्स टाइम्स में जिन्ना को एक सशक्त सकारात्मक समीक्षा मिली, जिसमें समीक्षक केविन थॉमस ने अभिनेताओं की प्रशंसा करते हुए कहा: 'फिल्म के अंत तक, ली एक अडिग गरिमा वाले व्यक्ति के आंतरिक जीवन को उजागर करने की अपनी क्षमता से बेहद मार्मिक हैं [...] कलाकारों का प्रदर्शन उत्कृष्ट है, जिसमें हास्यपूर्ण कपूर (जो लंबे समय से भारतीय सिनेमा के एक प्रमुख स्तंभ रहे हैं) भी शामिल हैं।' यह समीक्षा जिन्ना की खूबियों को समाहित करती है - एक ऐसी फिल्म जो एक ऐसे व्यक्ति के सार को पकड़ती है जो शायद बेहद सही, संयमित, यहां तक कि गंभीर भी रहा हो - लेकिन स्वभाव की इन सीमाओं के बावजूद, वह अपार साहस और अडिग सत्यनिष्ठा के नेता के रूप में उभरता है।
अगर फिल्म में कोई कमी है, तो वह इस तथ्य के कारण है कि गांधी फिल्म का जवाब देने के प्रयास में, जिसमें जिन्ना को सत्ता का भूखा व्यक्ति दिखाया गया है, जमील की फिल्म—एक आलोचक के शब्दों में—'एक ऐसे द्वैतवादी संसार को प्रस्तुत करती है जिसमें जिन्ना "अच्छाई" का प्रतीक हैं जबकि गांधी, नेहरू और माउंटबेटन मिलकर एक "बुराई" की तिकड़ी बनाते हैं जिस पर जिन्ना का प्रभुत्व है [...] एक अन्यथा सराहनीय प्रयास को नायक-पूजा के स्तर तक गिरा देता है।' प्रोफेसर पॉल वैलेली बताते हैं कि विडंबना यह है कि फिल्म को 'भारत में पाकिस्तानी प्रचार और जिन्ना के गृह देश में एक हिंदू और ज़ायोनी साजिश के रूप में आलोचना का सामना करना पड़ा।'
जिन्ना फिल्म सिनेमाघरों तक नहीं पहुंच पाई और वितरक न मिलने के कारण सात साल बाद, 2005 में, डीवीडी के रूप में रिलीज़ हुई। क्रिस्टोफर के लिए, जिनका वैसे तो शानदार करियर रहा है, यह एक बड़ा अफसोस बना रहा। बीबीसी को एक रिपोर्ट में उन्होंने कहा, 'फिल्म और अभिनय दोनों ही दृष्टि से मुझे अपने पूरे करियर में सबसे बेहतरीन समीक्षाएं मिलीं।' उन्होंने जिन्ना की उस सफलता को न मिल पाने पर हैरानी जताई, जिसकी वह हकदार थी।

## साइड स्ट्रीट्स (1998)

1990 के दशक के उत्तरार्ध में, न्यूयॉर्क में रहने वाले युवा वृत्तचित्र फिल्म निर्माता टोनी गेर्बर ने अपनी पत्नी लिन नॉटेज के साथ मिलकर अपनी पहली फीचर फिल्म बनाने का निश्चय किया। 'साइड स्ट्रीट्स' न्यूयॉर्क के जीवन का एक अंश है, जिसमें आप्रवासियों की कई कहानियाँ आपस में जुड़ती हैं, और प्रत्येक कहानी न्यूयॉर्क शहर के पाँचों इलाकों में से एक में, एक बेहद गर्म गर्मी के दिन घटित होती है।
लिखी गई कहानियों में से एक कहानी भारतीय-अमेरिकी लिमोसिन ड्राइवर बिपिन राजू की थी, जो अपनी पत्नी चंद्रा, बच्चों और परिवार के नए सदस्य विक्रम राजू के साथ स्टेटन द्वीप पर रहता है। हिंदी फिल्मों के बड़े अभिनेता के रूप में अपने करियर के खत्म होने की सच्चाई से भागते हुए, विक्रम - जो कभी रहस्यमय रहा होगा, लेकिन अब मोटापे से ग्रस्त और खुद को बहुत बड़ा समझने वाला शराबी है - चंद्रा की नाराजगी के बावजूद एक बेहद जिद्दी मेहमान बन जाता है।
चंद्र के जटिल किरदार को चित्रित करने के लिए, जो लगातार निराश होता जा रहा है और विक्रम की मांगों को मानने के लिए मजबूर है - चाहे वह बेहतर एयर कंडीशनिंग की मांग हो या अच्छा नाश्ता, जबकि वह

आराम से बैठकर कभी मिली प्रशंसा का आनंद ले रहा है या इस उम्मीद में जा रहा है कि अल पचीनो उसे फोन करेंगे - टोनी और लिन ने शबाना आज़मी को लेने पर विचार किया। सितंबर 1996 में, जब एक निर्माता की मुलाकात टोरंटो अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में शबाना से हुई - जहाँ वह दीपा मेहता की फिल्म 'फायर' का प्रचार कर रही थीं - शबाना ने यह भूमिका निभाने के लिए हामी भर दी। आर्ट मलिक फिल्म में शबाना के लिमोसिन ड्राइवर पति के रूप में शामिल हुए, वहीं शबाना ने फिल्म निर्माताओं को सुझाव दिया कि शशि कपूर उम्रदराज़ पूर्व अभिनेता विक्रम की भूमिका आसानी से निभा सकते हैं। मुंबई लौटने पर, शबाना ने तुरंत स्क्रिप्ट शशि कपूर को सौंप दी। टोनी मुझे बताते हैं, 'वह बहुत इच्छुक थे, हालाँकि उन्होंने मुझसे संपर्क करके कहा कि अमेरिका में उनका कोई एजेंट नहीं है।' लेकिन उन्होंने आगे कहा कि असल में इस्माइल मर्चेंट ही उनके एजेंट थे। इस तरह, इस्माइल शशि के लिए मध्यस्थ के रूप में काम करने लगे और साथ ही कार्यकारी निर्माता भी बन गए।

1998, साइड स्ट्रीट्स। शशि कपूर विक्रम के किरदार में, एक ढलते सितारे की भूमिका में, अल पचीनो के फ़ोन का इंतज़ार कर रहे हैं। शबाना आज़मी (पृष्ठभूमि में) एक लिमोसिन ड्राइवर की परेशान पत्नी के रूप में देख रही हैं, जिसका किरदार आर्ट मलिक (बाएँ) ने निभाया है। फोटो क्रेडिट: सेठ रुबिन। सौजन्य: साइड स्ट्रीट्स प्रोडक्शंस।

साइड स्ट्रीट्स अनजाने में शशि की अनौपचारिक त्रयी का तीसरा भाग बन गई—सैमी एंड रोजी गेट लेड और इन कस्टडी इसके पहले दो भाग थे। इन तीनों फ़िल्मों में, अभिनेता एक उम्रदराज़, मोटे आदमी की भूमिका निभाते हैं, जो अपने करियर के चरम पर रहे दिग्गज की मात्र एक परछाईं है—सैमी एंड रोजी गेट लेड में वह अतीत से भागता हुआ एक राजनेता है, इन कस्टडी में समय के बीतने पर विलाप करता हुआ एक कवि है, और साइड स्ट्रीट्स में एक ऐसा अभिनेता है जिसके पास अतीत की गौरवशाली यादों के अलावा कुछ नहीं बचा है।
मेरी बातचीत में कई अन्य लोगों की तरह, टोनी ने भी मुझे बताया कि शशि एक पूर्ण पेशेवर थे। निर्देशक कहते हैं, 'वह एक अद्भुत अभिनेता थे। मुझे उनके बारे में जो बात विशेष रूप से याद है, वह यह है कि अन्य सितारों के विपरीत - जो अपनी लाइनें खत्म करके किरदार से बाहर आ जाते हैं, या निर्देशक की ओर देखकर पूछते हैं, "हो गया ना? हमें समझ आ गया?" - शशि तब तक सीन में बने रहते थे जब तक मैं "कट" नहीं बोल देता था।'
तो, टोनी ने शशि के साथ एक खेल शुरू किया, जिसमें वह अपना कॉल टालने लगे। टोनी हंसते हुए कहते हैं, 'कैमरा चालू रखना बहुत मज़ेदार था, जबकि शशि हर पल को जीवंत कर देते थे। मेरे पास क्रू के लिए एक गैर-मौखिक संकेत होता था, इसलिए शशि को पता नहीं चलता था कि मैंने कब 'कट' बोला और वह कमाल की चीज़ें करते थे। वह मेरी उम्मीद से कहीं बेहतर अभिनेता थे!' टोनी को यह भी याद है कि शशि स्थितियों को जल्दी समझ लेते थे और अभिनय करने लगते थे। टोनी कहते हैं, 'औसतन, शशि तीन टेक देते थे और तब तक वह अपने किरदार में माहिर हो जाते थे; उन्हें इससे ज़्यादा समय की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। कभी-

कभी, वह हर टेक में अलग-अलग तरह का प्रदर्शन करते थे। हालांकि, अगर मैं चौथा या पांचवां टेक मांगता, तो उनका प्रदर्शन बिगड़ने लगता था। मुझे नहीं लगता कि इसका उनकी ऊर्जा या शारीरिक स्थिति से कोई लेना-देना था। मेरा मानना है कि ऐसा इसलिए होता था क्योंकि वह मानसिक और रचनात्मक रूप से आगे बढ़ जाते थे।'

फिर भी, यह एक सच्चाई है कि जब तक शशि ने 'साइड स्ट्रीट्स' के लिए हामी भरी, तब तक उनकी तबीयत पूरी तरह ठीक नहीं थी; पत्नी के निधन से वे भावनात्मक रूप से बुरी तरह आहत हो चुके थे और उनका शरीर भी उनका साथ नहीं दे रहा था। टोनी ने मुझे बताया कि शूटिंग के दौरान उनके टखनों में सूजन को लेकर चिंता जताई गई थी।

फिर वो रात आई जब क्रू एक्टर के साथ आखिरी सीन शूट करने वाला था। लेकिन शशि ने कहा कि वो थके हुए हैं। लिन और टोनी कहते हैं, 'वो वाकई थके हुए और चिड़चिड़े लग रहे थे, और उन्होंने तय कर लिया कि वो परफॉर्म नहीं करना चाहते।' लेकिन फिर, उन्हें खुद प्रोडक्शन से जुड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ा। वे बताते हैं, 'पूरा क्रू वहां था, हमने होटल पहले ही बुक कर लिया था, और हमारे पास क्रू को घर भेजने के लिए पैसे नहीं थे। वो शूटिंग के सबसे महंगे दिनों में से एक था।' 'लेकिन शशि ने होटल का दरवाजा बंद कर लिया था! हमने उनसे बाहर आने की बहुत मिन्नतें कीं।' शशि ने उस दिन सिर्फ़ दो ही टेक किए थे, इसलिए उनकी अत्यधिक थकान अजीब थी—लेकिन टोनी समझाते हैं कि उनकी थकान सिर्फ़ शारीरिक नहीं हो सकती थी: 'आप जानते हैं, सीन उनकी मौत से जुड़ा था,' टोनी कहते हैं। 'शायद उन्हें लग रहा था कि वो किसी अंधेरी जगह पर जा रहे हैं।'

आखिरकार, शशि किसी तरह अपने कमरे का दरवाजा खोलने में कामयाब हो गया। वह बाहर आया, नारंगी रंग का रेशमी कुर्ता-पायजामा पहना और 'चोर मचाए शोर' फ़िल्म के गाने 'ले जाएंगे, ले जाएंगे, दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' पर भांगड़ा जैसा नृत्य किया। लिन कहती हैं, 'जब हमने उसे इस अद्भुत नृत्य के लिए राजी कर लिया, तो उसने अपना सब कुछ इसमें झोंक दिया और इतनी खूबसूरती से - और एक ही टेक में - प्रदर्शन किया कि अंत में क्रू ने अनायास ही ताली बजा दी। यह एक खूबसूरत पल था और आप देख सकते थे कि शशि इसे साकार करने के लिए अपनी आत्मा की गहराई में उतर रहे थे - इस बात से पूरी तरह वाकिफ होते हुए कि वह भारी और थका हुआ था।'

शशि पाकिस्तानी कवि हाफ़िज़ जालंधरी की व्यंग्यात्मक कविता 'अभी तो मैं जवान हूं' के पाठ के साथ दृश्य का समापन करते हैं; कवि जानता है कि वह समय के साथ दौड़ रहा है, लेकिन बुढ़ापे के प्रकोप के खिलाफ आक्रोश व्यक्त करता है।

Ye kya gumaan hai badgumaan, samajh na mujh ko naatavaan Khayaal-e-zohd, abhi kahaan? Abhi to main jawaan hun.

(मुझे अपने संदेहों और पतन की आशंकाओं से बख्श दीजिए। संयम—अरे, क्या अभी इसके लिए बहुत जल्दी नहीं है? क्योंकि अभी मैं जवान हूँ।)

आज तक, शशि को उन पंक्तियों को बोलते हुए देखकर मुझे बहुत दुख होता है। हम जानते हैं कि वह अपनी जवानी में कैसे थे और अब हम उन्हें एक पूरी तरह से बदले हुए इंसान के रूप में देखते हैं। फिर भी उनके अंदर का अभिनेता अभी भी पूरी तरह से जीवंत है, और यह उनकी फिल्म 'साइड स्ट्रीट्स' में पूरी तरह से दिखाई देता है - जो उनकी अंतिम फिल्मों में से एक थी, जिसके एक साल बाद 'डर्टी ब्रिटिश बॉयज़' आई।

वैरायटी के समीक्षक डेविड रूनी ने साइड स्ट्रीट्स की मिली-जुली समीक्षा करते हुए (इसे 'बहुत लंबा' लेकिन 'पसंदीदा' बताते हुए) शशि की जमकर प्रशंसा की, "जिनको भूमिका में उनके अपने करियर की विडंबनापूर्ण झलक मिलती है। वे एक ऐसे सितारे का किरदार निभाते हैं जो कभी चमकता था, लेकिन अब अहंकारी और निराश, गरिमामय और दयनीय दोनों है, और धीरे-धीरे हल्के-फुल्के हास्य से करुणा की ओर बढ़ते हुए कहानी के सबसे मार्मिक अंत तक पहुंचते हैं।" यही बात दर्शकों को विशेष रूप से प्रभावित करती है—साइड स्ट्रीट्स के स्टेटन आइलैंड वाले हिस्से का आत्म-संदर्भ। विक्रम ही शशि हैं, और उनके जीवन, जो एक दुर्लभ प्रकार की निराशा से चिह्नित हैं, एक दूसरे का प्रतिबिंब हैं।

हालांकि शशि एक मांग करने वाले अभिनेता नहीं थे, टोनी ने इस्माइल के सुझाव का पालन किया और उन्हें दो सहायक प्रदान किए - न्यूयॉर्क शहर में रहने वाले युवा भारतीय - रोहेना गेरा (जो आज 'कुछ ना कहो' और 'थोड़ा प्यार थोड़ा मैजिक' की पटकथा/कहानीकार और 'व्हाट्स लव गॉट टू डू विद इट?' की निर्देशक के रूप में जानी जाती हैं) और सुबरीना धवन (जो अब 'मॉनसून वेडिंग', 'कमीने' और 'इश्किया' की पटकथा लेखिका के रूप में जानी जाती हैं)। दोनों को शशि के साथ बिताए समय की अच्छी यादें हैं।

1998, साइड स्ट्रीट्स। शशि कपूर फिल्म के कार्यकारी निर्माता इस्माइल मर्चेंट और निर्देशक टोनी गेर्बर (बाएं से दाएं) के साथ। फोटो साभार: सेठ रुबिन। सौजन्य: साइड स्ट्रीट्स प्रोडक्शंस।

रोहेना को याद है कि वो स्टेटन आइलैंड के उस घर के बाहर बैठी थीं जहाँ शशि, आर्ट और शबाना वाले दृश्यों की शूटिंग हुई थी, और उन्हें खास तौर पर शशि कपूर की गर्मजोशी याद आती है। वो बताती हैं कि अभिनेता ने उन्हें नज़रअंदाज़ करने के बजाय, उनके बारे में जानने की उत्सुकता दिखाई—सारा लॉरेंस कॉलेज से स्नातक, फ़िल्मों में रुचि रखने वाली इस युवा भारतीय महिला के बारे में। मैनहट्टन में एक चीनी लंच के दौरान, उन्होंने उनके करियर में मदद करने की कोशिश की और उनसे पूछा कि क्या वो अपने भतीजे ऋषि कपूर की फ़िल्म 'आ अब लौट चलें' के लिए न्यूयॉर्क की टीम में काम करने पर विचार करेंगी। रोहेना कहती हैं, 'बाद में मेरी मुलाकात चिंटू (ऋषि) से हुई, लेकिन यह मेरे लिए सही नहीं था। शशि कपूर हमेशा बहुत ही विनम्र रहे—शालीन और उदार, लेकिन अजीब नहीं। फ़िल्म जगत में अकेली महिला होने के नाते, अक्सर लोग सतर्क रहते हैं, लेकिन वो एक सही, देखभाल करने वाले चाचा की तरह थे।'
दिलचस्प बात यह है कि सबरीना ने बिल्कुल यही खाका पेश किया है। वह फिल्म 'साइड स्ट्रीट्स' के लिए सांस्कृतिक सलाहकार के तौर पर जुड़ी थीं, उन्होंने शशि कपूर की क्लासिक फ़िल्मों के गाने ढूंढे थे, और उन्हें याद है कि स्टार से मिलने को लेकर वह बेहद उत्साहित थीं। वह मुझे बताती हैं, 'मैंने ज़्यादा अभिनेताओं से मुलाकात नहीं की थी, क्योंकि उस समय मैं छात्रा थी। इसलिए, जब मुझे पता चला कि वे भी आम इंसान होते हैं—या कम से कम शशि कपूर तो थे—तो मुझे पहले तो हैरानी हुई। वह आपके पसंदीदा चाचा जैसे हो सकते थे!'
सबरीना को शशि कपूर में एक दुर्लभ प्रकार की विनम्रता भी देखने को मिली। वह कहती हैं कि शबाना के शूटिंग के लिए आने के एक दिन बाद, उन्होंने शशि और अभिनेत्री को एक कोने में बातचीत करते हुए सुना—हिंदी में, जो विदेशियों या प्रवासियों के लिए सांकेतिक भाषा है,' सबरीना कहती हैं। 'शबाना आज़मी ने धीरे से पूछा, "यहाँ कुछ खाने-पीने को है?" और शशि कपूर ने सहजता से जवाब दिया, "पता नहीं, बाहर कुछ बिस्किट-विस्किट, बैगल-शगल पड़े हुए हैं।" उस पल में कुछ बहुत ही प्यारा और दिल को छू लेने वाला था—एक दिग्गज फ़िल्म स्टार को इतनी सरलता से यह कहते हुए सुनना।'
सबरीना आगे कहती हैं: 'शशि कपूर बेहद सभ्य और विनम्र थे। आज के मुंबई में जिस तरह का शिष्टाचार देखने को मिलता है, वैसा उनमें नहीं था। उनका शिष्टाचार जन्मजात और सच्चा था। उनकी शालीनता और परिष्कार वास्तविक था। उनमें कुछ ऐसा था जो पुराने जमाने की याद दिलाता था। उन्हें देखकर मन करता है कि काश उनके जैसे लोग हमेशा जीवित रह पाते।'
'हां,' मैं केवल फुसफुसाकर कह पाती हूं। 'हां, ऐसा ही है।'

नोट्स

1. 1978, रुमटेक: एक लाख इंद्रधनुषों से लिपटा एक मठ, निर्देशक रमेश शर्मा, निर्माता रमेश शर्मा।
2.

1986, नई दिल्ली टाइम्स, निदेशक रमेश शर्मा, निर्माता पी.के. तिवारी, कलाकार शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, ओम पुरी।

[3] 1965, समय, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. बी.आर. चोपड़ा, अभिनीत बलराज साहनी, शर्मिला टैगोर, शशि कपूर।

[4] लॉरेंस वैन गेल्डर, 'एट द मूवीज़', द न्यूयॉर्क टाइम्स, 13 नवंबर 1987।

[5] खालिद मोहम्मद, 'चौथा स्तंभ: वास्तविक और काल्पनिक', खलीज टाइम्स, 13 दिसंबर 2013।

[6] ज्योति वेंकटेश, 'शशि कपूर', फ्रंटलाइन, 14-27 जून 1986।

[7] 2000, हाई फिडेलिटी, निर्देशक: स्टीफन फ्रीर्स, निर्माता: टिम बेवन, रुड सिमंस, अभिनीत: जॉन कुसैक, जैक ब्लैक, लिसा बोनेट।

[8] 2002, डर्टी प्रीटी थिंग्स, निर्देशक: स्टीफन फ्रीर्स, निर्माता: ट्रेसी सीवार्ड, रॉबर्ट जोन्स, अभिनीत: चिवेटेल एजियोफोर, ऑड्रे टॉट्र, सर्गी लोपेज़।

[9] 2006, द क्वीन, निर्देशक स्टीफ़न फ्रीर्स, निर्माता एंडी हैरिस, क्रिस्टीन लैंगन, ट्रेसी सीवार्ड, अभिनीत हेलेन मिरेन, माइकल शीन, जेम्स क्रॉमवेल।

[10] 1985, माई ब्यूटीफुल लॉन्ड्रेट, निर्देशक स्टीफन फ्रीर्स, निर्माता सारा रेडक्लिफ, टिम बेवन, अभिनीत गॉर्डन वार्नेक, डैनियल डे-लुईस, सईद जाफरी।

[11] जॉन मास्टर्स, द डिसीवर्स (न्यूयॉर्क: कैरोल एंड ग्राफ, 1988)।

[12] 1998, एलिज़ाबेथ, निर्देशक शेखर कपूर, निर्माता टिम बेवन, एरिक फेलनर, एलिसन ओवेन, अभिनीत केट ब्लैंचेट, जेफ्री रश, जोसेफ फिएनेस।

[13] 1965, शेक्सपियर वाला, निर्देशक जेम्स आइवरी, निर्माता इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत शशि कपूर, फेलिसिटी केंडल, मधुर जाफरी।

[14] इस्माइल मर्चेंट, माई पैसेज फ्रॉम इंडिया: ए फिल्ममेकर्स जर्नी फ्रॉम बॉम्बे टू हॉलीवुड (न्यूयॉर्क: वाइकिंग स्टूडियो, 2002), पृ. 115.

[15] 1988, द डिसीवर्स, निर्देशक निकोलस मेयर, निर्माता इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत पियर्स ब्रॉसनन, शशि कपूर, सईद जाफरी।

[16] 1982, स्टार ट्रेक II: द रैथ ऑफ़ खान, निर्देशक निकोलस मेयर, निर्माता रॉबर्ट सैलिन, अभिनीत विलियम शैटनर, लियोनार्ड निमोय, डीफॉरेस्ट केली।

[17] जे बॉयर, 'द डिसीवर्स: रिव्यू', ऑरलैंडो सेंटिनल, 17 फरवरी 1989।

[18] हाल हिंसन, 'धोखेबाजों का छूटा हुआ रूपक', द वाशिंगटन पोस्ट, 9 सितंबर 1988।

[19] प्रदीप गुप्ता द्वारा उद्धृत, 'जेम्स बॉन्ड ने शशि कपूर को शुभकामनाएं दीं', द टाइम्स ऑफ इंडिया, 17 मार्च 2011।

[20] 1987, सैमी एंड रोज़ी गेट लेड, निर्देशक स्टीफन फ्रीर्स, निर्माता टिम बेवन, सारा रेडक्लिफ, अभिनीत शशि कपूर, फ्रांसिस बार्बर, क्लेयर ब्लूम।

[21] हनीफ कुरैशी, 'सम टाइम विद स्टीफन', लंदन किल्स मी: थ्री स्क्रीनप्लेज़ एंड फोर एसेज़ (न्यूयॉर्क: पेंगुइन 1992), पृ. 124.

[22]

1972, Siddhartha, dir. Conrad Rooks, prod. Conrad Rooks, starring Shashi Kapoor, Simi Garewal, Romesh Sharma.

[23] 1967, प्रीटी पॉली, निर्देशक: गाय ग्रीन, निर्माता: जॉर्ज डब्ल्यू जॉर्ज, फ्रैंक ग्रैनट, अभिनीत: हेले मिल्स, शशि कपूर, ट्रेवर हॉवर्ड।

[24] 1999, ईस्ट इज़ ईस्ट, निर्देशक: डेमियन ओ'डोनेल, निर्माता: लेस्ली उडविन, अभिनीत: ओम पुरी, लिंडा बैसेट, आर्ची पंजाबी।

[25] हनीफ कुरैशी, 'सम टाइम विद स्टीफन', लंदन किल्स मी: थ्री स्क्रीनप्लेज़ एंड फोर एसेज़ (न्यूयॉर्क: पेंगुइन 1992), पृ. 155–56.

[26] वही, पृष्ठ 151। [27] वही, पृष्ठ 155। [28] वही, पृष्ठ 162।

[29] 1963, द हाउसहोल्डर, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत: शशि कपूर, लीला नायडू, दुर्गा खोटे।

[30] 'माई गर्ल', गीतकार: स्मोकी रॉबिन्सन, रोनाल्ड व्हाइट, संगीतकार: विलियम रॉबिन्सन, रोनाल्ड व्हाइट, कलाकार: ओटिस रेडिंग।

[31] हनीफ कुरैशी, 'सम टाइम विद स्टीफन', लंदन किल्स मी: थ्री स्क्रीनप्लेज़ एंड फोर एसेज़ (न्यूयॉर्क: पेंगुइन 1992), पृ. 183.

[32] विन्सेंट कैनबी, 'फिल्म: सैमी और रोज़ी', द न्यूयॉर्क टाइम्स, 30 अक्टूबर 1987।

[33] पॉलीन केल, 'द करंट सिनेमा: सैमी एंड रोज़ी गेट लेड,' द न्यू यॉर्कर, 16 नवंबर 1987।

[34] 'नवरसा' या 'नौ भावनाओं' की अवधारणा भरत मुनि के नाटकीय सिद्धांत के प्राचीन कार्य, नाट्यशास्त्र की देन है, जो 200 ईसा पूर्व और 200 ईस्वी के बीच लिखा गया था। नौ रसों में श्रृंगार (प्रेम), हास्य (हंसी), करुणा (करुणा), रौद्र (क्रोध), वीरा (साहस), भयनका (आतंक), भीभत्स्य (घृणा), अद्भुत (आश्चर्य) और शांता (शांति) शामिल हैं। देखें भरत मुनि, द नाट्यशास्त्र: क्रिटिकल नोट्स के साथ अंग्रेजी अनुवाद, आद्या रंगाचार्य द्वारा अनुवादित (नई दिल्ली: मुंशीराम, 2014)।

[35] लॉरेंस वैन गेल्डर, 'एट द मूवीज़', द न्यूयॉर्क टाइम्स, 13 नवंबर 1987। [36] वही।

[37] 1985, ए रूम विद ए व्यू, निर्देशक जेम्स आइवरी, निर्माता इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत मैगी स्मिथ, हेलेना बोनहम कार्टर, डेनहोम इलियट।

[38] 1992, हॉवर्ड्स एंड, निर्देशक जेम्स आइवरी, निर्माता इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत एंथनी हॉपकिंस, वैनेसा रेडग्रेव, हेलेना बोनहम कार्टर।

[39] 1993, द रिमेन्स ऑफ द डे, निर्देशक जेम्स आइवरी, निर्माता इस्माइल मर्चेंट, जॉन कैली, माइक निकोल्स, अभिनीत जॉन हेक्राफ्ट, क्रिस्टोफर रीव, एथोनी हॉपकिंस।

[40] 1993, इन कस्टडी, निर्देशक: इस्माइल मर्चेंट, निर्माता: वाहिद चौहान, अभिनीत: शशि कपूर, शबाना आज़मी, ओम पुरी।

[41]

अनीता देसाई, इन कस्टडी (नई दिल्ली: रैंडम हाउस, 2007), पृ. 14. [42] वही, पृष्ठ 45।

[43] इस्माइल मर्चेंट, माई पैसेज फ्रॉम इंडिया: ए फिल्ममेकर्स जर्नी फ्रॉम बॉम्बे टू हॉलीवुड (न्यूयॉर्क: वाइकिंग स्ट्रडियो, 2002), पृ. 124.

[44] इन कस्टडी की क्राइटेरियन कलेक्शन डीवीडी में शशि कपूर के एक साक्षात्कार पर आधारित। [45] वहीं। [46] वहीं।

[47] कैरिन जेम्स, 'समीक्षा/फिल्म: इस्माइल मर्चेंट ने अपनी पहली फीचर फिल्म का निर्देशन किया', द न्यूयॉर्क टाइम्स, 15 अप्रैल 1994।

[48] वहीं। [49] डेरेक एली, 'समीक्षा', वैरायटी, 21 नवंबर 1993।

[50] रीटा केम्पली, 'हिरासत में', द वाशिंगटन पोस्ट, 30 अप्रैल 1994।

[51] 'Aaj Bazaar Mein Pa-ba Joulaan Chalo', lyr. Faiz Ahmed Faiz, comp. Ustad Zakir Hussain, artist Hariharan.

[52] 1982, गांधी, निर्देशक: रिचर्ड एटनबरो, निर्माता: रिचर्ड एटनबरो, अभिनीत: बेन किंग्सले, रोहिणी हट्टंगडी, रोशन सेठ।

[53] 1998, जिन्ना, दिर. जमील देहलवी, प्रो. जमील देहलवी, क्रिस्टोफर ली, शशि कपूर, मारिया ऐटकेन अभिनीत।

[54] 'जिन्ना ऑन द सिल्वरस्क्रीन' देखें, कोलंबिया विश्वविद्यालय, <http://www.columbia.edu/itc/mealac/pritchett/00litlinks/naim/txt_naim_onjinnah.pdf> में, 11 जनवरी 2016 को देखा गया।

[55] फातिमा यामीन के साथ डॉन पत्रिका में 18 अप्रैल 1999 को हुए एक साक्षात्कार में उद्धृत।

[56] सुपन वर्मा द्वारा उद्धृत, 'क्रिस्टोफर ली का जिन्ना का किरदार निभाना वैसा ही है जैसे मुकरी का गांधी का किरदार निभाना', रेडिफ, <http://www.rediff.com/news/apr/05jinnah.htm>, 8 जनवरी 2015 को देखा गया।

[57] 'ट्रबल्ड जिन्ना मूवी ओपन्स', बीबीसी, 26 सितंबर 1998।

[58] सुपन वर्मा द्वारा उद्धृत, 'क्रिस्टोफर ली का जिन्ना का किरदार निभाना वैसा ही है जैसे मुकरी का गांधी का किरदार निभाना', रेडिफ, <http://www.rediff.com/news/apr/05jinnah.htm>, 8 जनवरी 2015 को देखा गया।

[59] वहीं। [60] वहीं।

[61] आयशा फैयाजी सरवारी ने क्रिस्टोफर ली के साथ 2001 में एक साक्षात्कार दिया था।

[62] केविन थॉमस, 'पाकिस्तान के कम ज्ञात नेता जिन्ना को जीवंत करना', लॉस एंजिल्स टाइम्स, 15 दिसंबर 1998।

[63] 'जिन्ना ऑन द सिल्वरस्क्रीन', कोलंबिया विश्वविद्यालय, <http://www.columbia.edu/itc/mealac/pritchett/00litlinks/naim/txt_naim_onjinnah.pdf> में, 11 जनवरी 2016 को देखा गया।

[64] पॉल वैलेली, 'क्या जिन्ना संत थे या पापी?', इंडिपेंडेंट, 13 नवंबर 1998।

बीबीसी द्वारा 11 जून 2015 को प्रकाशित 'क्रिस्टोफर ली की श्रद्धांजलि' में उद्धृत।

1998, साइड स्ट्रीट्स, निर्देशक टोनी गेर्बर, निर्माता ब्रूस वीस, अभिनीत वैलेरिया गोलिनो, शशि कपूर, शबाना आज़मी।

1996, फायर, दिर. दीपा मेहता, प्रो. बॉबी बेदी, दीपा मेहता, शबाना आज़मी, नंदिता दास, जावेद जाफरी अभिनीत।

'Le Jayenge, Le Jayenge, Dilwale Dulhania Le Jayenge', lyr. Inderjeet Singh Tulsi, comp. Ravindra Jain, artists Asha Bhosle, Kishore Kumar.

1974, Chor Machaye Shor, dir. Ashok Roy, prod. N.N. Sippy, starring Shashi Kapoor, Mumtaz, Danny Denzongpa.

1999, डर्टी ब्रिटिश बॉयज़, निर्देशक: असद राजा, निर्माता: फ़राज़ हुसैन, अभिनीत: जॉर्ज क्रिस्टोफ़र, शशि कपूर, असद राजा।

डेविड रूनी, 'समीक्षा: "साइड स्ट्रीट्स"', वैरायटी, 7 अक्टूबर 1998।

2003, Kuch Naa Kaho, dir. Rohan Sippy, prod. Ramesh Sippy, starring Abhishek Bachchan, Aishwarya Rai, Satish Shah.

2008, Thoda Pyaar Thoda Magic, dir. Kunal Kohli, prod. Aditya Chopra, Kunal Kohli, starring Rishi Kapoor, Saif Ali Khan, Rani Mukherjee.

व्हाट्स लव गॉट ट्र ड्र विद इट?, निर्देशक: रोहेना गेरा, निर्माता: रोहेना गेरा।

2001, Monsoon Wedding, dir. Mira Nair, prod. Caroline Baron, Mira Nair, starring Naseeruddin Shah, Lilette Dubey, Shefali Shah.

2009, Kaminey, dir. Vishal Bhardwaj, prod. Ronnie Screwvala, starring Shahid Kapoor, Priyanka Chopra, Deb Mukherjee.

2010, इश्किया, दिर. अभिषेक चौबे, प्रो. रमन मारू, अभिनीत नसीरुद्दीन शाह, विद्या बालन, अरशद वारसी।

1999, Aa Ab Laut Chalen, dir. Rishi Kapoor, prod. Rajiv Kapoor, Rishi Kapoor, Randhir Kapoor, starring Rajesh Khanna, Akshaye Khanna, Aishwarya Rai.

# 7

# चीजे अलग हो जाती है जेनिफर के बाद शशि

जेनिफर केंडल कपूर के जीवन में, कम से कम कुछ समय के लिए, घरेलू जीवन ही सर्वोपरि था। जैसे-जैसे शशि अभिनेता-निर्माता के रूप में अपने करियर में व्यस्त होते गए, जेनिफर ने घर संभालने और अपने तीन बच्चों की परवरिश करने के लिए अभिनेत्री के रूप में अपना पेशा छोड़ दिया।
शायद, 'त्याग दिया' शब्द का चयन उपयुक्त नहीं है, क्योंकि एक साक्षात्कार में जेनिफर कहती हैं कि ऐसा कभी कोई क्षण नहीं था जब वह थिएटर अभिनेत्री के जीवन के प्रति समर्पित न रही हों।

मैंने थिएटर कभी छोड़ा ही नहीं। अगर मुझे तब पता होता कि मैं इतने लंबे समय तक स्टेज से दूर रहूंगी, तो मेरी प्रतिक्रिया बहुत खराब होती। मैं बहुत परेशान हो जाती। मेरे पास अभी भी वह तौलिया है, जिसमें हम मेकअप पोंछने के लिए लिक्विड पैराफिन रखते थे। वह अभी भी मेरे मेकअप बॉक्स में है। ठीक वैसे ही जैसे मैंने अपने आखिरी शो के बाद उसे छोड़ा था। मुझे हमेशा से यह अंधविश्वास रहा है: मुझे लगता था कि अगर मैंने इसे धोया, तो मैं फिर कभी अभिनय नहीं कर पाऊंगी।

थिएटर के प्रति जेनिफर के प्रेम ने ही उन्हें पृथ्वी थिएटर शुरू करने और उसके दैनिक प्रबंधन एवं संचालन की देखरेख करने के लिए प्रेरित किया। और अभिनय के प्रति उनके प्रेम ने ही उन्हें लंबे अंतराल के बाद 36 चौरंगी लेन के साथ सिनेमा में वापसी करने के लिए प्रेरित किया। फिल्म को मिली आलोचनात्मक प्रशंसा के बाद, जेनिफर अचानक सुर्खियों में आ गईं और एक अभिनेत्री के रूप में उनका करियर पुनर्जीवित हो गया। उन्हें फिल्मों के प्रस्ताव मिलने लगे और जल्द ही, उन्होंने हीट एंड डस्ट में मिसेज सान्डर्स की भूमिका निभाई - वह उदास महिला जो हमेशा एक भारतीय नौकर द्वारा छेड़छाड़ किए जाने के डर में जीती रहती थी। लेकिन अब, जब उनके पास अभिनय करने का समय था, तो उनका स्वास्थ्य उनका साथ नहीं दे रहा था।

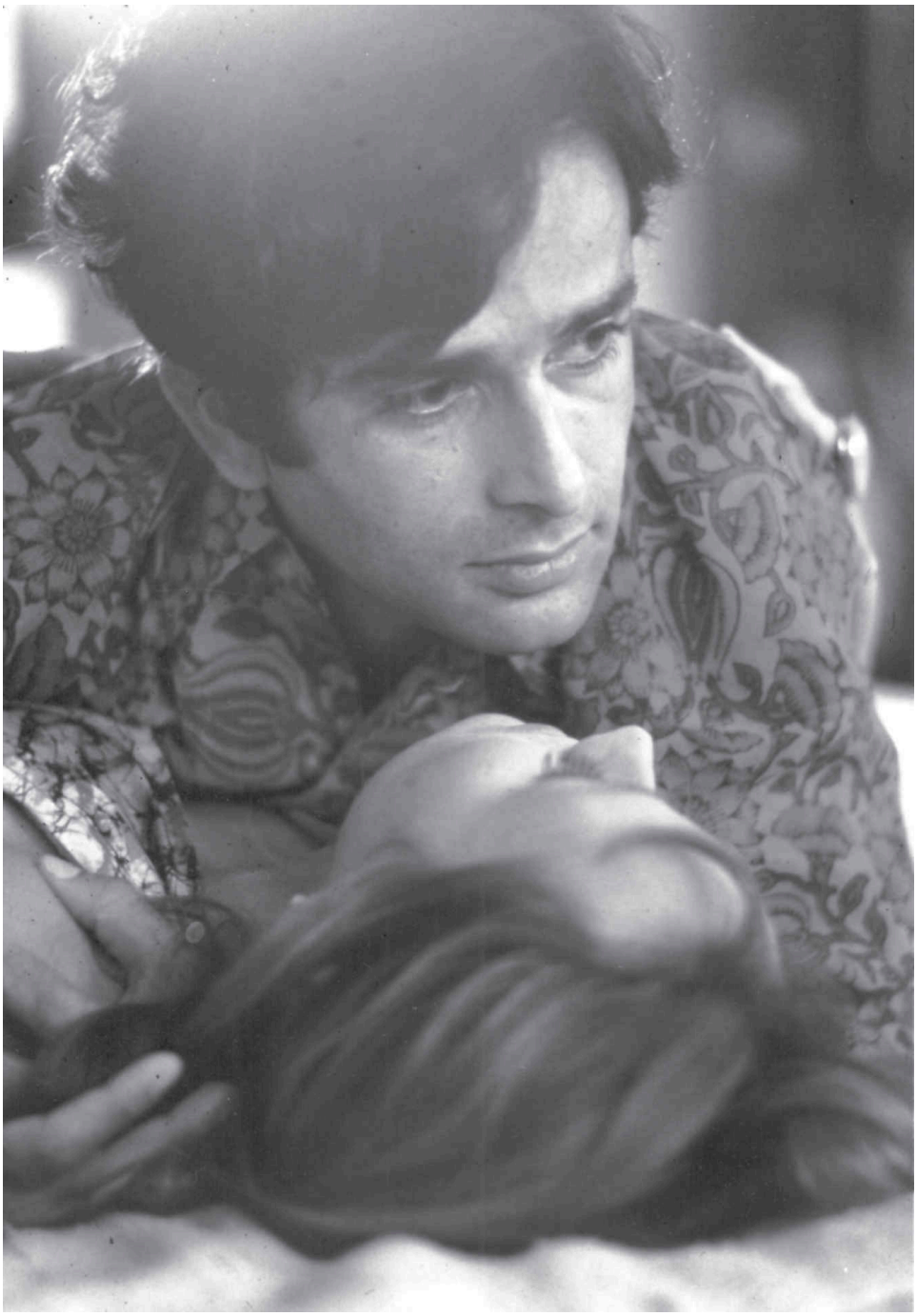

1970, बॉम्बे टॉकी। शशि कपूर अपनी पत्नी जेनिफर केंडल कपूर द्वारा अभिनीत ब्रिटिश लेखिका के साथ एक भावुक क्षण में। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

यह सन् 1983 की बात है। कान फिल्म फेस्टिवल। जेनिफर—जिन्हें तब तक अमीबिक पेचिश से पीड़ित माना जा रहा था—को कैंसर का पता चला। ज्योफ्री केंडल अपनी आत्मकथा में लिखते हैं कि जब उन्हें अपनी बेटी की बीमारी के बारे में पता चला, तो वे लंबे समय तक 'कैंसर' शब्द का उच्चारण नहीं कर सके; उन्होंने इसे 'बीमारी' या 'यह चीज' कहा।

इसी बीच, जेनिफर ने धीरे-धीरे अपनी बीमारी को स्वीकार कर लिया और अनिल धारकर जैसे दोस्तों समेत अपने करीबियों को बताना शुरू कर दिया। अनिल बताते हैं, 'उसने मुझे बताना शुरू किया कि कैसे उन्होंने मुंबई के टाटा मेमोरियल अस्पताल में एक कमरे को वॉलपेपर से सजाने की कोशिश की थी। मैंने उससे पूछा, 'अच्छा, तुम वहाँ क्यों गई थीं?' तो उसने जवाब दिया, 'अनिल, क्या तुम्हें दिखाई नहीं दे रहा? मुझे कैंसर हो गया है।' बस, यही बात थी। इसी तरह मुझे पता चला।'

निदान के बाद, जेनिफर को भारत में सजरी हुई और ऐसा लग रहा था कि वह ठीक हो रही हैं। लेकिन बाद में, लंदन की यात्रा के दौरान और अधिक जांच के बाद, पता चला कि कैंसर फैल गया था। जेनिफर ने अपने अंतिम महीने ब्रिटिश राजधानी में अस्पताल में और अपने माता-पिता के घर पर बिताए।
जेनिफर की मृत्यु से जेफ्री गहरे सदमे में थे। जेनिफर उनकी पहली संतान, उनकी लाडली, उनकी सब कुछ थीं। शोकग्रस्त जेफ्री कहते हैं: 'इस भयानक क्षति के बारे में मैं न तो बोल सकता हूँ और न ही लिख सकता हूँ। ऐसा लगा जैसे पूरा 'वादाओं का देश' जम गया हो।' उनके साथ-साथ उनकी पत्नी, लौरा लिंडेल केंडल भी इस पीड़ा से गुज़रीं। फेलिसिटी केंडल कहती हैं, 'मेरी माँ उसके बाद कभी पहले जैसी नहीं रहीं। वह पहले बहुत धार्मिक थीं, लेकिन उनका विश्वास डगमगा गया। मानो उनकी ज़िंदगी की रोशनी थम सी गई हो।' पूरा परिवार बिना किसी सहारे के डगमगा उठा। फेलिसिटी बताती हैं, 'मेरे माता-पिता साल का आधा समय मेरी बहन के साथ भारत में बिताते थे, लेकिन जब उसकी मृत्यु हुई, तो उन्हें वापस जाना बहुत कष्टदायक लगा, इसलिए उन्होंने जेनिफर के साथ-साथ अपना घर भी खो दिया।'
इस बीच, फेलिसिटी—जो कहती हैं, 'अंत में, जेनिफर की एकमात्र चिंता अपने बच्चों के लिए थी'—दुःख से अभिभूत होने की बात याद करती हैं; एक अखबार के साक्षात्कार में, वह अपनी बहन के बारे में कहती हैं: 'हमारी निकटता इसलिए थी क्योंकि हम बचपन से घुमंतू थे, इसलिए हमारे स्थानीय दोस्त नहीं थे। जब [जेनिफर] की मृत्यु हुई, तो यह केवल उनकी मृत्यु की त्रासदी नहीं थी, बल्कि यह स्वार्थी बात भी थी कि, "मैं यह बात किसे बताऊँगी?" मैं कोई निर्णय नहीं ले पा रही थी।'
और फिर थे शशि। जेनिफर के निधन के बाद, देव बेनेगल बताते हैं कि उनकी मुलाकात पृथ्वी थिएटर में आयोजित एक शोक सभा में कुणाल कपूर से हुई: 'परिवार गोवा से लौटा था और कुणाल ने मुझसे कहा, "पिताजी एक नाव लेकर समुद्र के बीचोंबीच गए थे। जब वे वहाँ पहुँचे, तो पहली बार रोए। सचमुच, वे फूट-फूटकर रोए।"' देव की तरह, मैं भी उस पल की मार्मिकता से दंग रह गया—शशि, विशाल खुले समुद्र में अकेले, शोक मना रहे थे। 'वे जेनिफर की मृत्यु से सचमुच बहुत दुखी थे।'
शोक संवेदनाओं का तांता लग गया और जेनिफर, उसे उत्कृष्ट अभिनेत्री और महान महिला के बारे में प्रेस में खबरें छपीं। 'लेकिन कुछ ही लोगों ने वह देखा था जो हमने देखा था या जिनके पास हमारी यादें थीं,' जेफ्री लिखते हैं। 'लोगों की यादें बहुत कम समय तक सीमित रहती हैं, और ऐसा लगता है कि कोई भी यह कल्पना नहीं करता कि उनके समय से पहले वास्तव में कुछ घटित हुआ था।'

*

जेनिफर केंडल कपूर के निधन के बाद भी शशि कपूर ने काम करना जारी रखा और उनके कुछ बेहतरीन काम शोक के इस दौर में ही सामने आए। लेकिन उनके अंदर कुछ टूट भी गया था। हनीफ कुरैशी, जिन्होंने शशि कपूर के साथ उनकी पत्नी के निधन के दो साल बाद 'सेमी एंड रीजी गेट लेड' में काम किया था, कहते हैं, 'मुझे लगता है कि जेनिफर की मौत उनके लिए एक बड़ा झटका था। इसने उन्हें पूरी तरह से तोड़ दिया था।'
जेनिफर शशि के जीवन का प्यार थीं, उनका सच्चा सहारा थीं। उनकी मृत्यु के बाद, शशि दिशाहीन हो गए। सिमी गरेवाल मुझे बताती हैं, 'जेनिफर ने उनके व्यक्तित्व का एक बड़ा हिस्सा अपने कब्जे में ले लिया था—या कहें कि शशि ने खुद को उनके हवाले कर दिया था। और वे दोनों एक हो गए थे। जेनिफर के जाने के बाद, शशि संघर्ष करते रहे, लेकिन खुद को नहीं पहचान पाए। उनके व्यक्तित्व का वह विशाल हिस्सा जो जेनिफर से जुड़ा था—अब खाली पड़ा था। एक शून्य। मैं उनसे लंदन में इस्माइल मर्चेंट के साथ डिनर पर मिली थी और मैंने देखा कि वे संघर्ष कर रहे थे। वे बेदल गए थे—वे खुद नहीं थे।'
अनिल धारकर, जो हमेशा से उनके मित्र रहे, शशि के भावनात्मक पतन के साक्षी थे। कभी-कभी, अभिनेता उन पर निर्भर रहते थे—ठीक वैसे ही जैसे कभी जेनिफर पर रहे होंगे—अजीबोगरीब सामाजिक परिस्थितियों से निपटने में मदद के लिए—जैसे कि जब सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय उनसे किसी विदेशी अतिथि को रात्रिभोज पर आमंत्रित करने का अनुरोध करता था। अनिल बताते हैं, 'फिर वह मुझे फोन करते और विनती करते: "देखिए, मेरे यहाँ एक बहुत ही उबाऊ अतिथि रात्रिभोज पर आए हैं, क्या आप मेरा साथ देंगे?" और मैं ऐसा करता। लेकिन जब अतिथि चले जाते, तो शशि सचमुच मुझे बाहर धकेल देते।'
फिर, अनिल और शशि के करीबी लोगों ने अभिनेता की शारीरिक हालत बिगड़ते हुए देखी। जेनिफर द्वारा उन पर लगाए गए सख्त अनुशासन के अभाव में, अभिनेता अपनी दो सबसे बड़ी कमजोरियों - खाने और पीने - में लिप्त होने लगे। अनिल को याद है कि वह कभी-कभी दोपहर के भोजन के लिए उनके घर जाते थे और एक गिलास बीयर मांगते थे, लेकिन उन्हें पता चलता था कि शशि सुबह से ही वोदका पी रहे थे। अनिल बताते हैं, 'जैसे ही उनका गिलास खाली होता, उनके नौकर तुरंत दूसरा गिलास ला देते थे। उन्हें पूछने की भी जरूरत नहीं पड़ती थी। उन्हें ठीक-ठीक पता होता था कि उन्हें अपना पेय खत्म करने में कितना समय लगता है और वे अगला गिलास तैयार रखते थे। दोपहर के भोजन के अंत तक, वह पूरी तरह नशे में धुत हो जाते थे।'
अनिल आगे बताते हैं, 'मैंने कई बार उसे समझाने की कोशिश की। दरअसल, संजना और कुणाल कहते थे, "अरे, कुछ तो करो, वो तुम्हारी बात सुनता है!" और मैं जवाब देता था, "यह एक ऐसा मामला है जिसमें वो मेरी बात बिल्कुल नहीं सुनता।" तब वे कहते थे, "ज़्यादा बार आओ क्योंकि जब तुम यहाँ होते हो, तो कम से कम वो घूमता तो है। वरना, वो बस बैठा रहता है।" तो मैंने वैसा ही किया।'

जैसे-जैसे शशि दुख और बीमारी के दुष्चक्र में फंसते गए, वे कपूर परिवार के उस कुख्यात सिंड्रोम का शिकार हो गए—यानी बहुत जल्दी और बहुत ज़्यादा वज़न बढ़ जाना। उनका स्वास्थ्य तेज़ी से बिगड़ने लगा। उन्हें एटलस अपार्टमेंट्स छोड़कर जुहू जाना पड़ा, जहां उनके बेटे कुणाल उनकी देखभाल कर सकें। मधु जैन बताती हैं, 'इससे उनकी पूरी ज़िंदगी बदल गई।' 'वे दक्षिण मुंबई के रहने वाले थे,' और उनका दावा है कि इस बदलाव ने सितारे के अकेलेपन और बढ़ते अवसाद को और बढ़ा दिया। अनिल आगे कहते हैं, 'मैं कुछ बार जुहू गया था, लेकिन सच में, उन्होंने बहुत कम बोलना शुरू कर दिया था।' सिमी, अपनी विशिष्ट अंतर्दृष्टि के साथ, कहती हैं, 'ऐसा लगता था जैसे शशि ने आंतरिक संघर्ष छोड़ दिया हो। वे लगभग एकांतवासी बन गए थे।'

फिर आया साल 2005। इस्माइल मर्चेंट का निधन हो गया; उनकी उम्र मात्र अड़सठ वर्ष थी। संजना उस शख्स के बारे में कहती हैं, जो उनके परिवार का हिस्सा बन चुका था, 'इस्माइल उन शख्सियतों में से एक थे जिन्हें अमर रहना चाहिए था। उनकी मृत्यु नहीं होनी चाहिए थी। यह सरासर अन्याय था। मुझे खुशी है कि जब मेरे पिताजी को यह खबर मिली, तब मैं उनके साथ थी।'

शशि को जब अपने प्रिय निर्माता के निधन की खबर मिली, तो वह गहरे सदमे में डूब गए; उनका दुख और भी बढ़ गया, मानो एक के बाद एक दुख बढ़ता जा रहा हो। एक साल बाद जब जेम्स आइवरी भारत आए, इस्माइल की कब्र पर श्रद्धांजलि अर्पित की और फिर शशि से मिलने गए—जो मर्चेंट-आइवरी बैनर के पहले प्रमुख अभिनेता थे—तो उन्होंने पाया कि शशि अब वह सितारा नहीं रहे थे जिन्हें वह जानते थे, बल्कि अपने पुराने रूप की परछाईं मात्र रह गए थे, भावनात्मक रूप से अलग-थलग। जेम्स कहते हैं, 'मैं यह नहीं कह सकता कि यह जेनिफर के निधन के शोक का ही एक रूप था। लेकिन शशि की जवानी ढल चुकी थी, वह बूढ़े होने लगे थे। हमारा आपस में कोई जुड़ाव नहीं रहा।'

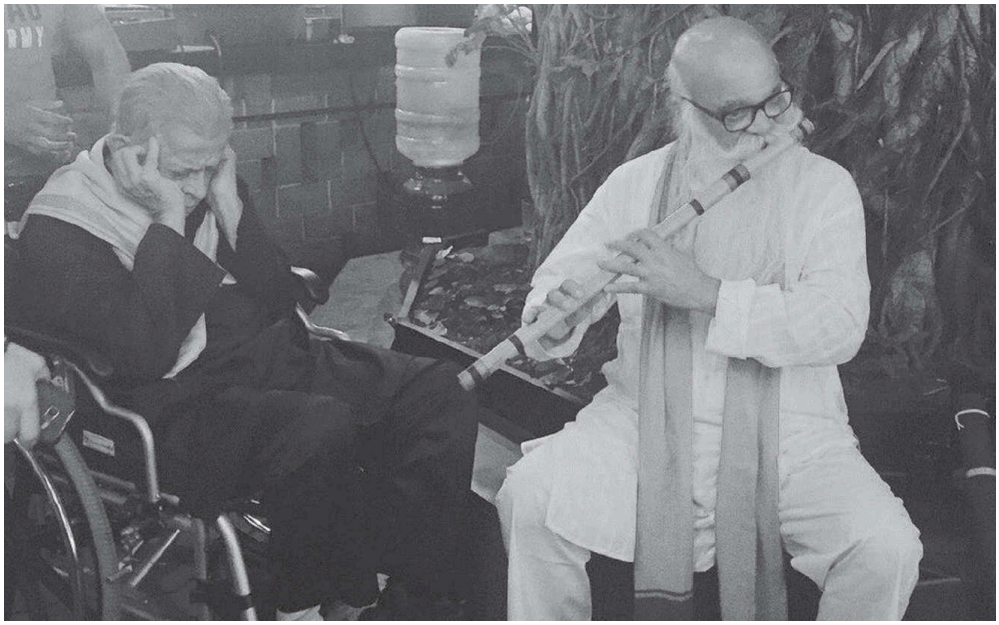

शशि कपूर पृथ्वी थिएटर में संगीत में लीन थे। सौजन्य: ज़ोरान साहेर।

बाद में, सिमी ने यश राज फिल्म्स स्टूडियो में एक पुरस्कार समारोह में शशि को देखा—वह स्टार व्हीलचेयर पर थे, उनकी बेटी उनके साथ थीं। जैसे ही सिमी अपने पुराने सह-कलाकार के पास पहुंचीं, संजना कपूर ने उन्हें आगाह किया। सिमी याद करती हैं, 'उन्होंने मुझसे कहा, "उन्हें स्ट्रोक हुआ है, इसलिए उनका एक हिस्सा लकवाग्रस्त है। उन्हें दिल का दौरा भी पड़ा है और कई अन्य समस्याएं भी हैं। उन्हें लोगों के नाम याद नहीं रहते। इसलिए परेशान मत होना। मैं बस तुम्हें चेतावनी दे रही हूं।"'

फिर वह आगे कहती हैं, 'मेरे लिए यह मायने नहीं रखता था कि शशि मुझे याद रखता है या नहीं। मुझे फिर भी उसके पास जाना था। मैं झुकी, उसके थके हुए चेहरे की ओर देखा। उसकी नज़रें धीरे-धीरे उठीं और मुझ पर टिक गईं। उसने कहा, "हेलो, सिमी!" मुझे हंसी भी आई और रोना भी। फिर, मेरा मन किया कि बस उसे गले लगा लूं।'

जैसे-जैसे सिमी बोलती है, ऐसा लगता है मानो मुझे शशि की अंतिम फिल्म से पहले वाली फिल्म, हाफ़िज़ जालंधरी की कविता की गूँज सुनाई दे रही हो:

तरब-फ़िज़ा, आलम-रुबा, असर दान-ए-साज़,
Jigar mein aag de lagaa.
Har ik lab pe ho sadaa, na haath rok saaqiyaa;

Pilaaye jaa, pilaaye jaa, pilaaye jaa—
Abhi to main jawaan hoon.

(गीतकार, रात भर गाते रहो.)
मेरे जीवन में उस आग को फिर से जगाओ।
शराब बनाने वाले, अरे, भाग मत जाना;
हमारे लिए, हमारे लिए, हमारे लिए—
क्योंकि आज रात मैं अभी भी जवान हूँ।

नोट्स

1. सुरेंद्र भाटिया द्वारा उद्धृत, 'जेनिफर कपूर कपूर खानदान में होने के बारे में बात करने के लिए हमारे अभिलेखागार से वापस आ गई हैं', सोसाइटी, 7 जून 2013।

2. 1981, 36 चौरंगी लेन, दिर। अपर्णा सेन, प्रो. शशि कपूर, जेनिफर केंडल, देबाश्री रॉय, धृतिमान चटर्जी अभिनीत।

3. 1983, हीट एंड डस्ट, निर्देशक जेम्स आइवरी, निर्माता इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत जूली क्रिस्टी, ग्रेटा स्काची, शशि कपूर।

4. जेफ्री केंडल, द शेक्सपियर वॉलह: एक आत्मकथा (लंदन: सिडगविच एंड जैक्सन, 1986), पृ. 172.

5. वही।

6. रेबेका हार्डी द्वारा लिखित 'मेरी प्यारी बहन की मृत्यु ने मेरा जीवन कैसे बदल दिया: फेलिसिटी केंडल ने बताया कि भारत की वापसी यात्रा ने बचपन की यादों को कैसे ताजा कर दिया', मेल ऑनलाइन, <http://www.dailymail.co.uk/femail/article-2142393/Felicity-Kendal-reveals-return-trip-India-stirred-childhood-memories.html#ixzz3wwIvYyuZ> में उद्धृत, 11 जनवरी 2016 को देखा गया।

7. वही।

8. जेफ्री केंडल, द शेक्सपियर वॉलह: एक आत्मकथा (लंदन: सिडगविच एंड जैक्सन, 1986), पृ. 173.

9. 1987, सैमी एंड रोज़ी गेट लेड, निर्देशक स्टीफन फ्रीयर्स, निर्माता टिम बेवन, सारा रेडक्लिफ, अभिनीत शशि कपूर, फ्रांसिस बार्बर, क्लेयर ब्लूम।

10. 1998, साइड स्ट्रीट्स, निर्देशक टोनी गेर्बर, निर्माता ब्रूस वीस, अभिनीत वैलेरिया गोलिनो, शशि कपूर, शबाना आज़मी।

# शशि कपूर की फिल्मों की सूची

## इस पुस्तक में उल्लिखित शशि कपूर अभिनीत फिल्मों की सूची

1951, Awara, dir. Raj Kapoor, prod. Raj Kapoor, starring Prithviraj Kapoor, Raj Kapoor, Nargis, Shashi Kapoor.

1961, Char Diwari, dir. Krishan Chopra, prod. Jagan Prasad Sharma, starring Shashi Kapoor, Nanda, Manmohan Krishna.

1961, धर्मपुत्र, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. बी.आर. चोपड़ा, अभिनीत शशि कपूर, माला सिन्हा, रहमान।

1962, प्रेम पत्र, दिर. बिमल रॉय, प्रो. बिमल रॉय, शशि कपूर, साधना, सीमा देव अभिनीत।

1963, द हाउसहोल्डर, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत: शशि कपूर, लीला नायडू, दुर्गा खोटे।

1964, Benazir, dir. S. Khalil, prod. Bimal Roy, starring Ashok Kumar, Meena Kumari, Shashi Kapoor.

1965, Jab Jab Phool Khile, dir. Suraj Prakash, prod. Chetan K., starring Shashi Kapoor, Nanda, Agha.

1965, Mohabbat Isko Kahete Hain, dir. Akhtar Mirza, starring Nanda, Shashi Kapoor, Ramesh Deo.

1965, शेक्सपियर वाला, निर्देशक जेम्स आइवरी, निर्माता इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत शशि कपूर, फेलिसिटी केंडल, मधुर जाफरी।

1965, समय, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. बी.आर. चोपड़ा, अभिनीत बलराज साहनी, शर्मिला टैगोर, शशि कपूर।

1966, Pyar Kiye Jaa, dir. C.V. Sridhar, starring Shashi Kapoor, Kalpana, Mumtaz.

1967, आमने-सामने, दिर. सूरज प्रकाश, प्रो. सूरज प्रकाश, शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, प्रेम चोपड़ा अभिनीत।

1967, प्रीटी पॉली, निर्देशक: गाय ग्रीन, निर्माता: जॉर्ज डब्ल्यू जॉर्ज, फ्रैंक ग्रैनट, अभिनीत: हेले मिल्स, शशि कपूर, ट्रेवर हॉवर्ड।

1968, Haseena Maan Jayegi, dir. Prakash Mehra, prod. S.M. Abbas, starring Shashi Kapoor, Babita, Johnny Walker.

1969, Pyar Ka Mausam, dir. Nasir Hussain, prod. Nasir Hussain, starring Shashi Kapoor, Asha Parekh, Bharat Bhushan.

1970, बॉम्बे टॉकी, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत: शशि कपूर, जेनिफर केंडल, जिया मोहियुद्दीन।

1970, सुहाना सफ़र, दिर. विजय, प्रो. आर.सी. कुमार, अभिनीत शाशि कपूर, शामिला टैगोर, लालिता पवार।

1971, शर्मीली, दिर. समीर गांगुली, प्रो. सुबोध मुखर्जी, शशि कपूर, राखी, नज़ीर हुसैन अभिनीत।

1972, Siddhartha, dir. Conrad Rooks, prod. Conrad Rooks, starring Shashi Kapoor, Simi Garewal, Romesh Sharma.

1973, आ गले लग जा, दिर। मनमोहन देसाई, प्रो. ए.के. नाडियाडवाला, शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, शत्रुघ्न सिन्हा अभिनीत।

1974, Chor Machaye Shor, dir. Ashok Roy, prod. N.N. Sippy, starring Shashi Kapoor, Mumtaz, Danny Denzongpa.

1974, Paap Aur Punya, dir. Prayag Raj, prod. Shyam Kumar Shivdasani, starring Shashi Kapoor, Sharmila Tagore, Aruna Irani.

1974, Roti Kapada Aur Makaan, dir. Manoj Kumar, prod. Manoj Kumar, starring Manoj Kumar, Shashi Kapoor, Amitabh Bachchan, Zeenat Aman.

1974, साक्षी, दिर. राज मार्ब्रोस, अभिनीत शशि कपूर, राखी, उत्पल दत्त।

1975, Deewaar, dir. Yash Chopra, prod. Gulshan Rai, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Neetu Singh, Parveen Babi.

1976, फकीरा, दिर. सी.पी. दीक्षित, प्रो. एन.एन. सिप्पी, शशि कपूर, शबाना आज़मी, डैनी डेन्जोंगपा अभिनीत।

1976, Kabhi Kabhie, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Raakhee, Simi Garewal, Waheeda Rehman, Rishi Kapoor, Neetu Singh.

1977, दूसरा आदमी, दिर. रमेश तलवार, प्रो. यश चोपड़ा, ऋषि कपूर, राखी, शशि कपूर, नीतू सिंह अभिनीत।

1977, Immaan Dharam, dir. Desh Mukherjee, prod. Premji, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Sanjeev Kumar, Rekha.

1978, Junoon, dir. Shyam Benegal, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Shabana Azmi, Jennifer Kendal.

1978, Satyam Shivam Sundaram, dir. Raj Kapoor, prod. Raj Kapoor, starring Shashi Kapoor, Zeenat Aman, Padmini Kolhapure.

1978, Trishul, dir. Yash Chopra, prod. Gulshan Rai, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Hema Malini, Raakhee.

1979, Gautam Govinda, dir. Subhash Ghai, prod. Shyam Sunder Shivdasani, starring Shashi Kapoor, Shatrughan Sinha, Moushumi Chatterjee.

1979, Kaala Patthar, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Shatrughan Sinha, Neetu Singh, Parveen Babi.

1979, Suhaag, dir. Manmohan Desai, prod. Rajinder Kumar Sharma, Shakti Subhash Sharma, Prakash Trehan, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Rekha, Parveen Babi.

1980, शान, दिर. रमेश सिप्पी, प्रो. जी.पी. सिप्पी, अभिनीत सुनील दत्त, अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, राखी, परवीन बाबी।

1981, Kalyug, dir. Shyam Benegal, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Rekha, Raj Babbar.

1981, Silsila, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Sanjeev Kumar, Rekha, Jaya Bhaduri.

1982, Namak Halaal, dir. Prakash Mehra, prod. Satyendra Pal, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Smita Patil, Waheeda Rehman, Parveen Babi.

1982, Vijeta, dir. Govind Nihalani, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Rekha, Kunal Kapoor.

1983, हीट एंड डस्ट, निर्देशक जेम्स आइवरी, निर्माता इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत जूली क्रिस्टी, ग्रेटा स्काची, शशि कपूर।

1986, नई दिल्ली टाइम्स, निर्देशक रमेश शर्मा, निर्माता पी.के. तिवारी, कलाकार शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, ओम पुरी।

1987, सैमी एंड रोज़ी गेट लेड, निर्देशक स्टीफन फ्रीर्स, निर्माता टिम बेवन, सारा रेडक्लिफ, अभिनीत शशि कपूर, फ्रांसिस बार्बर, क्लेयर ब्लूम।

1988, द डिसीवर्स, निर्देशक निकोलस मेयर, निर्माता इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत पियर्स ब्रॉसनन, शशि कपूर, सईद जाफरी।

1993, इन् कस्टडी, निर्देशक: इस्माइल मर्चेंट, निर्माता: वाहिद चौहान, अभिनीत: शशि कपूर, शबाना आज़मी, ओम पुरी।

1998, जिन्ना, दिर. जमील देहलवी, प्रो. जमील देहलवी, क्रिस्टोफर ली, शशि कपूर, मारिया ऐटकेन अभिनीत।

1998, साइड् स्ट्रीट्स, निर्देशक टोनी गेर्बर, निर्माता ब्रूस वीस, अभिनीत वैलेरिया गोलिनो, शशि कपूर, शबाना आज़मी।

1999, डर्टी ब्रिटिश बॉयज़, निर्देशक: असद राजा, निर्माता: फ़राज़ हुसैन, अभिनीत: जॉर्ज क्रिस्टोफ़र, शशि कपूर, असद राजा।

इस पुस्तक में उल्लिखित शशि कपूर द्वारा निर्मित फिल्मों की सूची

1978, Junoon, dir. Shyam Benegal, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Shabana Azmi, Jennifer Kendal.

1981, 36 चौरंगी लेन, दिर। अपर्णा सेन, प्रो. शशि कपूर, जेनिफर केंडल, देबाश्री रॉय, धृतिमान चटर्जी अभिनीत।

1981, Kalyug, dir. Shyam Benegal, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Rekha, Raj Babbar.

1982, Vijeta, dir. Govind Nihalani, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Rekha, Kunal Kapoor.

1984, Utsav, dir. Girish Karnad, prod. Shashi Kapoor, starring Shekhar Suman, Rekha, Shashi Kapoor.

1991, Ajooba, dir. Shashi Kapoor, prod. Shashi Kapoor, starring Amitabh Bachchan, Rishi Kapoor, Dimple Kapadia.

इस पुस्तक में शशि कपूर द्वारा निर्देशित एकमात्र फिल्म का उल्लेख किया गया है।

1991, Ajooba, dir. Shashi Kapoor, prod. Shashi Kapoor, starring Amitabh Bachchan, Rishi Kapoor, Dimple Kapadia.

शशि कपूर अभिनीत फिल्मों की सूची, जिनमें उनके कुछ सह-कलाकार भी शामिल हैं।

### Amitabh Bachchan

1974, Roti Kapada Aur Makaan, dir. Manoj Kumar, prod. Manoj Kumar, starring Manoj Kumar, Shashi Kapoor, Amitabh Bachchan, Zeenat Aman.

1975, Deewaar, dir. Yash Chopra, prod. Gulshan Rai, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Neetu Singh, Parveen Babi.

1976, Kabhi Kabhie, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Raakhee, Simi Garewal, Waheeda Rehman, Rishi Kapoor, Neetu Singh.

1977, Immaan Dharam, dir. Desh Mukherjee, prod. Premji, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Sanjeev Kumar, Rekha.

1978, Trishul, dir. Yash Chopra, prod. Gulshan Rai, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Hema Malini, Raakhee.

1979, Ahsaas, dir. Surindara Suri, prod. G.P. Sippy, starring Shashi Kapoor, Simi Garewal, Amitabh Bachchan.

1979, Kaala Patthar, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Shatrughan Sinha, Neetu Singh, Parveen Babi.

1979, Suhaag, dir. Manmohan Desai, prod. Rajinder Kumar Sharma, Shakti Subhash Sharma, Prakash Trehan, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Rekha, Parveen Babi.

1980, Do Aur Do Paanch, dir. Rakesh Kumar, prod. C. Dhandayuthapani, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Hema Malini, Parveen Babi.

1980, शान, दिर. रमेश सिप्पी, प्रो. जी.पी. सिप्पी, अभिनीत सुनील दत्त, अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, राखी, परवीन बाबी।

1981, Silsila, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Sanjeev Kumar, Rekha, Jaya Bhaduri.

1982, Namak Halaal, dir. Prakash Mehra, prod. Satyendra Pal, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Smita Patil, Waheeda Rehman, Parveen Babi.

1991, Akayla, dir. Ramesh Sippy, prod. Mohammad Riaz, Mushir Alam, starring Amitabh Bachchan, Amrita Singh, Shashi Kapoor.

### Asha Parekh

1968, Kanyadaan, dir. Mohan Segal, prod. Rajendra Bhatia, starring Asha Parekh, Shashi Kapoor, Bela Bose.

1969, Pyar Ka Mausam, dir. Nasir Hussain, prod. Nasir Hussain, starring Shashi Kapoor, Asha Parekh, Bharat Bhushan.

### बबीता

1968, Haseena Maan Jayegi, dir. Prakash Mehra, prod. S.M. Abbas, starring Shashi Kapoor, Babita, Johnny Walker.

1969, Ek Shriman Ek Shrimati, dir. Bhappi Sonie, prod. Surinder Kapoor, starring Shashi Kapoor, Babita, Prem Chopra.

### हेमा मालिनी

1969, Jahan Pyar Mile, dir. Lekh Tandon, prod. Lekh Tandon, starring Shashi Kapoor, Hema Malini, Nadira.

1970, अभिनेत्री, दिर. सुबोध मुखर्जी, प्रो. सुबोध मुखर्जी, शशि कपूर, हेमा मालिनी, देब मुखर्जी अभिनीत।

1976, Aap Beati, dir. Mohan Kumar, prod. Mohan Kumar, starring Shashi Kapoor, Hema Malini, Ashok Kumar.

1976, नाचू उठे संसार, दिर. याकूब हसन रिज़वी, प्रो. मोहम्मद सरोश, शशि कपूर, हेमा मालिनी, सिमी गरेवाल अभिनीत।

1978, Apna Khoon, dir. Babbar Subhash, prod. S.K. Kapur, starring Shashi Kapoor, Hema Malini, Ashok Kumar.

1978, Trishul, dir. Yash Chopra, prod. Gulshan Rai, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Hema Malini, Raakhee.

1980, Do Aur Do Paanch, dir. Rakesh Kumar, prod. C. Dhandayuthapani, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Hema Malini, Parveen Babi.

1981, Kranti, dir. Manoj Kumar, prod. Manoj Kumar, starring Shashi Kapoor, Dilip Kumar, Hema Malini, Parveen Babi.

1981, Krodhi, dir. Subhash Ghai, prod. Ranjit Virk, starring Shashi Kapoor, Zeenat Aman, Hema Malini.

1981, Maan Gaye Ustad, dir. Shibu Mitra, prod. S.K. Kapur, starring Shashi Kapoor, Hema Malini, Amjad Khan.

1985, Aandhi-Toofan, dir. Babbar Subhash, prod. Pahlaj Nihalani, starring Shashi Kapoor, Hema Malini, Danny Denzongpa.

1987, Anjaam, dir. T. Hariharan, prod. Ramesh Tiwari, starring Shashi Kapoor, Hema Malini, Satish Shah.

## मीना कुमारी

1964, Benazir, dir. S. Khalil, prod. Bimal Roy, starring Ashok Kumar, Meena Kumari, Shashi Kapoor.

## मुमताज

1974, Chor Machaye Shor, dir. Ashok Roy, prod. N.N. Sippy, starring Shashi Kapoor, Mumtaz, Danny Denzongpa.

1975, Prem Kahani, dir. Raj Khosla, prod. Lekhraj Khosla, starring Rajesh Khanna, Shashi Kapoor, Mumtaz.

## नंदा

1961, Char Diwari, dir. Krishan Chopra, prod. Jagan Prasad Sharma, starring Shashi Kapoor, Nanda, Manmohan Krishna.

1962, Mehndi Lagi Mere Haath, dir. Suraj Prakash, prod. Hiren Khera, starring Ashok Kumar, Nanda, Shashi Kapoor.

1965, Jab Jab Phool Khile, dir. Suraj Prakash, prod. Chetan K., starring Shashi Kapoor, Nanda, Agha.

1965, Mohabbat Isko Kahete Hain, dir. Akhtar Mirza, starring Nanda, Shashi Kapoor, Ramesh Deo.

1966, Neend Hamari Khwab Tumhare, dir. Shiv Sahni, prod. Hans Choudhary, starring Shashi Kapoor, Nanda, Balraj Sahni.

1968, Juari, dir. Suraj Prakash, prod. Nirmal Sirkar, starring Shashi Kapoor, Nanda, Tanuja.

1969, Raja Saab, dir. Suraj Prakash, prod. Limelight, starring Shashi Kapoor, Nanda, Kamal Kapoor.

1970, रूठा ना करो, दिर. सुन्दर दार, प्रोड. बिश्वनाथ प्रसाद शाहाबादी, अभिनीत शशि कपूर, नंदा, कुमारी नाज़।

## नीतू सिंह

1975, Deewaar, dir. Yash Chopra, prod. Gulshan Rai, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Neetu Singh, Parveen Babi.

1976, Kabhi Kabhie, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Raakhee, Simi Garewal, Waheeda Rehman, Rishi Kapoor, Neetu Singh.

1976, Shankar Dada, dir. Shibu Mitra, prod. S.K. Kapur, starring Shashi Kapoor, Neetu Singh, Ashok Kumar.

1977, दूसरा आदमी, दिर. रमेश तलवार, प्रो. यश चोपड़ा, ऋषि कपूर, राखी, शशि कपूर, नीतू सिंह अभिनीत।

1978, हीरालाल पन्नालाल, दिर. अशोक राय, प्रो. अशोक रॉय, शशि कपूर, जीनत अमान, नीतू सिंह अभिनीत।

1979, Duniya Meri Jeb Mein, dir. Tinnu Anand, prod. Bitu Anand, Naresh Malhotra, starring Rishi Kapoor, Shashi Kapoor, Neetu Singh.

1979, Kaala Patthar, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Shatrughan Sinha, Neetu Singh, Parveen Babi.

1980, काला पानी, दिर. शिबू मित्रा, प्रो. बी. गुप्ता, अभिनीत शशि कपूर, नीतू सिंह, अजीत।

1981, Ek Aur Ek Gyarah, dir. Ashok Roy, starring Shashi Kapoor, Neetu Singh, Vinod Khanna.

1982, दो गुरु, दिर. रवि टंडन, मुख्य भूमिका में शशि कपूर, नीतू सिंह, प्राण।

## परवीन बाबी

1975, Deewaar, dir. Yash Chopra, prod. Gulshan Rai, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Neetu Singh, Parveen Babi.

1978, आहुति, दिर. अशोक वी. भूषण, प्रो. रामचंद बशोमल, रीता शाह, आर सोनी, राजेंद्र कुमार, शशि कपूर, परवीन बाबी अभिनीत।

1979, चोर सिपाही, दिर. प्रयाग राज, प्रो. श्याम सुंदर शिवदासानी, शशि कपूर, परवीन बाबी, शबाना आज़मी अभिनीत।

1979, Kaala Patthar, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Shatrughan Sinha, Neetu Singh, Parveen Babi.

1979, Suhaag, dir. Manmohan Desai, prod. Rajinder Kumar Sharma, Shakti Subhash Sharma, Prakash Trehan, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Rekha, Parveen Babi.

1980, Do Aur Do Paanch, dir. Rakesh Kumar, prod. C. Dhandayuthapani, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Hema Malini, Parveen Babi.

1980, शान, दिर. रमेश सिप्पी, प्रो. जी.पी. सिप्पी, अभिनीत सुनील दत्त, अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, राखी, परवीन बाबी।

1981, Kranti, dir. Manoj Kumar, prod. Manoj Kumar, starring Shashi Kapoor, Dilip Kumar, Hema Malini, Parveen Babi.

1982, Namak Halaal, dir. Prakash Mehra, prod. Satyendra Pal, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Smita Patil, Waheeda Rehman, Parveen Babi.

1983, दूर्देश, दिर. अंबरीश संगल, प्रो. शमीम अहमद, जगदीश भरूस, शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, परवीन बाबी अभिनीत।

## Raakhee

1971, शर्मीली, दिर. समीर गांगुली, प्रो. सुबोध मुखर्जी, शशि कपूर, राखी, नज़ीर हुसैन अभिनीत।

1972, Jaanwar Aur Insaan, dir. Tapi Chanakya, prod. Sandow M.M.A. Chinnappa Devar, starring Shashi Kapoor, Raakhee, Shabnam.

1974, साक्षी, दिर. राज मार्ब्रोस, अभिनीत शशि कपूर, राखी, उत्पल दत्त।

1976, Kabhi Kabhie, dir. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Raakhee, Simi Garewal, Waheeda Rehman, Rishi Kapoor, Neetu Singh.

1977, दूसरा आदमी, दिर. रमेश तलवार, प्रो. यश चोपड़ा, ऋषि कपूर, राखी, शशि कपूर, नीतू सिंह अभिनीत।

1978, तृष्णा, दिर. अनिल गांगुली, प्रो. जी.पी. सिप्पी, शशि कपूर, संजीव कुमार, राखी अभिनीत।

1978, Trishul, dir. Yash Chopra, prod. Gulshan Rai, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Hema Malini, Raakhee.

1980, शान, दिर. रमेश सिप्पी, प्रो. जी.पी. सिप्पी, अभिनीत सुनील दत्त, अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, राखी, परवीन बाबी।

1981, बसेरा, दिर. रमेश तलवार, प्रो. रमेश बहल, शशि कपूर, राखी, रेखा अभिनीत।

1983, बंधन कच्चे धागों का, दिर। अनिल शर्मा, प्रो. के.सी. शर्मा, शशि कपूर, राखी, जीनत अमान अभिनीत।

1984, बंद होंथ, दिर. राज मार्ब्रोस, अभिनीत उत्पल दत्त, शशि कपूर, राखी।

1984, ज़मीन आसमान, दिर. भरत रंगाचारी, प्रो. सुभाष गुप्ता, उदय नारायण सिंह, शशि कपूर, राखी, रेखा अभिनीत।

1985, Pighalta Aasman, dir. Shammi, prod. Shammi, starring Shashi Kapoor, Raakhee, Rati Agnihotri.

## रेखा

1977, चक्कर पे चक्कर, दिर. अशोक राय, प्रो. एस.जगदीश चंद्र, मुख्य भूमिका में शशि कपूर, रेखा, प्राण।

1977, फ़रिश्ता और कातिल, दिर. एस.एम. अब्बास, प्रोड. जियाउल हसन, मो. इलियास, शशि कपूर, रेखा, बिंदू अभिनीत।

1977, Immaan Dharam, dir. Desh Mukherjee, prod. Premji, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Sanjeev Kumar, Rekha.

1978, Do Musafir, dir. Devendra Goel, prod. Syed Anwar Hussain, R.N. Kumar, Shashikant Shah, starring Shashi Kapoor, Rekha, Ashok Kumar.

1978, Muqaddar, dir. Ravi Tandon, starring Shashi Kapoor, Rekha, Amjad Khan.

1978, Rahu Ketu, dir. B.R. Ishara, prod. B.D. Pandey, starring Shashi Kapoor, Rekha, Bindu.

1979, Suhaag, dir. Manmohan Desai, prod. Rajinder Kumar Sharma, Shakti Subhash Sharma, Prakash Trehan, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Rekha, Parveen Babi.

1980, Kali Ghata, dir. Ved Rahi, prod. Ved Rahi, starring Shashi Kapoor, Rekha, Danny Denzongpa.

1980, Neeyat, dir. Anil Ganguly, prod. Veer Jain, Tutu Sharma, starring Shashi Kapoor, Rekha, Jeetendra.

1981, बसेरा, दिर. रमेश तलवार, प्रो. रमेश बहल, शशि कपूर, राखी, रेखा अभिनीत।

1981, Kalyug, dir. Shyam Benegal, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Rekha, Raj Babbar.

1981, Silsila, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Sanjeev Kumar, Rekha, Jaya Bhaduri.

1982, Vijeta, dir. Govind Nihalani, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Rekha, Kunal Kapoor.

1984, Utsav, dir. Girish Karnad, prod. Shashi Kapoor, starring Shekhar Suman, Rekha, Shashi Kapoor.

1984, ज़मीन आसमान, दिर. भरत रंगाचारी, प्रो. सुभाष गुप्ता, उदय नारायण सिंह, शशि कपूर, राखी, रेखा अभिनीत।

1987, Ijaazat, dir. Gulzar, prod. R.K. Gupta, starring Rekha, Naseeruddin Shah, Shashi Kapoor.

1987, Pyar Ki Jeet, dir. Saawan Kumar Tak, prod. Saawan Kumar Tak, starring Shashi Kapoor, Rekha, Vinod Mehra.

1989, Clerk, dir. Manoj Kumar, prod. Manoj Kumar, starring Manoj Kumar, Rekha, Shashi Kapoor.

## ऋषि कपूर

1976, Kabhi Kabhie, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Raakhee, Simi Garewal, Waheeda Rehman, Rishi Kapoor, Neetu Singh.

1977, दूसरा आदमी, दिर. रमेश तलवार, प्रो. यश चोपड़ा, ऋषि कपूर, राखी, शशि कपूर, नीतू सिंह अभिनीत।

1979, Duniya Meri Jeb Mein, dir. Tinnu Anand, prod. Bitu Anand, Naresh Malhotra, starring Rishi Kapoor, Shashi Kapoor, Neetu Singh.

## साधना

1962, प्रेम पत्र, दिर. बिमल रॉय, प्रो. बिमल रॉय, शशि कपूर, साधना, सीमा देव अभिनीत।

## शबाना आज़मी

1976, फकीरा, दिर. सी.पी. दीक्षित, प्रो. एन.एन. सिप्पी, शशि कपूर, शबाना आज़मी, डैनी डेन्जोंगपा अभिनीत।

1977, Hira Aur Patthar, dir. Vijay Bhatt, prod. Arun Bhatt, Kishore Vyas, starring Ashok Kumar, Shashi Kapoor, Shabana Azmi.

1978, Atithee, dir. Aravind Sen, prod. Anita Sen, Aravind Sen, starring Shashi Kapoor, Shabana Azmi, Shatrughan Sinha.

1978, Junoon, dir. Shyam Benegal, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Shabana Azmi, Jennifer Kendal.

1979, चोर सिपाही, दिर. प्रयाग राज, प्रो. श्याम सुंदर शिवदासानी, शशि कपूर, परवीन बाबी, शबाना आज़मी अभिनीत।

1989, Oonch Neech, dir. Wasi Khan, prod. Jagdish Varma, starring Shashi Kapoor, Shabana Azmi, Sanjeev Kumar.

1993, इन कस्टडी, निर्देशक: इस्माइल मर्चेंट, निर्माता: वाहिद चौहान, अभिनीत: शशि कपूर, शबाना आज़मी, ओम पुरी।

1998, साइड स्ट्रीट्स, निर्देशक टोनी गेर्बर, निर्माता ब्रूस वीस, अभिनीत वैलेरिया गोलिनो, शशि कपूर, शबाना आज़मी।

## शर्मिला टैगोर

1965, समय, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. बी.आर. चोपड़ा, अभिनीत बलराज साहनी, शर्मिला टैगोर, शशि कपूर।

1967, आमने-सामने, दिर. सूरज प्रकाश, प्रो. सूरज प्रकाश, शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, प्रेम चोपड़ा अभिनीत।

1970, My Love, dir. S. Sukhdev, starring Shashi Kapoor, Sharmila Tagore, Rajendra Nath.

1970, सुहाना सफ़र, दिर. विजय, प्रो. आर.सी. कुमार, अभिनीत शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, ललिता पवार।

1973, आ गले लग जा, दिर। मनमोहन देसाई, प्रो. ए.के. नाडियाडवाला, शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, शत्रुघ्न सिन्हा अभिनीत।

1974, Paap Aur Punya, dir. Prayag Raj, prod. Shyam Kumar Shivdasani, starring Shashi Kapoor, Sharmila Tagore, Aruna Irani.

1975, Anari, dir. Asit Sen, prod. Satish Bhatia, Inder Kapoor, starring Shashi Kapoor, Sharmila Tagore, Kabir Bedi.

1983, दूर्देश, दिर. अंबरीश संगल, प्रो. शमीम अहमद, जगदीश भरूस, शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, परवीन बाबी अभिनीत।

1986, नई दिल्ली टाइम्स, निर्देशक रमेश शर्मा, निर्माता पी.के. तिवारी, कलाकार शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, ओम पुरी।

1986, स्वाति, दिर. क्रांति कुमार, प्रो. एल.वी. प्रसाद, शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, मीनाक्षी शेषाद्रि अभिनीत।

## सिमी गरेवाल

1972, Siddhartha, dir. Conrad Rooks, prod. Conrad Rooks, starring Shashi Kapoor, Simi Garewal, Romesh Sharma.

1976, Kabhi Kabhie, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Raakhee, Simi Garewal, Waheeda Rehman, Rishi Kapoor, Neetu Singh.

1979, Ahsaas, dir. Surindara Suri, prod. G.P. Sippy, starring Shashi Kapoor, Simi Garewal, Amitabh Bachchan.

## वहीदा रहमान

1976, Kabhi Kabhie, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Raakhee, Simi Garewal, Waheeda Rehman, Rishi Kapoor, Neetu Singh.

1982, Namak Halaal, dir. Prakash Mehra, prod. Satyendra Pal, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Smita Patil, Waheeda Rehman, Parveen Babi.

1982, Sawaal, dir. Ramesh Talwar, prod. Yash Chopra, starring Shashi Kapoor, Sanjeev Kumar, Waheeda Rehman.

## ज़ीनत अमान

1974, Roti Kapada Aur Makaan, dir. Manoj Kumar, prod. Manoj Kumar, starring Manoj Kumar, Shashi Kapoor, Amitabh Bachchan, Zeenat Aman.

1976, दीवानगी, दिर. समीर गांगुली, प्रो. सुबोध मुखर्जी, शशि कपूर, जीनत अमान, हेलेन अभिनीत।

1978, हीरालाल पन्नालाल, दिर. अशोक राय, प्रो. अशोक रॉय, शशि कपूर, जीनत अमान, नीतू सिंह अभिनीत।

1978, Satyam Shivam Sundaram, dir. Raj Kapoor, prod. Raj Kapoor, starring Shashi Kapoor, Zeenat Aman, Padmini Kolhapure.

1981, Krodhi, dir. Subhash Ghai, prod. Ranjit Virk, starring Shashi Kapoor, Zeenat Aman, Hema Malini.

1983, बंधन कच्चे धागों का, दिर। आनेल शमा, प्रो. के.सी. शमा, शाशे कपूर, जीनत अमान, राखी आभेनीत।

1984, Pakhandi, dir. Samir Ganguly, prod. Robert D’Souza, starring Shashi Kapoor, Sanjeev Kumar, Zeenat Aman.

1985, Bhavani Junction, dir. H. Dinesh, prod. Deepak S. Shivdasani, starring Shashi Kapoor, Shatrughan Sinha, Zeenat Aman.

1986, Aurat, dir. B.R. Ishara, prod. Sunil Bohra, starring Zeenat Aman, Shashi Kapoor, Shakti Kapoor.

# स्वीकृतियाँ

हालांकि मैंने शशि कपूर से साक्षात्कार के लिए संपर्क नहीं किया, लेकिन उन्हें जानने वाले और उनके साथ काम करने वाले कई लोग उस व्यक्ति, उस अभिनेता, उस स्टार के बारे में बात करने में बेहद खुश थे।
यह पुस्तक उन लोगों के साथ किए गए साक्षात्कारों के बिना संभव नहीं होती, जिन्होंने शशि कपूर का किरदार निभाया था: फ़िरोज़ अब्बास खान, शबाना आज़मी, अमिताभ बच्चन, देव बेनेगल, श्याम बेनेगल, पामेला चोपड़ा, जमील देहलवी, अनिल धारकर, सबरीना धवन, रेचल ड्वायर, स्टीफ़न फ्रीअर्स, सिमी गरेवाल, रोहेना गेरा, टोनी गेबर, जेम्स (जिम) आइवरी, मधुर जाफ़री, मधु जैन, कुणाल कपूर, नीतू सिंह कपूर, ऋषि कपूर, संजना कपूर, समीरा खान, हनीफ़ कुरैशी, डेविड मैककिबेन, गोविंद निहलानी, लिन नाटेज, अलेक्जेंडर रूक्स, अपर्णा सेन, रमेश शर्मा, शर्मिला टैगोर, रमेश तलवार और बेथ वाटकिंस। शशि कपूर के बारे में अपनी यादें और विचार मेरे साथ साझा करने के लिए मैं उन सभी का आभारी हूं। मैं विशेष रूप से शबाना आज़मी और मधु जैन का आभारी हूं जिन्होंने यह कहकर मुझे प्रोत्साहित किया कि शशि कपूर की प्रशंसा में एक पुस्तक आवश्यक है।
मेरी संपादक धारिणी भास्कर को विशेष धन्यवाद, जो इस परियोजना को लेकर तब भी उत्साहित थीं जब मैंने उनके साथ युवा शशि कपूर की तस्वीरें साझा कीं।
मैं करण जौहर को उनके भावपूर्ण प्रस्तावना के लिए और स्पंदन बनर्जी का खूबसूरत कवर डिजाइन करने के लिए आभारी हूं।
मैं निम्नलिखित लोगों का भी आभारी हूं जिन्होंने मुझे सलाह दी, जब मैं यह पुस्तक लिख रहा था तो उन्होंने मुझे शोध सामग्री और डीवीडी भेजी, संपर्क जानकारी साझा की और यहां तक कि साक्षात्कार भी संभव बनाया- धीरज अकोलकर, पराग और बेला अमलदी, पीटर बेकर, मीनल बाघल, गिरिमोहन कोनेटी, जेटे एम्मन्स, ज़ाकिर हुसैन, अमित खन्ना, रोजिता कुलकर्णी, अमिताव कुमार, निखिल लक्ष्मण, राजीव मसंद, टिम मैकहेनरी, अमितांव नाग, प्रीतीश नंदी, अवतार पनेसर, राम रहमान, वैभव राजपूत, ज़ोरान सहर, जिंजर शंकर, अरुण शिवदासानी, श्री श्रीनिवासन और सुफ़ला।
पुस्तक के कुछ अंश 2015 की गर्मियों में लिखे और शोध किए गए थे, जब मेरी माँ नोएडा के एक अस्पताल में भर्ती थीं और मुझे अपने काम पर ध्यान केंद्रित करने का समय मिला था। मैं अपने चचेरे भाई-बहनों, राकेश और सोनल पोपली का आभारी हूँ, जिन्होंने उन दिनों और बाद में शरद ऋतु में, जब मैं उनके अपार्टमेंट के बगल में रहने चला गया, मुझे भोजन उपलब्ध कराया।
मैं अपनी लेखिका और अभिनेत्री मित्र रूपलीना बोस का आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे इस पुस्तक का शीर्षक सुझाया। और अपने मित्र गिरिमोहन कोनेटी का भी, जिन्होंने मुझे हफ़्तों तक ब्रुकलिन स्थित अपने अपार्टमेंट में रहने दिया, जहाँ मैंने शशि की कई फ़िल्में देखीं।
मैं मेघा भौरस्कर को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने शशि कपूर के प्रति अपने जुनून को मेरे साथ साझा किया।
और अंत में, देव बेनेगल को धन्यवाद, जो मुझे बॉम्बे फिल्म उद्योग की खबरों से हमेशा अवगत कराते रहते हैं।

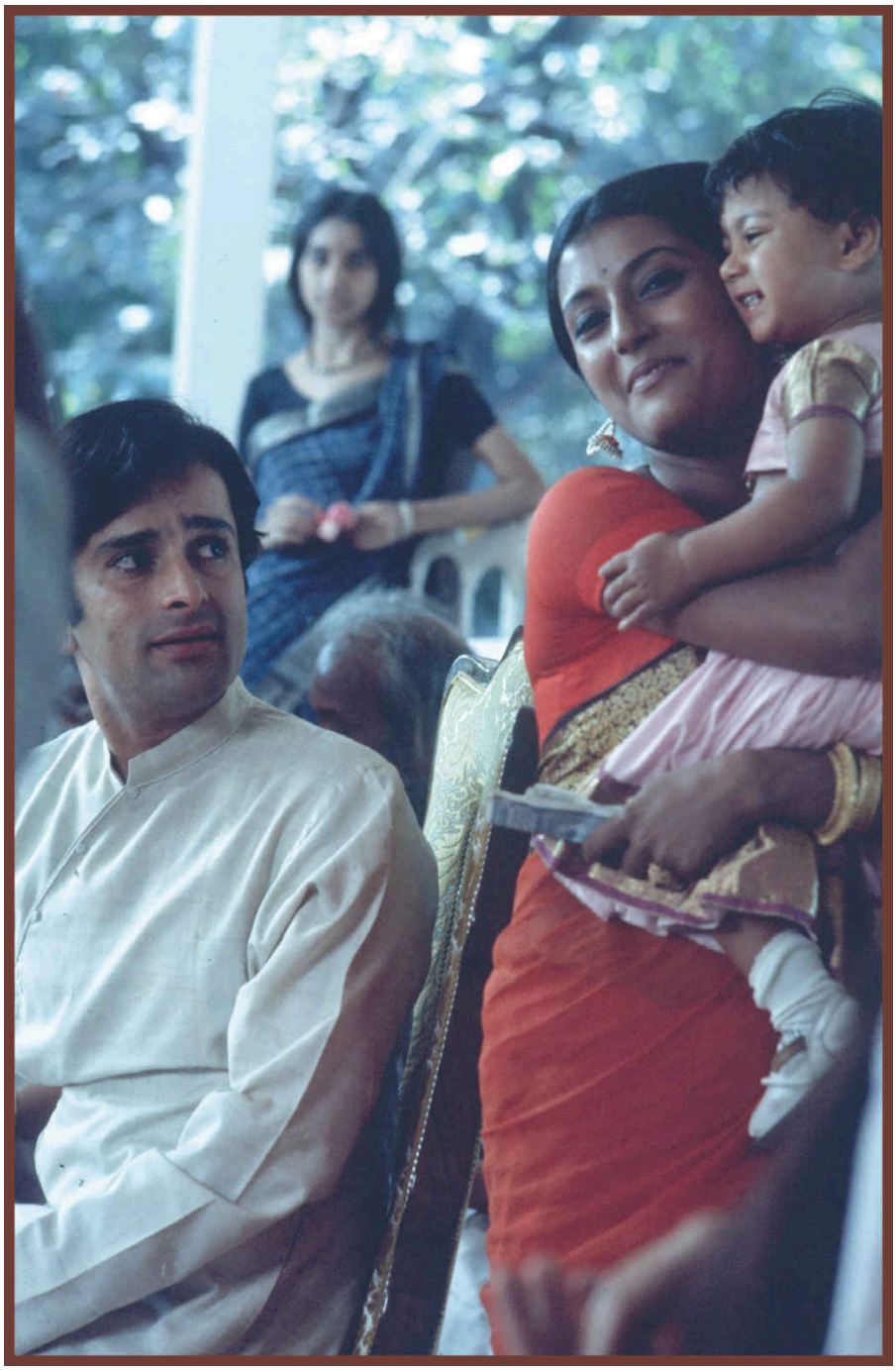

1970, बॉम्बे टॉकी। शशि कपूर की फिल्म विक्रम, जिसमें उनकी ऑन-स्क्रीन पत्नी माला का किरदार अपर्णा सेन ने निभाया था, की शूटिंग हुई थी। शशि कपूर आगे चलकर अपर्णा की पहली निर्देशित फिल्म 36 चौरंगी लेन (1981) का निर्माण करेंगे।
सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

1972, सिद्धार्थ। कॉनराड रूक्स की फिल्म में पिंचू कपूर (व्यापारी कामास्वामी के रूप में) और शशि कपूर (मुख्य भूमिका में) हैं, जो हरमन हेस के प्रतिष्ठित उपन्यास पर आधारित है।
सौजन्य: अलेक्जेंडर रूक्स/लोटस फिल्म्स।

1978, जुनून। शशि कपूर का पहला प्रोडक्शन, श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित: 1857 की एक कहानी जिसमें एक विवाहित मुस्लिम व्यक्ति, जावेद खान (शशि कपूर) एक युवा एंग्लो-इंडियन महिला के प्यार में पड़ जाता है।
Courtesy: Shyam Benegal.

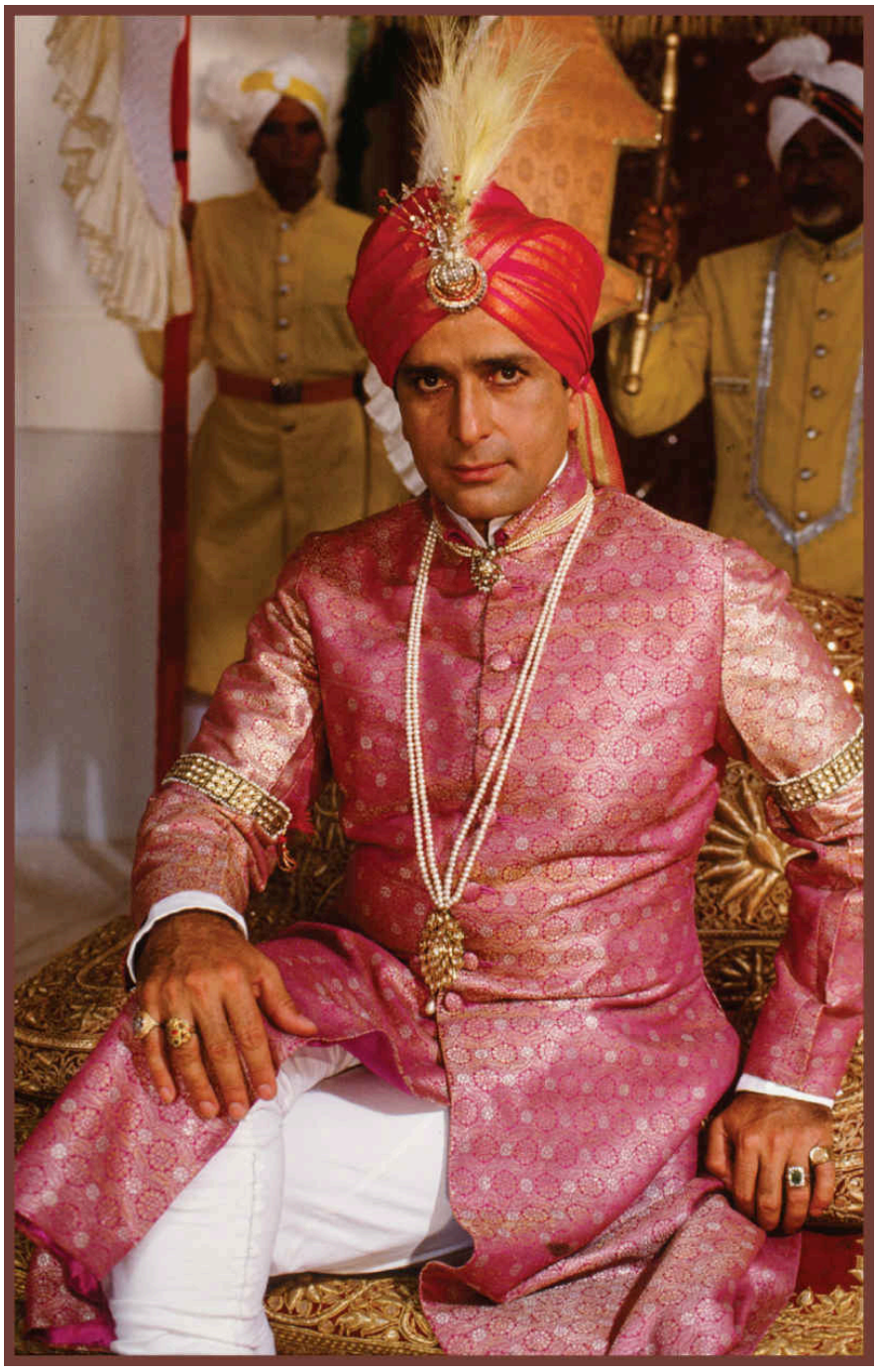

1983, हीट एंड डस्ट। शशि कपूर, नवाब। यहाँ, वे अपने शाही दरबार के दौरान बैठे हुए हैं।
सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

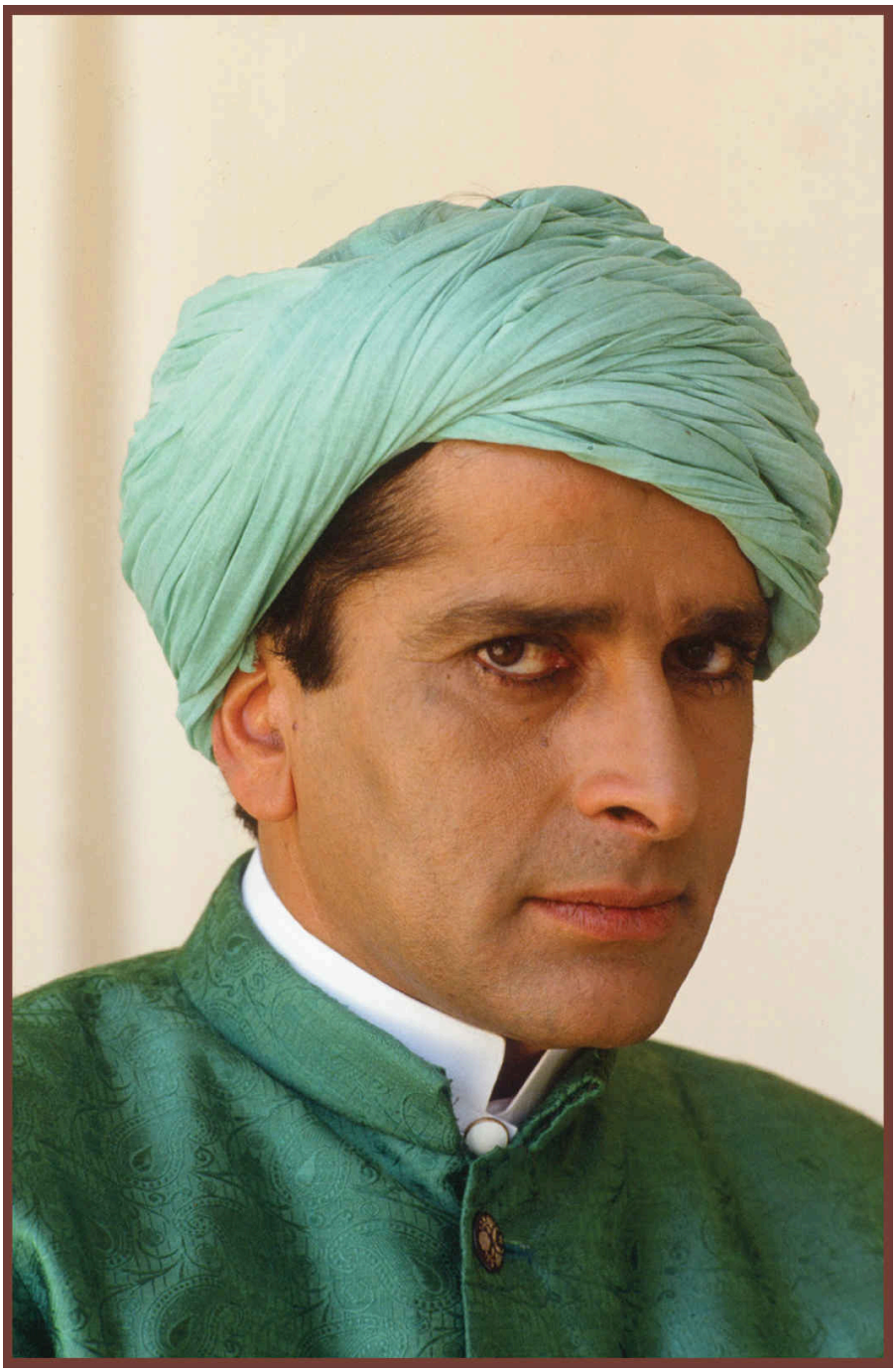

1983, हीट एंड डस्ट। जेम्स आइवरी की फिल्म में शशि कपूर नवाब के रूप में, जो रूथ प्रॉवर झबवाला के बुकर पुरस्कार विजेता उपन्यास पर आधारित है, का क्लोज-अप शॉट। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

सन् 1986, नई दिल्ली टाइम्स। रमेश शर्मा की राजनीतिक थ्रिलर फ़िल्म में शशि कपूर एक ईमानदार अख़बार संपादक की भूमिका में हैं—इस भूमिका के लिए उन्हें अपना एकमात्र राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। यहां वे अपनी ऑन-स्क्रीन वकील पत्नी, शर्मिला टैगोर द्वारा अभिनीत भूमिका के बगल में बैठे हैं। सौजन्य: रमेश शर्मा।

1987, सैमी एंड रोज़ी गेट लेड। हनीफ़ क़ुरैशी द्वारा लिखित इस फ़िल्म में शशि कपूर ने रफ़ी का किरदार निभाया है, जो पाकिस्तान के एक सेवानिवृत्त राजनेता हैं और अपने बेटे सैमी (अयूब खान-दीन, दाएं) से मिलने लंदन आते हैं।

1993, इन कुस्टडी। शशि कपूर, एक टूटे हुए, बूढ़े कवि नूर के रूप में, अपने कबूतरों के साथ एक निजी पल बिताते हुए।
सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

1993, इन कस्टडी। इस्माइल मर्चेंट की निर्देशक के रूप में पहली फीचर फिल्म। जेम्स आइवरी ने अपने मित्र के कहने पर इस दृश्य का निर्देशन किया है, जिसमें ओम पुरी द्वारा अभिनीत देवन एक साहित्यिक पत्रिका के लिए कवि नूर (शशि कपूर) का साक्षात्कार लेते हैं।
सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

1998, जिन्ना। रिचर्ड एटनबरो की फिल्म गांधी का पाकिस्तानी संस्करण, जिसमें शशि कपूर एक देवदूत (या 'कथावाचक') के रूप में मुहम्मद अली जिन्ना (क्रिस्टोफर ली) को उनके जीवन के बारे में बताते हैं।
Courtesy: Jamil Dehlavi.

1998, साइड स्ट्रीट्स। शशि कपूर द्वारा अभिनीत विक्रम राज, एक पूर्व बॉलीवुड अभिनेता के रूप में, न्यूयॉर्क शहर में फंसा हुआ है।
फोटो साभार: सेठ रुबिन। सौजन्य: साइड स्ट्रीट्स प्रोडक्शंस।